amaj Foundation Che

आगम ग्रन्थावली

सं.
वि

R
027
96६

ain. Gurukul Kangri

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आलम ग्रन्थावली

संपादक : विद्यानिवास मिश्र

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

R
0-29

166

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

122606

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय
कृपया पुस्तक के ऊपर कोई निशान आदि
न लगायें।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

R
0 ८१
१६६

पुस्तकालय

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार

122106

वर्ग संख्या........... आगत संख्या...........

पुस्तक-विवरण की तिथि नीचे अंकित हैं। इस तिथि सहित ३०वें दिन यह पुस्तक पुस्तकालय में वापिस आ जानी चाहिए। अन्यथा ५० पैसे प्रति दिन के हिसाब से विलम्ब-दण्ड लगेगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आलम ग्रन्थावली

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वाणी प्रकाशन

नयी दिल्ली-110002

फोन : 3273167, 3275710 ● फैक्स : 3275710
e-mail : vani_prakashan@yahoo.com
vani_prakashan@mantraonline.com

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

122606

आलम ग्रन्थावली

122606

संपादक

विद्यानिवास मिश्र

पुस्तकालय
गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वाणी प्रकाशन
21-ए, दरियागंज, नयी दिल्ली-110002
द्वारा प्रकाशित

संस्करण : 2002 मूल्य : 250.00 रुपये

© सम्पादक

शुभम ऑफसेट, दिल्ली-110032
द्वारा मुद्रित

AALAM GRANTHAWALI
Edited by Vidhyaniwas Mishra

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रम

आलम-केलि	**9-118**
बाल-लीला	11
बय: संधि-वर्णन	14
नवोढ़ा-वर्णन	15
प्रौढ़ा-वर्णन	17
अभिसार	18
मानिनी	19
संकेतस्थल वर्णन	27
नायक की दूती	28
विरह वर्णन	43
सखी की उक्ति सखी प्रति	50
खंडिता वर्णन	61
प्रेम कथन	67
वंशी	71
प्रवत्स्यात्पतिका	73
भँवरगीत	74
उद्धव का लौटना	80
जसोदा बिरह	82
गोपी बिरह	83
पवन वर्णन	87
जमुना-कुंज	88
गंगा वर्णन	89
दीनता	89
शिव को कवित्त	92
देवी को कवित्त	92
रामलीला	92
रेखता	96

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सवैया	98
विपरीति वर्णन	100
यशोदा की उक्ति	103
नवयौवना	106
मानवर्णन	107
चंद्र कलंक	110
युगल मुर्ति	112
अभिसार	113
आगतपतिका	114
शांतरस	118
अक्षरमालिक	**119-144**
अक्षरमालिक	121
माधवानल-कामकंदला	**145-189**
माधवानल-कामकंदला	147
माधव-कामकंदला वियोग	164
माधव विरह-वर्णन	166
विक्रम सहायता खंड	167
कंदला प्रेम-परीक्षा खंड	174
माधव-प्रेम परीक्षा	177
विक्रम चितारोहन खंड	178
वैताल खंड	179
राजा वैद खंड	180
कंदला-संदेश खंड	182
दूत खंड	183
युद्ध खंड	184
माधवकंदला मिलन खंड	188
स्यामसनेही	**191-270**
छपैछंदः	193
अथभुजंग छंदः	193
सुदामा चरित्र	**261-271**
सुदामा चरित्र	263

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आलम ग्रंथावली

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भूमिका

हिन्दी साहित्य के इतिहास के उत्तर मध्यकाल के लिये अनेक संज्ञाएँ विद्वानों द्वारा प्रस्तावित हुई हैं—कलाकाल, अलंकार-काल, शृंगार-काल और रीति-काल। प्रथम दो और अंतिम काव्य के अभिव्यक्ति-पक्ष से तथा तृतीय अनुभूति-पक्ष से संबद्ध हैं। साहित्य का इतिहास संबद्ध देश की जनता की चित्तवृत्तियों का इतिहास है—अतः चित्तवृत्ति के आधार पर शृंगार-काल नाम सार्थक जान पड़ता है। शृंगार में सिंगारने का भाव भी निहित है—अतः अभिव्यक्ति-पक्षीय विशेषता को समाहित करने की इसमें क्षमता है—तथापि परंपरा और युक्ति उसके पक्ष में नहीं है। परंपरा में आचार्य शुक्ल द्वारा इस नाम का अंकुरण हुआ। आचार्य पं० विश्वनाथ प्रसाद मिश्र द्वारा उसका पल्लवन और पोषण भी किया गया, पर अन्य किसी विद्वान् ने इसका समर्थन नहीं किया। इस नकार के पीछे इस काल के रचनाकारों की अन्यथा-वृत्ति थी। अंग्रेजी शब्दावली की सहायता ली जाय तो कुल मिलाकर यह युग क्लैसिकल कवियों का था—रोमैंटिक कवियों का नहीं; अर्थात्—इस काल में रूपवाद मुखर था। सारा श्रम उक्ति के निखार पर था। अनुभूति के स्तर पर प्रातिभ स्फूर्ति की जगह अभिव्यक्ति के स्तर पर व्युत्पत्ति का प्रकर्ष था। सारा श्रम प्रधानतः यहीं केन्द्रित था। अभिप्राय यह कि काव्य की अनुभूति नहीं, 'रीति'-पक्ष की प्रबलता थी, इसीलिए अप्रचलित 'कला' और सीमित अर्थ वाले 'अलंकार' से भी हटकर इस काल-खंड को 'रीतिकाल' संज्ञा दी गई।

'रीतिकाल' संज्ञा तो दे दी गई—पर अवांतर-विभाजन किया गया पं० विश्वनाथ प्रसाद मिश्र के 'शृंगारकाल' वाले ढर्रे पर। आचार्य मिश्र का विभाजन था—रीतिवद्ध, रीतिसिद्ध और रीतियुक्त। 'शृंगार' सामान्य तत्व था, पद्धति की दृष्टि से उसका त्रिधा विभाजन किया गया। 'शृंगार' संज्ञा की दृष्टि से तो यह विभाजन ठीक था, परन्तु 'रीतिकाल' संज्ञा के अन्तर्गत यह विभाजन किस प्रकार संगत हो सकता था। 'रीति' के भीतर 'रीतिमुक्त'? लेकिन चल गया। लोगों ने इस विभाजन को स्वीकार कर लिया। स्वीकार ही

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करना था तो विशेष्य 'रीति' को रखते और उसमें 'बद्ध, सिद्ध और मुक्त'-जैसे विशेषण लगा देते। इस प्रकार रीतिकाल का अवांतर-विभाजन होता—बद्धरीति, सिद्ध रीति और मुक्तरीति। मैं नहीं समझता कि इसमें किसी को आपत्ति होती। बद्धरीति में सर्जक की चेतना में रीति का बंधन था—वह रीति के ढांचे में ही अपने को व्यक्त करता था। 'सिद्धरीति', कवि में रीति संस्कारगत हो गई थी, इसलिए वह अभिव्यक्ति में बन्धनकारिणी नहीं थी, पर मुक्तरीति कवियों की अनुभूति क्रमागत 'रीति' में नहीं अंट पाती थी। इनमें अनुभूति का दबाव था, उसका ज्वार था—स्पष्ट है कि वह अपने रास्ते व्यक्त हो रही थी। इनका कहीं-न-कहीं व्यक्तिगत रागात्मक लगाव था—अतः उसमें तीव्रता और घनता थी। फलतः, काव्योचित उदात्तीकरण के साथ अभिव्यक्त होती थी।

इन मुक्तरीति कवियों में पांच का नाम प्रायः लिया जाता है : घनानन्द, आलम, द्विजदेव, ठाकुर और बोधा। इनमें से प्रायः प्रत्येक का जीवन राग-कथा से मंडित है, जो उत्तरोत्तर गहराता और उदात्तीकृत होता गया। घनानन्द का सुजान वेश्या का राग लोकप्रसिद्ध है। बोधा भी पन्ना दरवार की 'सुभान' पर आसक्त थे, जिसके कारण दंडित हुए और इस दंडित-काल में 'विरहवारीश' की रचना की। ठाकुर और द्विजदेव की प्रकृति में ही प्रसाद था, पर आलम की न पूछिए। यह हिन्दी के पंडितराज जगन्नाथ हैं। एक शेख मुसलमान रंगरेजिन पर ऐसे अनुरक्त हुए कि उससे निकाह ही कर लिया। घटना भी कुछ अजीब घटी। हुआ यह कि पंडितराज ने दोहे का पूर्वार्ध लिखा और उसे अपने दुपट्टे की खूंट में बांध लिया। दुपट्टा ज्यों-का-त्यों रंगरेजिन के यहाँ चला गया। उसने खूंट में कुछ बंधा हुआ देखा और उसे खोला—खोलकर पढ़ा। पढ़ा तो वहां एक दोहे का पूर्वार्ध लिखा था :

'कनक छरी-सी कामिनी काहे ते कटि छीन।'

उसने सोचा पंडितजी से उत्तरार्ध बना नहीं, सो उसने पूरा कर दिया :

'कटि को कंचन काटि विधि कुचन मध्य धरि दीन।'

और वैसे ही खूंट में रखकर गाँठ लगा दी। दुपट्टा पंडितजी के पास पहुंचा। खूंट खोला तो वहां उत्तरार्ध बना तैयार था। पता चला रंगरेजिन की करामात है। फिर क्या पंडितजी उस पर जी-जान से फिदा। अन्ततः निकाह हो ही गया। दोनों का जीवन कवित्वमय था। उनकी काव्यगंगा में शेख का भी रंग है और आलम का तो है ही।

इनके जीवन-वृत्त के संबंध में पुष्कल प्रमाण उपलब्ध नहीं होते। पता नहीं किस आधार पर पं० परशुराम चतुर्वेदी ने 'मध्यकालीन श्रृंगारिक प्रवृत्तियां

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तथा नव-निबंध 'नाम की पुस्तक में यह लिखा है कि आलम जौनपुर जिले के किसी भू-भाग के रहने वाले सनाढ्य ब्राह्मण थे, जो बाद में उक्त रंगरेजिन की कवित्व-क्षमता पर फिदा होकर मुसलमान हो गए। पूर्वावस्था के नाम और ग्राम का कुछ पता नहीं। मुसलमान हो जाने के बाद उनके नाम पर विभिन्न संग्रहों में जो रचनाएँ मिलती हैं—वे कहीं 'शेख'-छाप हैं और कहीं 'आलम'-छाप। इस पर से भी विद्वानों में पक्ष-विपक्ष बने। एक दल मानता है कि शेख रंगरेजिन का नाम था और आलम पंडितजी का – दोनों मिलकर रचना करते थे। मुंशी देवीप्रसाद और पं० नकछेदी तिवारी ने जनश्रुति के आधार पर कुछ छंद उद्धृत किए हैं, जिनकी तीन पंक्तियां आलम-निर्मित कही जाती हैं और अन्तिम शेख-निर्मित। उदाहरण के लिये एक छन्द दिया जाता है :

प्रेम रंग पगे जगमगे जगे जामिनि के, जोबन की जोति जागि जोर उमगत है।
मदन के माते मतवारे ऐसे घूमत हैं, झूमत हैं झुकि झुकि झपि उघरत हैं॥
आलम सो नवल निकाई इन नैनन की, पांखुरी पदुम पै भंवर थिरकत हैं॥
(आलम प्रणीत)

चाहत है उडिवे को देखत मयंक मुख, जानत है रैनि तातें ताही में रहत है॥
(शेख-प्रणीत)

शेख प्रत्युत्पन्न-मति तो थी, जनश्रुति में इसके प्रमाण भी सुरक्षित चले आ रहे हैं। किंवदन्ती यह है कि शेख से एक लड़का पैदा हुआ था, जिसका नाम था जहान। किसी विनोदी ने शेख से पूछा—"क्यों आप आलम (संसार) की पत्नी हैं?" उसने तत्काल उत्तर दिया, "हाँ आपको नहीं मालूम? मैं जहान (संसार—जिसमें प्रष्टा स्वयं सम्मिलित है) की मां हूं।

मनीषियों का एक वर्ग है जो यह मानता है कि आलम और शेख दो भिन्न व्यक्ति नहीं हैं, बल्कि एक ही व्यक्ति है और उसका नाम है शेख आलम। मिश्र बन्धुओं ने इसी पक्ष का अनुमोदन किया है। जिन विद्वानों का यह पक्ष है वे पुष्टि में कहते हैं कि 'शेख' नाम किसी स्त्री का नहीं हो सकता। कहीं सुना भी नहीं गया। दूसरे, एक ही व्यक्ति विभिन्न नामों से – छापों से—रचना करता देखा गया है। सूर के ही पदों को लें, तो कहीं 'सूर', कहीं 'सूरस्याम' मिलता है। तीसरे, शेख मुसलमानों की एक उपजाति का भी नाम है, अतः उसकी भी संभावना की जा सकती है। चौथे, उपलब्ध ग्रंथों की पुष्पिकाओं में 'शेख आलम' की जगह शेख और आलम' लिखा गया होता। पर ऐसा नहीं है। पुष्पिकाओं में लिखा है—

(1) अथ कवि शेख आलम कृत कवित्त (आदि भाग की पुष्पिका)
(2) इति की कवित्त सेष आलम के समाप्त (अंत भाग की पुष्पिका)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पांचवें, 'शेख आलम' का छन्द-विशेष के ढांचे में संयुक्त प्रयोग बैठ नहीं पाता । छठे, दोनों छाप की रचनाओं की भाव-भाषा इतनी एकरस है कि उनमें फर्क नजर नहीं आता । आचार्य पं० विश्वनाथ प्रसाद मिश्र का पक्षपात इसी ओर है । उन्होंने 'हिंदी साहित्य का अतीत' में इसे स्वीकार किया है ।

उनके जीवन-वृत्त के अन्य घटकों का कहीं कोई उल्लेख नहीं मिलता । हाँ, उनके और उनके काव्यकाल के संबंध में कुछ प्रमाण अवश्य मिलते हैं । हिंदी साहित्य के इतिहासकारों में सबसे पहले शिवसिंह सेंगर ने आलम का उल्लेख किया और उन्हीं की रचनाओं में से एक छंद उद्धृत किया, जिसमें मौजमशाह (मुअज्जमशाह) की प्रशस्ति है :

> जानत औलि कितावन कों जे निसाफ के माने कहे हैं ते चीन्हें ।
> पालत हौ इत आलम कों उत नीके रहीम के नाम कों लीन्हें ।।
> मोजमशाह तुम्है करता करिबे को दिलीपति है वर दीन्हें ।
> काबिल हैं ते रहें कित हूँ कहूँ काबिल होत हैं काबिल कीन्हें ।।

इस छंद में स्पष्ट कहा गया है कि मोजमशाह या मुअज्जमशाह 'आलम' का पालन करता है । निश्चय ही यहां 'आलम' श्लिष्ट पद है, जिसका एक अर्थ 'संसार' तो है ही, दूसरा कवि शेख आलम भी है । बादशाह औरंगजेब अपने पुत्रों में सबसे ज्यादा शाह मुअज्जम को ही मानता था । उसी में वह अपनी छाया पूर्ण रूप से देखता था । उक्त छंद की दूसरी पंक्ति में स्पष्ट है कि एक तरफ उसमें राज्य-प्रशासन की भी क्षमता है और दूसरी और अल्लाहताला के प्रति हार्दिक लगाव भी । औरंगजेब नहीं चाहता था कि उसकी मृत्यु के बाद उसके राज्य का बंटवारा हो । अतः अपनी इच्छा अपनी मृत्यु के पूर्व सिरहाने लिखकर छोड़ गया था । शहंशाह औरंगजेव की इच्छा के अनुसार शाह मुअज्जम बहादुरशाह के नाम से बादशाह बना भी । यह समय सन् 1707 ई० है । सन् 1712 में जाजमऊ के युद्ध में वह मार डाला गया । यही कवि आलम का समय रहा होगा । आचार्य विश्वनाथ प्रसाद मिश्र का कहना है कि आलम के नाम प्रथित किसी भी संग्रह में यह रचना नहीं मिलती । दूसरे 'आलम' में श्लेष मानकर इससे आलम का समय निकाला जाय तब इसी रचना में प्रयुक्त 'रहीम' को भी शिलष्ट मानकर रहीम कवि से जोड़ा जा सकता है । मिश्रजी का यह दूसरा तर्क संगत नहीं प्रतीत होता । इस तरह की रचना आलम की हो सकती हैं; दोहा-प्रणेता के रूप में प्रसिद्ध रहीम की नहीं । खैर, जब यह छंद और तदधृत आलम का काल (1712) ही अग्रिम तर्कों के आधार पर विवादास्पद हो जाता है, तब इन फुटकर तर्क-वितर्कों का कोई अर्थ ही नहीं निकलता । वैसे सरोजकार इन्हें मुअज्जम का सम-सामयिक मानता है और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सं० 1712 उत्पत्ति-काल बताता है। रचनाकाल सं० 1735 से 1770 तक।

लाला भगवानदीन ने इस प्रकार अपना पक्ष रखा। उन्होंने संवत् 1979 (सन् 1922) में 'आलमकेली' का प्रकाशन जिस पांडुलिपि के आधार पर कराया उसकी पुष्पिका में लिपिकाल संवत् 1753 दिया हुआ है। दीनजी को यह लिपिकाल प्रामाणिक जंचता है। 'आलमकेलि' का पता सबसे पहले 1903 ई० की खोज-रिपोर्ट से चला। उस समय यह ग्रंथ महाराज बनारस के 'सरस्वती भंडार' में था जिसकी पुष्पिका में लिपिकाल है : संवत् 1753, आश्विन कृष्ण 8, शुक्रवार। इन सब प्रमाणों के साक्ष्य पर भी आलम का काल 1753 के आस-पास माना गया और मुअज्जम शाह की सम-सामयिकता बरकरार रही। दीनजी का विचार है कि इस समय उनका रचना-प्रवाह चल रहा था; अतः उनकी बहुत-सी प्रख्यात रचनाएं इस संग्रह में संकलित नहीं हैं। मिश्रबन्धुओं ने भी सरोज के आधार पर इनका रचनाकाल संवत् 1740 माना। दीनजी ने इस क्रमागत इतिहाससम्मत काल से अपनी पांडुलिपि (आधारभूत) की पुष्पिका में प्रदत्त काल की संगति लगाते हुए इनका कार्यकाल संवत् 1740 से संवत् 1770 तक माना।

इस प्रकार समय की इस थोड़ी खींचतान के बावजूद इस बिंदु पर ऐकमत्य बना रहा कि शेख आलम मुअज्जमशाह के समसामयिक थे। इसी दौर में यानी सन् 1904 में 'खोज' करते हुए महाराज बनारस के पुस्तकालय 'सरस्वती भंडार' में आलम की एक और रचना मिली 'माधवानलकाम कंदला'। यह दोहे-चौपाइयों में लिखी हुई एक प्रेमकथा है। इसमें इसका समय 991 हिजरी दिया हुआ है—यानी सन् 1583। इस पुस्तक में अकबर और उनके भू-व्यवस्थापक टोडरमल का उल्लेख है। इस आधार पर बाबू श्यामसुन्दर दास ने यह घोषित कर दिया कि आलम नाम के दो कवि हुए हैं—एक 'माधवानल-कामकन्दला' जैसे प्रबन्धकाव्य का रचयिता और दूसरा 'आलमकेलि' जैसे प्रकीर्णक काव्य का। एक अकबर के समय का है और दूसरा शाह मुअज्जम के। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने 'शब्दसागर' की भूमिका में शाह मुअज्जम के समसामयिक के रूप में ही आलम का उल्लेख किया, परन्तु मिश्रबन्धुओं ने 'मिश्रबन्धु विनोद' में इस समस्या को उठाया और आलम के पूर्वोक्त रीति से दो होने की संभावना को महत्त्व दिया। मुंशी देवीप्रसाद आलम को अकबर का समकालीन ही मानते थे और एक ही आलम मानते थे। हाँ, जब 1947 में आचार्य शुक्ल ने 'हिंदी साहित्य के इतिहास' का प्रवर्द्धित संस्करण निकाला तब अवश्य पूर्वोक्त संभावना पर दो आलमों की बात उन्होंने भी कही। हिंदुस्तानी अकेडेमी द्वारा प्रकाशित 'हिंदी कवि और काव्य' (सन् 1941) में भी दो आलमों की बात कही गई है।

आगे चलकर पं० विश्वनाथ प्रसाद मिश्र ने बड़ी ऊहापोह के साथ आलम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के दो होने का खंडन किया और उन्हें अकबर का ही समसामयिक ठहराया। जिज्ञासा-शान्ति के लिए उनका 'हिंदी साहित्य का अतीत' (खण्ड-2) देखा जा सकता है। उनका पक्का मत है कि आलम एक ही हैं और उनका कार्यकाल संवत् 1640 से संवत् 1680 तक माना जा सकता है। इसे माना जाय तो रसखान के साथ आलम भक्तिकाल की सीमा में स्वच्छंद प्रेम-धारा के कवि कहे जायेंगे।

कृतियाँ

जहां तक आलम की रचनाओं का संबंध है—उन्होंने मुक्तक और प्रबन्ध—दोनों तरह की रचनाएँ की हैं। उनके मुक्तकों के कई संकलन हैं जिनके भिन्न-भिन्न नाम दिये गए हैं। 'खोज' में उनके निम्नलिखित ग्रन्थों का उल्लेख है: (1) 'आलमकेलि' (1903-33), (2) 'आलम की कविता' (1933-39 बी), (3) 'आलम के कवित्त' (2923-9 सी), (4) 'कवित्त संग्रह' (1941), (5) 'संग्रह' (1923-9 डी), (6) 'छप्पय' (1923-9 स), (7) 'सुदामा चरित' (1935-4, 1943) (8) 'श्यामसनेही' (1932-6) तथा (9) 'माधवानल-कामकन्दला' (1904-9)। नागरी प्रचारिणी सभा के खोज-ग्रंथों में अंतिम तीन प्रबंध-ग्रंथों के अतिरिक्त उनके मुक्तकों के और भी संग्रहों का उल्लेख है। लेकिन कुल मिलाकर यही कहा जा सकता है कि उनकी चार रचनाएं हैं:

(1) 'आलमकेलि' (मुक्तकों का संग्रह)
(2) 'सुदामाचरित'
(3) 'श्यामसनेही' और
(4) 'माधवानल-कामकन्दला।'

[नोट : प्रस्तुत ग्रंथावली में मुक्तकों का संग्रह 'आलमकेलि' और 'अक्षर-मालिका' नाम से संकलित हुआ है।]

(1) 'आलमकेलि' और 'अक्षरमालिका' (मुक्तक-संग्रह)

आचार्य पं० विश्वनाथ प्रसाद मिश्र ने मुक्तकों के छह विभिन्न संग्रहों का तथा खोज-रिपोर्ट के ही आधार पर अन्य लोगों ने ग्यारह प्रकीर्णक संग्रहों का उल्लेख किया है। लगता है कि विभिन्न संकलनकर्ताओं ने समय-समय पर विभिन्न संकलन तैयार किये और उन संग्रहों की अलग-अलग संज्ञाएँ दीं। जिसने अकारादि क्रम से संकलन तैयार किया उसने अकार के कवित्त' या 'अक्षरमालिका' नाम दे दिया और जिसने ऐसा क्रम नहीं लगाया, उसने 'आलम के कवित्त' नाम रख दिया या और-और नाम। 'छप्पय' नाम की कोई पृथक् रचना नहीं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है। सात पृष्ठों में कवि के केवल शृंगार और नीति संबंधी कुछ छप्पय छंद एकत्र कर दिए गए हैं। 'आलमकेलि' संज्ञा भी कवि द्वारा प्रयुक्त नाम नहीं है। श्री मायाशंकर याज्ञिक की तो कल्पना यह है कि मूलतः 'आलम के कवित्त लिख्यते' रहा होगा। प्रतिलिपिकार के प्रमाद से 'कवित्त' छूट गया होगा और 'लिख्यते' का 'लि' 'के' के साथ जुड़ गया होगा। बाद में 'ख्यते' को अधूरा समझकर 'लि' जोड़ दिया होगा। इस प्रकार 'आलमकेलि लिख्यते' में से 'आलम-केलि' प्रचलित हो गया होगा। यद्यपि यह माना जाता है कि 'अक्षरमालिका' 'आलमकेलि' के मुक्तकों का ही अकारादि क्रम से किया हुआ एक अन्य संकलन है, परंतु प्रस्तुत ग्रंथावली में संगृहीत 'अक्षरमालिका' 'आलमकेलि' से गतार्थ नहीं है। 'अक्षरमालिका' के छंद 'आलमकेलि' में नहीं हैं। 'आलमकेलि' में भी छंदों की संख्या बिभिन्न रूपों में मिलती है—कहीं 400, कहीं 397, कहीं 402 (इसमें दो छंद दो बार लिखे हुए हैं।) कांकरोली के पुस्तकाध्यक्ष ने संख्या 400 देखकर उसका नाम 'चतुःशती' रख दिया है। इस प्रकार आलम के सैकड़ों कवित्त, सवैये संग्रहों में मिलते हैं, इसलिए पृथक्-पृथक् ग्रंथ के रूप में उनका उल्लेख बहुत उचित नहीं है। प्रस्तुत ग्रंथावली में 'आलमकेलि' में कुल 396 और 'अक्षरमालिका' में 425 छंद संकलित हैं। कुछ अपवाद छोड़कर दोनों संग्रहों का वर्ण्य-विषय एक ही है—यशोदानन्द केन्द्रित शृंगार, शृंगार, नायक-नायिका भेद, कुछ अन्य देवी-देवता और शान्त आदि अतिरिक्त रसपरक प्रसंग तथा वात्सल्य के उभयविध पक्ष और भंवरगीत प्रभृति। वर्ण्य-विषय एक ही होने से दोनों का मुक्तक-संग्रह शीर्षक एक ही कोटि का समझना चाहिए। निश्चय ही इन मुक्तकों को ही केन्द्र में रखकर इनके लिए कहा गया होगा :

नव रसमय मूरति सदा, जिन बरने नन्दलाल।
आलम आलम वस कियो, है निज कविता-जाल॥

आचार्य कवि केशवदास ने 'रसिकप्रिया' में नन्दलाल का नवरस के सन्दर्भ में वर्णन आरंभ किया है। वह माहौल ही भक्ति का था। भक्त कवि अपनी भक्ति के आवेश में तो भक्ति-रस की कविता करते ही थे, साहित्य के अन्य रसों के संदर्भ में भी कृष्ण को केन्द्र में ला देते थे। बिहारी के भानजे कुलपति मिश्र ने सं० 1743 में 'युक्ति तरंगिणी' नामक एक दोहों की सतसई समाप्त की। इसी के उपक्रम में उन्होंने कुछ हिंदी और संस्कृत के कवियों की स्तुति की है। हिंदी के जिन कवियों की उन्होंने वंदना की है उनमें सूरदास और गंग के मध्य आलम का उल्लेख बड़े सम्मान से किया है। इस संदर्भ में आलम को सूरदास और गंग के साथ नवरसमय नन्दलाल का वर्णपिता माना है। केशवदास या केशवराय का भी उल्लेख इसी पंक्ति में है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(2) 'माधवानल-कामकन्दला'

उक्त मुक्तक-संग्रह या मुक्तक-संग्रहों के अतिरिक्त आलम की तीन प्रसिद्ध प्रबंध कृतियाँ हैं। इन प्रबंधों में एक है माधवानल और कामकन्दला की प्रेमकथा। विद्वानों की धारणा है कि 'माधवानल-कामकन्दला' के रचयिता का समय सं० 1640 है, जो उनकी प्रथम या आरंभिक रचना संभावित है। यह धारणा साधार है। कारण, उसी कृति में लिखा है: 'सन् नौ से इकया(व)नवें,' जिसका अर्थ 991 हिजरी है। भवानीशंकर याज्ञिक इसी की पांच प्रतियों से प्राप्त पाठ 'सन् नौ से इक्यावन जबहिं' के आधार पर 951 हिजरी अर्थात् संवत् 1601 मानते हैं और समाप्ति काल संवत् 1639 से 1646 के बीच। हस्तलिखित 'हिंदी पुस्तकों का संक्षिप्त विवरण' में, जो हाल ही में प्रकाशित हुआ है, उसका रचनाकाल 951 हिजरी (सं० 1602-03) माना गया है। इसकी प्राचीनतम प्रतिलिपि कांकरोली की है, जिसका लिपिकाल सं०1712 है। इस प्रकार यदि परवर्ती मुनि का ही प्रामाण्य मानना है तो इसका रचनाकाल सं० 1602-03 ही हुआ।

खोज में अब तक इसकी बारह हस्तलिखित प्रतियां मिली हैं। ये दो प्रकार की हैं—एक छोटी और दूसरी बड़ी। इनमें कई प्रकार के अन्तर हैं। एक तो यह कि छोटी में पाँच अर्धालियों के बाद एक दोहा या सोरठा है और बड़ी में पाँच अर्धालियों के बाद एक सोरठा और एक दोहा भी है। इसमें कुछ वर्णनात्मक प्रसंग भी बढ़े हुए हैं। इतना ही नहीं, कथाभाग भी कुछ अधिक है। प्रस्तुत ग्रंथावली में पहली परंपरा का पाठ ही स्वीकृत किया गया है, जिसमें पाँच अर्धालियों के बाद एक दोहा या सोरठा है। इसमें 'मंगलाचरण' के बाद कवि सीधे प्रकृत कथा पर आ जाता है। संक्षिप्त कथा इस प्रकार है:

आरम्भ मंगलाचरण और शाहेवक्त के स्मरण से है। तदनन्तर प्रतिज्ञापूर्वक कथा शुरू होती है। पुष्पावती नाम की एक नगरी है। वहां का राजा गोपीचंद हैं। उसी नगर में माधवानल नाम का एक योगाभ्यासी ब्राह्मण रहता है, जो महाराज को देवपूजा की तुलसी दिया करता है। उसे वीणा बजाने में महारत हासिल है। उनकी वीणा सुनकर स्त्रियां मूर्च्छित हो जाती हैं। एक दिन एक गृहिणी अपने पति के पास भोजन का थाल लेकर जाती है कि रास्ते में उसे उसकी वीणा सुनाई पड़ती है। गृहिणी की चेतना तन्मय हो जाती है—थाल हाथ से गिर पड़ता है। पति सारी बात जानकर नाराज होता है और राजा से निवेदन करता है कि ऐसे व्यक्ति को नगर से निष्कासित कर दिया जाना चाहिए, अन्यथा सारी प्रजा नगर छोड़ देगी। राजा ने माधवानल को बुलवाया—परीक्षा में सारी बात सही निकली और प्रजा द्वारा राज-त्याग से भीत राजा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

माधवानल को निष्कासित कर देता है। माधव वहाँ से निष्कासित हो कामवती पहुंचता है। वहाँ सुनता है कि राज-प्रासाद में कामकन्दला का गायन हो रहा है। फलतः, वह भी सुनने के लिए प्रस्थान करता है। द्वार पर द्वारपाल रोकता है। माधव द्वार पर ही बैठ जाता है और गायन सुनता है। वादन यानी तबला-वादन की गड़बड़ी से गायन और नर्त्तन तालबद्ध नहीं हो पाता—यह जानकर माधव द्वारपाल से कहता है कि सभा में सब अनाड़ी बैठे हैं, जो इस गड़बड़ी को समझ नहीं पाते। वस्तुतः तबलावादकों में एक के हाथ में चार ही अंगुलियां हैं। द्वारपाल यह बात राजा तक पहुँचाता है। राजा इस रहस्य को जानकर माधवानल पर मुग्ध होता है और सभा में बुलाकर उसका सम्मान करता है। कामकन्दला उसके सामने अपनी गायन कला का पूरा वैभव प्रदर्शित करती है। इस प्रदर्शन में जब वह तन्मय हो जाती है तभी उस पद्मिनी की गंध से आकृष्ट होकर एक भ्रमर उड़ता हुआ आता है और उसके स्तनाग्र पर बैठकर दंश देने लगता है। नर्त्तन-कला में विघ्न न हो इसलिए कामकन्दला ने यौगिक प्रक्रिया से शरीर की सम्पूर्ण वायु को संकेन्द्रित कर स्तन के रोमकूपों से इस प्रकार वेग-पूर्वक छोड़ा कि भौंरा उड़ जाता है। इस वैशिष्ट्य को सभा नहीं समझ पाती—कारण, वह गायन-नर्तन के दर्शन में मग्न है। कामकन्दला के इस कौशल पर माधवानल मुग्ध हो गया और राजा द्वारा प्राप्त सम्मान में दिया गया सारा सामान कामकन्दला को दे देता है। राजा उसकी बेअदबी पर नाराज होता है और देशनिकाले का दंड देता है। माधवानल और कामकन्दला दोनों एक-दूसरे पर मुग्ध हैं—फलतः दोनों में विरहाग्नि दहकती है। कामकन्दला गुप्त रूप से उसे अपने यहां रखना चाहती है, परंतु वह किसी शासक के राज्य में इस तरह नहीं रहना चाहता। फलतः वह वन-वन घूमता हुआ किसी परोपकारी की शरण चाहता है। इसी प्रत्याशा में विक्रम नरेश की राजधानी उज्जयिनी पहुंचता है। इधर-उधर भटकता हुआ किसी दिन एक शिवमन्दिर में जाता है, जहाँ राजा भी दर्शन करने जाया करता है। माधवानल मंदिर की दीवार पर एक दोहा लिखता है:

कहा करौं कित जाऊं हौं राजा राम न आहि।
सिय वियोग संतापबस राघौ जानत ताहि ।।

राजा विक्रम की दृष्टि इस दोहे पर जाती है। राजाज्ञा से दोहा लिखने वाले इस विरही की खोज की जाती है। विरही मिल जाता है। वियोग के कारण का पता चलता है। राजा गुणी ब्राह्मण द्वारा गणिका के प्रेमजाल में फंसने की निन्दा करता है। माधवानल गणिका की अनन्य निष्ठा निवेदित करता है। राजा परीक्षापूर्वक गणिका की निष्ठा का निर्धारण करता है। वह गणिका को

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बताता है कि उसका प्रेमी उज्जयिनी में विरहदग्ध होकर मर चुका है। इतना सुनते ही कामकन्दला भी प्राण छोड़ देती है। राजा माधव से यह वृत्तान्त बताता है। माधव भी इतना सुनते ही प्राण त्याग देता है। इन दोनों की हत्या का निमित्त राजा स्वयं को समझता है और चितारोहण का संकल्प लेता है। चिता में आग लगाई ही जाने वाली है कि उसका मित्र वैताल आ खड़ा होता है और पाताल से अमृत लाकर दोनों प्रेमियों को जिला देता है। विक्रम भी बच जाता है। कामकन्दला को सारा रहस्य ज्ञात होता है। वह राजा जैसे परोपकारी की प्रशंसा करती है।

राजा विक्रम वहाँ से लौटता है और श्रीपति नामक अपने रघुवंशी दूत को कामसेन राजा के पास इस आशय से भेजता है कि वह कामकन्दला को दे या युद्ध करे। कामसेन युद्ध स्वीकार करता है पर विक्रम के सामने वह ठहर नहीं पाता—परास्त होता है और कामकन्दला को दे देता है। कामकन्दला को माधव को सौंपकर विक्रम उज्जयिनी आ जाता है। वे दोनों पुष्पावती चले जाते हैं।

[नोट : बड़ी प्रति में आगे-पीछे और बीच में कुछ अंश भी जुड़े हुए हैं।]

लोग यह आशंका कर सकते हैं कि रीतिकाल का काव्य रूप मुक्तक है और आलम भारतीय संस्कार के रीतियुक्त धारा के कवि हैं—इनसे प्रेमकथापरक प्रबंध का क्या संबंध? यह तो सूफियों का काव्य रूप है। इसका उत्तर इस काल और प्रवाह के कवि बोधा का 'विरहवारीश' है। रीतिमुक्त कवि रीति-काल की स्वच्छंद धारा के कवि हैं—मुक्त प्रेम के गायक हैं। माधवानन्द-कामकन्दला' को भारतीय प्रकृति की प्रबंधबद्ध प्रेमपरक काव्यधारा से संबद्ध करके देखा जाना चाहिए, न कि सूफियों की मसनवी शैली में लिखित प्रबंध-धारा से। सूफियों के प्रेमकथापरक प्रबंध-काव्यों में एक तो मसनवी पद्धति का प्रयोग होता है; दूसरे, उसमें अन्योक्ति या समासोक्तिपरकता होने से रहस्यात्मकता का समावेश होता है—जबकि प्रस्तुत प्रबंध भारतीय महाकाव्य की पद्धति पर परब्रह्म-स्मरण-रूप मंगलाचरण से आरंभ होता है और विशुद्ध लौकिक भूमि पर प्रतिष्ठित होता है। उससे किसी अलौकिक पक्ष का संकेत नहीं दिया गया है। मुक्तक और प्रबंध को एक साथ प्रस्तुत करने वाले बोधा को प्रमाण माना जाय तो इस संदर्भ में प्रबंधकार और मुक्तककार आलम को एक ही कहा जा सकता है। इससे इनका समय इतना पीछे चला जाता है कि गुरुग्रंथ साहब में उपलब्ध रागमाला के छंदों की प्रामाणिकता सिद्ध हो जाती है। 'माधवानल-कामकन्दला' के इस आख्यान को लेकर अनेक प्रबंधकाव्य रचे गये हैं। आलम से पहले गणपति (सं० 1584) की 'माधवानल-कामकन्दला' और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कुशललाभ कृत 'माधवानल-कामकन्दला चउपई' (सं० 1613) तो हैं ही, आलम के बाद बोधा का 'विरहवारीश' या 'कामकन्दला' (1809-15 संवत् के बीच), राजकवि कँस का 'माधवानल' नाटक (संवत् 1717), भीष्मकृत 'माधव विलास' और हरिनारायण की 'माधवानल की कथा' भी है। इन पर तुलनात्मक शोध-प्रबंध भी लिखा जा चुका है। आलम की यह रचना शृंगार-प्रधान और अवधी भाषा में निबद्ध है।

श्यामसनेही

इनका दूसरा प्रबंध है 'श्यामसनेही'। इसमें रुक्मिणी-विवाह की कथा दोहे-चौपाइयों में लिखी गई है। इसकी भाषा मिश्रित ब्रजी है। मंगलाचरण के बाद कथा आरंभ होती है। दक्षिण में कुन्दनपुर नाम का एक नगर है। भीष्मसेन राजा वहाँ राज्य करता है। निःसंतान पति-पत्नी शिव-शक्ति की पूजा करते हैं। शिव-शक्ति प्रसन्न होते हैं। फलतः उन्हें चार पुत्र और एक कन्या होते हैं। भाइयों में रुक्म महाबली है और बहन रुक्मिणी तो उभयकुल-पावनी है। उसके परिणय का प्रसंग चलता है। देश-देशांतर के राजा आते हैं। रुक्म उसका हाथ शिशुपाल को देना चाहता है, परंतु रुक्मिणी द्वारावतीपति कृष्ण को चाहती है। वह कृष्ण को पत्र लिखती है। कृष्ण आते हैं और उसका संकल्प पूरा करते हैं।

कथा इतनी ही है। वर्णनों से उसे समृद्ध किया गया है। यह कवि प्रेम और भक्ति का कवि है। वे ही भाव उसकी काव्य-प्रेरणा के स्रोत हैं, वह कहता है :

प्रेम रु भक्ति ताहि मन भावै।
करै कंठ जग सोभा पावै॥

इस रचना के नामकरण का कारण भी दिया गया है :

प्रीति अंग सब सुन्दर देही।
नाम धर्‌यौ तिहि रामसनेही॥

निर्माण का कारण एक स्वच्छन्द धारा का कवि यही तो कहेगा :

आलम जीवहु जो पलक इहि चंचल संसारु।
दै अहार पोषहु मनहिं प्रेमभक्ति आचारु॥

'सुदामाचरित'

प्रबंध-शृंखला की तीसरी कृति है 'सुदामाचरित'। इसकी कथा प्रसिद्ध है। सुदामा एक गरीब ब्राह्मण है। पत्नी दीनता से त्रस्त है। उसे जब यह मालूम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

होता है कि उसके पति से द्वारकाधीश श्रीकृष्ण की मित्रता है, तो वह उनसे प्रार्थना करती है कि वह कृष्ण के यहां जायें, पर राजा के पास खाली हाथ कैसे जायें सुदामा ? यह ज्ञात होने पर पत्नी कहीं से कुछ चावल माँग लाती है। सुदामा उसे लेकर द्वारका जाते हैं, पर वहां का वैभव देखकर हताश रह जाते हैं। जब उनके आगमन की सूचना द्वारकानाथ के पास पहुंचती है तब सुदामा के संकोच के बावजूद कृष्ण अपनी भाभी द्वारा दी गई भेंट जबर्दस्ती खींच लेते हैं। सुदामा लौट जाते हैं पर द्वारकानाथ विश्वकर्मा को भेजकर सुदामा की झोपड़ी की जगह राज-प्रासाद निर्मित करा देते हैं। सुदामा जब वापस पहुंचते हैं तब उन्हें झोपड़ी की जगह प्रासाद मिलता है। रहस्य का अनावरण होने पर सुदामा द्वारकानाथ की उदारता पर मुग्ध होते हैं। 'सुदामाचरित' की इतनी-सी कथा है।

इस कथा को आधार बनाकर हिंदी के अनेक कवियों ने खंड-काव्य लिखे हैं। इनमें से नरोत्तमदास का 'सुदामाचरित' काफी प्रचलित है। उसका कारण उसके नाटकीय संवाद हैं। दोनों के 'सुदामाचरित' मिलते-जुलते हैं। नरोत्तम के 'सुदामाचरित' का निर्माणकाल संवत् 1602 के लगभग माना जाता है। प्रसिद्धि है कि आलम जौनपुर जनपद से संबद्ध थे, पर अभी इसकी पुष्कल सामग्री नहीं मिली है, इसीलिए इसकी दृढ़ प्रामाणिकता नहीं कही जा सकती। नरोत्तम की भाषा ब्रजी है। आलम की ब्रजी-अवधी या पूरबी से रंजित है। इसका कारण इनका पूरबवासी होना भी संभव है, जो बाद में स्थानांतरित होकर पश्चिम में आ गये हों। इनका 'सुदामाचरित' रेखताबंद है। प्रकीर्णक रचनाओं में भी रेखता का प्रयोग है। लगता है इनके समय तक लोक में खड़ी बोली का प्रयोग होने लग गया था—वह लोक-ग्राह्य भी होने लग गई थी। इसीलिए उसका सहारा लिया गया।

आचार्यों द्वारा प्रवर्तित और भक्तों द्वारा कार्यान्वित लीलागान-ब्रजलीला वृन्दावनलीला-भक्तों की रचना का प्रेरणा-स्रोत था और संगीतमयता का प्रचार होने से गेय पदों में लिखा जाता था। कवियों के लिए श्रीकृष्ण के जीवन से संबद्ध लीलापरक कथाएं तो थीं ही—अन्य औदात्य-निदर्शक खंड थे—जिसको विशुद्ध संस्कृत और भाषा के कवियों ने अपने काव्य के लिए ग्रहण किया। छंद इनके बदले हुए थे—सवैया और कवित्त। आलम एक रसमग्न और स्वच्छंद प्रवाह के कवि थे।

आलम मुक्त रीति या स्वच्छंद काव्यधारा के कवि थे। रसखान इस धारा की गंगोत्री और घनानन्द सर्वोपरि उपलब्धि। फिर भी प्रशस्तिकारों ने इन्हें सूर और गंग के बीच रखकर तवरसमय नन्दलाल का गायक ही कहा है। उनके

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक तरफ सूर जैसा रसमूर्ति भक्त और दूसरी ओर गंग जैसा तुलसी के साथ जुड़ा हुआ सुकवि सरदार। इससे आलम का महत्व स्पष्ट है।

मुक्तिधारा के कवियों की अपनी पहचान है। रीतिबद्ध या बद्धरीति प्रवाह युगीन प्रवाह था। युग का असर सब पर पड़ता है, पर उस असर के बावजूद इनका अपना व्यक्तित्व है, जो समय के प्रवाह में द्वीप की भाँति उभरा हुआ खड़ा है। उसका पहला कारण यह है कि जहाँ बद्धरीति वालों में 'परम्परा' बोलती है, उनका व्यक्ति-हृदय मौन है; वहां मुक्तरीति वालों के व्यक्ति-हृदय में कुछ ऐसी निजी तड़प है, जो मुखर है। यही तड़प उन्हें बद्धरीति से अलग कर उनकी पहचान बनाती है। घनानन्द की सुजान, बोधा की सुभान, आलम की शेख (?) रंगरेजिन तो जगत्प्रसिद्ध हैं—ठाकुर और द्विजदेव का हृदय भी इस तड़प से रिक्त नहीं है। यह तड़प कहीं आद्यन्त लौकिक ही रह गई और कहीं लोकोत्तीर्ण बन गई। यह मध्ययुग था और भारत का मध्ययुग—जहाँ बाहरी जगत् से चेतना की आँखें प्रायः अंतर्मुख हो गई थीं। इसका प्रभाव था। अतः भक्त तो लोकोत्तर शक्तियों के प्रति सर्वात्मना समर्पित थे ही, कविगण या सामान्य जन की भी उनमें आस्था थी। आज की तरह खोखली नहीं थी। लीक पीटना और बात है—हृदय से जुड़ना और। लीक पीटने वाले त्याग और बलिदान नहीं कर सकते—वित्तैषणा, लोकैषणा और पुत्रैषणा से ग्रस्त रहते हैं। हृदय से जुड़े रहने वालों में त्याग और बलिदान ऊर्जा देता है। उसमें उन्हें रस आता है। यही कारण है कि नैतिकता की मात्रा जैसी पहले थी वैसी अब नहीं है—वे चाहे तथाकथित भक्त हों या रचनाकार—सामान्य जन की तो बात ही अलग है।

बात यह चल रही थी कि मुक्तरीति रचनाकार की अपनी पहचान है और उसकी आधारभूत विशेषता वैयक्तिक राग की प्रबलता है, जो आस्था और विश्वास के कारण लोक से अतृप्त होने के कारण लोकोत्तीर्ण से जुड़ती है। वे न तो लीक पीटते हैं, न परंपरा-विजड़ित अभिव्यक्ति-पद्धति में बँधते हैं और न परंपरा को स्वर देने में तटस्थ रहते हैं—वे धारास्थ होते हैं; इसीलिए उनमें अनुभूति-पक्ष की नवता या आपबीती होती है। फलतः, पद्धति स्वनिर्मित और भाषा साफ तथा स्वच्छ होती है। भावगाम्भीर्य के कारण बांकपन का आ जाना स्वाभाविक है। इनमें व्युत्पत्ति की जगह प्रातिभ स्फूर्ति कहीं-कहीं अधिक सक्रिय होती है। इन्हें उन लोगों पर गुस्सा आता है, जो अर्जित ज्ञान या व्युत्पत्ति के बल पर कविता करते हैं। ठाकुर कहते हैं :

सीखि लीनों मीन मृग खंजन कमल नैन
सीखि लीनों जस औ प्रताप को कहानो है

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सीखि लीनो कल्पवृक्ष, कामधेनु, चिन्तामनि
सीखि लीनो मेरु और कुबेरगिरि आनो है
ठाकुर कहत याकी बड़ी है कठिन बात
याको नहिं भूलि कहूं बांधियत बानो है
डेल सो बनाय आय मेलत सभा के बीच
लोगन कवित्त कीबो खेल करि जानो है।

इस रचना में बार-बार 'सीखि' (शिक्षा-व्युत्पत्ति) को, उसके बल पर अन्तःप्रेरणा के अभाव में मर-पचकर कविता करने वालों को कोसा जा रहा है और कहा जा रहा है कि कविता की बात बड़ी कठिन है। वह खेल नहीं है। मतलब वह असिधार-व्रत है। वह रचनाकार हो ही नहीं सकता जो अपने जीवन में रचनाकार नहीं है। जीवन में रचनाकार वही होता है जो मानवता से प्रतिबद्ध होकर मूल्यों को जीता है—अपमूल्यों से जूझता है, संघर्ष की आंच में—तपती धूप में कहीं से आस्था का रस खींचकर हरा-भरा बना रहता है। यह खेल नहीं है। ठाकुर इस 'खेल' की ओर इशारा कर रहे हैं। कविता बाहर की प्रलोभना से नहीं भीतर की प्रेरणा से लिखी जाती है। घनानन्द अपनी पहचान अलग बनाते हुए कहते हैं :

लोग हैं लागि कवित्त बनावत
मोहिं तो मेरे कवित्त बनावत।

बद्धरीति वाले लग-पचकर, बौद्धिक व्यायाम कर कविता बनाते हैं—मुक्तरीति वालों की तो कविता ही उन्हें बनाती है। भीतर का भावावेग यदि कविता में रूपांतरित न होता, तो वे विक्षिप्त हो जाते। यह कबिता थी, जिसने उन्हें ध्वस्त होने से बचा लिया—बचा ही नहीं लिया, बना दिया। अनुभूति और भाषा में रक्त और त्वचा का दृष्टांत है। कहने में जब वजन होता है उसको बाहर लाने की विवशता रहती है तो भाषा सहज और सम्प्रेषणक्षम हो जाती है। जिसके पास हृदय की आँखें नहीं होतीं, वे इसे समझ भी नहीं सकते। कविता के विषय में आलम स्वयं कहते हैं :

छन्द मूल थर धरनि, अर्थ जल विमल पूरि दिय।
वरण पत्रि उलहन किरण साखा प्रकास क्रिय॥
भानु बिंद उपमा विहंग बहु वसहिं जु अस्थल।
जुगति फूल रस रंग रसिक रीझहिं सुवासु चल॥
छाया सुकृति जहं जहं चलिय 'आलम' फूलत सिंधु भर।
सुरतर समान पोख्यो कविन, जग पर अमर कवित्त कर॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जहाँ तक कविवर आलम के काव्य-वैभव का संबंध है—स्वच्छन्द धारा या मुक्तरीति धारा के इन कवियों का मुख्य वर्ण्य 'प्रेम' है। सामान्यतः इस पर संप्रदाय, समाज और साहित्य की रूढ़ मर्यादाओं का बंधन रहता है, पर स्वच्छंद धारा वालों का प्रेम इनसे मुक्त रहता है, इसीलिए ये रीतिमुक्त, मुक्तरीति या स्वच्छंद धारा के रचनाकार माने जाते हैं। यों इनकी मुक्तक और प्रबध—दोनों प्रकार की रचनाओं को लिया जाय तो उनमें पारिवारिक प्रेम भी मिलेगा और उन्मुक्त भी। प्रेम या शृंगार-भावना का निरूपण रीतिधारा की रूढ़ियों में वंधा भी मिलेगा और उनसे उन्मुक्त भी—स्वच्छंद भी। 'माधवानल-कामकन्दला' का प्रेम सामाजिक मर्यादा का अतिक्रमण करता है और 'श्यामसनेही' का भी। यद्यपि विवाह, जो एक सामाजिक बन्धन है, उसमें दोनों प्रवन्धकाव्यों के नायक-नायिका बंधते हैं, पर लगता है वह निर्वाह मात्र है। उनका हृदय तो विवाह-पूर्व के पूर्वराग-व्यंजना में कहीं ज्यादा रमा है। कामकन्दला तो वारांगना है। उसके साथ रागात्मक लगाव स्पष्ट ही समाज मर्यादा का अतिक्रमण कर मुक्त प्रेम का निदर्शन है। 'श्यामसनेही' में भी परिवार-जनों की इच्छा का स्पष्ट विरोध और साहसपूर्वक अन्तःप्रेरित राग का अनुधावन है। 'सुदामा-चरित' का सख्य-भाव-निर्वाह बिल्कुल अलग है।

इस स्वच्छंद प्रेम का जितना उन्मुक्त और प्रगाढ़ वर्णन उनके मुक्तकों में है—उतना प्रबंधों में नहीं। आखिर प्रबंध में कहीं तो बंध है। मुक्तक अपने काव्यरूप में भी मुक्त है—पूर्वापर के संबंध-सूत्र से अनालिंगित। राग की व्यंजना में स्वच्छंद धारा का रचनाकार प्रिय और प्रेमी के बीच किसी की मध्यस्थता नहीं चाहता—कोई व्यवधान पसंद नहीं करता। आलम की रीतियुक्त रचनाओं में यह समाजानुमोदित व्यवधान नहीं है। हाँ, रीति का प्रभाव जिन रचनाओं में युग या प्रवाह के अनुरोध से है, वहां रचयिता का स्वच्छंद रूप ही अविद्यमान है। हम सबसे पहले उनकी पहचान बनाने वाले मुक्त प्रेम की व्यंजना का वैभव देखना चाहेंगे।

प्रेम व्यंजना में रचयिता की चेतना कभी वहिर्मुख रहकर विभाव आलम्बन का रूप-सौन्दर्य निहारती है और कभी आतमगत उसके तर्यक-अतर्यक प्रभाव की व्यंजना में निरत रहती है। मुक्तधारा के कवियों की पहचान गहराती है—अंतिम पक्ष में। यद्यपि जैसा कि पहले कहा जा चुका है कि स्वच्छंद धारा के कवियों की पहचान कराने वाली मुख्य विशेषता है—प्रेम की वैयक्तिकता, जहां दूसरों का समावेश नहीं होता। रसखान की भांति आलम शृंगारिक रचनाओं में भी इसके विभिन्न प्रसंगों की व्यंजना गोपियों और कृष्ण के बीच कराई गई है। फलतः लगता है कि आलम का व्यक्ति-हृदय मौन है, मुखर नहीं है; पर विचार करने पर या उन रचनाओं की तह में पैठकर अनुभव करने पर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ऐसा प्रतीत होता है कि गोपी और कृष्ण तो आवरण हैं। वस्तुतः उनके व्याज से इनका ही व्यक्ति-हृदय मुखर है। जहां गोपीकृष्ण से अनाच्छन्न अभिव्यक्ति है, वहां तो इनका साधारणीकृत व्यक्ति-हृदय मुखर है ही। 'साधारणीकृत' और 'व्यक्ति-हृदय' यद्यपि आपाततः विरोधी लगते हैं तथापि काव्योचित मनोदशा में उभरते भाव सहृदयमात्रसंवेद्य बन जाते हैं—उसमें सहृदयमात्र सहभागी बन सकते हैं। अन्तःप्रेरणा की आंच में बाधक व्यक्तिगत तत्व गल जाते हैं, इसीलिए प्रगीत वैयक्तिक भावभूमि के होते हुए भी सहृदय-जन संवेद्य हो जाते हैं।

आलम का प्रेमी कभी तृप्ति का अनुभव नहीं करता। वियोग या पूर्वराग में तो तृप्ति का सवाल ही नहीं उठता। संयोग के क्षणों में भी उसकी अपार तृषा और भावी विप्रयोग के संदेह से ग्रस्त मनोदशा तृप्त नहीं हो पाती। प्रेम की गहराई से प्रिय का रूप नया-नया होता जाता है और रूप की रमणीयता से प्रिय का प्रेम-भाव गहराता जाता है। प्रेम में गहराई अतृप्ति से ही आती है। कालिदास का 'मेघदूत' कहता है कि वियोग में खर्ची के न होने से प्रेम की राशि में वृद्धि हो जाती है—

स्नेहानाहुः किमपि विरहे ध्वंसिनस्तेत्वभोगा-
दिष्टे वस्तुन्युपचितरसाः प्रेमराशी भवन्ति ॥ उत्तरमेघ-49 ॥

कुछ लोग कहते हैं—'मैत्री प्रवासात्'—लंबे व्यवधान से मैत्री-प्रेमभाव, समाप्त हो जाता है, पर कालिदास इसका प्रत्याख्यान करते हैं और कहते हैं कि यह धारणा गलत है। वस्तुतः विप्रयोग में इष्ट का अनुपभोग होने से—खर्ची न होने से—वह संगृहीत होता रहता है और एक बड़ी राशि बन जाता है। स्वच्छंद धारा के प्रेमी कवियों की अभिलाषा या तृषा कभी समाप्त ही नहीं होती। देखिए :

मया करि चितै चितु चोरि लीनो हितु करि
हिय बिनु चितै नहीं सोई सोच नित है।
आलम कहै हो पुर वास में जो बसी तिन्है
नैसुक न चाउ, निसु बासर चकित है।
देखे टक लागै अनदेखे पलकौ ना लागै
देखे-अनदेखे नैना निमित्त रहत हैं।
सुखी तुम्ह कान्ह हौ जु आन की न चिन्ता, हम
देखेउ दुखित अनदेखेहू डारवेत हैं ॥ 'आलमकेलि', 185 ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रिय प्रेमी की ओर प्रेमपूर्वक ही देखता है और ऐसे देखने का प्रभाव प्रेमी पर यह होता है कि उसका चित्त पराया हो जाता है—प्रिय के पास चला जाता है। वेदना तो इसी बात की है कि जब प्रिय देखता है तो प्रेम से ही देखता है। उसका यही देखना कलेजे में धँस जाता है—नष्ट शल्य की भांति निकाले नहीं निकलता। जो उनकी पुरवासिनी है—उनकी बात छोड़ो—स्वच्छंद धारा के प्रेमी पर जो बीतती है वह अलग ही है। वह अतृप्त राग-गर्भ नेत्रों से जब प्रिय के रूप को देखता है तो उसकी टकटकी लग जाती है और जब रूप सामने नहीं रहता तब अनिद्रा के कारण पलक भी आपस में लगना छोड़ देते हैं—पलक निष्पलक हो जाते हैं—आँखें तब भी नहीं ढँपतीं। दोनों ही हालत में आँखें खुली रहती हैं—देखें तो और न देखें तो। प्रेमी उलाहना देता है कि प्रेमियों के संसार में यदि कोई सुखी है तो केवल उसका प्रिय, जिसे किसी की चिन्ता नहीं—अपनों की भी नहीं। लगता है कि ममता पैदा करने वाली सहानुभूति की आंख ही विधाता ने उसे नहीं दी, इसीलिए वह निर्मम हो गया है। यहां तो प्रेमी की हालत यह है कि वह देखते हुए भी अतृप्त है और न देखते हुए तो अतृप्त है ही। उसका प्रिय नाम मात्र को प्रिय है— उसके अर्थ में प्रीणन का भाव नहीं है। प्रिय का अर्थ तो होता है—जो प्रीणन करे—'प्रीणाति, इति प्रियः।' इसका कुछ और नाम होता तो कम-से-कम सार्थक तो होता। सुना तो है कि विधाता की सृष्टि में कुछ निरर्थक है ही नहीं—सब कुछ सप्रयोजन और सार्थक है। हो सकता है यह प्रेमी के दुष्प्रारब्ध की परिणति हो, जिससे सब कुछ उतर गया हो। जब सारे संसार को उससे कोई शिकायत न हो—केवल प्रेमी व्यक्ति को ही हो—तो निश्चय ही उसमें उसी का दोष है, सामने वाले का क्या दोष ? कौन बताये कि दोषी प्रेमी है या निष्ठुर प्रिय ? गोपिकाओं के माध्यम से स्वच्छंद प्रेमी का हृदय प्रिय कृष्ण को संबोधित करते हुए कहता है :

कछु न सुहात, मैं उदास, परबस वास
जाके बल हूजे, तासों जीते हू पै हारिये।
आलम कहै हो हम दुहू विधि थकी कान्ह
अनदिखे दुःख देखें धीर जन धारिये।
कछु वै कहोगे, कै अबोले ही रहोगे लाल
मन के मरोरें कौ लौं मन ही में मारिये।
मोह सों चितैवो कीजै चितहू की चाह कै जू
मोहनी चितैनि प्यारे मो तन निवारिये ॥ आलमकेलि, 187 ॥

प्रिय की दशा यह है कि लाख कहने पर भी आनी अप्रत्याशित हरकतों

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

का कोई जवाब ही नहीं देता। आखिर प्रेमी कब तक प्रिय से संबद्ध मन में उठती हुई बेहिसाब अभिलाषाओं की हत्या करता रहे। कैसा है यह प्रिय—जो खुद भी हत्या करता है और अपने प्रेमी को भी हत्यारा बनाने को विवश कर देता है ? घनानन्द भी इसी स्वर में बोलते हैं :

यह कैसो वियोग न जानि परै
जो संजोगहु में न विछोहत है।

हे मालिक, कैसा है यह वियोग जो संयोग में भी पल्ला नहीं छोड़ता ? प्रिय की विचित्र आदत है कि वह प्रेमी को लक्ष्य कर प्रेमगर्भ चेष्टाएं करता रहता है, पर इससे भरभराकर उठती-गिरती अभिलाषाओं को कोई सहारा नहीं देता। इससे क्या निष्कर्ष निकाला जाय—प्रेमी निष्ठुर है, उसे तड़पाने में ही आनन्द है, फलतः जल्लाद है और अगर ऐसा ही है तो क्या यह अनुनयनिष्ठ रति नहीं रसाभास है ? क्या यह फारसी के माशूक का प्रभाव है ? क्या भारतीय प्रकृति की गोपियां कृष्ण की निठुराई पर उन्हें उपालंभ नहीं देतीं ? क्या 'भँवरगीत' के निर्माण द्वारा आलम इस परंपरा में नहीं आते ? क्या असलियत फारसी के माशू का प्रभाव है और 'भँवरगीत' मात्र परंपरा-पालन और युग का प्रभाव है ? ऐसे कई प्रश्न इस सन्दर्भ में विचारणार्थ उभरते हैं—सामने आते हैं।

आलम की रचनाओं के साक्ष्य पर इन प्रश्नों का उत्तर दिया जाय तो यह कहा जा सकता है कि वह समय फारसी के प्रभाव का भी था और भक्तिकाल तो था ही। रसखान मुसलमान थे, बोधा, घनानन्द आदि कायस्थ थे। अतः अधिकांश स्वच्छंद धारा के रचयिताओं पर फारसी का प्रभाव तो था ही। तुलना करने पर घनानन्द में फारसी का प्रभाव अपेक्षाकृत अधिक है। उनका प्रिय कहीं अधिक निठुर है। तभी तो कहते हैं : 'ऐ रे निरदई तोहि दया उपजाय हौं।'

वैसे आलम भी कह ही देते हैं :

ऊँचे चितवत नाहीं, नीचे मुसक्यात जात।
ऐसी निठुराई कान्ह कौने वदी कव तें॥ (आलमकेलि, 178॥)

कभी-कभी निठुर ही नहीं, 'निपट निठुर' भी कह देते हैं पर 'भँवरगीत' लिखने वाले का हृदय फारसी आशिक का हृदय नहीं हो सकता। उसमें यदि प्रिय की निठुरता प्रतीत होती है तो अपनी तृषा की बहुलता के कारण, न कि उसकी उदासीनता के कारण। यहां प्रिय भी प्रेम से देखता है—अतः रति अनुभयनिष्ठ नहीं है—इसीलिए शृंगाराभास की नहीं, अपितु शृंगार या प्रेम की प्रगाढ़ता, तीव्रता तथा एकनिष्ठता का द्योतक है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आलम का प्रेम लौकिक है। जहां अलौकिक गोपी-कृष्ण का नाम है वह आवरण है। यही कारण है कि उनकी प्रेम-व्यंजना में लौकिक और अलौकिक का अंतर बना हुआ है। अलौकिक विरह अलौकिक ही है—उसके सहने के लिये अलौकिक भावमय देह मिलती है। इस भौतिक और नश्वर देह से विरह की वह आंच बरदाश्त नहीं की जा सकती—वह तड़क कर फूट जायेगी। लेकिन अलौकिक विरह की जहां लोकोत्तरता है वहां संयोग की भी तृप्ति है—रासलीला का भी सुख है, पर लौकिक प्रेम की स्थिति अलग है। यहां रासलीला नहीं है। यहां वासना की आग बढ़ती ही रहती है—तृप्त होना जानती ही नहीं। यह प्रेम संयोग हो या वियोग—इसका पर्यवसान दुःख में ही होता है। यहां की नियति है 'संयोगाः विप्रयोगान्ताः'—अतः संयोग में भी विप्रयोग की आशंका जानलेवा कष्ट देती है। यह व्यक्तिगत होने से सार्वजनीन बनाई भी नहीं जा सकती। 'स्निग्ध जन संविभक्तं हि दुःखं सह्यमिव भवति' का तर्क यहां कैसे लागू हो? अकेले ही और भीतर-भीतर ही बर्दाश्त करना है। इतना अवश्य है कि प्रिय के संयोग की तरह प्रिय का वियोग भी 'प्रिय का' होने से प्रिय बन जाता है—भावतोः, उसी विरह की भाड़ में ही रहने की आदत बन गई है। उसके बिना भी रहना सम्भव नहीं :

औषध हितावैं ताहि वेदना न भावै जाहि।
मीर छांड़ि वीर वैद पीर मोंहि प्यारी है॥

सूफियों के यहां इश्क के दो सोपान होते हैं—मजाजी और हकीकी। वहां मजाजी इश्क का आलंबन एक सीमा पर पहुंचकर नगण्य हो जाता है—वहां 'इश्क' ही हक है, वही साध्य है। लौकिक प्रेम में यह बात नहीं है—आलम के यहां यह बात नहीं है। यहां मजाजी ही मजाजी है—आलंबन यहां कभी नगण्य नहीं होता। यहां उसी को लेकर सबकुछ है। उसे छोड़कर भाव की सत्ता ही नहीं है। दुनिया को कृष्ण काले लगते हों तो लगें, आलम की गोपी—उनका प्रेमी अपने कृष्ण की कालिमा में ही उज्ज्वलता देखता है। उनका प्रेमी कहता है :

चंद को चकोर देखै निसि दिन को न लेखै
चंद बिना दिन छबि लागति अंध्यारी है
आलम कहै हो आली अलि फूल हेत चलै
कांटे सी कंटीली बेलि ऐसी प्रीति प्यारी है
कारो कान्ह कहत गंवारी ऐसी लागति है
मोहि बाकी स्यामताई लागति उज्यारी है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मन की अटक तहां रूप को विचारू कहां
रीझिबो को पैंड़ों तहां बूझि कछु न्यारी है ।। (आलमकेलि), 148 ।।

चांद के बिना दिन का उजेला उसे अंधेरा ही लगता है । जो कान्ह को काला कहती हैं, वे गंवारिन हैं । उन्हें तो उनके श्याम रंग में ही उजियारी नजर आती है । यहां आलंवन का महत्व सर्वोपरि है । प्रेम का उन्मुक्त वर्णन करने में साहित्य, समाज या संप्रदाय की मर्यादा-रेखाओं का उन्हें कोई ध्यान नहीं है । रागावेग की चरितार्थता में आड़े आने वाली लज्जा के लगाम नेत्र नहीं मानते, संघर्ष करते हैं :

लाजनि की भीर पल पैंडोऊ न पावै नैन ।
शेख धीरे सकुचि विचारि पांव धरिये ।
कीजै कहा कान्हर कनोड़ौ ह्वैके जीवो नाहीं ।
ना तो एक वास में उसांस लै लै भरिये ।। (आलमकेलि, 190)

प्रेम का यही स्वच्छंद रूप आलम की पहचान है । प्रेम में अन्तर्मुख हुआ तो हृदय की बीती कहता है और वहिर्मुख हुआ तो प्रिय के बारे में बोलता है, उसके रूप-सौन्दर्य का वखान करता है । आलम ने अपने प्रिय या प्रिया का रूप-सौन्दर्य तीन पद्धतियों से व्यक्त किया है : एक तो आलंवन रूप में साक्षात् वर्णन किया गया है, दूसरे, दूती के माध्यम से नायक की भावना को अंकुरित और दीप्त करने के लिए किया गया है और तीसरे, नायक ही नायिका पर रीझकर उसकी प्रशंसा कर रहा है । इस भावनामय चेतना से देखा गया रूप-सौन्दर्य रचयिता की कल्पना को दीप्त करता है और कल्पना में एक से एक चित्र बनते हैं, वाणी को अभूतपूर्व भंगिमा प्राप्त होती है, आलंकारिकता का उफान आ जाता है । मतलब, आलम रीतिवद्ध पद्धति पर भी सौन्दर्य वर्णन करते हैं । उन्हीं अप्रस्तुतों की योजना होती है, जो परंपरा में प्रयुक्त है । हां, जब उनसे मुक्त होते हैं तब अपनी स्वच्छंद भावधारा में स्नात होते हैं । जैसे :

चितवन औरे लागे वोले और जोति जागे
हंसे कछु औरे रूसे औरई निकाई है
अग-अंग मोहनी मोहन मन मोहिवे को
एन नैन मानो मैन मोहिनी बनाई है
'आलम' कहै हो सव आगरो समातु नाहीं
छवि छलकति इहां कौन की समाई है ।
भूषन को भारु है किसोरी वैस गोरी बाल
तेरे तन प्यारी कोटि भूषन गुराई है ।। (आलमकेलि', 17)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस वर्णना में वर्णयिता की रागानुभूतिमयी चेतना जितनी ही गहराती है रूप-सौन्दर्य उतना ही निखर कर आता है। वस्तुतः ये दोनों परस्पर संबद्ध हैं और एक दूसरे को बढ़ाते हैं। यों तो भेदकातिशयोक्ति और स्वरूपोत्प्रेक्षा का सहारा है, पर प्रवाह से लगता है कि वर्णयिता रसावेश में यह सब निरायास कर गया है—रीतिबद्ध वर्णयिताओं की भांति सायास नहीं है। ध्वन्यालोककार आनन्दवर्द्धन के अनुसार :

रसाक्षिप्ततया यस्य बंधः शक्यक्रियो भवेत्।
अपृथग्यत्ननिर्वर्त्यः सोऽलंकारः ध्वनौ मतः॥

यहां का अलंकार रसावेश से आक्षिप्त होकर (अलग से किये हुए प्रयास द्वारा संपादित नहीं है) निरायास संपादित है। वैसे तो रूप-वर्णन के और भी प्रसंग हैं, जहां संदेहालंकार का अनवरत प्रवाह है, पर सहज और आवेग-प्रसूत निर्वाह प्रतीत होता है। देखें, 'अक्षरमालिका' के पृष्ठ भाग 124 और 125 पर लगातार चार छंद 'किधौं' से आरम्भ होते हैं और अप्रस्तुतों की भरमार लगा देते हैं—

(1) किधौं कलधूत की सी पूतरी विरंचि रची
× × ×
मिहरी कै देखैं मति तिह ह्वै गई है ॥ (अक्षरमालिका), 131

(2) किधौं जाहि मंचल में गात ही लगायौ इन
× × ×
बेसरि कौ मोती मानौ कौन पुन्य कर्‌यौ है। (अक्षरमालिका, 17)

(3) किधौं पै निहकलंक कलानिधि हूं की कला
× × ×
उर बसी मेरे तू ही उरबसी है॥ (अक्षरमालिका, 122)

(4) किधौं निकलंक कलानिधि की कला है इह
× × ×
उरबसी मेरे तू ही उर बसी है॥ (अक्षरमालिका, 196)

श्रृंगार के इन प्रसंगों को 'आलमकेलि' के इस संग्रह में जिन शीर्षकों में विभाजित किया गया है उन्हें देखने से लगता है कि संग्रहकार ने अपनी रुचि के चौखटे में इन छंदों को एकत्र कर दिया है। स्वच्छंद रुचि के आलम ने वैसा किया होगा इसमें संदेह है। संग्रह के शीर्षक इस प्रकार हैं—बाललीला, वयःसंधि वर्णन, नवोढा वर्णन, प्रौढ़ा वर्णन, अभिसार, मानिनी, संकेतस्थल वर्णन, नायक की दूती द्वारा नायिका वर्णन, विरह वर्णन, सखी की उक्ति सखी के प्रति, खंडिता वर्णन, प्रेमकथा, वंशी, प्रवत्स्यत्पतिका, भँवरगीत, उद्धव का

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लौटना, जसोदाविरह, गोपीविरह, पवन वर्णन (विरहिणी द्वारा), जमुना कुंज, गंगा वर्णन, दीनता, शिव, देवी, रामलीला, रेखता, सवैया, विपरीति वर्णन, यशोदा की उक्ति, नवयौवना, मान वर्णन, चन्द्रकलंक, कुचछवि, युगलमूर्ति, अभिसार तथा आगतपतिका।

इन शीर्षकों में शृंगार भी है और भक्ति भी। परंतु मुख्य विषय प्रेम ही है यह निर्भ्रान्त पक्ष है। उसके विभिन्न रूप संभव हैं, पर उनमें मुख्य है शृंगार। इस शृंगार में भी, जैसा कि ऊपर कहा जा चुका है, विप्रयोग की चेतना ही प्रधान है। विप्रयोग का वर्णन कहीं-कहीं ऊहात्मक भी हो गया है, पर संवेदनात्मक वर्णन के प्रवाह में उतना खटकता नहीं है। जैसे जायसी के संवेदनात्मक विरह वर्णन में उनके ऊहात्मक वर्णन आड़े नहीं आते। एक उदाहरण लें:

अंखियां मलीजु ऐसे अंसुवनि धारै, नातो
धारा पल छूटै तिहुं देस न समाखि है।
औधि है जू धूम की उसांस रुधि राखी है सु
नेकु लेत चौसहू अंध्यारी होति राति है।
आलम संताप स्वेद सींचिबो अधार कौ हूं
झुरि ह्वै के देह फिर खेह ज्यों उड़ाति है।
छाती पै सराहौ बरु दीया की सी भांति ऊधौ
पाती लिखे लेखनी ज्यों बाती बरी जाती है।

यह 'भँवरगीत' के प्रसंग का विप्रलंभ है। भला हो आंखों का जो आंसुओं को धारण किये रहती हैं, अन्यथा अगर वे ऐसा न करतीं तो पलक से छूटी धारा तीनों लोकों को बहा डालती। यह तो कृष्ण की दी हुई अवधि है जिसने उच्छ्वास के धूम को अवरुद्ध कर रखा है, अन्यथा चारों ओर भयंकर अंधकार फैल जाता। भला हो संतापजनित प्रस्वेद का जो देह को सूखने से बचा लेते हैं, अन्यथा सारी देह सूखकर धूल की तरह सर्वत्र उड़ती रहती। धन्य है उस विरहिणी की छाती, जहां पर लेखनी रखकर जब वह पाती लिखती है तो लगता है बत्ती जल रही है। कैसे धारण करती है छाती विरह की इतनी आग? अब, बताइए क्या करेगा कोई ऊहा?

मुक्तकों में व्यक्ति-हृदय और प्रबंध में लोकसंगलोन्मुखी हृदय प्रायः मुखर होता है। प्रबंध विवरण-प्रधान—फलतः बहिर्मुखी प्रकृति का—होता ही है। आलम के तीन प्रबंधों—'माधवानल-कामकन्दला', 'श्यामसनेही', तथा 'सुदामाचरित'—में से दो में मर्यादा भक्त हैं और तीसरे में सख्यभाव है। यद्यपि बाद में पूर्वोक्त दोनों प्रबंधों में समाजानुमोदित विवाह संस्था का निर्वाह है, पर आरंभ स्वच्छंद प्रेम से ही है। स्वच्छंद आरब्ध प्रेम की संपन्नता के निमित्त

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक जगह यानी 'माधवानल-कामकन्दला' में संघर्ष नायक करता है और अन्यत्र यानी 'स्यामसनेही' में रुक्मिणी नायिका। यह अवश्य है कि रुक्मिणी का संदेश पाकर कृष्ण भी अपना योगदान करते हैं। पूर्वत्र मृत नामक नायिका तथा मरणोद्यत विक्रम की रक्षा उसका मित्र बैताल करता है और अन्यत्र मरणोन्मुख रुक्म की रक्षा रुक्मिणी की करुणार्द्रता से होती है। लोकोपकार की भावना कहीं-न-कहीं उभयत्र विद्यमान है, ज़बकि 'सुदामाचरित' में विशुद्ध उपकार की ही भावना व्याप्त है। सख्य और माधुर्य के साथ 'आलमकेलि' में जसोदा-विरह का प्रसंग लाकर वात्सल्य का प्रसंग भी ला दिया गया है। इस प्रकार प्रेम के तीनों पक्षों का रूप इनकी रचनाओं में विद्यमान है। आलम का काल अकबर-टोडरमल का काल है—अत: प्रभाव भक्ति का है। युगपत् उसके भीतर से लोकगत राग भी जोर मारकर रीति की सीमा और कभी-कभी उसे लांघकर भी आगे चला जाता है। आलम इसी भूमि के रचयिता हैं जिन्होंने मुक्तरीति धारा में अपनी विशिष्ट पहचान बना ली है।

भाव के क्षेत्र में प्रेम से बढ़कर कोई भाव नहीं है। 'अभिनव भारती' में अभिनवगुप्त ने भाव तो 'राग' को ही माना है जो निमित्त-भेद से भावांतर में रूपांतरित हो जाता है। भोजराज इसीलिए शृंगार को ही एकमात्र रस मानते हैं और 'रसिक' व्यवहार का लोकगत प्रामाण्य प्रस्तुत करते हैं। वटयक्षवत् अन्य भावों में रस की प्रसिद्धि गड्डरिका-प्रवाहवश है। इस प्रेम की कोई सीमा नहीं है और जब सीमा में बंधता है तो उसे तोड़कर निस्सीम होता है। तत्वत: लोक और लोकोत्तर भूमि पर प्रवहमान राग अपनी मूल प्रकृति में अभिन्न है। घनानन्द कहते हैं :

ताकी कोऊ तरल तरंग कन एक छूट्यो।
ऐसो मथि मन में स्वरूप ठहरायो है ॥

है तो पूर्ण प्रेमसागर ही; लोक में जो उसका कण यहां-वहां दिखाई पड़ता है, वह उसी से छूटकर गिरा हुआ है। इसीलिए यह लोक से लोकोत्तर भूमि तक संचरणशील रहता है। कृष्ण और राधा की याद अकारण नहीं है। जहां प्रेमार्पित हृदय में प्रेम के ज्वार-भाटे अपनी प्रगाढ़ता और तीव्रता में आते रहते हैं, उनका प्रभाव वाणी पर कैसे नहीं पड़ेगा? आलम की अभिव्यक्ति वैदग्ध्य से आमूलचूल मंडित है। मुक्तकों में तो अपवाद के लिये भी एक ऐसी रचना नहीं मिलेगी, जिसमें बांकपन या काव्योचित चारुता उद्रिक्त न हो। प्रबंधों में कहीं सपाट वर्णन हो सकते हैं, परंतु प्रबंधकारिता उनका प्रकृत रूप नहीं है। उनका प्रकृत रूप मुक्तककार और स्वच्छंद प्रेमी का है और यह काव्योचित बांकपन से मंडित है। उदाहरण के लिये 'आलमकेलि' और 'अक्षरमालिका' का

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कोई भी मुक्तक लिया जा सकता है। अधिकांश सादृश्य मूलक अलंकारों की छटा द्रष्टव्य है। प्रकरण-वक्रता और प्रबंध-वक्रता का तो नहीं, परंतु वर्ण-वक्रता, पद-पूर्वार्ध-वक्रता, पद-परार्ध-वक्रता और वाक्य-वक्रता का अविरल प्रयोग मिलता है।

मुक्तकों की भाषा परिष्कृत साहित्यिक ब्रजी है, न कि सूर की तरह चलती ब्रजी और न ही घनानन्द की तरह शुद्ध ब्रज़ी। भाषा प्रसादपूर्ण है—उसमें न तो अरबी-फारसी के अप्रचलित शब्द हैं और न तत्सम। भाषा का प्रवाह इतना स्वच्छ और वाग्धारा इतनी आवेगमयी है कि पाठक यदि थोड़ा भी साहित्यिक संस्कार का है तो उसे रसमग्न होने में कोई विघ्न-बाधा नहीं आती। 'जाहिनैं', 'काहिबैं' जैसे पंजाबी प्रयोग परिस्थितिजन्य हैं। बिहारी की तरह 'कीन' 'दीन' आदि पूरबी प्रयोग भी मिलते हैं। इसी प्रकार इनकी भाषा में दूसरी बोलियों के भी प्रयोग मिलते हैं। 'अक्षरमालिका' के कतिपय छंदों में तो वीरगाथा के छप्पयों में प्रयुक्त द्वित्व-गर्भ प्रयोग भी मिलते हैं। चित्रमत्ता और नाद-सौन्दर्य भी इनकी भाषा के उल्लेखनीय गुण हैं। 'सुदामाचरित' रेखता यानी खड़ी बोली में है। यह ग्रंथ लावनीयाककुम छंद में है। 'माधवानन्द-कामकन्दला' की भाषा अवधी ही है। दोहे और चौपाइयों के लिए सर्वाधिक उपयुक्त भाषा अवधी ही है। पं० विश्वनाथजी 'श्यामसनेही' की भाषा मिश्रित ब्रजी मानते हैं, पर पढ़ने से साफ अवधी का ढर्रा मिलता है।

—राममूर्ति त्रिपाठी

2, बैंक कालोनी, देवास रोड,
उज्जैन (म० प्र०)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आलम-केलि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बाल-लीला

पालने खेलत नंद-ललन छलन बलि,
गोद लै लै ललना करति मोद गान है।
'आलम' सुकबि पल पल मैया पावै सुख,
पोषति पीयूष सुकरत पय पान है।
नंद सों कहति नंदरानी हो महर सुत,
चंद की सी कलनि बढ़तु मेरे जान है।
आइ देखि आनंद सों प्यारे कान्ह आनन में,
आन दिन आन घरी आन छबि आन है ॥ 1 ॥

झीनी सी झँगूली बीच झीनो आँगु झलकतु,
झुमरि झुमरि झुकि ज्यों ज्यों झूलै पलना।
घूंघुरू घुमत बनै घुंघुरा[1] के छोर घने,
घुँघरारे बार मानों घन बारे चलना।
आलम रसाल जुग लोचन बिसाल लोल,
ऐसे नंदलाल अनदेखे कहूं कल ना।
बेर बेर फेरि फेरि गोद लै लै घेरि घेरि,
टेरि टेरि गावें गुन गोकुल की ललना ॥ 2 ॥

जसुदा के अजिर बिराजें मनमोहन जू,
अंग रज लागै छबि छाजै सुरपाल[2] की।
छोटे छोटे आछे पग घूंघुरू घूमत घने,
जासों चित हित लागै सोभा बालजाल की।

---

1. घुंघुरा = घुनघुना, काठ का रंगीन माला जिसमें घुंघुरू वा कौड़ियां लगी होती हैं और जो पालने में बँधा लटकता है।
2. सुरपाल = इन्द्र।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आछी बतियाँ सुनावै छिनु छाँड़िबौ न भावै,
छाती सों छपावै लागै छोह वा दयाल की।
हेरि ब्रज नारि हारी वारि फेरि डारी सब,
आलम बलैया लीजै ऐसे नंदलाल की ॥ 3 ॥

दैहों दधि मधुर धरनि धर्‌यौ छोरि खैहै,
धाम तें निकसि धौरी धैनु धाइ खोलिहैं।
धूरि लोटि ऐहैं लपटैहैं लटकत ऐहैं,
सुखद सुनैहैं बैनु बतियाँ अमोल हैं।
'आलम' सुकबि मेरे ललन चलन सीखें,
बलन[1] की बाँह ब्रज गलिनि में डोलिहैं।
सुदिन सुदिन दिन ता दिन गनौंगी माई,
जा दिन कन्हैया मोसों मैया कहि बोलिहैं ॥ 4 ॥

ढोरी[2] कौन लागी ढुरि जैबे की सिगरौ दिन,
छिनु न रहत घरै कहौं का कन्हैया कों।
पल न परत कल बिकल जसोदा मैया,
ठौर भूले जैसे तलबेली लगै गैया कों।
आँचर सों मुख पोंछि पोंछि कै कहति तुम,
ऐसे कैसे जान देत कहूँ छोटे भैया कों।
खेलन ललन कहूँ गए हैं अकेले नेंकु,
बोलि दीजै बलन[3] बलैया लाग मैया कों ॥ 5 ॥

ऐसौ बारौ बांर[4] याहि बाहरौ न जान दीजै,
बार[5] गये बौरी तुम बनिता सँगन की।
ब्रज टोना टामन निपट टोनहाई डोलैं,
जसोदा मिटाउ टेव और के अँगन की।
'आलम' लै राई लौन वारि फेरि डारि नारि,
बोलि धौं सुनाइ धुनि कनक कँगन की।

1. बलन की बाँह=बलदेवजी का हाथ पकड़े हुए।
2. ढोरी=आदत, बानि।
3. बलन=बलदेवजी।
4. बार=बालक।
5. बार=द्वार।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

छीर मुख लपटाये छार बकुटनि[1] भरें, छीया,
नेंकु छबि देखो छगंन-मँगन की ॥ 6 ॥

बीस बिधि आऊँ दिन बारीये न पाऊं ओर,
याही काज वाही घर बाँसनि की बारी है।
नेंकु फिरि ऐहैं कैहैं दै री दै जसोदा मोहि,
मो पै हठि माँगैं बंसी और कहूँ डारी है।
'सेख' कहै तुम सिखवौ न कछु राम याहि,
भारी गरिहाइनु की सीखें लेतु गारी है।
संग लाइ भैया नेंकु न्यारौ न कन्हैया कीजै,
बलन[2] बलैया लैकें मैया बलिहारी है ॥ 7 ॥

मन की सुहेली[3] सब करतीं सुहागिनि सु,
अंक की अंकोर[4] दै कै हिये हरि लायौ है।
कान्ह मुख चूमि चूमि सुख के समूह लै लै,
काहू करि पातन पतोखी[5] दूध प्यायौ है।
'आलम' अखिल लोक लोकनि कौ अंसी[6] ईस,
सूनौ कै ब्रह्मांड सोई गोकुल में आयौ है।
ब्रह्म त्रिपुरारि पचि हारि रहे ध्यान धरि,
ब्रज की अहीरिनि खिलौना करि पायौ है ॥ 8 ॥

चारोंदस भौन जाके रवा एक रेनु कौ सौ,
सोई आजु रेनु लावै नंद के अवास की।
घट घट शब्द अनहद जाकौ पूरि रह्यौ,
तँई तुतराइ बानी तोतरे प्रकास की।
'आलम' सुकबि जाके त्रास तिहुँ लोक त्रसै,
तिन जिय त्रास मानी जसुदा के त्रास की।

---

1. बकुटनि = चुंगल।
2. बलन = बलदेवजी।
3. सुहेली = सुखदायक लीला।
4. अँकोर = अंकवार।
5. पतोखी = पत्ती की बनी छोटी दोंनिया।
6. अंसी = शक्तिमान।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इनके चरित चेति निगम कहत नेति,
जानी न परत कछू गति अबिनास की ।। 9 ।।

बयःसंधि-वर्णन

कंज[1] की सी कोर नैना ओरनि अरुन भई,
कीधौं चँपी सींब[2] चपलाई ठहराति है।
भौंहनं चढ़ति डीठि नीचे कों ढरनि लागी,
डीठि परे पीठि दै सकुचि मुसकाति है।
सजनी की सीख कछू सुनी अनसुनीं करें,
साजन की बातें सुनि लाजन समाति है।
रूप की उमंग तरुनाई कौ उठाव नयौ,
छाती उठि आई लरिकाई उठी जाति है ।। 10 ।।

जुटि आई भौंहैं मुरि चढ़ी हैं उचौहैं, नैना,
मैन मद माते पलकन चपलई है।
कटि गई छँटि पै सिमटि आई छाती ठौर,
ढौर[3] तें सँवारी देह और कछु भई है।
'आलम' उमँगि रूप सोना सरवर भर्यौ,
पानिप तें काई लरिकाई मिटि गई है।
झलक सी भई पियरस पियरई किधौं,
कछु तरुनई अरु नई अरुनई है ।। 11 ।।

काँधे ही कँधेलों अलबेलोपनों खेलौ चाहें,
पाछे ही बिसारे[4] खेलैं झाइं देखैं कूप की।
सावकी कुरंगी की सी संध्या कौ मयंकु जैसे,
लांक बिनु डोलै और निसंक सीत धूप की।

---

1. कंज की···अरुन भई=नेत्रों के कोनों में कुछ-कुछ कमलदल की कोरों की-सी लालिमा आ चली है।
2. चँपी सीव···ठहराति है=चंचलता की सीमा-सी बाँध दी गयी है।
3. ढौर=ढंग।
4. बिसारे=विषधर सर्प (बाल)।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आलम झुकति[1] थोरी हंसे ते हँसति पुनि,
हरत हरी कौ मनु आनन अनूप की।
चंदन चखौंड़ा[2] भाल गोरे अंग आँगी लाल,
पूंछै ते पिछौंड़ी जाति मौंड़ी औंड़ी रूप की ॥ 12 ॥

नवोढ़ा वर्णन

कीनी चाहौ चाहिली[3] नवोढ़ा एकै बार तुम,
एक बार जाय तिहि छलु डरु दीजियै।
'सेख' कहौ आवन सुहेली सेज आवै लाल,
सीखत सिखैंगी मेरी सीख सुनि लीजियै।
आवन कौ नाम सुनि सावन किये हैं नैना,
आवन कहै सुकैसे आइ[4] जाइ छीजियै।
बरबस बसि करिवे कौ मेरो बसु नाहिं,
ऐसी बैस कहौ कान्ह कैसें बस कीजियै ॥ 13 ॥

जोति सी हिये में जागी मैं तो जानी जैसी लागी,
सोच तें हिये[5] में लाल ! लागी नारि[6] है नई।
रसहि न जानै कहै बिरह न मानै ताकौ,
लैहौ छबि छाय कछु मूरि मोहनी मई।
'आलम' रसाल नंदलाल सुनि जानि-मनि[7],
मोहि ऐसी कठिन सुदुहूँ दिसि की भई।
तुम रिझवार प्रेम-पीर पियराने कहूँ,
अंकम की संक सुनि प्रिया पीरी ह्वै गई ॥ 14 ॥

कोकिल किलक बानी सुनि सुनि आनि मानी,
यही जानि तोपै सोखि सुरहिं सुधार्यौ है।

---

1. झुकति=खीझती है।
2. चखौंड़ा=तिलक।
3. चाहिली=चाह करने वाली।
4. आइ=आयु।
5. हिये···नई=गर्दन झुककर हृदय से लग गयी है।
6. नारि=गर्दन।
7. जानिमनि=ज्ञानी शिरोमणि।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तन हूँ की बानी[1] ताकि चंपाऊ उजार गयो,
यहै चेति चित हू तें भौंरनि उतार्‌यौ है।
'आलम' कहै हो पूरौ पुन्य कौ सुहायौ कोस,
मुख की निकाई हेरि हिमकर हार्‌यौ है।
रूप रयौ भयौ नाहीं रीझि गयौ मन माहीं,
तो पर ह्वै मार आपा बारि फेरि डार्‌यौ है॥ 15॥

पौन के परस छुद्र-घंटिका के डोलें डोलैं,
हार हू न हिये धरै खरी कटि खीनी है।
बेनी की लटक जिनि ग्रीवा के लरक जाय,
छुटी अलकनि छबि काकी लूटि लीनी है।
'आलम' कहै हो तनु कनक मैं तायो तामैं,
ऐन मैन जोति रस हीरा ओप दीनी है।
और है सिंगार भार तुहीं आपनो सिंगार,
बिधि है सुनार तू जराउ जैसी कीनी है॥ 16॥

चितवत औरै लागै बोले औरै जोति जागै,
हँसै कछू औरै रूसें औरई निकाई है।
अंग अंग मोहनी मोहन मन मोहिबे कों,
एन-नैनी[2] मानों मैन मोहनी बनाई है।
'आलम' कहै हो रूप आगरौ[3] समातु नाहीं,
छबि छलकति इहाँ कौन की समाई है।
भूषन कौ भारु है किसोरी बैस गोरी बाल,
तेरे तन प्यारी कोटि भूषन गुराई है॥ 17॥

ऐसे रूप देस की लुनाई लूटि लई है सु,
नई नई छबि अंग अंग उमँगति है।
जाई की सी माल सु लजाइ रही काहे तें सु,
जाइ जाइ हरि जू के हिये में खँगति[4] है।

---

1. बानी=(वर्ण) रंग।
(नोट)—'जायसी' ने भी इस शब्द को इसी अर्थ में लिखा है।
2. एननैनी=मृगनैनी।
3. आगरौ=बहुत अधिक।
4. खँगति है=चुभती है, चोट करती है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'आलम' कहै हो बड़े बार हैं सेवार भये,
तेरी तरुनाई सु—जराइ सी जगति है।
मोतिन कौ हार हिये हौंस से पहीरैं नहीं,
पोत[1] ही के छरा अपछरा सी लगति है ॥ 18 ॥

प्रौढ़ा-वर्णन

सौरभ सकेलि मेलि केलि ही की बेलि कीन्हीं,
सोभा की सहेली सु अकेली करतार की।
जित ढरकैं हो कान्ह तितही ढरकि जाय,
साँचे ही सुढारी सब अंगनि सुढार की।
तपनि हरति कवि आलम परस सीरौ,
अति ही रसिक रीति जानै रस-चार की।
ससि हू कौ रसु सानि सोने को सरूप लै कें,
अति ही सरस सों सँवारी घनसार[2] की ॥ 19 ॥

पातरी अँगेठी[3] आँगी अंग हू सों लागी रहै,
झलकतु अंग झीनौ झलक दुकूल की।
'आलम' सुधारे कच कारे सटकारे भारे,
डारे आछे पाछे प्यारी स्याम सुखमूल की।
काम के संजोग बाम दच्छ कटाछन कीने,
आछी छवि सैनिक सँवारी युद्ध मूल की।
कब हूँ कै कोर नैन औरनि लौं आवैं चले,
कब हूँ कै धावैं दुति आभा स्रुतिफूल[4] की ॥ 20 ॥

गोरे आंक थोरे लांक थोरी बैस भोरी मति,
घरी घरी और छवि अंग अंग मैं जगै।
कहि कबि आलम छलक नैन मैन मई,
मोहनी सुनत बैन मन मोहनै ठगै।

1. पोत-छरा=कांच की छोटी गुरियों की कंठी।
2. घनसार=कपूर।
3. अँगेठी (अंग + यष्टि) अंग के लिये जितनी चाहिए, ठीक उमान की, चुस्त।
4. स्रुतिफूल=(श्रुतिफूल) कर्णफूल।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तेरौई मुखारबिंद निंदै अरबिंदै प्यारी,
उपमा को कहै ऐसी कौन जिय मैं खगै।
चपि गई चंद्रिकाऊ छपि गई छबि देखि,
भोर कौ सौ चाँद भयौ फीकी चाँदनी लगै ।। 21 ।।

हीरा से दसन मुख बीरा नासिका की चारु,
सोने से सरीर रुचि चीर चली धाम कों।
ललित कपोल दृग डोलैं कबि आलम सु,
बोलि मृदु बोलि कै रिझावै लाल स्याम कों।
बेसरि विचित्र नीकी केसरि कौ टीकौ सोहै,
ते सरि न पावैं भूलै कैसी सची बाम कों।
बेनी गूथें फूल लर गरें मखतूल छटा,
फूल की कमान देखि भूल परी काम कों ।। 22 ।।

अभिसार

सावन की साँझ की सोहावनीयै ठौर तहाँ,
जूही जाही बेलि बौरि फूलि बन छाइहै।
आलम पवन पुरवैया कौ परस पाछें,
सीरी आये रसिक सरस सरसाइहै!
आली चलि चूनरि पहिरि हरियारी भूमि,
तेरे चमकत चपलाऊ चपि जाइहै।
औरनि के आये बनि और आइहै सुपुनि,
हौं तौ आइहौं न यह बेरौ बनि आइहै ।। 23 ।।

जागन दै जोन्ह सीरी लागन दे रात जैसे,
जात सारी सेत में संघात की न जानिहै।
अथये की भीर परी साथ लीजै मो सी नारि,
आतुरी न होइ, यह चातुरी की खानिहै।
घूंघट ते 'सेख' मुख जोति न घटैगी छिनु,
झीनो पट न्यारियै झलक पहचानिहै।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तू तौ जानै छानी[1] पै न छानी या रहैगी बीर,
छानी[2] छबि नैनन की काको लोहू छानिहै[3] ॥ 24 ॥

मानिनी

समुद कौ पारु है सुभूमि हू कौ वार[4] है पै,
प्रीति कौ न पारवार कौन बिधि कीजियै।
'सेख' कहै देखे अनदेख्योई करत कँहूँ,
अंक भरि भेटे हू बियोग रस भीजियै।
मेरे कहे वारी[5] तू निहारी जो बिहारी तन,
हेरे ज्यों[6] हठतु[7] हेतु एतौ कति छीजियै।
जाकी बास बेंधे मन फूल देख्यो चाहै जन।
हेरे ते कुसुम जानि केहूँ कर लीजियै ॥ 25 ॥

बनिता री बनि बनवारी बोली बन बन,
श्रवनन करि बेनु बाजै बनी वानी सों।
मानिनीन मुचै मानु पते मान को है मानो,
मेरी न मनाई मानें मोहन की मानी सों।
आलम सुरति सुख कहा जानै का सों कहैं,
कहे रैन बीति जैहै एक ही कहानी सों।
पान सोंऽ ब पान जोरि प्रानपति प्यारे संग,
ऐसे मिलि प्यारी जैसे पानी मिलै पानी सों ॥ 26 ॥

भौंहनि चढ़ाइ कै रिसाइ नैन नाइ रही,
साँस हूँ न चलै जड़ जद्पि कियौ है तनु।
कहै कबि आलम बचन ऐंचि खैंचि मनु,
कहा भयौ जो पै हठु कीनो है राँक कौ धनु।

---

1. छानी = रोकी हुई।
2. छानी = छन छनकर निकली हुई।
3. छानिहै = पियेगी।
4. वार = छोर, अंत।
5. वारी = वलिहारी जाऊँ।
6. ज्यों = (जीव) मन।
7. हठत = हठ करता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वाही कों बरजि डोलै बेसरि को मोती प्यारी,
जेहि लागि डोल्यौ डोल्यौ फिरत लाल कौ मनु।
ताकी झलकनि अधरनि पर छाई माई,
कहाँ है रुखाई तू तौ रूखे हू हँसति जनु ॥ 27 ॥

चंद-कर पूरन परे जु कुमुदिनि पर,
वे हू कीने हाइ भाइ मानिनी सुभाइ कै।
डोलैं दल बिगसि प्रकास्यौ पौन मंद जाइ,
कुसुम डोलाइ छाई जपा जूही जाइ कै।
आलम सुगंध बन केतकी कपूर सन,
लायौ लाइ कालिंदी के कन सुख चाइ कै।
आली तजि मौन करि गौन हित-भौन चलि,
केलि करि केल-कुंज[1] केलि के उपाइ कै ॥ 28 ॥

कोह की खुभी उतारौ बहुरौ तरौना धारौ,
कोटिक तरौना खुभी छबि पर वारिये।
चंदन को बेंदा सोहै उड़ बिधु रबि को है,
अंजन हूँ सेत लागे ऐसी आँखि कारिये।
तेरे आँग की निकाई कहाँ लौं कहौंगी माई,
रति हूँ पचति अजौं ध्यान हूँ न धारिये।
एतोई बिलंबु भारी करो जिन और प्यारी,
आलम अकेली कुंज एकले विहारिये ॥ 29 ॥

पिय की कहनि हा हा आतुर ह्वै पाइ गहैं,
ताको यह मानवती आनिबो उपाउ है।
तू चलि हौं आई तौ लौं बात ही चलाई जाय,
चतुर सखीन नेक देखिबे कौ चाउ है।
कहै कबि आलम झुकै हूँ रीझि खीझि जब,
मानु छौड़ि बोलि तब बोलिबे कौ दाउ है।
नाहि किये नाहिं बलि नाहिनै मनाई जाति,
जेती नाहिं तेती रुचि तिय कौ सुभाउ है ॥ 30 ॥

आई सीरी साँझ भीर गैयाँ दौरि आई घर,
बन घन पुर बीच पूरि धूरि धाई है।

1. केलकुंज=केला (कदली) की कुंज।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आलम चहूँघा चढ़ि रूखनि चिरैयाँ बोलीं,
भूषन बने हैं बलि बेरौ बनि आई है।
आली तौ लौं चलि जौलौं लाली में लपेटौ ससि,
रबि को न छबि छिन जौन्ह ना जनाई है।
छाह हूँ के छल मिलि हौंही भई तेरी छाँह,
जौ लौं परछाँहीं परछाहीं आनि छाई है॥ 31॥

छलिबे कों आई ही सु हौंही छल गई मनु,
छींकतौ न छलु करि पठई बिहारी हौं।
तूं तौ चल है पै आली हौंहीये अचल-सी हौं,
सादी रूप रेख देखि रीझि भीजि हारी हौं।
'सेख' भनि लाल-मनि बेंदी की बिदा है ऐसे,
गोरे गोरे भाल पर वारि फेरि डारी हौं।
वैरिनि न होहु नेकु बेसरि सुधारि धरौ,
हौं तो बलि बेसरि के बेह[1] बंधि सारी हौं॥ 32॥

फूली सुजुन्हाई कुसुमाकर[2] की रैन की सौ,
फूली बन घन रसबीथिन बिहरि लै।
आलम सुभग ये सुभायनु की सोभा तन,
आभा मिलि कोटि कोटि आभरनु करि लै।
मंजन के आदि ते वै न्यारे हैं सिंगार हार,
अंजन की रेख दृग खंजनु मैं धरि लै।
चंद्रमा-लिलाटी तैंब एती कहा ठाढ़ी बेगि,
पाटी पारि प्यारी करनाटी चीर करि लै॥ 33॥

सेत संख बिधु जोति अंजन जहर सजि,
बक्र[3] धनु अरुन सुमनि संग लाए हैं।
पेम सुरी सूधे धेनु सुंदर समान रंभा,
'आलम' चपल हय काम के सधाए हैं।

---

1. बेह=बेध, सूराख, छेद।
2. कुसुमाकर=बसंत।
3. बक्र=तिरछे कटाक्ष।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रीति मधु[1] पूतरी कलप लच्छी पूरन,
धनतरि सुदिष्टि गज गति पलटाए हैं।
काहे कों समुद्र मथि देवतान श्रम कीनों,
चौदह रतन तिय नैननि में पाए हैं* ॥ 34 ॥

जानति हैं नीके रति रतन जतन जेती,
याते रतिपति हूँ कै तेजहि तजै है री।
अबेरौ कै आई है सबेरौ बन नेरौ यह,
मेरौ कह्यौ किये कहौ तेरो कहा जैहै री।
बिदा करि मोंहि दै तूं बादि ही बदावै बैठी,
कान्ह को बदन देखि बेदनि बढ़ै है री।
'आलम' बिलंबिये ना चलि आली लालन पै,
लाल ललना की दुति लखें ही लजैहै री ॥ 35 ॥

छल छांड़ि छिन छिया छबीली छबीले बोलि,
छोड़िहै न हा हा किये मेरे पायँ छू न री।
आन तीय तिनके री तन तन ताकति ये,
तिन तन तनक ही तिन तोरि तू न री।
कांछे आछे स्वच्छ कान्ह कालिंदी के कच्छ कबि,
'आलम' कछू उछाह गावें तेरे गून री।
सुनि प्यारी सोच न सकोच ऐसे लोचनन,
चलि चित चाइ चाहि रचि चीर चूनरी ॥ 36 ॥

चोली चारु चीर कै चरन धरिबे को भई,
चाहै पति रुचि कै तू रची मुखचारि की।
नीर भरे काहे नये नीरज-नयनि नारि,
आन कान्ह नेरे हुती न्यारी सोऊ नारि की।
तेरेई महतु हेतु ताते हौं कहति तो सों,
'आलम' कहे सुआली अति मनुहारि की।
मूरख न होहि री न मुख मोरि मेरी सिख,
प्रान की मूरति सुनि मुरली मुरारि की ॥ 37 ॥

---

1. मधु=अमृत।
* नेत्र में चौदह रत्न दिखलाये गये हैं। यह कमाल इसी कवि ने दिखलाया है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

छीन भई रजनी रसिक रितुराज की, न,
छीन भयो मानु, जाते लालच न डोली री।
प्राचियो रची पै तू न रची मेरे बचननु,
अलि माला बोली पैतू बोलहू न बोली री।
द्रुम बेली हलीं तू न हली अली चलिबे कों,
चकई मिली पै तू न हियो खोलि बोली री।
उये रबि कौन काज उठन रूठन तेरौ,
'आलम' न बंचि काल सुरति कलोली री ॥ 38 ॥

तू तौ मेरी प्रानप्यारी प्रान की कहत तोसों,
ऐसे प्यारे प्राननाथ पर प्रान वारिये।
साँवरौ सँवारे सैन सुनि री सँवारे हू सों,
ऐसी सैन सौरि[1] क्यों न आपको सँवारिये।
'आलम' पियूषनिधि अधर-अधर जोरि,
सरस अमिय जाहि पूजै न पवारिये।
अनेग[2] नारीनु तजी नागर सुनग[3] नारि,
तासों री न गहि मानु होहि न गंवारिये ॥ 39 ॥

अरी अनबोली तूं तौ बोलेहू न बोलै पुनि,
अनंग बली के व्यापें अनबोली जाहिगी।
करि कह्यो, गौन करि, हठ हू न करिये सो,
करसोंऽ ब कर जोरि करि कर लाहिगी।
'आलम' समुझि होहि सामुहीं समीप सम,
ऐसो स्याम तजि स्यामा कोहे मैं समाहिगी।
पूंछे तें पिछौरी तानि पाछै दै रही है मोहिं,
पिय रस बुझें प्यारी पाछे पछताहिगी ॥ 40 ॥

नेक निसि नासिहै तौ नारि न सकैगी सहि,
मनसिज सोस[4] संक मेरे संग नासु री।

---

1. सौरि=स्मरण करके।
2. अनेग=अनेक, बहुत-सी।
3. सुनग=सुंदर रत्नवत्।
4. सोस=शोच।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ऐसी सुसयानी ऐसे समै कैसे स्याम जूसों,
सारस सी अँखियनि ऐसे भरै आँसु री।
किसलै कुसुम-सैन 'आलम' संचित सुख,
सविता-सुता[1] समीप सरस निवासु री।
बिसरैगो रोस रिस सब ही रसिक संग,
सुर सों या बन में सुनैगी नेंकु बाँसुरी ॥ 41 ॥

मानिनी अनमनी ह्वै मौनी कौ सौ मौन गह्यौ,
मानो कहूँ मन गयो तेरे मन माँह सों।
रारि सों मुरारि बैठे हारी मनुहारि कै तू,
नारि यों निवारि आरि[2] जोरि बाँह बाँह सों।
'आलम' अकेलो तू मैं आजु कछु और देखी,
औरै सुनी औरै चालि औरनि की छाँह[3] सों।
छपाकर छपे छिनु छीन भई छपा[4] छीआ[5],
छाँड़ि दै छबीली अब नाहीं कीबौ नाह सों ॥ 42 ॥

बातौ न कहत सुनि बात सूधे गात बौरी,
पेम-उतपात[6] कछू औरै बात बढ़ी है।
प्यारौ पियराइ पल बिकल परै न कल,
पलक पलक पुनि प्यारी जीभ रढ़ी है।
'आलम' उदास[7] बस रहत उसास लै लै,
कछु पढ़ि डार्यौ कहौ कौन मंत्र पढ़ी है।
तेरी चितवनि भयौ चकित अचेत माई,
चेटक सौ जाग्यौ कछु तूही चित चढ़ी है ॥ 43 ॥

उनकी बिकलताई देखि अकुलाई हौंही,
लागै बड़ी बार समाचार कैसे कै कहौं।

---

1. सबितासुता = यमुना।
2. आरि = हठ।
3. छाँह = कपटमय शिक्षा।
4. छपा = रात्रि।
5. छीआ = घृणासूचक शब्द।
6. पेम-उतपात = प्रेम-कलह, प्रणयमान।
7. उदास = शोक।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तपत उसासं आवै बारि न बयारि भावै,
हौही न बयारि भई सीरी सीरी ह्वै बहौं।
'आलम' निपट अकुलाये हैं री लाल तुव,
रस बस भये अब पायँ कर सों गहौं।
तजियै विलंब यामैं उनको अकाज होय,
चलिये कृपालु ह्वै कै न्यारे कैसे हौं सहौं॥ 44॥

कहूँ भूल्यौ बेनु कहूँ धाइ गई धेनु कहूँ,
आये चित चैनु कहूँ मोरपंख परे हैं।
मन को हरन को है अछरा[1] छरन को है,
छाँह ही छुवत छबि छिन ह्वै कै छरे हैं।
'सेख' कहै प्यारी तू जौ जबहीं ते बन गई,
तब ही ते कान्ह अंसुवनि सर करे हैं।
याते जानियति है जू वेऊ नदी नारे नीर,
कान्ह बर बिकल बियोग रोय भरे हैं॥ 45॥

तेरी गति देखें गति मति मेरी भूली और,
तैसेई पिया के रोम रोम कलमले हैं।
'आलम' अहै तो पापी दुहूँ दिसि पैनोई या,
पेम-परसंग के कहूँ ना ढंग भले हैं।
वा घरी तें वैसे ही उहाँही उही और दीठि,
पीठि पलटे तें मानों कान्ह काहू छले हैं।
चूर ह्वै कै चेत्यौ कहूँ बाँकी सूधी चालि आली,
तूं तौ चलि आई वाके नैनाऊ न चले हैं॥ 46॥

दोहन के मिस तिहि गोहन[2] लगाइ चली,
दोहनी भुलानी मन मोहनी मयी भयौ।
'आलम' कहै हो गुन[3] गेहऊ बिसार्यो उन,
देहऊ सँभार्यो नहीं नेहु ऐसो है नयौ।
सिथिल सिवार सेवै छूटे हुते बार तू जु,
लगीही किवार झाँकि हरि हरि सो लयौ।

---

1. अछरा=अप्सरा।
2. तिहि गोहन लगाइ चला=उसके निकट गयी।
3. गुन=हालत, दशा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अधर सुखात बूझें आधियो न आवै बात,
अधो मुख देखि मन आधोआध[1] ह्वै गयो ।। 47।

साधे राज हंस ते तौ हौंसनि हँसाइ गयो,
ये री तेरी गति देखि फिरो गुन करी[2] को ।
लाँक की लचक लसें लहँगा की ढिग[3] ढुरै[4],
चूरी ही में चाहि चूर भयो वाही घरी को ।
'आलम' अजहु आहि रस बस पर्‌यो जौ लौं,
जग्यो नहीं जोग वा वियोग-बिस-वरी को ।
रूप गुन आगरी तू नागरी तें आगे[5] ह्वै कै,
तैं जु डग भरी डगमग्यो मन हरी को ।। 48।

जोग कैसे फेरनि वियोगी आवै बार-बार,
जोगी ह्वै है तौ लगि वियोगी बिललातु है ।
जा छिन ते निरखि किसोरी हरि लियो हेरि,
ता छिन ते खरोई धरोई पियरातु है ।
'सेख' प्यारे अति ही बिहाल होइ हाय हाय,
पल पल अंग की मरोर मुरछातु है ।
आन चाल[6] होति तिहि तन प्यारी चलि चाहि[7],
बिरही जरनि ते बिरह जर्‌यो जातु है ।। 49 ।।

नीर सों रचै न रसकन को दुरै न ऐसे,
पेम परतछ ज्यों पुरै न को सो पातु है ।
नेक डीठि जोरतही चोरी भई चातुरी की,
गोरी गुन आगरी गरतु याही गात है ।
तेरे अरु पी के निजु ही के समाचार हैं री,
का की कहौं तोसों हरि ज्यों ज्यों बिललातु हैं ।

---

1. आधो आध=दो टुकड़े, घायल ।
2. करी=(करि) हाथी ।
3. ढिग=गोट, संजाफ ।
4. ढुरै=आसक्त हो गया ।
5. आगे ह्वै कै=बढ़कर ।
6. चाल=दशा ।
7. चाहि=देख ले ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तनक मैं बेग ऐसो मद हू को नाहीं माई,
जैसे बेग नैननि मैं नेहु आइ जातु है ॥ 50 ॥

संकेतस्थल वर्णन

सीखन सिखाय जाय धीरजु बँधाइ लाय,
बतरस लाय कहीं नेह की जु बात है।
'आलम' सुकबि कछु सोच ही में लोच्यो मन,
कान्ह के बचन सुनि कानन हिंतात हैं।
जेतक नवोढ़ा हियो पोढ़ा कै कै पिय तन,
देखै दुरि दुरि नैना लागे याही घात हैं।
चलै दीठि कोर फिरै घूंघट के छोर ह्वै कै,
लाजन के मारे तारे नीचे नये जात हैं ॥ 51 ॥

आई आई ह्वै रही तौ आई सखी धाइ सब,
उन्हें देखि आई जान्यों झूठे ही कहति है।
पुनि सुनि पाय धारे 'सेख' प्यारी सनमुख,
ताकि मुख मोहनी सुभ्रम ही गहति है।
अंक भरि लीन्हीं परजंक पर पौढ़ि तब,
सपनो समुझि बारि अखियाँ भरति है।
बिरही हौ भारी सुधि अजौं न सँभारी अब,
तुम जानो प्यारी हम न्यारी ह्वै रहति है ॥ 52 ॥

प्यारी पिय दोऊ पहिली ही पहिचानि भये,
प्रान जनु पाये ज्यों ज्यों राति नियराति है।
'आलम' सकुचि लग-लोगनि[1] की लागी रहै,
दुरि दुरि देखें डीठि कैसे कै अघाति है।
लाज हू की ठौर तिहि ठौर है सचेत इत,
कोर हू सों जोरि नैन सखी मुसकाति है।
बाँधति दृगंचलनि बीच मनु मानो चलि,
चिकने से नेह गाँठि छूटि छूटि जाति है ॥ 53 ॥

1. लग-लोगनि=निकटस्थजन।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सरद उज्यारी निसि सीतल समीर धीर,
सोवत पियारी पिय पाये सुख सैन के।
'आलम' सुकबि आगे जागें वै रसाल लाल,
बालहि जगावें लगे लोभ बाल-बैन के।
चिलक सरीर रोमराजी राजै पिय पानि,
पल्लव उठे हैं जैसे चंदन में चैन के।
सकुची पनच[1] उतरें तें चाँप चारु सोहै,
धरे वे बिचित्र मानों पाँचों बान मैन के ।। 54 ।।

घूंघट-जवनिका में कारे कारे केस निसि,
खुटिला जराउ जरे डीवटि उजारी है।
उघट[2] किलक कटि किंकिनी नूपुर बाजैं,
नैंना नट नायक लकुट लट धारी है।
कहै कबि 'आलम' सुरति बिपरीति समैं,
श्रमजल अंजुली पुहुप भरि डारी है।
अधर सुरंगभूमि नृपति अनंग आगे,
नृत्य करे बेसर को मोती नृत्यकारी है।। 55 ।।

तैंसीऐ तरल तमधार सी तमाल बेलि,
रही हिलि मिलि अलि डोरनि के जोर सों।
कहूँये ललित रंध्र तारे से उज्यारे न्यारे,
कहूँ रहै एक ह्वै कलिंदी छबि छोर सों।
कहै कबि 'आलम' किलक हाँसी और ध्वनि,
सुनिये न आन बानी निजु मंद सोर सों।
कामिनी बिलासी कारे कुंजनि में कारे कान्ह,
जामिनि कहत जाम द्योस भयो भोर सों ।। 56 ।।

नायक की दूती

काम रस माते ह्वै करेरी केलि कीन्ही कान्ह,
फूलनि की मालिका हू मींड़ि मुरझाई है।

1. सकुची पनच=सिकुड़ी हुई प्रत्यंचा।
2. उघट=सम की ताल। यह 55वाँ छंद बहुत ही उत्तम उक्ति है

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'आलम' सुकबि यहि और सी न जानो बलि,
ऐसी नारि सुकुमारि कहो कौने पाई है।
कमल को पात लै लै हाथु याको गात छूजै,
हाथ लाये मैली होय गात की निकाई है।
अंचर दै सनमुख तासों बात कीजै,
ना तरु उसांस लागै मुकुर की हाई[1] है ॥ 57 ॥

हौं तो ल्याई कालि प्यारे कोटिक जतनु करि,
तुम ऐसे रोस ह्वै रुसाई सु कहा जु की।
'आलम' बिलोकि मोंहि मुख मोर्‌यो तौ[2] में आइ,
मैं हूँ मन में कह्यो सुबीतो रैनि आजु की।
अलप बयस अलबेलीयै खरीयै बाल,
नवेली न लीजै यों खिझाइ बसिता[3] जु की।
कर परसत कुँभिलात कलेवर वाको,
वाही तौ है एहो लाल फूल की सी नाजुकी[4] ॥ 58 ॥

जबहीं तू देखी ग्वारि वारि बाँसुरी बिसारि,
तनु मनु मोहि भयो महा दुखदाई है।
कछु न सोहाय पै उसाँसनि बिहाय दिन,
वाही की सुरति चित हित सों हिताई[5] है।
'आलम' कहै हो पर पीर की हरनहारि,
चितु की कहानी मुसुकानि ही मैं भाई है।
तेरे तो बचन मेरे प्रान के अधार हैं री,
हा हा कहि कैसे कैसे समाचार ल्यायी है ॥ 59 ॥

कान झांकी कौरे[6] लागि गोरी गोरी जैसी आगि,
तबहीं तें आँखिन में आगि-सी बरति है।

---

1. मुकुर की हाई है=आईने की तरह उसका मुख मलीन हो जायेगा।
2. तौ में आइ=ताव में आकर, क्रुद्ध होकर।
3. बसिता=वश्यता।
4. नाजुकी=सुकुमारता।
5. हिताई है=अच्छी लगी है।
6. कौरे लागि=द्वार के एक पाखे से लगकर।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आंजे नैन खाये पान हीरा जरी बीरैं[1] कान,
दसन की जोति छबि हीरा की हरति है।
ज्यों गई लगाइ नेहु बैठो है भुलाय गेहु,
ऐंठी भौंहै देखि देह ऐंठियै परति है।
मनु खोय पैनी भई पांजरनि बेधि गई,
काजर की रेख उर जाजर[2] करति है ।। 60 ।।

कुसुंभी पहिर हिये कुसुम के हार गूंथे,
केसरि कुसुम लखि लागैं दृग दूत री।
अछराते[3] आछी आछे चच्छु छबि छोरनिलौं,
आछी आछी काछी आंगी उरज अछूत री।
आज ही मैं देखी कबि आलम अकेली बाल,
चांद सो अथैंगो अबै अटाही ते ऊतरी।
चितवन हूँ सों प्यारी हित वित बस करि,
चित में समाय रही चित्र की सी पूतरी ।। 61 ।।

मुदित सरोज सम सुभग उरोज उर,
चातुरी के चोज मैं मनोज-बेलि बै गई।
कमल से हाथ रंभ जंघा गौन हाथी को सो,
हाथ ही हाथन सब स्यान मूसि लै गई।
अलबेली आलम मदन महा मोहनी सी,
मोतन लगाइ पीर महा मोह दै गई।
सिसुता की सानी बैस रूप की जुन्हाई जैसे,
आधे ही निहार नैना आधे आध[4] कै गई ।। 62 ।।

तबहुँ पठाई हों मनाई जाय आई हुती,
उन्हीं कह्यो जनाय जानी ऐसो स्यान है।
अब हौं जौ जाउँ लीनो नाउँ दीनो चाउ नहीं,
उतर न पायो फिरि आई ऐसे मान है।

---

1. बरैं=ढारैं।
2. जाजर=छेददार (जर्जरित)।
3. अछरा=अप्सरा।
4. आधेआध कै गई=दो टुकड़े कर गई।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'आलम' सुकबि काहू कान लागि कीनी ऐसी,
आउ बलि ऐहै मतो यहै मेरे जान है।
अनमने होहु न अबोले[1] कछु याते कान्ह,
आन भाँति कहौं मोंहि रावरे की आन है ॥ 63 ॥

कहौगे बसीठी यह ढीठौ[2] है करति आगे,
पाछे चढ़ि बिरह चहूँघा बैठि कूकिहै।
नेकु मग जात देखि ऐसे मुरझाइ रहे,
बात सुनि गात तौ पतौअ ह्वै कै सूकिहै।
कोंवरें हिया के तुम कठिन कटाछ कान्ह,
पैठ जैहै पीठि ह्वै कहूं जु ढिग ढूकिहै[3]।
कहै डीठि मूठि सी बढ़ैगी हियौ बेधि बेधि,
वहै नैना धनुक न वहै सर चूकिहै ॥ 64 ॥

वहै उनहारि रीझि आई हौं निहारि मुख,
कछुक सरद ससि कैसी अनुहारि है।
कौन धौं सँवारु कीन्हों सोभा को बिचारु चारु,
बार बार सोंचि मुख-चारि हू बिचारि है।
बिन हू सिंगार कबि 'आलम' सिंगार्यो तन,
गोरे आँक थोरे लाँक सादी सूधी बारि है।
कहिबे को मैनका पै रतियो न रूप ऐसो,
ऐसी कान्ह देखे बनै जैसी नीकी नारि है ॥ 65 ॥

अंग नईं जोति लै बरंगना बिचित्र एक,
आँगन मैं अंगना अनंग की सी ठाढ़ी है।
उजरई की उज्यारी गोरे तन सेत सारी,
मोतिन की जोति सौं जुन्हैया मानो बाढ़ी है।
'आलम' सुआली बनमाली देखि चलि दुति,
सुगढ़ कनक की सी रूप गुन गाढ़ी है।
देह की बनक वाके चीर में चमक छाई,
छीरनिधि मथि किधौं चाँद चीरि काढ़ी है ॥ 66 ॥

1. अबोले = चुपचाप, मौन।
2. ढीठौ = ढिठाई।
3. ढिग ढूकि है = निकट बैठेगी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ऐसे कैसे कहौं ऐसी और नीकी नारि ना पै,
नीके कै निहारे अति नीकी करि जानिहौ।
'आलम' सुकबि हम कहा पहिचानैं नाथ,
परख तुम्हैं हों सब बातनि की खांनिहौ।
जामिनी में जात सब कुंज में उज्यारी होति,
दामिनी कहोगे कहे कामिनी न मानिहौ।
सनमुख हुए सौहें डीठि ठहराति नहीं,
डीठि परे पीठि दएं आँखिन मैं आनिहौ ॥ 67 ॥

अंग अंग जगै जोति जोन्ह सी उज्यारी होति,
उजरी उज्यारी प्यारी मानो चंद जैसी है।
'आलम' कहै हो मन मन लौं बढ़ैये बात,
रूप की निकाई ताकी तहाँ लगि तैसी है।
और की पठाई हौं तो आवति हौं रावरे पै,
वा दिन की कुंज कोऊ औरौ नारि ऐसी है।
वहौ भूली औरों भूली सब सुधि बुधि वाहि,
हौं तो देखि रीझी तुम देख्यो कान्ह कैसी है ॥ 68 ॥

काम केलि बेलि सी अकेली कुंज धाम खरी,
बदन की आभा जनु फूलतु कमल है।
कहि कबि 'आलम' जगमगत अंग वाके,
रबि के किरनि मिलि कदली को दलु[1] है।
चाँद सो चमकि उठो दामिनी सी चमकति,
ब्रज की भामिनी किधौं रंभा[2] कीनो छलु है।
रूप की निकाई देखि हौं तो आई धाई कान्ह,
ऐसी जुवती के पाएँ जीतब[3] को फलु है ॥ 69 ॥

सची को सरूप लैके सुन्दर सरोज आनि,
सोभा सानि साँचे भरि ससि हू समेत की।
जोबन की जोति अंग मैन की तरंग तैसी,
सोने की सलाका जानु फैली फलि केतकी।

1. दलु=गाभा।
2. रंभा=इसी नाम की अप्सरा।
3. जीतब=जीवन, ज़िंदगी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कहै कबि 'आलम' करति नित चालि[1] आलि,
कैसे जाति बरनी हरनि हरि चेत की।
सादे मोती कंठ सोहैं पंच रंग अंग चारु,
सुरंग तरौटा[2] सोहै सारी सार सेत की ॥ 70 ॥

सारी सेत सोहै नख नूपुर की आभा सेत,
चंद मुख धारे अंग चाँदनी सी चंद की।
उरज उतंग मानो उमंगो अनंग आवै,
कसि बैठी आँगी उर गाढ़ी, जरीबंद की।
कहै कबि 'आलम' किसोरी बैस गोरी जगी,
जग की उज्यारी प्यारी प्यारे नंद-नंद की
सुभर[3] नितंब जंघ रंभा के से खंभ चलि,
मंद मंद आवै गति मद के गयंद की ॥ 71 ॥

आठो अंग[4] निपट सुठानि बानि ठानि ठई,
गाँठि से कठोर कुच जोबन की ठेंठी[5] है।
गुन की गँभीर अति भारियै जघन जुग,
थोरे ही दिनन गोरी रूप रंग जेठी है।
कहै कबि 'आलम' दिखाइ दुरिजाइ वारि,
घरी घरी मारि मारि मनहिं अमेठी है।
सखी सों कहत बात जगमग मुसकाति,
कौंल के से पात नैन पातरी अँगेठी[6] है ॥ 72 ॥

सीसफूल सीस धर्यो भाल टीका लाल जर्यौ,
कछु सुक्र मंगल में भेदु न बिचारिहौ।

---

1. चालि=चालबाजी।
2. तरौटा=अंतरौटा (अंतरपट) बारीक साड़ी से नीचे पहनने का कपड़ा।
3. सुभर=खूब भरे हुए, पीन।
4. आठो अंग। यथा—
दो० पहिले जोबन, रूप, गुण, सील, प्रेम पहिचान।
कुल, बैभव, भूषण, बहुरि आठो अंग बखान ॥
5. ठेंठी=गाँठ।
6. अँगेठी=(अंग+यष्टि) अत्यंत सुन्दर।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बेसरि की चूनी जोति खुटिला की दूनी दुति,
बीरनि[1] के नगनि तरैयाँ ताकि वारिहो।
'सेख' कहै स्याम बिधु पून्यो को सो देखि मुख,
बुद्धि बिसरैगी बेगि सुधि न सँभारिहो।
नभ के से नखत ढुरैंगे नहीं न्यारे न्यारे,
दीपक दुराय तब दीपति निहारिहो ॥ 73 ॥

देह में बनक[2] सी है लाँक[3] हू तनक सी है,
नूपुर झनक सी है महा छबि बढ़ी है।
चाल गति मंद[4] सी है लागै सुख कंद सी है,
निरखे तें चंद सी है कोककला पढ़ी है।
'आलम' के प्रभु बाके पटतर[5] दीजै कौन,
तेरे चित बसी वहै वाके सम गढ़ी है।
आँगन में पगु भरै सखी कंध बाँह धरै,
कंचन के खंभ मानो चंप लता चढ़ी है ॥ 74 ॥

चंद की मरीचि भरि साँचे ढारी सींचि रस,
कंचन जड़ित जनु रतन की पाँति है।
भूषण की आभा अंग सोभा के सुभाइ मिलि,
चाहे[6] चकचौंधै चितु रबि की सी कांति है।
'आलम' सुकबि नेकु छाँह के छुये तें कान्ह,
काम के संताप हू की होति सीरी सांति है।
बोलति चलति चितवति मुसकाति अति,
रूप की निकाई छबि औरै औरै भाँति है ॥ 75 ॥

मालती की माल सी विमल परिमल[7] मई,
किसलय कुसुम सुपद्मिनी की जाति है।

---

1. बीर=कर्णभूषण (ढारें)।
2. बनक=सुंदर बनावट।
3. लाँक=कटि।
4. मंद=शनि (शनि की तरह बहुत मंद गति से चलती है।)
5. पटतर=उपमा।
6. चाहे=देखने से।
7. परिमलमई=सुगंधयुक्त।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सोंधे भीने छूटे बार भार तिहि अकुलाइ,
डोले भर मोतिन की लर अरसाति है।
कहै कबि 'आलम' कुमारी बृषभान की सु,
ऐसी सुकुमारि देखि छतिया सिराति है।
अलप बयहि केलि अलबेली अकुलाइ,
कमल कली ज्यौं परसे तें कुम्हिलाति है ॥ 76 ॥

जुवती जहाँ लौं आई छबि उज्यारी छाई,
कुंज है जगमगात जोंहि कोऊ जानिहै।
मैं हू पहिचानी उन आप पहिचान्यो नहीं,
अजहूँ मनोज हूँ सों नहीं पहिचानि है।
कहै कबि 'आलम' न ऐसी कहूँ देखी सुनी,
रीझि रीझि रहो कान्ह देखैं मनु मानिहै।
सुखही की रासि रसरासि रूपरासि ऐसी,
रोम रोम नख सिख पानिप की खानि है ॥ 77 ॥

ससि है चकोरनि क ेभौरनि कों कौंल-माल,
मृगनि कों नादमई सुन्दरी सुजान है।
केलि कों कलपतरु सोभा ही कों रतिपति,
काम को पियूष ऐन काम ही के बान[1] है।
'आलम' सुकबि पचि[2] रची है बिरंचि ऐसी,
नेक हूँ न देखि लेहु कहा तुमै ज्ञान है।
रति को सुभाउ ऐन मैनका कै हाउ भाउ,
रम्भा के से रूप सब गुन की निधान है ॥ 78 ॥

बदन बिलोकि साध[3] सुधा की बिबुध करैं,
कुमुदिनि फूली जानि कुमुद को बंधु[4] है।
चंपा[5], सिंह, सारस, करिनि; कोकिला, कदलि,
बीजु, बिंब, लीने सब ही को मन बंधु है।

---

1. बान=(वर्ण) रंग।
2. पचि=बड़ा उद्योग करके।
3. साध=इच्छा।
4. कुमुदबंधु=चंद्रमा।
5. चंपा···बिंब=रूपकातिशयोक्ति अलंकार द्वारा इसका अर्थ गृहीत होगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'आलम' सुकबि ऐसी कामिनि बिचित्र रचि,
और कों जु रच्यो चाहै तू तौ बिधि अंधु है।
जैसी ऐं गुननि अति आगरी चतुर हरि,
तैसोई सरूप एक सोनो औ सुगंधु है ॥ 79 ॥

कंचन की बेलि तन बानि[1] सी बढ़त दिन[2],
छिन छिन रूप जोति नैननि समाति है।
भारी सो लगतु हियो ज्यों ही उर ऊँचो होतु,
डगनि भरति कटि टूटिबे डराति है।
'आलम' सुकबि हरि मोहति मोहनी ह्वै कै,
नेकु तिरछौहैं चाहि मुरि मुसुकाति है।
बोलत चपल जकै मैनु थकै मैनु बकै,
सोभा की रसाल बाल बरनि न जाति है ॥ 80 ॥

पहिरे कुसुंभी सारी सादी सेत आँगी आँग,
छाती छबि चाहि फेरि छाह हीं चहति है।
चूड़ा पांइ फेरि करि बेसरि सुधारि धरि,
कंकन करनि फिरि मन उमँगति है।
कहि कबि 'आलम' चलति फिरि ठाढ़ी होति,
आलिनु के साथ अलबेल्यो ही करति है।
अलग लग्यो सो लाँकु बोले डग डोलै ऐसे,
डगनि भरति जनु लगसी[3] लफति है ॥ 81 ॥

सुनि चित चाहै जाकी किंकिनी की झनकार,
करत कलासी सोई गति जु बिदेह की।
'सेख' भनि आजु है सुफेरि नहिं काल्ह जैसी,
निकसी है राधे की निकाई निधि नेह की।
फूल की सी आभा सब सोभा लै सकेलि धरी,
फूलि ऐहै लाल भूलि जैहै सुधि गेह की।

1. बानि = रंग।
2. दिन = प्रतिदिन।
3. लगसी = लंबी लचकीली बाँस की लौद।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कोटि कबि पचैं[1] तऊ बरनि न पावै फबि[2],
बेसरि उतारे छबि बेसरि के बेह[3] की ।। 82 ।।

अलबेली बैंस बाल चंबेली की माल गले,
अलबेली प्रीति पिय रंगीली रँगमगै ।
सोने की सी छरी छबि छाजति छबीली तिय,
अंग अंग ठौर ठौर झिलमिली सी लगै ।
अलबेली बोलनि हँसनि पुनि अलबेली,
अलबेली डोलनि में जोति सी जगमगै ।
नैननि मैं भौंहनि मैं अधर कपोलनि मैं,
ऐसो जाको जोबन जराउ सो जगमगै ।। 83 ।।

हार हू को भार उर केहूँ ना सँभारै नारि,
अलप अहार रस बास को अहार है ।
सीरें सियराइ तातें तातीसी ह्वै जाइ डोलै,
पौन के परस प्यारी पान की सी डार है ।
कहि कबि 'आलम' न रंभा हू न रति हू मैं,
मैनका[4] घृताची ऐसी रूप की अपार है ।
बानक बिचित्र अब चित्रित न होइ ऐसी,
चित्र लिखि पूतरी जिआई करतार है ।। 84 ।।

बिरही बिलंबि खांगै[5] बिरह बियोग माँगै,
प्रेमहि प्रतीति है सुनेमहि निबाहि हौ ।
'आलम' सनेही वे जु देही के दहे हैं ते तौ,
जोगी जैसें मिले हूँ बियोगी जानें ताहि हौ ।
कौंधनि सी झांकि चकचौंधनि लगाई जिन,
काल्हि तें कन्हाई तुम रीझि रहे जाहि हौ ।
पून्यौ ऐसी आनि घर पैठिहै घरी में बलि,
देहरी दुवार लगि दीपकु न चाहि हौ ।। 85 ।।

---

1. पचैं=कोशिश करें ।
2. फबि=फबन ।
3. बेह=(बेध) छेद ।
4. मैनका, घृताची=इंद्रपुरी की अप्सरा विशेष ।
5. खांगै=कम होता जाता है, कृश होता है ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पानिप सों मोती जैसे थहरात थार पर,
तैसेंई चपल नैन थिरकनि थोरी है।
बचन के आगें भाइ भौहनि अगाउ जाइ,
सजनी समुझि रीझि आप भायें[1] भोरी है।
'आलम' कहै हो बिधि उर ते उतारि आनि,
पान की सी अनी सी उलटि कटि जोरी है।
झीनी आँगी झलकै उरोज को कसाउ कसें,
जावक लगायें पाउँ पावक तें गोरी है॥ 86॥

तरल[2] तुरंग नैना तरुनाई भरि आई,
गोरे मुख सोहै अरुनाई अधरन की।
सरल सुदेस केस तरल तरौना[3] दोऊ,
चलत कलाई नीके ललित करन की।
अमर-मूरति कबि 'आलम' है मेरे जान,
कोऊ अमरावती तें आई अमरन की[4]।
रंभा ऊ न भावै ऐसे रूप को आरंभ[5] देखि,
सोभित सरीर मधि आभा आभरन की॥ 87॥

रस भरी रूप भरी सुखद सुबास भरी,
सोभा के सुभाइ भरी ऐन मैनका सी है।
दर्पन सी देह ऐसी नेह की नई नवल,
ब्रज में न देखी कोऊ सुरपुरबासी है।
'आलम' सुकबि लोनी सोने के सरोजहू तें,
फूल ही के भार[6] भरि पान की लता सी है।
चंदन चढ़ाये चंद चाँदनी सी छाइ रही,
चंद्रमा सी मुख छबि हाँसी चंद्रिका सी है॥ 88॥

---

1. अप भाएं भोरी है=अपनी समझ में भोली-भाली है।
2. तरल=चंचल।
3. तरौना=कर्णफूल।
4. अमरन की=देवकन्या।
5. आरंभ=प्रथमोत्थान, उठान।
6. भार=वजन, तोल।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ससि तें सरस मुख सारस से राजैं नैन,
जोन्ह तें उजारो रूप रवनि[1] रसाल सी।
रति हू तें नीकी प्यारी प्यारे कान्ह जाके पाछे,
वेनी की वनक डोलैं मानो अलि आलसी।
सारी सेत सोहै कबि 'आलम' बिहारी संग,
चलति बिसद गति आतुर उताल सी।
फूल ही के भार भरि सीस फूल फूलि रहे,
फूली साँझ[2] फूली[3] आवै फूलन की माल सी ॥ 89 ॥

ब्रज की नागरी ब्रजनाथ अति प्रान प्यारी,
चली रूप बनि बनि बासव की बाल[4] सी।
रसिक रवन तजि आरस सरस मति,
रसना[5] की ध्वनि बोली रसना रसाल सी।
गोरे गात गहनो जराउ को जगमगत,
ऐसी कबि 'आलम' है जोबन-सु-भा* लसी।
दीपति नवीन नग पाँति पट झीने मानो,
कंचन के खंभ में दिपति दीप माल सी ॥ 90 ॥

मृग मद पोति झाँपी नीलंबर तऊ जोति,
धूम उरझाई मानो होरी की सी झारी[6] है।
लै चली हौं अँधियारी अंग अंग छबि न्यारी,
आरसी मैं दीप की सी दीपति पसारी है।
ऊजरो सिंगार 'सेख' जोन्ह हू को साजु कीनो,
जोन्ह हू में जोन्ह सी लसै सुधा सुधारी है।
बार बार कहत हौ प्यारी कों छपाइ ल्याउ,
कैसें कै छपाऊँ परछाहियो उज्यारी है ॥ 91 ॥

---

1. रवनि=(रमणी) स्त्री।
2. फूली साँझ=संध्या समय।
3. फूली=अति हर्षित।
4. बासव की बाल=बीरबहूटी।
5. रसना=किंकिणी।

* सुभा=सुंदर छटा।

6. झारी=लौ, लपट। मिलाओ="जाके तन की छाँह ढिग जोन्ह छाँह-सी होत।" (बिहारी)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

थोरे भाइ रीझि राचे प्रेम प्रीति पूरी साँचे,
ऐसे रिझवार को गिराइ गई गैन[1] ही।
प्रौढ़ा नहीं प्यारी सो नवोढ़ा अलबेली जानि,
खेलीं एक संग ते सहेलियो कहैं नहीं।
बीरी खाहु 'सेख' भनि पीरे पीरे होहु जनि,
बिरहु को भेदी[2] वाके भूलि हू भिदै नहीं।
बैन ही मैं कालि कछू मैन की सी मूरि डारी,
मैन[3] ही के रावरे सुनाउँ नाते मैं नहीं ॥ 92 ॥

अँखियन लागी ढरौ तब लगि फेरौ करौ,
तेरौ मनु माने तब मेरौ यहै काजु है।
सजनी बुलाई सब सौंज लेन धाई तब,
सौंह करों साजन समीप ही को साजु है।
कालि झुकि[4] बैठी आजु हँसि घर बैठी, मिटो,
मान मद, भयो वाके मदन को राजु है।
सीझी[5] वहै बात जाते रात पीरे गात भये,
खीझी नहीं कान्ह तुम्हैं रीझी वह आजु है ॥ 93 ॥

रस में बिरस जानि कैसे बसि कीजै आनि,
हाहा करि मोसों अब बोलि हौ तौ लरौंगी।
औरनि के आधे नाउँ आधी रैनि दौरि जाउं,
राधा जू के संग पै न आधो डग भरौंगी।
'सेख' होत न्यारे ऐसी पीर लाये प्यारे तुम,
अबहीं हौं बिरह बखाने पीर हरौंगी।
आज हू न ऐहै कोऊ कालि चलि जैहैं सौहैं,
परौं[6] लगि हौं ही वाके पाय जाय परौंगी ॥ 94 ॥

1. गैन=(गमन) चाल।
2. भेदी=काठ में छेद करने का बर्मा।
3. आप भी मोम (मैन) के बने हुए हैं। तममें तनक भी मैं (खुवादारी) नहीं है।
4. झुकि बैठी=नाराज हो गई।
5. सीझी=पूरी हुई।
6. परौं=परसों।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निझुकनि रैनि झुकी बादरऊ झुकि आये,
देख्यौ कहौं झिल्लिनि की झांई[1] झहनाति है।
पानी ते न पैंड़ों[2] बूझै पानि पसर्‌यो न सूझै,
काजर सी आजु की अँध्यारी कारी राति है।
प्यारी पै पठावत न मेरी पीर पावत हो,
प्यारी तौ तिहारी पिय तुम ही पत्याति है।
देह कांपै देखें द्वार गेह छांड़ि एतीं बार,
मिहरी[3] की जाति कोऊ दिहरी लौं जाति है॥ 95॥

जाकी बात रात कही सो मैं जात आजु, लही,
मो तन तिरीछे हँसि हेरि सुख दियो है।
ऐसे देखी आन कोऊ सो न देखी आन[4] तुम,
वाके देखे मानस मरू कै[5] कोऊ जियो है।
कै तो कहूँ बीधो[6] उर बेधिवे को ठौर नहीं,
'सेख' ऐसो रावरे कठोर मन कियो है।
पीरो नहीं प्रेम पीर सीरो न सिथिल भयो,
चीरो नहीं चितु या सु हीरो है कि हियो है॥ 96॥

मोती कैसी ढरनि ढरकि आवै नैना नेकु,
तुमैं ढौरी[7] लागी जानो गोरी ढरि आई है।
'सेख' भनि ताकों हाय हाय करौं पाय परौं,
आय बाय ऐसी जीय कैसे करि आई है।
नेहु नहीं नैननि सनेहु नहीं मन माहिं,
देह नहीं बिकल वियोग जरि आई है।
झूठे ही कहतु परबस मर्‌यो जातु हौं सु,
पर बस नहीं बरबस बरिआई है॥ 97॥

---

1. झांई = झनकार।
2. पैंड़ो = मार्ग।
3. मिहरी = स्त्री।
4. आन = आनबान।
5. मरू कै = मुश्किल से।
6. बीधो = अटका है।
7. ढौरी = बानि, आदत।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भोरी बैस राची जिनि भुरये ही साँची नहीं,
काँची प्रीति जानौ जहाँ कहूँ नैना लागे हैं।
'आलम' सनेही ते वे पैंड़े मैं न बेंड़े होहिं,
पैम पैंड़े आये पैंड़ बड़े ही सो भागे हैं।
बिरहनि वेधे नहीं जानत सनेह सोल,
लोनी देह दरसन पल पल जागे हैं।
अजों मसि भीजी[1] नहीं ऐसी मन बसी बातैं,
बोली ठोली हाँसी के कन्हाई दिन आगे हैं।। 98।।

जानति हौं तुम आपु आपुने हू हाथ नाहीं,
कछू मन खिन ही मैं खीन ह्वै कै खोयगौ।
खरैई निडर बैठे बगर उसाँसें लेत,
जानति हौं इन अँसुअनि डरु धोयगौ।
रोयबौ है कान्ह सुतौ सोयबौ को नेहु नहीं,
नेमु यहै पेम-पथु आये दुख बोयगौ।
आँखिन के आगे तुम लागेई रहत नित,
पाछें जिन लागो कोऊ लोग लागू[2] होयगौ।। 99।।

मनु मिल्यो जासों सुपनेहूँ मिलि जैए बलि,
हिये मैं जो ह्वै है तौऽ बएती कहा हाते की।[3]
'सेख' भनि प्रथम लगनि हिलगाने तन,
तैसी आवै तांवरि[4] भंवर मदमाते की।
जैसे तुम बिधे ऐसे ग्वारिनि बिधी है कान्ह,
हौं न कहौं बात राखि ठकुर-सोहाते की।
बैननि को मतो वाके मन हू में नाहिनै पै,
कछुक मिताई देखौ नैननि के नाते की।।100।।

रहै डीठि कोर ढांके बहुर्‌यो झरोखा झांकै,
दुहूँ कर कौरो टेकि द्‌वारो झांकै दौरिकै।

1. मसि भीजना = रेख आना।
2. लागू = निकट।
3. एती कहा हाते की = इतनी रुकावट की।
4. तांवरि = घुमरी (घूम-घूमकर गिर-गिर पड़ना)।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तीहु अलबेली तैसी लगी तलाबेली अंग,
नये नेह खेली लाजु हारी तिनु तोरि कै ।
'आलम' कहै हौ घरी घरी अटा चढ़ि जाय,
चाहै चहूँ ओर पाछे राखै नैना मोरि कै ।
नैंकु चलै चितै छाहँ ऊभी[1] ह्वै कै ऊभी बाँह[2],
बार बार अँगराय आँगुरिनु जोरि कै ।।101।।

विरह वर्णन

परम भावती तेरी लाल मैं बिकल देखी,
बपु न सँभारै कछु उठि न सकति है ।
कीनो कहा मोसों कहौ स्याम हौं बलाइ लेउँ,
जात धकधकी उर अनल धुकति[3] है ।
डारे सीरो नीर होति घीय ज्यौं प्रबल ज्वाल,
भहर भहर सिर पाँइ भभकति है ।
एक ई अधार वाके हिये है रहत प्रान,
त्राटक[4] लगायें मगु कुंज कौं तकति है ।।102।।

तीर सो लगै समीर ससि सों कहति सूर,
बिषु घनसार भयौ सारी भई सार[5] सी ।
'आलम' अनंग दाह कीनो है अदाह[6] तन,
अंगना के अंग अंग तपनि अँगार सी ।
दुखनि अड़ार[7] लाय सुखनि बिड़ार जाय,
मारि मैंन डारि दीनी पीरी पीरी डार सी ।
अजहूँ लौं पाय धारि तोषि लीजै पोषि नारि,
सोचही के सोक़ सूखी जैसे जलधार सी ।।103।।

---

1. ऊभी ह्वै कै=खड़ी होकर ।
2. ऊभी बाँह=बाँह ऊपर को उठाकर ।
3. धुकति है=जलती है ।
4. त्राटक=टकटकी ।
5. सार=लोहा ।
6. अदाह=(आदग्ध) पूर्णरीति से दग्ध ।
7. अड़ार=समूह ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ताती होति छाती छिनु जूड़ियौ ह्वै जाति कछू,
ताती सीरी राती पीरी बूझि न परति है।
'आलम' कहै हो कान्ह कौन बिथा जानों वाकी,
मौन भई काहू की न कानि हू करति है।
आगि सी झाँवति[1] है जू ओरो सी बिलाति है जू,
छिनु हू न देखे सुधि बुधि बिसरति है।
अँसुवनि भीजै औ पसीजै त्यौं त्यौं छीजै बाल,
सोने ऐसी लोनी देह लोन ज्यों गरति है ॥104॥

बेगि ब्रजराज तजि काज नेकु चलि तहाँ,
जहाँ बैठी प्यारी है सकल सुख दैन की।
'आलम' चकोर बिन चंद की चमक ऐसी,
चकित ह्वै रहै नहीं आवै बात चैन की।
सेज पर अँसुवनि सानि कै सुमन सब,
सैनन सुनावै सु सकति नहीं बैन की।
राति सिसिराति[2] न सिराति[3] सु सुरतिहीन,
सारस बदनि सु सताई अति मैन की ॥105॥

बिथा को बिचारु कै सकानी हू न जान्यो नैकु,
पीरी होति जाति अरु तातो सीरो गातु है।
सुमन सुहाते तैं तो हिये हूँ ते हाते[4] करि,
नैननि सो चाँद नेकु हेरे न हितातु[5] है।
तुम्हरे बियोग कबि 'आलम' बिरह बढ्यौ,
तुम बिनु प्यारे हरि कछु न बसातु है।
आइ[6] हू को ओर आये ऐसी गति होति भई,
ओरती[7] से नैना आँगु ओरो सो ओरातु* है ॥106॥

---

1. झँवाति है=बुझती है।
2. सिसिराति=सरदी बढ़ती जाती है।
3. सिरात=बीतती है।
4. हिये हू तें हाते करि=हृदय से त्याग दिये हैं।
5. हितात है=अच्छा लगता है।
6. आइ=आयु।
7. ओरती=ओलती।
*. ओरातु=खतम हुआ जाता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आंचर की ओट कै कै कोटनि की ओट कीन्हें,
परत फफोट[1] हैं बयारि लागे बन की।
मलय कपूर आनि राजिव के रस सानि,
नेकहू के लागें अति जागैं आगि तन की।
'आलम' सुकबि कहै बावरी ह्वै मौंगि[2] रहै,
हाइ हाइ कछू पीर पावो वाके मन की।
हम सब जतनु जुवति करि हारीं अब,
तुम हीं कहो सुनाय जतन जियन की ॥107॥

अनंगु दहतु याकों अँगन सहत दुख,
अँगनहिं सीरी करो अँगनहिं आइ कै।
फूल जलु चन्दनु समीरहुँ न सीरी होति,
अतिहिं तपति थकीं सकल उपाइ कै।
कहि कबि 'आलम' न डोलै औ न बोलै बाल,
नैन आँसू धार ढरै बैठी मुरझाइ कै।
मानो बिनु नीरेहिं अधार[3] बेलि ढीली जाति,
फटिक सलाका दुहूँ[4] राखी टेक लाइ कै ॥108॥

बैननि संतोषे श्रौन, नास घ्रान हूँ अघानी,
अति हूँ अनूप ओप रूप तोषै नैन द्वै।
अधर मधुर परसत रसना सरस,
काम केलि मिलि सुख साँचे अंग अंग छ्वै।
अब कबि 'आलम' बिछोहे छिनु छिनु तिय,
पिय पीय कहि कहि कहै कहो कहाँ स्वै।
सुरति समानी मन मनहीं मैं देखि बोलै,
मोरे जान पाँचहू समाने पांच रूप ह्वै ॥109॥

पिय जक लागे हूँ बिकल बकि थकि जाइ,
पूछे हूँ न कहै कछु काम छाया है छली।

1. फफोट=फफोले।
2. मौंगि रहै=चुप हो जाती है।
3. मानों.........जाति=मानो बिना निकटस्थ आधार के कोई लता गिरी जाती है।
4. दुहूँ=दोनों ओर।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'आलम' सुकबि लोग कहत मरूरै औरै,
अति कै मरूरै काम डरी मरी है अली।
जेतो उपचारु कीजै तेतोई बिकारु होतु,
जानि ऐसी बात हौं तौ प्यारे तुम पै चली।
चन्दन चुवाये नलिनी को रसु नाये आँगु,
पानी पाये जैसे प्रजरति चूने की कली ॥110॥

अटा चढ़ी हुती बिधु छटा सी छबीली प्यारी,
उझकि झरोखा तुम कान्ह ठाढ़े हे[1] कहूँ।
उतहीं गिरी ही[2] वैसी जौ न आली आन लागै,
जीवन की औधि ही[3] सु ऐसी टरी टेक हूँ।
'आलम' मयंक पूरो परिवा सो ह्वै गयौ है,
कुहू जौ न परै तौ रही ही कला एक हूँ।
एतियै भई तें अब जौ न बेगि ऐहौ प्यारे,
एहो निरदई तोहि दया नहीं नेक हूँ ॥111॥

जरीयै रटति ताकी जरी[4] न जुरति कहूँ,
जड़ ह्वै रहति फिरि जूड़ियौ कहति है।
'आलम' सुकबि सुधि एकौ न परत कान्ह,
देहहि बिकल किधौं बिरह दहति है!
सेज तें परति भूमि बैठे तें उठति पुनि,
ऐसे बहराइ तब पीयहि चहति है।
उलटि पलटि लोटि लटकि लपटि जाति,
चटपटी लागे खटपाटियै गहति है ॥112॥

जार्‌यो जु मनोज सिव तीजै नैंन ज्वाला करि,
वहै जोर जुर आयो तेही ज्वाल जरी है।
बिरह अपार ताकी पीर को न पार पायी,
पीय के उपाइ बिनु पोढ़े पास[5] परी है।

---

1. हे=थे।
2. ही=थी।
3. ही=थी।
4. जरी=जड़ी, बूटी, औषध।
5. पीढ़े पास परी है=बड़ी दृढ़ फाँस में पड़ी है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एते पर 'आलम' बसंत यह बैरी भयो,
बिस सी बयारि लागै ते ही बिस भरी है।
कीर की कलह कलमल्यो मनु कोकिला हू,
कुहकि कुहकि कान कलकान[1] करी है ॥113॥

प्रीति की परनि बैरी बिरह की जीति भई,
हारे सब जतन जहाँ लौं जानियत है।
वेदन घटै न बिघटी सी वहै जाति 'सेख'
आन आन भाँति उपचार आनियत है।
जन्त्र है न जरी कछु मरी जाति कन्त बिनु,
नेह निरमोही के न मन्त्र मानियत है।
चन्दन चितैए बरै चाँदनी न चाही परैं,
चन्दा हू की ओट को चँदोवा तानियत है ॥114॥

सीतल पनारी[2] जानि डारी पंच नारिन मैं,
पानी की पनारी[3] चहूँ ओर भरी पूरि है।
ओस मैं पसारि कै उसीर आनी सीरी करि,
तैसियै तुषार घनसार हू की धूरि है।
'आलम' कहै हो एहू जतन जुड़ैं ना बाल,
जीय की कठिन जीबो जुवती को दूरि है।
आस यहै एक है उसाँस जा न रुँधे छिनु,
नेहु के निबाहिबे कों आहि[4] बड़ी मूरि है ॥115॥

इहाँ तो ठकुरई है अबै नहीं और बार,
रावरे जु आपने सुभाइ कौहूं आइहौ।
'सेख' कहै उनके तो उनै रहे नैन भरि,
मोहिं फेरि मोहन बिलंब दरसाइहौ।
अब न चले तौ फिरि चलि न सकौगे उन,
अँसुवन कान्ह कहूँ ठाहर[5] न पाइहौ।

1. कलकान=परेशान।
2. पनारी=पौनार (पद्मनाल) कमलनाल।
3. पनारी=नाली।
4. आहि=आह, ठंडी साँस।
5. ठाहर=जगह, स्थान।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आइ घर राखौ बैठि घरनि कौं घेरि नातो,
घरिक में हरि घरनाई[1] चढ़ि जाइहौ ।। 116 ।।

तूहूँ आई हौं हूँ आई वाहौ दौरि आवति है,
ताकी कौन गति जाके जरें जीय जरियै ।
मूरि कों गईं ते आईं तेऊ इतही कों धाईं,
जान्यो बैरि बिरह बिरोधें जाहि डरियै ।
एतौ धीरें धीरें ऐहैं बने बागे बीर जैसे,
ढीले पाँइ धारत उपाइ कौन करियै ।
देखे दुख तीय के बिसेषे मरियो है माई,
लेखे[2] नाहीं पीय के परेखे[3] याहि मरियै ।।117।।

जीय की कहै न अनमनियै रहति प्यारी,
मनु ठौरु नाहीं सोई नारि औरै है भई ।
सुतनुप सीजै उर अँसुवन भीजै छीजै,
कहौ कहा कीजै जानो ठग मूरि है दई ।
'आलम' सुकबि ढिग हँसति सहेलिनि सों,
सपनो सो देख्यो काहू अपनाइ सी लई ।
बैन की सु-धुनि सुनि नेक ही झरोखा झाँकि,
अकल-बिकल[4] कछू बावरी सी ह्वै गई ।।118।।

चलहु छबीले पिय छबीली सों प्रीति बढ़ै,
छपाकर छपें पाछे दिन को उदोत है ।
सो तिय सताई मैन नैना सित असित ते,
अँसुवा चलत जनु सरिता को सोत है ।
एती बेर भई मोंहि इन आये मेरौ उत,
मनु तुम बिनु तपै तनक न ओत[5] है ।
चूनों सो लग्यो है आंग सुनो स्याम बिथा बाकी,
सूनी भौन देखि ताहि दूनो दुख होत है ।।119।।

1. घरनाई=घन्नई, घड़ों की बनी हुई नाव ।
2. लेखें……के=प्रियतम को इस बात का कुछ ध्यान ही नहीं है ।
3. परेखे याहि=इसी को सोच समझ कर ।
4. अकल बिकल=अत्यंत व्याकुल ।
5. ओत=आराम ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अधर अधर बिनु धरे न धरति धीर,
माधौ सुधानिधि वाके प्रान के अधार जू ।
बिलपति बाल सु अबल बोलै बोल लाल,
बोलति है बिलखि बिलोकति है बार[1] जू ।
'आलम' अलप सांस रही है सरीर सोई,
जतनन सखी राखै कीने सोधि सार[2] जू ।
बसन बिसारे बैसी मदन बिसिख बसि,
बिस की लहरि जैसें जाति बिसंभार[3] जू ।।120।।

रूठे तें न ठौरि छांड़े उठै न उठाये हठि,
कठिन हठीली अति बैठी निठुराई कै ।
कोक की कहानी कहै तासों कहौ कहा कहौं,
'आलम' जु कहि रहै जानि हौ कुराई[4] कै ।
मेरी न सिखति सिख आपुनी सिखावै सिख,
सखिनु की सिख थकी सिख सों दुराई कै ।
तुम हो चतुर चतुरापौ[5] वै तो चातुरी हैं,
चाहि चित चोरि लेहु एक चतुराई कै ।।121।।

कहूँ मोती मांग कहुं बाजूबन्द झबा झरै,
कहूँ हार कंकन हमेल टाँड़[6] टीक[7] है ।
ऐसे कै बिसारी स्याम ऐसी बैस ऐसी बाम,
पिहकि पपीहा की-सी बार-बार पी कहै ।
'सेख' प्यारे आजु कालि आल चाल देखौ आइ,
छिन छिन जैसी तन-छीजन की छीक[8] है ।

1. बार=द्वार ।
2. सार=प्रबंध ।
3. जाति बिसंभार=बेहोश हो जाती है ।
4. कुराई=क्रूरता ।
5. चतुरापौ=चतुरपना ।
6. टाँड़=भुजदंड का आभूषण ।
7. टीक=गले का आभूषण ।
8. छीक=क्षय ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सेज मैन-सारी[1] सी है सारी हूँ बिसारी सी है,
बिरह बिलाति जाति तारे की सी लीक है ।।122।।

कीजिये न बार यह बार और बार नहीं,
नैकु बार लागेहू ते बार ते बिसेखिहौ ।
खरी है निसाँसी[2] तैं तौ कीनी है बिसासी मारि,
दसई दसा सी लाख भाँति लखि लेखिहौ ।
जानत हौ लाल जैसे होत हैं हवाल फिरि,
बाल बिसराइबे की रेख आन रेखिहौ ।
पाखक तें पोखति हौं पाँखुरी सी राखी है मैं,
प्यारे फिरि लागे पल राख आनि देखिहौ ।।123।।

पान[3] की सी पान खाये हेम केसे पानी न्हाये,
पीयूष सो पान किये पानिप है जो कही ।
कोककला की सी कला कोकिला सी कल कुल,
काम की कलाल अरु जेती कला ओक ही ।
'आलम' बिचित्र हरि आपु ही रिझाय आई,
आपनी हितू यै जानि आये वाके ओक ही ।
लोल लता ललित ललामताई ललिता की,
लाल लालची कै लाई लव अवलोक ही ।।124।।

सखी की उक्ति सखी प्रति

नेह सों निहारै नाहु नेकु आगे कीने बाहु,
छाँहियो छुवत नारि नाहियों करति है ।
प्रीतम के पानि पेलि आपनी भुजै सकेलि,
धरकि सकुचि हियो गाढ़ौ कै धरति है ।
'सेख' कहि आधे बैना बोलि करि नीचे नैना,
हा हा करि मोहन के मनहि हरति है ।
केलि के अरम्भ खिन खेल के बढ़ायबे को,
प्रोढ़ा जो प्रबीन सो नवोढ़ा ह्वै ढरति है ।।125।।

1. मैन-सारी=मोम की बनी हुई गोट ।
2. निसाँसी=स्वाँसहीन (मुर्दासी) ।
3. पान की सी=पान की लता सी मुलायम ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कौरे[1] आनि लागैं पिछवारे सखी जागैं सौति,
आस पास भौन के उसांस ही को भरु है।
उन बसि कीने कान्ह देखन न दीने काहू,
मैं हूं बस कैहूँ न दिखैहौं कछू बरु है।
'आलम' बिचित्र स्याम आये मेरे मया करि,
ओऊ तिया आवौ बैठो उनही को घरु है।
पाये अरु पाये औ छपाये छतिया लगाये,
काम ते निडर भई अब काको डरु है ॥126॥

देख्यो है कन्हाई तब ऐसी ह्वै कै आई तो मैं,
कोटिक उपाय लाय जतननु ज्याई है।
'आलम' कहै हो आजु बैठे ही गिरी ही सुनि,
कहूँ नेरे बैरी आनि बाँसुरी बजाई है।
मेरे ऐसी मूरि ही मरी ·हू जिये छुये छिनु,
मरे ते कठिन यह कैसी मुरछाई है।
मारे डारे बिस ज्यों बिसारे बान मारीजानु,
झारे हू न मानै मानो बारे कारे[2] खाई है ॥127॥

आवत ही लखी बाल अतिही बिकल कछू,
तन न सँभारै जानो कान्ह देखि आई है।
वंसी को सबद किधौं बिसको बसेरो 'सेष',
किधौं बांस बिसअर[3] ताके छौना खाई है।
मोपै मूरी मंत्र हो सजीवन धनन्तर को,
ताहू पढ़ि दीन्हे एक लहरौ न पाई है।
नाऊँ सुनि लाल तब मैर सो जगत अब,
रसु सो पियाय केहूं जतननु ज्याई है ॥128॥

बिरह की मूरि जिहि मुरली के मारे माई,
को न भई जोगिनि बियोगिनी बैरागी है।
एक बरजे तें गई दौरी सुनि बौरी भई,
ताकों बन मेलि मूरि लैन को न भागी है।

1. कौरे=दरवाजे का एक पक्ख।
2. वारे कारे खाई है=सांप के बच्चे ने काट खाया है।
3. बिसअर=विषधर (सर्प)।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पावन दै पीर पेम आवन दे पूरो नेह,
आजु ही ते जरनि जुन्हैयाहू सों जागी है।
मेरो जो न कह्यो मानै मेरियै बलाय जानै,
जागन दै लाइ[1] याहि लागन दै लागी है ॥129॥

जूड़ी यौ जनाई माई किधौं काहू डीठि लाइ,
औचक मिले कन्हाई छतिया धरक तें।
घायल तराइल[2] सी मानो करसाइल[3] सी,
बार बार बाइल[4] सी घूमति घरिक तें।
लै गई लवाय घरघाली[5] घर घालिबे को,
हौं न उन्हें देत होन बाहिर फरिक तें।
दोहनियो डारि सिर मोहनी डराय आई,
थहर थहर आई काँपत खरिक तें ॥130॥

आपुन दही है परदाह को बिलगु मानै,
जानि बूझि रिझवति या कुबानि रावरी।
'आलम' संताप तन ताके हू तिया को तपै,
ताकै नेकु कान्ह ताको तोहि कहा तावरी।
तरुनी की डग कहा मुनि ही डुलावै सुर,
मुरली के सुनत डुलावे सीस डावरी[6]।
पेम को परोइ[7] लीजै बिरह न बोरि दीजै,
नेह को निहोर कीजै छीजै बिनु पाँवरी ॥131॥

घरु है कि बनु ह्याँ तौ भूलि परी जनु तेरो,
कहा भयो मनु कहि कौने बसि कीनो है।
जकी सी औ थकी सी है चितवति चकीसी है,
छली है कि छकी है कि काहू कछू दीनी है।

---

1. लाय = अग्नि।
2. तराइल = (तरल) चंचल।
3. करसाइल = (कृष्णसार) मृग।
4. बाइल = बातुल (जिसे बाई चढ़ी हो)।
5. घरघाली = घर को खराब करनेवाली।
6. डावरी = छोकरी (नवोढ़ा)।
7. परोय लीजै = मान लेना चाहिए।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'आलम' बिकल बागी[1] मैंन की ठगौरी लागी,
नैंननि की ढौरी लागी तातें तनु छीनो है।
यहई सुठौरई है परबस बौरई है,
हौं नहीं सो औरई है जाको नांउ लीनो है ॥132॥

हँसे हँसि देइ बोले बालै औ न खोलै पेम,
यातें पहिचानी कछु पीरी पीरी है भई।
'आलम' कहै हो याके हिये की पोढ़ाई देखौ,
कैसे कै दुराई माई प्रीति कान्ह सों नई।
अबै अनमनी हुती अँसुवा भरति ठाढ़ी,
औचक ही धाइ धाइ[2] भुज भरि है लई।
पूछे तिहि अँसुवा कहे हो ? कहै कैसे आंसू,
पलकैं पसारि दइं पुतरीनु पी गई ॥133॥

फूली सांझ[3] कै सिगार सूही[4] सारी जूही हार,
सोनो सों लपेटे गोरी गौने की सी आई है।
'आलम' न फेरफन्द[5] जानत ही चंदमुखी,
नन्द भौन दीपक जगाइबे को ल्याई है।
जोति सों जुरति जोति आगे नैंना जुरे जाइ,
चातुरी अचेत भई चितयो कन्हाई है।
बाती रही हाती[6] रसमाती छबि छाती पूरि,
पांगुरी भई है मति आंगुरी लगाई है ॥134॥

सखिन बुलावै कान्ह मुखहि न लावै झुकि,
दूतियौ निकारी बीनि बेगि ही बगर तें।
हौं न भई हाती[7] कहौं वाही की सुहाती ऐसी,
मान रस माती हौं न बोली डोली डर तें।

1. बागी=घूमती फिरती है।
2. धाइ=दूध पिलानेवाली।
3. फूली सांझ=संध्या समय।
4. सूही=सुर्ख।
5. फेर फंद=छल कपट।
6. हाती=अलग, एक तरफ।
7. हाती=अलग।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जौलों कहूँ मुरली की घोर[1] सुनी कान 'सेख',
घरी ही में देहली दुहेली* भई घर तें।
परी तिहि काल हुती पीरी पीरी बाल जनु,
सीरी भई सुनि छुटि बीरी गई कर तें ।।135।।

आन ठौर कान देतीं मनहिं बौराइ लेती,
मुरली की धुनि सुनि चितहिं न आनती।
कान्ह चितये ते तौ हौं देखि मुसिकानी कत,
भूली तब रूखी ह्वै कै त्यों ही त्योरी तानती।
'आलम' कहै हो कहूँ ऐसियो बिसासी है री,
जानि[2] बसि भई बात काहू की न मानती।
मोंसो मुख मोरि जैहै ओरनि सों जोरि जैहै,
काहे को हौं जोरीं नैना जौ हौं ऐसो जानती ।।136।।

हियो ना सिराउ बिसराउ न बियोग बरु,
माँगत मरूकै पेम पावक प्रजारी है।
व्याकुल के जीवे कल कीवे की जहाँ लौं मूरि,
बाँसुरी बिहून[3] बिसबेलि कै बिसारी है।
'आलम' रसाल गुन जाके नटसाल भये,
सोई मूलजीवनि सजीवनी हमारी है।
औषद हितावै ताहि वेदन न भावे जाहि,
भीरि छाँड़ि बीर बैद पीर मोंहि प्यारी है ।।137।।

काकी लाज काको डरु कौन आपु कैसो घरु,
कौन घरुबसी[4] कछू बातें घर की कहै।
सांस लेत हिये में सलाका ऐसी सालति है,
कान्ह चितवनि माई नित चित कों दहै।
'आलम' कहै हो परबस न बसात कछू,
भागे हूँ न छुटै दुख अति साथ ही गहै।

1. घोर=रसीली ध्वनि।
* दुहेली=कठिन (घर से देहरी तक जाना कठिन हो गया)।
2. जानि=प्रियतम।
3. बिहून=सिवाय, अलावा।
4. घरबसी=छिनाल, पुंश्चली।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पलक ते न्यारी कीनी नींदऊ बिडारि दीनी,
निसि दिन नैननि मैं बैरी बैठोई रहै ॥138॥

निरखैं निबाहैं तेई गोरी हैं कठोरी हम,
चोरी ही में चाहैं पतझारी कैसे पात हैं।
'सेख' कहि एक बार कान्हर की खोरि आयें,
ठौर रहै मानसु[1] कठोर सोई गात हैं।
मोहनी से बोल कारे तारनु[2] की डोल मिली,
बोल डोल दोऊ बटमारे बात बात हैं।
नैना देखें स्याम के तें बैना कैसे सुनैं माई,
बैना सुनैं तिनैं कैसें नैना देखे जात हैं ॥139॥

घर देखैं बन देखैं घरी घरी जाइ देखैं,
देखियो करत मनु देखि ना अघानो है।
'आलम' कहै हो अनबोली गैल लागी डोलै,
बोलि कै चितैहै याको चितु ललचानो है।
नेकु नैना फेरि कान्ह सैननि ही हँस्यो तब,
गैन[3] थकि ठौर चकी मैन हनी मानो है।
धमक सी लागी धाइ साल उठो डर आइ,
चौकि फिरि चितयो दुसारु सरु[4] जानो है ॥140॥

मेरो सो न मेरो मनु औरै कछु भयो जनु,
पलकैं न लागैं जागैं नैना औरै हैं भये।
जहाँ हुती तहाँ ठाढ़ी विरह की पीर बाढ़ी,
मदन की आगि जागी रोम रोम हैं तये।
'आलम' कहै हो भूली भोरहू तें भोरे[5] आइ,
द्वारे झूमि झांकी कान्ह देखि नेकु ही लये।
लटपटी पेचैं लखि चटपटी लागी आँग,
अटपटे आये लाल मोहिं लटू कै गये ॥141॥

1. ठौर रहै मानस=चित्त ठिकाने रहे।
2. कारे तारनु की डोल=काली पुतलियों की चंचल चाल।
3. गैन=(गमन) गति, चाल।
4. सरु=(शर) बाण।
5. भोरे आइ=धोखे से आकर।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बन सों बनिकै बनवारी ब्रज खोरि आइ,
बाँसुरी बजाई बाँधे बनिता बिबेक[1] के।
सुनि धुनि धाइँ बंसकाम धामकाम तजि,
रीझे प्रभु 'आलम' बिलोके बार[2] एक के।
उझकि झरोखें फिरि चाहि चली आली बर,
ठगि ठौर कान्ह रहे टेकें प्रीति-टेक के।
भृकुटी कुटिल चले लोचन तिरीछे तीखे,
मनु कटि गयो सु-कटाक्ष लागे नेक के[3] ॥142॥

आँगन ही खरी हौं मगन भई छगुनत[4]
स्याम अंग नीको वाके संग ही न गौनी मैं।
मनहिं मरोरि तोरि चोरि संग डोरि सखी,
नयो नेहु जोरि सो री गोरी खोरि कौनी मैं।
धौरे[5] ही तें धाय धुकि[6] 'आलम' अधीन करि,
हिये धकधकी है न धीरजु है धौनी[7] मैं।
अंचल की ओट मैं दृगंचल लगाइ नेकु,
मोहि गयी मोहिं सखी चपल चितौनी में ॥143॥

मनु अकुलाय तनु छिनु छिनु जाय जरि,
बनु न सोहाय पनु[8] याही तें न जाइहै।
चेटकु करत जेतो तिय को मरन तेतो,
लाज को हरन तोसों कोऊ न लजाइहै।
ता दिन निकुंज ही ते भाजे भोर 'आलम' सु,
मेरे जान चोरि चित अजहूँ भजाइहै।

---

1. बाँधे बनिता बिबेक=स्त्रियों की विवेक बुद्धि को बाँध दिया (विवेक शक्ति मार दी)।
2. बार=बाल।
3. नेक के=तनक से।
4. छगुनत=विचार करते हुए।
5. धौंरे=निकट।
6. धुकि=झपट कर।
7. धौनी=(धमनी) नस।
8. पनु=प्रतिज्ञा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राजिव दृगनि तेरे राजत बिलोकि दृग,
रीझि बसि भई खीझि कहूँ न पराइहै ॥144॥

खरीयै हुती सु तौ लौं खरीयै बिकल कीनी,
मनु हरि लीनो हेरि अब तन तें गयो।
देख्यो न अघाइ नैन लाइ[1] तन लाइ रही,
बिरह बढ़ाइ आइ जानों बिष दै गयो।
साँवरे से गात कबि 'आलम' सरोज चख,
अचानक आइ अब आँगन ह्वै कै गयो।
भोरी करि भोरै भौंह मोरि याही खोरि सखी,
नेकु मुख मोरि कै करोरि[2] जिव लै गयो ॥145॥

जब कह्यो देखि मित्र हौं तो भयो देखि चित्र,
अजहूँ लौं चित की अचेत चतुरई है।
रीझ्यौं हौं तिहारी इन नैननि की रीझि कों जु,
कौन मृदु मूरति रिझाय मुरझई है।
घूँघट की ढिग चाँपि भृकुटी उचाइ 'सेख'
मन्द मुसकाइ चपला सी कौंधि गई है।
तुम सोध वाही के सिधारे कुंज सुधापुंज,
मोहिं कान्ह घरी एक पाछे सुधि भई है ॥146॥

छीकत हौं गई जु वा साँवरे सों भेंट भई,
सर की सी दई री सुभाय सौंहैं हेरि कै।
'आलम' न नीरो आवै बेनु दूर तें बजावै,
दाधे पर लावै लोनु रह्यो मुख फेरि कै।
मनु संगही लगाय गयो सुधि बिसराय,
गनत न मति गाई ऊँचे सुर टेरि कै।
तब ही तें सुधि नाहीं रही कछू मोहि माहीं,
नैना ना अनत जाहीं रहे अबसेरि[3] कै ॥147॥

चंद को चकोर देखै निसि दिन को न लेखै,
चंद बिन दिन छबि लागत्ति अंध्यारी है।

1. लाइ = अग्नि।
2. करोरि = अच्छी तरह खुरच कर।
3. रहे अवसेरि कै = इंतजार कर रहे हैं, बाट जोह रहे हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'आलम' कहै हो आली अलि फूल हेत चलै,
काँटे सी कँटीली बेलि ऐसी प्रीति प्यारी है।
कारो कान्ह कहत गँवारी[1] ऐसी लागति है,
मोहिं वाकी स्यामताई लागति उज्यारी है।
मनकी अटक तहाँ रूप को बिचारु कहाँ,
रीझिवे को पैंड़ों तहाँ बूझि कछू न्यारी है ॥148॥

बरु करौ जिन्ह सों तें बैरिनि भई हैं ग्वारि,
तिनहि के आगे बात कान्ह की कहति है।
'आलम' सुगाय[2] कोऊ गारि लाय जैहै तब,
उनहि मिलैगी जाय ऐसे उमहति है।
पलकैं उचाट नैना चकि चारौ होत ऐसे,
औचक चितै कै फिरि नीचे को नवति है।
वहै जब मनसा में नेकु ठहरैहै फिरि,
डीठ ठहराये घर बाहर चहति[3] है ॥149॥

घर बैठे घैरु[4] कीजै ऊतरु[5] वनाइ लीजै,
औरै बतियाँ बनाय उपजैं नई नई।
नेक चाहे मुसकाय बहुर्‌यो न चाह्‌यो जाय,
पलकैं नवाय लीजै ठग ठगि सी लई।
तब लौं सयानु अभिमानु कबि 'आलम' हो,
जौ लौं आली नेकु खोरि कान्ह की नहीं गई।
वापै तें न आयो जात कीजतु वाही को भायो,
वा तन चितैये नेकु जनु वाही की भई ॥150॥

कहां आई बैरिनि बेसुधिन को सुधि देन,
सुधि आयें बुधि जाइ सुधि बुधि हरी है।
'आलम' ए आली तू तौ कालि हुती भली आज,
लाल की सी लगनि भुलानी बिसँभरी है।

---

1. गँवारी=गँवारपन।
2. सुगाय=संदेह करके।
3. चहति है=देखती है।
4. घैरु=किसी की निंदामय चर्चा।
5. ऊतरु=जवाब।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मोंहि देखि मोहन को मुख देखि मोही हौं सु,
मेहु है कि नेहु देहु दीन खीन बरी है।
बरस सिराने नैना बरसि सिराने नैना,
गहिली[1] गवांरि अजों पहिलियै घरी है ॥151॥

निधरक भई अनुगवति[2] है नंद घर,
और ठौर कहूँ टोहे[3] हू न अहटाति है।
पौरि पाखे पिछवारे कौने कोरे लागी रहै,
आँगन देहली याही बीच मँड़राति है।
हरि रस राती 'सेख' नेकहूँ न होइ हातो,
पेम मद माती न गनति दिन राति है।
जब जब आवति है तब कछू भूलि जाति,
भूल्यो लेन आवति है और भूलि जाति है ॥152॥

जबहीं जमुन जैहै सुधि बिसराइ ऐहैं,
घरो डारि औरनि के संग धाइ आई है।
रोम खरी रोव खरी काँपै थरहरै खरी,
जड़ हू रहति कछू जूड़ियो जनाई है।
'आलम' कहै हो अबहीं ते रिझवार भई,
दुरैं न दुराई मैं तो अब लौं दुराई है।
रूप रस प्यासी भई कान्ह तन डीठि दई,
गागरि भरन गई नैना भरि लाई है ॥153॥

ढिग चल्यो आवै अरु ढका[4] देत ढीली बाहं,
ढोटा ऐसो ढीठ नहिं पैयत डगर मैं।
नागरी आगरी हम तासों लँगराई[5] करै,
ऐसो कान्ह नागरु है बसत नगर मैं।

---

1. गहिली=बावली, उन्मत्त।
2. अनुगवति है=अनुगमन करती है। बार-बार जाती है।
3. टोहे हू न अहटाति है=ढूंढ़ने से भी नहीं मिलती।
4. ढका=धक्का।
5. लंगराई=लंगरपना, ढिठाई।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नेकहू न कह्यो करैं करैं जैसी मन धरैं,
'आलम' न काहू डरैं देख्यो अचगर[1] मैं।
वहै सुनि पैहै ऐहै दैहै गारी चारिं नैकु,
नूपुर निबारि[2] नारि नंद के बगर मैं ॥154॥

अटकावै मनु सु नटावै तनु टट[3] आवै,
हटक्यों न रहै हारी निपट हटकि कै।
पटकत मटुकी झटकि झटकत पट,
बिपट छटकि छूटी लट सु-लटकि कै।
'आलम' टिकाये डीठि टिक्यो टोकि टेकि भ्ज,
टकटकी लाई टरि गयो सो सटकि कैं।
कटि पीत पट सटकारी सांट कर नट,
चटपटी लाय टरि गयो मो भटकि[4] कै ॥155॥

बाँसुरी बिसद बंसी बट को बसेरो तहाँ,
त्रिबिध बयार बन बिसद बहति है।
बरन बिरह कवि 'आलम' विविध बर,
बार बैस बूझि मानों बिरसु गहति है।
बारिज बदनि बिरचौंहैं[5] बैन बानी वाकी,
बिपनु[6] बचन सुनि बिरचि रहति है।
बारक कहत बिलखौंही हौंहीं बार भई,
बार-बार मोसों अब बावरी कहति है ॥156॥

जिय की कहै न अनमनोयै रहति प्यारी,
मनु ठौरु नाहीं सोई नारि औरियै भई।
सुतनु पसीजै उर अंसुवन भीजै छीजै,
कहो कहा कीजै जानो ठगमूरी[7] है दई।

1. अचगर=शरारत, छेड़छाड़।
2. नूपुर निवारि=नूपुरों का बजना रोक लें।
3. टट=(तट) निकट।
4. मो भटकि कै=मुझको भटका कर।
5. बिरचौंहैं=विशेष प्रेम।
6. बिपनु-बचन=विपन्न बचन।
7. ठगमूरी है दई=किसी ठग ने कोई वस्तु खिलाकर बेहोश कर दिया है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'आलम' सुकवि ढिग हँसति सहेलिन सों,
सपनो सो देख्यो काहू अपनाय सी लई।
बेनु कीं सुधुनि सुनि नैका ही झरोखा झांकि,
अकल बिकल कछू बावरी सी ह्वै गई ॥157॥

गौन के सुनत रही मौन भूली भौन सुधि,
पीरी परि आई थकि बीरी रही हाथ ही।
चौंकति चकति पछिताति मुरछाति तन,
ताही छन आय डर लाय लई नाथ ही।
रही ही नवाय नारि पूछति पियारे के सु,
कैसे हूँ कैसे हूँ कै उठाय उत माथ ही।
मुख तन चितै हरबरे[1] गहबरे[2] गरे,
उतरु उसांसु आंसु आये एक साथ ही ॥158॥

नये नये नेह नये गेह नये नये बन,
नवला नवल नीके पारस परस ही।
किरच कपूर कर कोरें[3] बीरी भरि हरि,
कर बीरी देत करकर[4] उठी रस[5] ही।
रीझे कबि 'आलम' सुभाय ब्रजराय निसि,
भोरे भये ऐसे दृग कोर लों दरस ही।
सारस से सर से सरस अरसौंहैं रस,
रसिक रसिक संग जागे रास-रस ही ॥159॥

खंडिता वर्णन

रजनी बिहाने[6] उठे दोउ अरसाने अंग,
राधे रति रानी तैसे मोहन मनोज हैं।

---

1. हरबरे=शीघ्रता से।
2. गहवरे गरे=गद्‌गद कंठ से।
3. कोरें=कोमल।
4. करकर=कड़क, हूक।
5. रस ही=धीरे से।
6. बिहाने=बीतने पर।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'आलम' कहै हो पल कोरनि कटाच्छ देखि,
भोर ही खुलत मानो रातेई सरोज हैं।
सहज की अरुनाई अरु नीकी तरुनी के,
अधरनि रेख राजैं उपमा के चोज हैं।
कुसुम बंधूक की ज्यों लीकैं सोहैं न्यारी पीय,
नैन के परस लागे बरुनी के चोज[1] हैं ॥160॥

एक सुनि बोल अनबोले डोले फिरैं,
बाँह की डुलनि मनमोहन डोलाये हैं।
अंतर ही एक हये तंत्री[2] कैसे तंत्र भये,
ऐसे मंत्र काम लै कटाछनि पढ़ाये हैं।
हेरनि अहेरी तेरी गोत की अहीरी तैंरी,
हेरि हेरि मानसु अहेरो करि पाये हैं।
जाके नटसाल[3] ताके कैसे ह्वैहैं हाल ऐसे,
नैना तेरे लाल लाल काके लोहू न्हाये हैं ॥161॥

जनम दुहागी[4] जिनि देहरियौ देखी नहीं,
खिन में सोहागी भई ऐसो जाको भागु है।
मेरी हितू कैसीऊ पिया की हितू चित नहीं,
हौं न ताकी आली जामैं बिरह बिरागु है।
'सेख' प्यारे तेरी गति कहत न बनि आवै,
नेकु न्यारे होत हिये दीनो आय दागु है।
अब ही की घरी ऐहै घरी कि पहर ऐहै,
कत पीरी जाति तेरो केतक दुहागु[5] है ॥162॥

सीख सी भुलाई है कि काहू बवराई है कि,
खीझी है परोसिन की ऐसी जुरि धाई है।
मैं हूँ कह्यो तैं हूँ कहै हा हा चुप कै न रहै,
जोई जोई कहौ सोइ करिहौं दुहाई है।

---

1. चोज=पद चिन्ह।
2. तंत्री=तांत्रिक।
3. नटसाल=कसक, पीड़ा।
4. दुहागी=दुर्भाग्यवती।
5. दुहागु=दुर्भाग्य।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कान्ह सों पिछौड़ी[1] है कि कान्ह की कनौड़ी है कि,
मौड़ी है जु डरपी कै छल अति छाई है।
साँची कहौं आज तुम पायनि परत कान्ह,
मेरे जान दैया कहूँ द्वैज देखि आई है ॥163॥

तो सी ढीठी निठुर बसीठी देखी मैं न कहूँ,
मीठी मुख आगे पीठि पाछे करै रारि सी।
मेरे आये मेरी भई वापै वाही की ह्वै गई
दई को न डरु लोक-लाज दई डारि सी।
'आलम' सुकबि आई बातनि रिझाय मनु,
मुरझानो मोहन मुरी है बेझा[2] मारि सी।
बान सी बनाय सुलचाय हिये लाय इत,
तूं तौ चली नारि फिरि नावक की नारि[3] सी ॥164॥

मानस[4] को कहा बसि कीजतु है बावरी सु,
वासी सुरवास हू को बसि कै बसाऊं री।
मैनका को स्वामी कामकन्दला को कामी भोरि[5]
मैन हू की मानिनी को मन मोहि ल्याऊं री।
'सेख' मनमोहन के मोहन के मंत्र जंत्र,
मोहिं जे न आवें ते बिधाता पै न पाऊं री।
अखतनि[6] लेत हाथ चंदा चल्यो आवे साथ,
नदिन को नीर बीर उलटि बहाऊं री ॥165॥

प्यार की प्रतीति भये प्रेम को प्रकास अति,
तातें रस रीति प्रीति प्रगट जनाई है।
तैं न कह्यो मैं न लह्यो मैन कह्यो ऐन आनि,
बैनन की रीति सब नैननि में पाई है।

1. पिछौंड़ी = कम दर्जे की।
2. वेझा = निशाना।
3. नारि = वह नलिका जिसमें होकर नावकशर फेंका जाता है।
4. मनस = मनुष्य।
5. भोरि = धोखा देकर, छल कर।
6. अखतनि = मंत्राक्षत।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कंप थंभ स्वेद कछु भौंहनि में भेद मानो,
नेह को नवेद[1] दै कै लालन पठाई है।
चाली कछु औरै तें उताली बनमाली कह्यौ,
तोहि बनमाल सोहैं आली बनि आई है ॥166॥

दीरघ ढरारे से वै डोलैं मतवारे से वै,
कारे कारे तारे मानो मलिन अलिन के।
आये अरसात से सुफूले मुसकात से,
पै राती राती रेखैं छांड़े अरुन कलिन के।
'आलम' अलोल दिये केलि के कलोल भरे,
मानो दीप दीपत न कज्जल मलिन के।
मोहन प्रतच्छ पिय दच्छन सुलच्छन से,
आली तेरे चच्छनि में लच्छन नलिन[2] के ॥167॥

गहरु[3] करत कत गवनो हो गिरिधर,
रीझी हौं तिहारी सौं कहति गजगामिनी।
भली कीनी भोर भये हौं न भूली चतुराई,
राखे भोर भोर लगु कौन ऐसी भामिनी।
कैसे तन बने पट लसत कपोल नख,
हँसत दसन दुति दमकै ज्यौं दामिनी।
मरगजे[4] बागे[5] रस पागे नैना लागे आवैं,
आगे रही पाग धँसि जागे लाल जामिनी ॥168॥

नींद छाये रैन के उनींद दृग मूंदे आवैं,
नींद के आरस इंदीबर निदरत हौ।
पियरो बदन भयो हियरो छुवत मोहिं,
सियरो लगत ज्यों ज्यों नियरो करतु हौ।
'आलम' सु प्यारी जिहि ऐसे कै पठाये पिय,
जाके दिन प्रति उठि पगनि ढरत हौ।

1. नवेद=(फारसी) निमंत्रण।
2. नलिन=कमल।
3. गहरु=देर।
4. मरगजे=मलगत (शिकनें पड़ा हुआ।)
5. बागा=जामा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कच मुकुराये[1] मधुकर कीसी भाल लाल,
मुकर बिलोकी कत मुकरे[2] परत हो ॥169॥

खरी अनखात ह्वै है बारियो न खात ह्वै है,
झाँकि झाँकि जात ह्वैहै नेक भये न्यारे हो।
'सेख' कहै उनही सिखाइ पठये हो पिय,
झाँकी दैन आये तुम हिये झुकि हारे हो।
बोलो ताहि सों हों सौंहैं जोरै कौन भौंहैं ऐसे,
पाय परो वाके जाके पाय [illegible] हो।
प्यारी कहौ नाही मों ज[illegible] प्यारे कहै,
[illegible] रावरे परोसिनि के प्यारे हो ॥170॥

कै रहेंगी रोस वै जु कौहर सी काँवरी हैं,
ऐसो कोरा छाड़ि कत भोराभोर आये हो।
'सेख' निसि जागे के निमेष आवैं लागे, जिहिं
राग अनुरागे ऐसी भाँति ताहि भाये हो।
पाछिलियो जागि पहिचानि ही सु नाहीं जनु,
हा हा छलु छाँड़ो पिय पाइ परों पाये हो।
लटकि लटकि लटकन भये हिये लागि,
लटू कहूँ और मोसों लाट पाट लाये हो ॥171॥

लाये सारी देह इत चिकने सनेह चित,
पानी कैसी बूंद ऐन बैन ठहरात हो।
'आलम' अन्यारे नैना काहू के अनंग आनि,
रोष धरे नैननि लखे न नैन जात हो।
लोभी रस लच्छ ऐसे दच्छन के बँचिये जू,
लच्छन सदोष लाये आये अरसात हो।
डोले डोले बोलौ बैन जी पर ते डोलति हैं,
पी पर तिया ते भये पीपर के पात हो ॥172॥

ढीली ढीली डगैं भरो ढीली पाग ढरि रही,
ढरे से परत ऐसे कौन पर ढहे हो।

1. मुकुराये=छिटके हुए।
2. मुकरे परत हो=इनकार करते हो।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गाढ़े जु हिया के पिय ऐसी कौन गाढ़ी तिय,
गाढ़ी गाढ़ी भुजनि सों गाढ़े गाढ़े गहे हौ।
लाल लाल लोयन उनीदे लागि लागि जात,
सांची कहौ 'सेख' प्यारे मैं तौ लाल लहे हौ।
रस बरसात सरसात अरसात गात,
आये प्रात कहौ बात रात कहाँ रहे हौ ॥173॥

भली भई भोर भये पावँ धारे भावते जू,
हम अनभावती हैं भावतिनु भाये हौ।
रोस ह्वै कहत हैं न रिस कीजै रस की सु,
जाके रस रसे तिन बस करि पाये हौ।
ऐसो परिहसु[1] हियो तरकि मरीजै पै न,
'आलम' पतीजै पुनि पिय जानि पाये हौ।
अंग नये चिन्ह रतिरंग न दुरत नयो,
आंगन में अंग संग अंगना लै आये हौ ॥174॥

जम सी जुन्हैया जरौ जागत जु जाय निसु,
जामिनी के जाम जिमि जात जमजाल से।
आलियो न, और अकुलाइहौं अकेली अब,
'आलम' ए आली काहू आली पै ह्वै आलसे।
आरसी लै देखो अरसौंहें हों रसिक रस—
मसे धसे सीस केस भेस अलिमाल से।
अधर ललित लाल माल लाल पाग लोल,
लाल लाल नैना लाल लालची गुलाल से ॥175॥

बैन हरि कहे मुरझाइ सैन रही थकि,
गैन[2] ही में नैन उरझाइ कै रिझै गये।
और ही के भोरें आये भोर मेरे भौन कान्ह,
झांके पीरे सीरे तनु तातो करि तै गये।
रैनि अब आई सुनि सजनी न लागै पल,
रजनी के जागे दिन रैन जाग दै गये।

1. परिहसु = खेद, शोक।
2. गैन = (गति) चाल।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

खुले पल कोरनि तें तामरस भोर ऐसे,
आपुन उनीदे आये मेरी नींद लै गये ॥176॥

प्रेम-कथन

भली कीनी भावते जू पावँ धारे यहि खोरि,
अनत सिधारे कि बसत याही पुर हौ।
ग्वारि काहू गोपिकै धर्यो है सब गुनी जानि,
औगुन न जानौ तुम सबनि के गुर हौ।
'आलम' कहै हो चख चाहि चितु चोरि लीनो,
नीकी चतुराई कीनी भले जु चतुर हौ।
निकट रहत तुम एती निठुराई गही,
अब हम जाने कान्ह निपट निठुर हौ ॥177॥

जीउ है जानतु जेजे अनदेखे दुख होत,
जमुना ते आवत ही जात देखे जब तें।
भौनु न सुहातु है उसाँसन बिहात दिन,
रतिपति अगिनि दहति तन तब तें।
'आलम' कहै हो प्यारे काहू की तों पीर बूझो,
दूर ही तें बदन दिखैबो कीजै अब तें।
ऊंचे चितवत नाहीं नीचे मुसक्यात जात,
ऐसी निठुराई कान्ह कौने बदी कब तें ॥178॥

आवत परेखो[1] जहाँ जीय की न जानै कोऊ,
जरौ ऐसो ब्रजु तहाँ कैसे करि रहिये।
कालिंदी के कूल तकि कोटि सूल मूल भई,
मुरली की धुनि छिन सुनिये न सहिये।
'आलम' कहै हों कुलकानि गई जाति हुई,
बिरह बिकल भई कौलों बाट बहिये।
कासों कहों कहे कोऊ पीरो न बँटावै तातें,
चुप ही भली है कान्ह कछुवै न कहिये ॥179॥

1. परेखो=खेद।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

औरनि के आगे नाचे और ग्वारिनी सों राचे,
हम सौंहें नीची मुख ऊँचो कै दिखाइये।
बूझे करि नैन बोलो बैन जासों बाढ़ै चैन,
मैन के उदोत चारु बाँसुरी बजाइये।
नित ही मिलन कबि 'आलम' हो जी के प्यारे
मित्त चित्त पर हित-बतियाँ लिखाइये।
जासों तैं ठग्यो है मोहि ताही सों ठगैहौं तोहि,
कौन है ठगौरी तेरी मोहि धौं सिखाइये ॥180॥

देखिये न भाखिये न मन ही में राखिये पै,
आँगन ह्वै जै ये बोलो खेलो जासों रसु है।
'आलम' कहै हो कोऊ तन की तपनि हरै,
चितयें सिराइ ताहि यहै बड़ो जसु है।
औरनि की कहा कहौं बहुतन पिय प्यारे,
पीर पर बूझत न इहै परिहसु[1] है।
हौं तो चुप रही जानि इती निठुराई कान्ह,
तेरे जी में बसी है तो मेरो कहा बसु है ॥181॥

तू तौ चिते चलि गयो चित हू न कीनी ह्वै है,
मेरे चित वहै चितवनि भई साल है।
बावरी बिकल चाहि ठगी हौं ठगौरी वाहि,
बैरी बधू बारे मुख यहै बात चाल है।
'आलम' कहै हो काहू अबलौं न लागो मन,
लाग्यो तब जान्यो होत ऐसोई जंजाल है।
जापै बीतै सोई जानै कहे कान्ह कौन मानै,
तेरे जी की तुही जानै मेरो ऐसो हाल है ॥182॥

जादिन तें तुम चाहे[2] लोग कहै पीरी काहे,
पीरो न जनैये पल पल जिय जरिये।
'आलम' कहै हो गुरुजन सखी सौति सब,
औरै बिथा बूझैं जोई कहैं सोई करिये।

---

1. परिहसु=दुःख।
2. तुम चाहे=तुमको देखा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

घूंघट की ओट आंसू घूंटिबो करत नैना,
उमेंगि उसांस कौलौं धीरज यों धरिये।
याको मरियतु है जु ऐसे हंसि बोलो कान्ह,
ऐसी मया करिये तो ऐसे काहे मरिये ॥183॥

जैसे डोलैं पीरो पात लागे बात ही की बात,
ऐसो तनु डोलैं अरु ऐसो ई बरनु[1] है।
तेरी घाली ऐसी भई एहो कान्ह निरदई,
तेरे पेम परें भयो फांसी को परनु है।
सूधे रहि सूधे हेरि दीठि नेक हू न फेरि,
नेकु अनजोरे नैना जीय को जरनु है।
मनहिं मरोरि मुरि मुसकाय ढोटा तैं तो,
मुख मोर्यो सो तौ यामें और को मरनु है ॥184॥

मया[2] करि चितै चितु चोरि लीनो हितु करि,
हित बिनु चितै नहीं स्रोई सोच नित हैं।
'आलम' कहै हो पुर बास में जो बसी तिन्हैं,
नैसुक[3] न चाउ निसु बासर चकित हैं।
देखे टक लागै अनदेखे पलकौ न लागै,
देखे अनदेखे नैना निमिष रहित हैं।
सुखी तुम कान्ह हौ जु आन की न चिन्ता हम,
देखेहु दुखित अनदेखे हू दुखित हैं ॥185॥

बैना सुन जरनि अवांकी सोऊ सीरी होति,
पावक दहे को तेई स्रावक[4] अमिय के।
दूरि ही ते दरसि कपूर जनु पूरे पल,
फूल हू ते कोमल हिताने[5] हार हिय के।
'सेख' कहै प्यारे चित घर के उजारे दिया,
कहूं कहूं नैननि के तारे केहू तिय के।

1. बरनु=रंग।
2. मया=प्रेम।
3. नेसुक=तनक भी।
4. श्रावक=टपकानेवाले।
5. हिताने=अच्छे लगे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देखे बिन जियैं नहीं, देखे मुख जियैं हम,
तुम चिरंजीवो कान्ह जीय मेरे जिय के ।।186।।

कछु न सुहात पै उदास परबस बास,
जाके बल हूजै तासों जीते हू पै हारिये ।
'आलम' कहै हो हम दुहूँ बिधि थकी कान्ह,
अनदेखे दुख देखें धीरज न धारिये ।
कछुवै कहोगे कै अबोले ही रहोगे लाल,
मन के मरोरे[1] कौलों मन हीं में मारिये ।
मोह सों चितैबो कीजै चित हू की चाह कै जू,
मोहनी चितौनि प्यारे मो तन निवारिये ।।187।।

तुम निरमोही लोग औरै कछू बूझत हैं,
कहा एती बात को परेखो[2] जिय मानिये ।
भावै सोई आवै जु बियोगी दुख पावै जातें,
परबस भये एती मनहिं न आनिये ।
अब नैना लागे भागे कैसे छुटियत है जू,
पैंड़े के चलत सोई नीके पहिचानिये ।
नैननि के तारे तुम न्यारे कैसे होहु पीय,
पायन की धूरि हमैं दूरि कै न जानिये ।।188।।

बैठो कान्ह छिनु हू तो उनहीं को छोह करि,
तनु मनु पनु धनु कीजै नवछावरी ।
नैननि पै ह्वै जू प्यारे पैंड़ो करो पाँउ धारि,
पुतरीन प्यारी लगैं पायँनु की पाँवरी[3] ।
'आलम' तिरीछे चाहि हँसि कछु बोले लाल,
ता दिन ते हौं ही छकी छकी डोलौं बावरी ।
मोहि गये मोहि निरमोही ह्वै न आये यह,
मोहनी की खानि मुसुकानि है जु रावरी ।।189।।

नीची डीठि आपु क्यों हूं ऐसे ह्वै दिखैये जू पै,
कैसे हू न देख्यो जाय जेतो सोचु करिये ।

1. मरोरे=उमंगें, अरमान।
2. परेखो=दुःख।
3. पाँवरी=जूती।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुरली की धुनि सुनि द्वार उझकन[1] काज,
मन के चलत तन ही में काँपि डरिये।
लाजनि की भीर पल पैंड़ो[2] ऊ न पावैं नैन,
'सेख' धीरे सकुचि बिचारि पाँव धरिये।
कीजै कहा कान्हर कनौड़ो[3] ह्वै कै जीबो नाहीं,
ना तो एक बास में उसाँस लै लै मरिये ॥190॥

वंशी

सुर पाये सिर धुनि रहैं सब सुर मुनि,
नर खग-गन पल टारे ना टरत हैं।
'आलम' सकल तान-बान मृग मीन बेधे,
ताहू के हिये में जाय बेधोई करत हैं।
बरही मुकुट बंशीधर बनमाल यह,
बाँसुरी सबद सुनि पंगु ह्वै परत हैं।
समुझि सनेही भये सेही[4] किते तेही छिन,
नेकु न बिदेही और देही सो डरत हैं ॥191॥

बाँसुरी बिसारो ना तो ब्रज ना वसैगो कछू,
विधि बांधि बाँसुरी के बस करि दई हैं।
'आलम' कहै हो न्याइ नैन देखे मैन तवैं,[5]
कान सुनि कान्ह ऐसे तेई तन तई हैं।
चित अनचेते तुम तातें मुसकात हो जू,
रीझि मुरझाय कै सु केती गिरि गई हैं।
घूमैं लागे गाँसी सी उसाँसनि की आस नहीं,
रावरे को हाँसी है निसाँसी[6] औरे भई हैं ॥192॥

---

1. उझकना=झांक कर देखना।
2. पैंड़ो=रास्ता।
3. कनौड़ो=एहसान से दबा हुआ।
4. सेही=स्याही नामक जंतु।
5. तवै=संतप्त होता है।
6. निसांसी=स्वांस हीन (मृतवत्)।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जेते सुर लीने उर तेते छेद कीने और,
जेते राग तेते दाग रोम रोम छीजिये।
ताननि के तीखे जनु बाननि चलाइ देति,
चीरि चीरि अंगन तुनीर तनु कीजिये।
अन्तर की सूनी[1] घर सूने करै 'सेख' कहै,
सुनि सुनि सबद बसेरो बन लीजिये।
हम ब्रज बसिहैं तो बाँसुरी न बसै यह,
बाँसुरी बसाय कान्ह हमें बिदा दीजिये ।।193।।

न्यारे रहौ प्यारे अंगसंग की सगाई छांड़ौ,
औगुन गनैया लोग सौगुन सुगातु[2] है।
'आलम' संयोग बिनु बढ़त बियोग जेतो,
प्रीति पथ कान्ह मनु तेतो ठहरातु है।
औरनि की ओलै[3] अब बोलिहौं न रावरे सों,
डोलिये न साथ हियो हेरेई हेरातु है।
जीजै बिनु बातो चित रातो अनरातो कीजै,
नैननि[4] को नातो पै न हातो कियो जातु है ।।194।।

डगरो[5] दै जाहि नट नागर चतुर कबि,
'आलम' बसेरो दूरि जैबौ पुर बारि हैं।
लीजै दधि पीजै जान दीजै और काज कीजै,
खीझे ते पसीजे तनु भीजे पट चारि हैं।
जो रस बिचार्‌यो तुम सो रस न जानें हम,
गोरस लपेटी सब गूजरी गँवारि हैं।
जैसे तुम आछे हौ छबीले छैल तैसी और,
आछी आछी पाछे आवैं रीझो रिझवारि हैं ।।195।।

---

1. सूनी = खाली।
2. सुगातु है = संदेह करते हैं।
3. ओलै = बदले में।
4. नैनन···जातु है = देखना तो नहीं रोका जा सकता।
5. डगरो = मार्ग।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

धौरी आवै धौरी कहें धूमरी धूमरि आवै,
ऊँची कै कै पूंछनि बोलावै लाल जाहिनै[1]।
मेढ़ी कैरी काजरी पियरि बौरी भूरी चारु,
बलही मंजीठी बन बेला अवगाहिनै।[2]
मध्य सोहैं स्याम धूर धूसरित भूरी भौंहैं,
बलि बलि 'सेख' उपमा मैं देउँ काहिनै।[3]
गोबिंद को मनु कछू गायन में रमि रह्यो,
आगे गाय पाछे गाय गाय बायें दाहिनै ॥196॥

प्रवत्स्यत्पतिका

धीर तें अधीर भई पीरनीर[4] चीर भीजै,
सोचनि कुचनि पर लोचन बहत हैं।
'आलम' अंदेसे ऐसे कैसे यहि बैस जीजै,
ऐसे उसाँसन प्रान कैसे कै रहत हैं।
कहा करौं माई मेरे प्रान मेरे हाथ नाहीं,
प्रान प्राननाथ साथ चल्योई चहत हैं।
पल न लगत पल कल न परत सुनि,
आली री ललन कालि चलन कहत हैं ॥197॥

सेवा सावधान देव चरितन चित राखौ,
कहा भयो कान्ह जु कलेऊ रूंगें[5] खात हैं।
'आलम' ए वै हैं जिन बलि डारि बालि मारि,
रावन के कंध गारि बाँधे सिंधु सात हैं।
बाँभन अक्रूर नन्द जू के दुख दूरि करे,
ए तो पुनि पूरंनु पुराने वेई पात हैं।

1. जाहिनै=जिसको।
2. अवगाहिनै=जानकर।
3. काहिनै=किसकी (ये पंजाबी ढंग के रूप हैं)।
4. पीर नीर=दुःख के आँसू।
5. रूंगें=थोड़ा-थोड़ा माँग-माँग कर।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अंच[1] भरे कंचनहिं कीरा कहूँ कोरत हैं,
कंटक की कोर कहूँ हीरा बेधे जात हैं ॥198॥

घरते निकसि घरी एक जो रहत हैं तो,
घरी सी भरत नैन ऐसें ए अयान हैं।
बन लौं पनारत[2] पनारे से ह्वै रहत हैं,
निसि न्यारे नीर नये नारे ज्यों निदान हैं,
कैसे कबि 'आलम' संदेसे मधुबन के लै,
फूटे सर छूटे जल-धारा मेरे जान हैं।
जब हुते नदी पार आगे सुनौ नैना मेरे,
तब हुते नदी अब समुंद समान हैं ॥199॥

भँवरगीत

जाके जोग जुगिया[3] जुगत ही सों जोग जागें,
भगत संजोग बसि अलख अलेख है।
सनक सनन्द सनकादि शिव मुनि जन,
सारद नारद हू के लगत निमेष है।
'आलम' सुकबि आनि ब्रज नर भेष धर्यो,
ध्यावत हौ जाको ताके नाहीं रूपरेख है।
निगम तें अगम सुगम करि जान्यो तुम,
निरगुन ब्रह्म सोई सगुन के भेष है ॥200॥

सोई स्याम सुनहु अगाध कै समाधि ध्यावै,
सोईं स्याम रैनि जामैं नितही समाति है।
सोई स्याम पलक लगें तें स्यामताई ही मैं,
तनमय[4] होत तब कत पछतानि है।

---

1. अंच=(पंजाबी आँच) अग्नि।
2. पनारत=पधारते।
3. जुगिया=योगीजन।
4. तनमय=तल्लीन।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'आलम' सुकवि कहै सोइ स्याम बन घन,
तारनु[1] तें न्यारे नहीं कत बिललाति है।
तुमहीं मैं स्याम तुम स्याम ही मैं रमि रही,
बादि ही बिकल बिहवल भई जाति है ॥201॥

कर्म को बियापी को है धर्म कै समाधि ध्यावै,
श्रमु कै सुनावै सु तो ब्रह्म ही के नाम को।
कैसो जोग जुगति संजोग कैसो कहा जोग,
ज्ञान हू की गाँठि कैसी ध्यानन को धाम को।
'आलम' सुकबि इहाँ बृन्दावनचन्द कान्ह,
चित ये चकोर कहौ आन बिसराम को।
जहाँ रस परस सरस मुरली की घोर,
तहाँ ऊधौ सगुन निगुन[2] कौन काम को ॥202॥

रुचिर बरन चीरु चंदन चरचि सुचि,
सरदु को चन्द चाहि चितहि धरत हैं।
बिबिध बिलास बसि रास ब्रजपति प्यारे,
तेई ब्रज बतियाँ उचित उचरत हैं।
'आलम' सुकबि अब वैसे कान्ह ऐसे भए,
उतहि लुभाने किधौं इतहि ढरत हैं।
मधुबन बसत मधुर मुरली की धुनि,
मधुप कबहुँ माधौ सुरति करत हैं ॥203॥

पतियाँ पठाये अस्रुपात तौ भलै पै होत,
बतियनि बिरह बितैबो कछू हाँसी है।
'आलम' निरास बैन सुने कौन जोरै नैन,
हिये को कठिन ऐसो कौन ब्रजबासी है।
ऊधो ये संदेसे जैये वाही चितचोर पै लै,
आपुन कठिन भये और को बिसासी है।
यहाँ लौं न आवै नेकु बाँसुरी सुनावै आनि,
बिनसैगो कहा आये जो पै अविनासी है ॥204॥

---

1. तारनु = नेत्रों की पुतलियाँ।
2. निगुन = निर्गुण।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अँखियाँ भली जु ऐसे अँसुवनि धारैं, नातो,
धारा पल छूटे तिहुँ देस न समाति है।
औधि है जु धूम की उसाँस रूँधि राखी है सु,
नेकु लेत चौसहू अंध्यारी[1] होति राति है।
'आलम' संताप स्वेद सींचिवो अधार को हूँ,
झूरी ह्वै कै देह फिर खेह ज्यों उड़ाति है।
छाती पै सराहौं बरु दीया की सी भाँति ऊधौ,
पाती लिखे लेखनी ज्यों बाती बरी जाति है ।।205।।

तरनिजा तट बंसी-बट कुंज पुंज बीथी,
बन घन जहाँ तहाँ आनंदुपयोगी[2] हैं।
सोई रहै ध्यान ऊधौ ज्ञान को न काज कीजै,
ये तो ब्रजवासी ब्रजराज के बियोगी हैं।
'आलम' सुकबि कहै तन बीच कान्ह छबि,
जोग दैन आये तुम कहा हम जोगी हैं।
जोग तौ सिखैये ताहि जोग की जुगति-जानै,
जोग कों न काज हम बंसीरस-भोगी हैं ।।206।।

बाँसुरी सबद सिंगीनाद पूरि पूरि रहे,
ताही को अदेस[3] सोई तन मन धुनि है।
बिरह की ज्वाल साधैं साधैं जलु नैननि को,
निद्रा तन भूख साधैं साधैं उनमुनि[4] है।
'आलम' सुकबि यहि जुगति जागै सु जोगी,
अलि उपदेस हम सुन्यौ है न सुनिहैं।
सुमिरन मौन उर ऊरध उसाँस रूँधैं,
जैसे ब्रजबासी ऊधौ ऐसे कहा मुनि हैं ।।207।।

चाहती सिंगार तिन्है सिंगी सों सगाई कहा,
औधि की है आस तो अधारी[5] कैसे गहिये।

1. अंध्यारी=ध्यानावस्थित दशा।
2. आमंदुपयोगी=आनंद करने के योग्य।
3. अदेस=आदेश, आज्ञा।
4. उनमुनि=योग की एक मुद्रा।
5. अधारी=झोली।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बिरह अगाध तहाँ सुन्नि[1] की समाधि कौन,
जोग, काहि भावै जु वियोग दाह दहिये।
'सेख' कहै मैन-मुद्रा मोहन जु लाये बन,
मुद्रा लाओ काननि सुने ई सूल सहिये।
लागै लग[2] नेकहूँ कहूँ जो बैरी नीरो होय,
ऊधो एते बीच की बिचारि बात कहिये ।।208।।

गाँसी जाहि सूल ताहि हाँसी न हँसाये आवै,
पासी[3] परै पेम सुनि साँसी[4] कहियतु है।
मन गये मानस मरूरैं मारि साँस लेत,
परगट नैसकु उदासी कहियतु है।
'सेख' कहै सोई गति हरि बिछुरत ऊधो,
बावरे विकल ब्रजबासी कहियतु है।
सुर बांसी[5] बेधत बिसारे सर व्याधि सोई,
तातें बड़ो बधिक बिसासी कहियतु है ।।209।।

वारै[6] तें न पलक लगत बिनु साँवरे ते,
बावरे अजान ऊधो भले उपदेस हैं।
तादिन ते बन सूनो घरु है दहत दूनो,
तारनि[7] में ज्योति नहीं जटा भये केस हैं।
'आलम' बिहात छिन जानो जात कोटि दिन,
कौन रैन की समाई सुरति न नैस[8] हैं।
हम हू ते स्याम दूरि स्याम हू ते हम दूरि,
वै तो आछे काछे स्याम सखी मैले भेस हैं ।।210।।

---

1. सुन्नि=शून्य।
2. लग=लगन।
3. पासी=फाँसी।
4. साँसी=(साँची), सत्य।
5. बाँस=वंशी।
6. वारै तें=आरंभ ही से।
7. तारनि=नेत्र की पुतलियाँ।
8. नैस=तनक।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बूझि कै अबूझ ऊधो होत ऐसी बूझियै रे,
जो पै ऐसी बूझ तौ अबूझ किन बूझै जू।
झखत झुरत झखकेतऊ खिझावै झुकि,
तुम झुकवत झूठो जूझ कौन जूझै जू।
राजिव नयन मेरे आलम रहे कै ध्यान,
रीझ की रहनि में अबूझ कहा रूझै[1] जू।
प्रगटि जुगति जाहि जीजियतु ऐसी सुनि,
भोग की भुगति पायें जोग काहि सूझै जू ॥211॥

सबद सुबास रस रूप परसन ही को,
जाहि को न तोष पूजै ताहि को बियोगु है।
एक मग बंचिकै अनेक मग पंच कीने,
पंचसर व्यापत सकल ब्रज लोगु है।
'आलम' सुकवि ऐसी जुगुति लखावैं आपु,
तन को संजोगु कान्ह जोगिनि को जोगु हैं।
अमित अगाध रस भोगिन को भोग दीनो,
सुन्न को संयोग पायें जोग ही में भोगु है ॥212॥

जुग है कि जाम ताको मरमु न जाने कोऊ,
बिरही को घरी और प्रेमी को जु पलु है।
'सेख' प्यारे कहियो संदेसो ऊधो हरि आगे,
ब्रज बारिवे को घरी घरी घृतु जलु है।
हाँसी नहीं नैसकु उकासी[2] देत जोग तन,
बिरह बियोग झार औरै दावानलु है।
सिर[3] सों न खेलै पग पेले न परे लौं[4] जाय,
गिरि हू ते भारो यहाँ बिरहु सबलु है ॥213॥

जोगु दीजै जोगिन संयोगिन को भोगु दीजै,
राज भोग कान्हजी बड़ाई सब दीजिये।

---

1. रूझै = उलझे।
2. उकासी = फुरसत।
3. सिरसों न खेलै = न तो सिर पर भूत-सा सवार रहता है।
4. परे लौं = दूर तक।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'आलम' अलख ज्ञान मुकुति मुनिंद लेहिं,
देव कबिलास[1] बसैं पेमहि पतीजिये[2] ;
रूप रुकुमिनि रमै साईं सत्यभामा के हौ,
कुबजा के परस परेखे कत छीजिये ।
बिनती इहाँ की इहै याही बंसीधरजू सों,
हमैं नेकु बाँसुरी बजाइ मया कीजिये ॥214॥

वे तौ ऊधो परम पुनीत पुन्य पाइयत,
भावन प्रबीन प्यारे पावन दरस जू ।
गाँव की अहीरी हम गोरस की बास भरीं,
खरीये गँवारि गुन रूप ही न रस जू ।
कहे कबि 'आलम' बिराजित वै राजा कान्ह,
राजनि के राजा गुन पूरन दरस जू ।
बिसर्‌यो बसेरो बन बीथी अरु ब्रजबासी,
अति मन भाई पाई कुबिजा सरस जू ॥215॥

सीत रितु भीत भई छाती राती ताती तई,
ऐसे ताप, तिय तन तये हैं न तवैंगे ।
'आलम' अनिल इतराय कै कलिन मिलि,
दीन्हो है कलेस सुधि आये दूनो दवैंगे ।
ग्रीषम ते ऊषम है विषम अषाढ़ ऊधौ,
माधो जौ न आये मन भ्रमर ज्यों भवैंगे ।
बधिवे को बूंदनि बियोगिनि को बीनि बीनि,
आये वैरी बादर बिसासी बिस बवैंगे ॥216॥

पेम नेम गहैं नेह बातें निरबहैं जाते,
अब उन्हें कहा परी महाराज भये हैं ।
कछुक संदेसे ऊधो मुख के सुनाउ आनि,
हम सुख मानै उन जेते दुख दये हैं ।
इहाँ कबि 'आलम' पुरानी पहिचानि जानि,
जोगी सुधि आये ते बियोगी भूलि गये हैं ।

---

1. कबिलास = स्वर्ग लोक ।
2. पतीजिये = विश्वास कीजिए ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इहाँ बैरी बिरह बिहाल करै बार बार,
सालत करेजें नटसाल[1] नित नये हैं ।।217।।

जब सुधि आवै तब तन बिनु-सुधि—होत,
बन सुधि आये मन होत पात पात है।
'सेख' कहै सरद सहेठ[2] के वै गीत गुनि,
बाँसुरी की धुनि नटसाल गात गात है।
तुम कह्यों मानो उपदेस हम नाहीं कह्यों,
जैसी एक नाहीं तैसी नाहीं सौक सात है।
प्रेम सों बिरूधौ जिनि हा हा हियो रूधौ जिनि,
ऊधौ लाख बातनि की सूधी एक बात है ।।218।।

भावतो बिदेस जियें भामिनि कवनि भाँति,
भवन न भावे भ्रम भीत न सँभारिये।
'आलम' लगत नहीं पलनि सों पल पल,
प्रलय समान पिय बिनु पल टारिये।
उमड़त जल रही न्यारी है डरारी भारी,
डीलत डगन कहुँ कहो कहाँ डारिये।
हाथहिं कै लीजै लै कै दीजै ब्रजनाथ हाथ,
ऊधौ दोऊ अँखियाँ लै साथ ही सिधारिये ।।219।।

उद्धव का लौटना

लीजै छबि जुगति अछूती छाप प्रानपति,
सरसी है पलक पुनीत मेरी जासु है।
'आलम' उन्हें न परतीति और पेम बिनु,
बंसी बिनु और कहूँ ठौर न बिसासु है।
पतिया पठाई तुम बतिया न बूझी उन,
गति और नारि ब्रज औरै भयो बासु है।
बासर उसाँसनि सों औसरो न पावै पलु,
निस अंसुवनि सों न नेक हू उकासु[3] है ।।220।।

1. नटसाल=कसक, पीड़ा।
2. सहेठ=मिलन स्थान।
3. उकासु=छुट्टी, फुरसत।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मढ़हो[1] मलीन कुंज खाँखरो[2] खरो ई खीन,
मनु न लगत उदबस[3] लगै आन सो।
बिरह बिकल गोपी डारी हैं वै ठौर ठौर,
मानो अरसानी जागीं थाकीं करि गान सो।
'आलम' कहै हो जात मनक[4] न सुनी कान,
मेरियै बनक[5] कछू बाला पायो प्रान सो।
दूलह बराती लै कै राति ही सिधारी जैसे,
ऐसो ब्रज देख्यो माधो व्याह को बिहान सो ॥221॥

माती मद कोकिल उदासी मधुमास बोलै,
स्वाती रस तपति अबोली रहै चातकी।
'सेख' कहि भौंरा भौंरी कौंल.. गुंजारै पुंज,
छाती तरकति सुनि जुवती की जाति की।
रास रस आवै सुधि सरद सतावै ना तो,
बिरह बसन्त ब्रज घरी घरी घातु की।
चितवत चैत की वै चाँदनी अचेत भई,
जीती है जुन्हाई जिनि कातिक की रात की ॥222॥

जाको प्रात पंकज प्रकासे राते ताते लागैं,
तैसी कुमुदिनि ताहि ताती क्यों हितातिं हैं।
'सेख' कहि जाके अरुनोदै में अरुन नैन,
साँझहू की लाली में ते आली बिलखाति हैं।
चन्द की उज्यारी ब्रज ऊजर करति जुरि,
दीपक उज्यारी हू ते जरि जरि जाति हैं।
तरुन बियोग तरुनी को तन तायबे को,
जैसे दिन तरनि तरैया तैसी राति हैं ॥223॥

---

1. मढ़हो=मकान।
2. खाँखरो=झाँझर (जिसमें बहुत से छेद हों)।
3. उदबस=उजड़ा हुआ।
4. मनक=शब्द।
5. बनक=सूरत शक्ल।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तुम बिनु कान्ह ब्रज नारि मार मारी सु तौ,
बिरह बिथा अपार छाती क्यों सिराती हैं।
तरनि सो तमीपति[1] ताही सों तलप[2] तवै,
हेरति ज्यों निसा परी दसौ दिसा ताती हैं।
कानन में जाय नेकु आनन उघारि देत,
ताकी झार फूली डार दूरि तें सुखाती हैं।
बारि में जो बोर्‌यो तनु लागति ज्यों चुरै मीन,
बारिज की बेलैं ते बिलोके बरी जाती हैं ॥224॥

जसोदा बिरह

दान की दहेड़ी मिस कान्हर की बेर जानि,
देवकी के द्वार ह्वै कै केहूँ विधि दीजिये।
तजि सबै नात मात तात की न बात कहैं,
धौवा[3] धाइयै कहाय केहूँ बिधि जीजिये।
जरि जरि रहै मेरी छाती बरि बरि उठै,
'आलम' छिनहिं छिन छौना बिनु छीजिये।
गहरु न लाउ जिनि मोंहि अकलाउ आउ,
चलहु महर मथुरा ही घर कीजिये ॥225॥

कपिन को पेम देखि छाती सों लगावैं छौना,
बछरू न देखै तौलौं गैया न पेन्हाति है।
चिरिया की चाह देखि चोंचहू में चारो राखै,
चेटुआ[4] की चाह बिनु सोऊ न अघाति है।
'आलम' कठिन तेरो हियो हौं सराहों नन्द,
चन्दहिं पिछौंड़ो छाँड़ि लायो कारी राति है।
हम निरमोही मोही वनके पखेरू पसु,
बालक बियोगु कहूँ विपद बिहाति है ॥226॥

---

1. तमीपति = चन्द्रमा।
2. तलप = सेज।
3. धौवा = धाई के वंश वाले।
4. चेटुआ = चिड़िया का बच्चा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गोपी बिरह

हिये हूक हुलसी है, औधि हू न आये हरि,
हेरि मग हारी ताते भई तनु खीनी है।
'आलम' सुकबि थकी बिकल बयारि लागे,
मारि मैन सकल सकेलि बिथा दीनी है।
उससि उसाँसन सों पाँसुरी ह्वै न्यारी आई,
बीच बीच अंसुवनि आँखि भर लीनी है।
बिरह के बीज बये सलिल सों सींचि दये,
आछी भूमि मानो कामकाछी[1] क्यारी कीनी है ॥227॥

जब तें गोपाल मधुबन को सिधारे माई,
मधुबन भयो मधु दानव विषम सों।
कंचन में आँच गई चूनी चिनगारी भई,
भूषन भये हैं सब दूषन उतारि लै।
बालम बिदेस ऐसी बैस मैन आगि लागै,
जागि-जागि उठै हियो बिरह बयारि लै।
अब कत पर घर माँगन है जाति आगि,
आँगन में चाँदु चिनगारी चारि झारि लै।
साँझ भई भौन संझवाती[2] क्यों न देति है री,
छाती सो छुवाय दिया बाती आनि बारि लैं ॥228॥

जब तें गोपाल मधुबन को सिधारे माई,
मधुबन भयो मधु दानव विषम सों।
'सेख' कहै सारिका सिषंडी षंडरीच सुक,
मिलि कै कलेस कीन्हो कालिन्दी कदम सों।
जामिनी[3] बरन यह जामिनीयो जाम जाम,
बधिवे को जुवति जनावै टेरि जम सों।
देह करें करठा[4] करेजो लीन्हों चाहति है,
कांगु भई कोइल कगायो[5] करै हम सों ॥229॥

1. काछी=एक जाति विशेष जो तरकारी-शाक इत्यादि की खेती करती है।
2. संझवाती देना=चिराग जलाना।
3. जामिनी=जमराज की दूती (मौत)।
4. करठा=अति काली।
5. कगायो करै=कांव-कांव किया करती है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मैन बस कीनी मनभावन न आये याते,
सावन को आवन सुने हू अकुलाति है।
'आलम' बयारि बर बिजना की छीजै तनु,
बिजुरी की कौंदनि पसीजि भीजि जाति है।
बौरैं चीर चोली तनु ढारैं भरैं नैन जल,
थोरे थोरे बादरनि चितै मुरझाति है।
सीरी ह्वै है भूमि पियराइ जु रही ही तनु,
सीरी होति ज्यों ज्यों ऋतुसीरी[1] नियराति है ॥230॥

कारी धार परी कारी कारी घटा जुरि आई,
तैसई तमाल ताल[2] कारे कारे भारे हैं।
'सेख' कहै साखिन के सिखर सिखर प्रति,
सिखिन[3] के पुंज सुर-सिखर[4] पुकारे हैं।
निरखि निरखि तेई तरुनि तनेनी* होतीं,
जिनके वै निठुर निमोही कंत न्यारे हैं।
बरषि बरषि जात बरिष सो पल पल,
बूँद बूँद बैरी मानो बिसिख बिसारे हैं ॥231॥

रजनी उज्यारी ह्वै रहति जग या ते नभ,
ज्वाल पुंज अगिनि जरति एते मान है।
सुधास्रई सीतल है सुभग सरूप जाको,
सकल संसार जानै सु तौ ससि आन है।
एक परतीति मन आवै कबि 'आलम' सु,
बिनु हरि कछू बिपरीति की उठान है।
बिधु गिलि बैठो सु बदन बिधु चाहै मेरो,
बिधु नहीं आली री बिधुंतु[5] मेरे जान है ॥232॥

---

1. ऋतुसीरी=शरद्‌ऋतु।
2. ताल=ताड़ वृक्ष।
3. सिखिन=मोर।
4. सुरसिखर=ऊँचे स्वर से।
* तनेनी होतीं=ऐंठ जाती है। (जड़वत् होती है)।
5. बिधुंतु=राहु।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तमीपति तामस[1] तें तमिल[2] ह्वै उयो आली,
तियनि बधनि कहँ दूनोई दवतु[3] है।
आपो बरि जातो जो न बेगि बूड़ो बारिनिधि,
बैरी रबि आगे आगे नीरोई नचतु है।
'आलम' सुकबि राती किरनि सलाका सी है,
राका की डरौहीं राति कहा धौं स्रवतु है।
चन्द्रिका चितौत तनु चिनगैं उठत हैं री,
चाँदनि न होइ चाँद चूनो सो बवतु[4] है ॥233॥

बिस ज्यों बमत यहै अंतक सो आयों या ते,
कंत बिनु अंतक-दसो[5] को नियराती है।
राती राती पाती बन बाती सी बरन लागीं,
घाती काम ताती कै लगाई छेदी छाती हैं।
लै लै अलि झूली डारैं फूली अनफूली हू ते,
भूली भूली फूल ही सी नारी मुरझाती हैं।
जरी जरी रहैं सहैं घरी घरी हरी कहैं,
हरी हरी बेलैं देखि मरी मरी जाती हैं ॥234॥

फूल फुरमान छाप छपद[6] दुहाई बास,
नूतन सुसाज टेसू तंबू दै परो री है।
कीर कारकुन पिक बानी चीठी आई जमा,
बिरह बढ़ाई छबि रयति मरोरी है।
सीतल बयारि बादि मापि रूप लीनों है री,
उपज हमारे हरि ध्यान जु धरो री है।
आयो है बसन्त ब्रज ल्यायो है लिखाइ आली,
जोन्ह कै जलेबदार[7] काम को करोरी[8] है ॥235॥

1. तामस=क्रोध।
2. तमिल=क्रुद्ध।
3. दवतु है=जलता है।
4. बवतु है=(वमन करता है) उगलता है।
5. अंतक दसा=मृत्यु।
6. छपद=भौंरा।
7. जलेबदार=साहब।
8. करोरी=तहसीलदार।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पंकज पटीर[1] देखे दूनी दुख पीर होत,
सीरे हू उसीरनि तें पीर चीर हार की।
अंवा सो अवास भयो तवा सो तपत तनु,
अति ही तपत लागै झार घनसार की।
'आलम' सुकबि छिन छिन मुरझाति जाति,
सखिन बिचारि तजी रीति उपचार की।
मन ही मरूरे मरि रही मन मारि नारि,
एक ही मुरारि बिनु मारी मरै मार की ।।236।।

माधो बिनु राधिका आधिक आधियो न रही,
हारी डारी रहै आपु खरी खीन खेह[2] में।
पिंजर की झलक झलकै झोने आँग बीच,
झुकै मन झूमै तन झंखै झुरै गेह में।
रती न रकत रह्यो 'आलम' तपति ताते,
भीजोई रहत उर नैननि के मेह में।
सोचनि मसूसनि उसाँसनि सों मरी जाति,
मासक ते मासाऊ न मांस रह्यो देह में ।।237।।

उत्तपनि रत[3] रितुपति में तपति अति,
निसिपति-कर उर ताप सी गहति है।
हरि बिनु हर्‌योई हरषु हर-हर[4] हठि,
हौहीं हारी हेरि सूधो मगु न चहति है।
'आलम' नलिन अरु अलिन परसु अब,
अंगना के अंग जानो अगिनि बहति है।
कहा कहौं केहि कहौं कोह की कहानी मोहि,
कूहू कूहू कहि कहि कोकिला दहति है ।।238।।

बुधि कौन बिधि की जु बिधु सों बधावे याके,
बधुनि-बधनि की धौं कब तें चला[5] चली।

1. पटीर=(पाटीर) चंदन।
2. खेह=धूल।
3. उत्तपनि रत=उत्ताप में रत (स्वयं संतप्त)।
4. हरहर=हर से हरा गया (काम)।
5. चला=चाल, रीति।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

माधो बिन सूनो मधुबन जानि मधु मास,
मो को धौं लै आयो मधुपनि की सेनावली।
अनल सी अनिल[1] नलिनमाला नल[2] मयी,
अनिल न लाउ री न लाउ मलया अली।
एक इन अनंग अनेरी[3] दही 'आलम' हों,
दूजे आनि चाँदनी या दाहति भाँती भली ॥239॥

पवन वर्णन

बारक जो ब्रजराज ब्रज तज्यो जब अब,
सब मिलि एक बार बैरी भये बरज्यों।
मूरख मयूख-हिम[4] हुमकि हुमकि हनै,
हमहिं यौं जानै हिय हौं मैं हिमकर ज्यों।
जलजावली ते ज्वालाजाल जलजाल जरै,
लाल लाल भरि दृग जुग जलधर ज्यों।
एक मनु मारे मैं तो मार ही की मारी मरौं,
दूजे मारै मरुत प्रवेश विष सर ज्यों ॥240॥

सघन घटा घुमरि जगु रह्यो घन घिरि,
घेरि घहरात जात सिंधु भरि नीर जू।
'आलम' सिखिनि[5] सुनि सबद सुहाये सुर,
बूंदनि के संग बहै सीतल समीर जू।
पवन पियारे ऐसे कहियो सुनाय अब,
हम अबला हैं कैसे धरैं जीय धीर जू।
पल पल प्रान ये तपत पिय पास कों सु,
पालौ पेम सहि न सकति पल पीर जू ॥241॥

सघन अखंड पूरि पंकज पराग पत्र,
अच्छर मधुप शब्द घंटा झहनातु है।

1. अनिल=पवन।
2. नल=नावक की नलिका।
3. अनेरी=व्यर्थ ही।
4. मयूखहिम=चंद्रमा।
5. सिखिनि=मोर।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बिरमि चलत फूली बेलिनि की बास रस,
मुख के संदेसे लेत सबनि सुहातु है।
'सेख' कहि सीरे सरबरनि के तीर तीर,
पीवत न नीर परसे ते सियरातु है।
आवन बसन्त मन भावन घने जतन,
पवन परेवा मानो पाती लीने जातु है ॥242॥

केला दल डोलैं मूल मंद मंदाकिनी कूल,
एला फूल बेला की सुबास बर बासी है।
सरद की साँझ भई सीरी लागे सोय गई,
साजन सहेट[1] भेंटि उठति उदासी है।
मालती को मिलि जब मलय कुमार आये,
रेवा रस रोमनि जगाय नींद नासी है।
सखिन सुहेल बरु दच्छिन समीर यह,
बरौ पुरवैया बरी बैरिनि बिसासी है ॥243॥

जमुना-कुंज

अरबिंद पुंज गुंज डोर भौंर ही व्रती हलोर,
ओर थोर ज्यों निसा चलत चंदनी।
निकुंज फूल मौल बेलि छछाँह से धरे,
तटी कलोल कोक पुंज सोक संक दंदनी।
'आलम' कबित्त चित्त रास के विलास ते,
प्रकाश वंदना करी बिलोकि बिस्व-बंदनी।
समीर मंद मंद केलि कंद दोष दंद यो,
आनन्द नंदनंद के बिराजे हंसनंदनी ॥244॥

लता-प्रसून डोल बोल कोकिला अलाप केकि,
लोल कोक-कंठ त्यों प्रचंड भृंग गुंज की।
समीर बास, रास-रंग रास के बिलास बास,
पास हंस नंदिनी हिलोर केलि-पुंज की।

1. सहेट = संकेतस्थल।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'आलम' रसाल बन, गान ताल काल सी,
बिहंग बाय बेगि चालि चित्त लाज लुंज की।
सदा बसंत हंत सोक-ओक देव-लोक ते,
बिलोकि रीझि रही पाँति भाँति सों निकुंज की ॥245॥

गंगा-वर्णन

जोहीं भौंह भीजी आँखि ताकि है जु तीजिये से,
जीवी कहे ज्याइहै अमर पद आइ लै।
अंबर पखारे ते दिगंबर बनैहै तोहि,
छलक छुआये गज छाल तन छाइ लै।
'सेख' कहै श्रापी कोऊ जैनी है कि जापी बड़ो,
पापी है तो नीर पैठि नागन लबाय लै।
अंब बोरि गंग में निहंग[1] ह्वै कै बेगि चलि,
आगे आउ मैल धोइ बैल गैल लाइ लै ॥246॥

नीके न्हाइ धोइ धूरि पैठो नेकु बैठो आनि,
धूरि जटि गई धूरिजटी[2] लौं भवन में।
पैन्हि पैठो अबर सुनिकर्यो दिगम्बर ह्वै,
दृग देखो भाल में अचम्भो लाग्यो मन में।
जैसो हर हिमकर धरे औ गरे गरल,
भारी घरु डरु बरु छांड़यो एक खन में।
देखे दुति ना परत पाप रेते पा परत,
सापरे ते[3] सुरसरि साँप रँगे तन में ॥247॥

दीनता

जथा गुन नाम स्याम तथा न सकृति मोहि,
सुमिरि तथापि कछु कृष्ण कथा कहिये।

1. निहंग=नंगा (शिव)।
2. धूरजटी=महादेव।
3. सापरे ते=स्नान करने से।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गोकुल की गोपी कि वे गाइ कि वे ग्वारि कि वे,
बन की जु लीला यहै चरचानि बहिये।
कुंजनि के कीट वै जु जमुना के भीट तिनै,
पूजिये कपिल ह्वै कै कबिलास[1] लहिये।
'सेख' रस रोष रुख दोषनि को मोष है,
जो एकौ घरी जनम में घोष[2] माँझ रहिये ॥248॥

मिटि गयो मौन पौन साधन की सुधि गई,
भूली जोग जुगति बिसार्‌यो तप बन को।
'सेख' प्यारे मन को उजारो भयो पेम नेम,
तिमर अज्ञान गुन नास्यो बालपन को।
चरन कमल ही की लोचनि में लोच धरी,
रोचन ह्वै राच्यो सोच मिटो धाम धन को।
सोक लेस नेकु हू कलेस को न लेस रह्यो,
सुमिर श्री गोकलेस[3] गो कलेस मन को ॥249॥

पैंड़ो सम सूधो बेंड़ो कठिन किबार द्वार,
द्वारपाल नहीं तहाँ सबल भगति है।
'सेख' भनि तहाँ मेरे त्रिभुवन राय हैं जु,
दीनबन्धु स्वामी सुरपतिन को पति है।
बैरी को न बैरु बरियाई को न परवेस,
हीने को हटक नाहीं छीने को सकति है।
हाथी की हुंकार पल पाछे पहुँचन पावै,
चींटी की विघार पहिले ही पहुँचति है ॥250॥

राम किसी भाँति भजि रावन की रीति तजि,
त्रेता ह्वी ते तेरो दिन नीके जिय जानि लै।
'सेख' भनि वापर बहाऊँ कोटि द्वापर जु,
स्वारथ निवारि परमारथ की बानि लै।

1. कबिलास=स्वर्ग।
2. घोष=अहीरों की बस्ती (ब्रज)।
3. गोकलेस=गोकुलेश (श्रीकृष्ण)।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सोई दिन सोई रैंन सोई ससि सूर गैन,[1]
करु नीको नाम सोई समय में आनि लै ।
कलजुग तौ पै जौ तू कलि के कलेस मानै,
सति भाखि सत लिए सतजुग मानि लै ।।251।।

सीता सत रखवारे तारा हू के गुन तारे,
तेरे हेत गौतम की तिरिया ऊतरी है ।
हौ हूँ दीनानाथ हौं अनाथ पति साथ बिनु,
सुनत अनाथनि के नाथ सुधि करी है ।
डोले सुर आसन दुसासन की ओर देखि,
अंचल के ऐंचत उघारी औरे घरी है ।
एक ते अनेक अंग धाई सेत सारी संग,
तरल तरंग भरी गंग सी ह्वै ढरी है ।।252।।

रजनी को काजु नर द्योस ही ते सोचै बैठ्यो,
द्योस हू के काज को विचार यहै राति है ।
हँसै खेलै खाय न्हाय बोलै डोलै आवै जाय,
मन हीं की रुचि नीके तन ही हिताति है ।
'आलम' कहै हो बिनु पूरी गथु पाये ऐसी,
थोरी पूंजी बीच जन्म मोतियो सिराति है ।
घरी है गनतु घरियार ज्यों ज्यों बात है,
जानतु है नहीं कि बजाये आयु जाति है ।।253।।

जनमत छिति पर्‌यो पलना बहुरि परि,
हाथी हय सुखासन पर्‌योई बहतु है ।
अरिनि के ग्रस परि विषयनि बस परि,
जुवतिन रस परि सुखहि चहतु है ।
तासों तोहि परनि[2] परी है मेरे प्यारे प्रान,
हा हा परकत[3] छाँड़ि 'आलम' कहतु है ।
प्रनति सरीर सील परिबे ही पर रुचि,
पर्‌योई रहतु ता तें पर्‌योई चहतु है ।।254।।

---

1. गैन=गति, चाल ।
2. परनि परी है=पड़ने की आदत पड़ गई है ।
३ परकत=प्रकृति, स्वभाव ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शिव को कवित्त

गोरख सुढोरी लिये संभु ताको मत दिये,
आपुन अकेलो संग गौरी तिहि लोग ना।
बरुनी विभूति बार बार लै लै मुख लावै,
उरहू लगावै पुनि भावै कछु भोग ना।
अधारी[1] लै धौरै[2] धरी संपत्ति धतूरा भरी,
बृषभ लै चलै जाय कोऊ ताको सोग ना।
जटा छिटकाये छबि छोनी में बिछाये छाल,
बासुकी बिरागी वाकी टेक बैठो जोगना[3] ।।255।।

देवी को कवित्त

भौन के दरस पुन्य भौन मेरे नेरे आयो,
छत्र-छाँह परसत छत्रनि सों छयो हौं।
मंगला के मंगल ते मंगल अनेग भये,
हिंगलाज राखी लाज याहि काज नयो हौं।
सेषमति 'सेख' ही सुसेष की सी दीनी तुम,
रावरे सिखाये सिख ढिग आनि लयो हौं।
दुर्गा देवी तेरेई दया ते दुर्ग नाँघि आयो,
पारबती तुम्हैं सुमिरत पार भयो हौं ।।256।।

रामलीला

पसुन में बैठनु परोसी भये पच्छिनि के,
झारन के डार घर बार करि रहिहैं।
'सेख' भूमि डासिहैं कि बिस-बेलि बासिहैं कि,
कुस हैं कि काँसि हैं कौसल्या काहि कहिहैं।
बन गिरि बेरनि[4] करेरे दुख कैसे करि,
कोंवरे कुमार सुकुमार मेरे सहिहैं।

---

1. अधारी=झोली।
2. धौरै=निकट।
3. जोगना=योगी।
4. बेरनि=बापी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मैले तन कर ए कसैले छाल रूखनि के,
बनफल फोरि छोलि छाल खाइ रहिहैं ॥257॥

राजा को मरनु बिछुरन रघुबंसिन की,
केकई को सुख तिहि दुख दहियतु हौं।
सिया की सुरति सूल फूल से चरन धरें,
फुलका परत ह्वैहैं तातें दुखी अति हौं।
'सेख' भनि न्यारे होत घर के उज्यारे दिया,
सुधि आये साँस लेत विष सो पियत हौं।
अन्तर मैं जरी नख सिख परजरी नहीं,
तातें अधजरी हों मैं मरी न जियत हौं ॥258॥

जरि उठ्यो पौन गौन थाक्यो मौन पंखी भये,
मानस की कौन कहै विथा जु अकथ की।
'सेख' प्यारे राम के बियोग तात प्रात हीते,
रह्यो मौन मुख सुधि गई ज्ञान गाथ की।
टेकई न प्रान पल केकई पुकारे ठाढ़ी,
राजा राजा करत भुलानी पानी पथ की।
दरसत दुसह उदासी देस तजि गये,
देखी जिन दसई[1] दसा जु दसरथ की ॥259॥

ऊँजे चढ़ि देखि तुम नीचेई चलत अब,
चले किन जाहु जु चले हो पार चाउ सों।
जाके पग परस पखान ही को पाँख भयो,
पानी ही को डोंगा सु उड़त लागे बाउ सों।
'आलमं' कहत रघुनाथ साथ ऊभे[2] हाथ,
केवट कहत टेरि हेरि भय भाउ सों।
नीरे न लै आइहौं जू फेरो करि जाउ अब,
मेरो सब कुटुम जियत याही नाउ सों ॥260॥

जुरे जहाँ महाबीर राजन की महा भीर,
महाराज बीर रघुबीर पैंज अति की।

1. दसईंदसा = मरण।
2. ऊभे हाथ = हाथ उठाकर।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'आलम' जनक जानकी की मरजाद राखी,
दीनी पति कीनी छत्र छत्रिनि के छति की।
कर जु करेरे कर उठी है धनुष धुनि,
बारद सुनत सुधि भूली जंत्र जत्ति की।
कूंद के कराक मूंदे लोचन तराक[1] इन्द्र,
गुन के तराक[2] छूटी तारी भृगुपति की ॥261॥

पनच पुरानी ढरि पानी सो धनुष आयो,
छुअत छ-टूक भयो तासों कहा करिये।
'आलम' अलप अपराध साध जीय जानि,
छिमा छीन करि कत क्रोध भार भरिये।
द्विज कर सूझियत बूझिबो न जूझि वर,
कठिन कुठार आनि कण्ठ पर धरिये।
गुरु मति लोपियु न पूजा पाय कोपिये न,
तासों पाउ रोपिये न जाके पाँउ परिये ॥262॥

लायो चिनगी जगाइ लपति लंगूरा लाइ,
उठी है बघूरा की कँगूरा ही सों जागी है।
भरके भवन भहराने भट भारे भारे,
भी[3] भरे हैं भूप दीप सभा भूलि भागी है।
'आलम' बिलखि लखि लाख ही ज्यों लंका जरै,
बूझि देख लंकापति देह लगि दागी है।
लोने लोने भौन नये छिनक में छार भये,
होनहार ऐसी कहूँ सोने आगि लागी है ॥263॥

बार-बार बालिसुत बोलै अरे लंकापति,
कौन गति मति तोंहि दीन्ही बिधि बावरे।
अजों जीय जानि कै रे जानकी लै जाय मिलि,
बैर बकसाइ गहि राघो जू के पाव रे।
'आलम' अलप कोप किये ही ते पेखहुगे,
पानी मैं तरीहै सठ पाहन की नाव रे।

---

1. तराक=शीघ्र
2. तराक=घोर शब्द।
3. भी=भीति।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कंचन जो संच्यो है सु बचि है न रंच एक;
रचना के भौन सब राख ह्वैहै राव रे ॥264॥

जीत गई प्राननि अनीत भई भीति बसि,
बीति गयो औसर बनावै कौन बतिया।
ऊक[1] भई देह बरि चूक है न खेह भई,
हूक बढ़ी पै न बिबि टूक भई छतिया।
'सेख' कहि साँस रहिवे की सकुचनि कपि,
कहा कहौं लाजनि कहौगे निलज तिया।
और न कलेस मेरो नाथ रघुनाथ आगें,
भेसु यहै भाखियो संदेस यहै पतिया ॥265॥

बीरन बिछोह बार छोरि छारि डारी ही सु,
झारा नहीं जटनु अजहुँ तक तैसा है।
'आलम' घरीक घर पैठे नहीं तब ही ते,
बैड़े बन तन तपसी की गति तैसी है।
पीरे पीरे पात खात पात ही सें पीरे भये,
पीर रघुबीर जू तिहारी कछु ऐसी है।
राजु कैसो राज और स्वारथ को आजु लगि,
भरथ न देखी सु अजोध्या फिरि कैसी है ॥266॥

दुसह दुखारी सब नेमनि ते न्यारो जिहि,
पेम पथ आये सीस पग ह्वै टरतु है।
राते किये बातें सुनि तातें सहि जात नहीं,
लोहू भरे घाइ ताते लोहे सों लरतु है।
कंपै जासों काल ज्वाल झपै तैसो कठिन है,
कंपत बियोगी जु उसाँसनि भरतु है।
ऐसो काहू करै तकसीर[2] करवत लीबो,[3]
जैसो बेर बिरही सों बिरह करतु है ॥267॥

नैना नीर धोइ हार्‌यो लोहू सब राइ तातें,
झूरो ह्वै कै झूरो अब लोहू न लहतु है।

1. ऊक=लुआठ, जलता हुआ अंगारा।
2. तकसीर=अपराध।
3. करवत लीबो=आरे से सिर कटवाना।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'आलम' न आवे बात पीरे मुख सीरे गात,
तातो हियो रातो करि सूलहि सहतु है।
भीतर की भीत कहूँ लग्यो है पछीत थकि,
रीति यहै नेही की बिदेही निबहतु है।
एक टक हेरत हिराइ रह्यो चित्त बिनु,
मित्र को बियोगी मानो चित्र ह्वै रहतु है ।।268।।

रेखता

दौरि दौरि द्वारे आवै ऐसे दिल भी न पावै,
किया[1] है पखेरू तैं दर्याव के नवारे का।
परा तेरी सूरति के नूर गिरदाब[2] बीच,
फूल सा फकीर फिरै साँझ लौं सब रे का।
हरद सा ह्वै जु रहा दरद न जाइ कहा,
मुआ है हिलाक[3] बीच मारना क्या मारे का।
सारा दिन फिरा करै तेरेई फिराक[4] बीच,
जौ न चाहे चितमों तौ चारा क्या बिचारे का ।।269।।

दाने की न पानी की न आवै सुधि खाने की सु,
गली महबूब[5] की अराम खुसखाना है।
रोज[6] ही सों है जु राजी यार की रजाइ बीच,
नाज* की नजर तेज तीर का निसाना है।
सूरति चिराक रोसनाई आसनाई बीच,
बार बार बरै बलि जैसे परवाना है।
दिल सों दिलासा दीजै हाल के न ख्याल हूजै,
बेखुद[7] फकीर वह आसिक देवाना है ।।270।।

---

1. किया है ·· नवारे का = जहाज का पक्षी बना डाला है।
2. गिरदाब = भँवर।
3. हिलाक = मृत्यु।
4. फिराक = तलाश।
5. महबूब = प्रिय।
6. रोज = रोना।
* नाज = हाव-भाव।
7. बेखुद = बेसुध।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दिलतें तरीके धोइ इस्क महरम होय,[1]
रोसनाई[2] को न रोइ यार पुरनूर[3] है।
मनी[4] की मनाही यारो तेता जौक[5] जेती यारी,
यारी बीच ख्वारी का गुमान ही गरूर है।
'आलम' जुदाई ते तू काहूलौं न परि देखि,
दरद नजीक पाए दारू कहा दूर है।
साबित कदम राखि कबहूँ नभूखे राह,
सादक* नजर किए हादक* हजूर है।।271।।

गम के नसीव तें गनी* है जैसे राज पाए,
आसक गरीब को गुमान मनी माल क्या।
नाज ते निवाजि कै नजीक ही निहाल किया,
जीबने की जौक में जुदाई का जवाल क्या।
वह उस रोज से खराब हुआ खाक ही में,
खैर नहीं खूबी बीच खूनी तेरा ख्याल क्या।
दिल दै जु आवै सो दिलासा भी न पावै बातों,
यार दिलदार ऐसे बैदिल का हाल क्या।।272।।

थोरी बार है जु कछु थोरो सो मैं ताकि आई,
ओरो सो बिलाइ कहीं खिन ही में खोइगो।
धीरज अधार ते रह्यो है खंग[6] धार जैसो,
आँसुन की धार सों न धूरि है जु धोइगो।
आहि सुनि आई औ न चाहि ताहि पाई[7] फेरि,
देखि 'सेख' मजनूं बिना ही नींद सोइगो।

---

1. इश्क महरम=प्रेम का मर्म जानने वाला।
2. रोशनाई=प्रकाश।
3. पुरनूर=प्रकाशपूर्ण।
4. मनी=अहंकार।
5. जौक=मजा।
* सादक=सच्चा।
* हादक=सच्चा वैद्य।
* गनी=धनी।
6. खंग=तलवार।
7. चाहि पाई=देख पाया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नीकै के निहारि ग्राके बसननि झारि डारि,
तार तार ताकि कहूँ बार सो जु होइगो ।।273।।

सवैया

लई छलु कै हरि हेत हला, मिलई नवला नव कुंजनि माहीं ।
'आलम' आली अकेली डरें, हितवैंपति जे बतियाँ चित माहीं ।
मुखनाय भरे दृग दीन तिया, जल छीन में मीन मनो अकुलाहीं ।
चौंक परै चितवै चल नीचहि डोलत ज्यों पिय की परिछाहीं ।।274।।

कान्ह प्रिया बनिकै बिलसैं सखी साखि सहेट बदी जिहि काछें ।
कबि 'आलम' मोद बिनोदनि सों तनस्वेद समै मदनज्जल ताछें ।
तिय भाल जगम्मग ह्वै ब्रिदुली अलकैं सुकियानन ऊपर आछें ।
त्रासत है ग्रसिबे ससि संगम भानु छप्यो सुरभानु[1] के पाछें ।।275।।

बनिता बनि बेष चलीं बन कौ बिहरै जहँ कान्ह बिहारनि सों ।
अलकावलि स्वेद प्रसूद लसैं प्रगटे उड़ज्यों तमधारनि सों ।
तिलकद्दुति चारु मृगम्मद सों छबि छोर लगे दृग तारनि सों ।
कबि 'आलम' सोभित कंज उभै अधमै भुवभृंग के भारनि सों ।।276।।

साँझ समै निकसी घर सों चुनरी पहिरें रति रूप सवाये ।
'आलम' लै सजनी तिहि को गुरु बैठे की संक सकोच गँवाये ।
नूपुर की धुनि धाइ कै कान्हर रीझि रहै सखी यों रिझवाये ।
घूंघट हीं महँ नेकु चितै हँस गाहँ चली तिय भौंह नचाये ।।277।।

ए लै अली लखि लाई हौं लाल यहै सुनि बाल सबै दुख मोचै ।
है सकुची गुरु नारिन मैं अनबैननहीं चित सों चित रोचै ।
गुरु ठौर उठी बहराइ कै बाल रह्या न पर्यो अति लोचन लोचै ।
घूंघुट औ पलकैं कर ज्यों पसरै फिरि एकहि बार सकोचै ।।278।।

नवला नव नेह नवीन सखी तिन सों सकुचे मुख मोरति है ।
प्रथमागम संक छुटी कुछु पै चित में रसरीति हिंडोरति है ।
कबि 'आलम' घूंघट ओटहिं में कबहूँ प्रिय सों दृग जोरति है ।
जितनो चितयो उत ओर चहै पुतरी जुरि लाज बहोरति है ।।279।।

1. सुरभानु = राहु ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उठि आली चलो बनमाली जहाँ जमुना जल मंद हिलोरनि की।
कबि 'आलम' वा बन बीथिनि में मुरली धुनि है बन मोरनि की।
दृग बारिज जानि बिलंपति है जिय संक धरै अलि डोरनि की।
सुनि चंदमुखी मुख चंद चितैं निसि चंचल चंचु चकोरनि की ॥280॥

चारु प्रसून प्रवल लता प्रति प्रीति लौं है पिय कुंज गली री।
मंद समीर सुतीर कलिंदी के धीर तहीं ब्रज बीर बली री।
मोदमयी मुरली मधुरध्वनि लै कबि 'आलम' सीख भली री।
जाति सुजाति तू जाति नहीं बन जाति है राति सिराति अलीरी ॥281॥

घोर घटा उमड़ी चहुँओर ते मानु न कीजतु ऐसो अयानी।
तू जु बिलंबतु है बिनु काज बड़ी-बड़ी बूंदनि आवेंगो पानी।
मेरे कहै उठि मोहन पै चलि को सब राति कहैगी कहानी।
देखि तुही ललनारी लतानि को वेऊ तमालनि सों लपटानी ॥282॥

नवला नव नेह नवीन प्रिया रतियो रतिराइ डरे लखि ओऊ।
'आलम' अंग छुटी अंगिया तन कंचन आभ भई छबि कोऊ।
पसर्‍यो कर कान्हरो चौंकि तिया करसों कुच धावन झांपति सोऊ।
देखि भुअंगम कंजनि मध्य दुरे मनो हंस के सावक दोऊ ॥283॥

बैठे प्रजंक प्रिया प्रिय अंकत[1] संक तजे भरि अंक मिलाहीं।
गोप कपोल दिपैं दृग चंचल मध्य तें सेते कटाछ न जाहीं।
कामिनी को कमनी तन कुंदन रोम की माल लसै हिय माहीं।
'आलम' उप्पम का भव री कवरी[2] प्रतिबिम्ब कि स्याम की छाहीं ॥284॥

सैन समै सित सेज समीप सुसोभत स्यामल गौर को संगम।
भामिनि भूषन भेष बनी भरि कोटिक भाव करै भुव संगम।
अधरप्पुट पान पियूष के पुंज कुचप्पर देत पिया रस संगम।
'आलम' सिंधुते बदन इंदु चढ्यो मनो संधि सुमेरु भुअंगम ॥285॥

बन के गृह सुंदर सैन किये ललना नंदलाल इकत्तन के।
कबि 'आलम' ये छबि ते न लहै जिन पुंज लये कल वत्तन के।

1. अंकत=परस्पर प्रेमदृष्टि से देखते हैं।
2. कवरी=चोटी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तन स्याम के ऊपर सोभित यों लगि फूल रहे सतपत्तन के।
जल झाल सरोवर मध्य मनो झलकैं प्रतिबिम्ब नछत्तन के ।।286।।

राति रंगी रति रीतिहि में रस ही रस नायक सों रति की।
रुचिसों मुचिकै सुचि सैंन करी अलि संग कली जनु मालति की।
सितफूल हिये हरि के छिटके कबि 'आलम' या उपमा चिति की।
संचरी न नभ रंध्रन के मग ह्वै निसि मैं मनु ज्योति निसापति की ।।287।।

एक समै संग प्रानपिया जु रमै नंदलाल प्रजंकहि जू।
छलु कै ब चली बरबालकी आलि दुरै ब्रजनायक अंकहि जू।
धाइ गही कबरी कर तें धरप्पुट देत निसंकहि जू।
अहि के मुख तैं मानो लेत छुड़ाइ ज्यों गारुड़-मैंन मयंकहि जू ।।288।।

सतपत्र के पत्रनि सेज सजै मिलि सोवत कान्हर संग लली।
पिय की भुजतीय की ग्रीव गही तिय की भुज पीव की गींव ली।
कबि 'आलम' अग्ररोमावलिके जगै चौकी जराव की जोति भली।
जुग जानु सुमेरु के बीच मनो धरि धीर कलिंदी की धार चली ।।289।।

बिपरीति वर्णन

प्रीतिहि तें बिपरीति रची रति मोति धंसै हँसि हंस बिहंगम।
फूंद छुटी अटकी लट सों छिटकी छुटै अग्र ज्यों गंग तरंगम।
ह्वाँ जल 'आलम' धार सहस्र है ह्याँ कुच मेरु सिरे सिव जंगम।
हार हिये हरि के जु लसै मानो होत सितासित सागर संगम ।।290।।

रीति ठटी बिपरीति के अंग करी ललना भुव भंग अधंगति।
'आलम' ओझल आलि कहूँ रति ऐसी कछू अवकोकि उमंगति।
लोल छुटी लट सों मुकुता लर अग्र जुटी श्रम के कन संगति।
लूटि सुधानिधि राजको राहु चल्यो पनहासु[1] चली उड़ पंगति ।।291।।

केलि करै बिपरीति कला रवनी नंदलाल उभै बुधि भारे।
अधकों धसि गो पटु सीसहूँ ते निकसी कवरीक बनी कचकारे।

---

1. पनहासु=चोरी का पता लगाने के लिये। चोर को पकड़ने के लिये।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'आलम' गोरे लिलाट लसे ललितश्रुतिफूल जराउ के धारे ।
खंडित इंदु की कोरनि मानहु मंडित हैं दुहु ओरनि तारे ।।292।।

सजि सौज संयोग की भोगकला जुग सेज मिलाइ गई सजनी ।
कबि 'आलम' हास कै बारा मिलै मलयादिक ओर सुबास घनी ।
कुच कुंकुम के कन अंकम सों झलकैं तन कान्ह के जोति बनी ।
परसे जुग मेरनि सों मनु हैं लगीं स्याम घटा तन हेम कनी ।।293।।

हेम लता तन राधिके जू तन स्याम चढ़ै दिन ही दिन बानी[1] ।
पतिसों बतियाँ जलपै हितसों ते सुने कबि 'आलम' प्रान हितानी ।
हास बिलासनि दंत मैं छिटकै छबि सो उपमा जियआनी ।
मानो बिधुंतुद[2] त्रासु समै सुतौ आय कलानिधि मध्य समानी ।।294।।

*नील निचोल निसा महं त्यों बिंदु पैठत कंचुकी कुंभ अटारी ।
छुवै पिय पल्लव कालिम ज्यों कुच मैनु गहै कर मूड़ जटारी ।
'आलम' यों जुवती अब दै नख रेख चली त्रिभंगी हरि टारी ।
भई रति सों रितु राति रँगी रति मानो हनी हर काम कटारी ।।295।।

हरि कामी अमूरति काम जिते सचु[3] लेत पिया बनिता बरतें ।
कबि 'आलम' हेत संकेत समै रसकेलि कलोल उभै भरतें ।
कुच उच्च में बक्र नखच्छत्र यों बरनो मनमोहन छ्वै करतें ।
अति आरकता[4] सुक चंचुपुटी निकसी मनो कंचन पिंजरतें ।।296।।

रति रीति बितै रमनी झुकि कै रिस नैंकु करी अध ऊरध भौंहैं ।
'आलम' भूषन धारि सुधारि कसे कुच कंचुकि फेरि पिछौहैं ।
कर ऊपर बेसरि मंडि नासा मुकुताहल के गजरा छबि सोहैं ।
घेरि मनों उड़पुंजनि लै सरसारुह आनि करे ससि सौंहैं ।।297।।

---

1. बानी = रगत ।
2. बिधुंतुद = राहु ।
* इस छंद का अर्थ हमारी समझ में नहीं आया । हस्तलिखित प्रति में पाठ ऐसा ही है ।
3. आरकता = (आरक्ता) खूब लाल ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रति अंतसों कामिनि कंत समै रसहीं बस में सुखसैन समै करि।
मदनानल पीर सरीर भई तन मैं कबि 'आलम' आलसता भरि।
पिय पानि कुचप्पर दंतिय के झलके नख मंजुल जोति जगै धरि।
संभु के सीस सरोरुह के दल छोरनि मानहु ओस रही ढरि ॥298॥

रतिदानु दये अबला बिगसी भ्रकुटी करि बंक सरासन सी।
कबि 'आलम' कुंतल चारु छुटे कहुँ कुंकुम अंकित है कन सी।
लट लै चलि वेसरि नासिक के अरुझै झख झूम चलै बनसी।
मिलि कै कच पुंजनि लाल चुनी चमकै घन मैं पटबीजन[1] सी ॥299॥

कोक कला खनी रति नागर केलि टटें सब रैन सिराई।
प्रात समै सिथलतन सुंदरि अंग रही बसि आलसताई।
जागि चली कर आली के कंध दै ह्वै कबि 'आलम' ऊपम पाई।
चंदन खंभ कै अंकम[2] मानहु डोलत चंपक माल सोहाई ॥300॥

अति मुद्दित ह्वै प्रमदा मन में मधुसूदन को मधु मोद लये।
कबि 'आलम' लालस आलसु डारि चली सुअली तजि यौद लये।
कर पल्लव दीप दुराये भई दुति पानि में रैनि बिनोद लये।
कबिता बरनैं छबि ताहि मनो सबिता सुत बारिज गोद लये ॥301॥

नवला श्रम लोचन रोचन कै पल मोचन पूरि रही जल सों।
कवि 'आलम' केलि कला हरिजू रिझई न कछू खिभई बल सों।
तिहिं को भरु[3] ज्यों रबिके अंग को अंगयो[4] न परै नलिनी दल सों।
कल कोमल बाल कलेवर यों अति [काहल होत कुलाहल सों ॥302॥

कंचुकी नील लसै कुसुंभी मुकता लर कंठ में कुंतल छोरे।
नैन बिसाल मराल कीसी गति बाल रसाल बहिक्रम[5] थोरे।
नेकु चितै हरि त्यों[6] कबि 'आलम' चंचल चाल चली चित चोरे।
जोबन रूप जगामग सी कोउ या मग नारि गई तन गोरे ॥303॥

1. पटबीजन=जुगनू।
2. कै अंकम=अंकबार में लेकर।
3. भरु=भार।
4. अंगयो न परै=सँभाला नहीं जाता।
5. बहिक्रम थोरे=थोड़ी उम्र की (नवला)
6. त्यों=तरफ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सजनी मिलि द्वै अवलोकि कहैं अतिही हरि राधिके के बसरी।
सखि देखि धौं कुंज बिहार वहै कबि 'आलम' और कहा रसरी।
अंगिया सित झीनी फुलेल मली तरकी[1] ठौर-ठौर कसी कसरी।
किधौं प्रात सुमेरु के द्योस भयो जितही तित ओप मनो पसरी ॥304॥

प्रात समै बन बीथिनि मैं निरखै इक नागरि नारि निमेखैं।
'आलम' आलस भूषन अंग रह्यो लगि भावतो भामिनि भेखैं।
कंचुकी लाल कछू मसकी कुचसींव की ओर चलो सखि देखैं।
पात रतोपल[2] के तरके[3] प्रगटी मानो पुंज पराग की रेखैं ॥305॥

स्याम असंक मयंक मुखी निरखे रति औ रतिनायक हारें।
'आलम' कुंकुम के रंग की अंगिया अंग में छबि कोटिक धारें।
मसकी कुच कोर की ओर लखै सु कहा उपमा कबि और बिचारें।
बूड़त चंचुपुटी प्रगटी चकवा मानो पीत परागहि टारें ॥306॥

यशोदा की उक्ति

औटि धर्‌यो है दुराय दुहाइ कै प्यारे लला रुचि सों पय पीजै।
लोटत हाथ के भूषन छूटत रोवत हौ बलि तौ बल छीजै।
'आलम' दूध दही को मिठाइ को मेवा को नाहिं करो कहा कीजै।
कान्हर आर[4] निवारि बलाइ ल्यों आपनी माइ खिझाइ न लीजै ॥307॥

अपने गृह माखन खाइवो जाइबो लाल नहीं कबहूँ पर नेरे।
बरजै जननी कबि 'आलम' यों बिलमौ जु कहूँ न अबेर सबेरे।
हौं सिख देत सुनौ सुत स्यामल कंस के सैन सबै अरि तेरे।
धाम रहौ निकसौ न कहूँ तुम रांक को सो धन कान्हर मेरे ॥308॥

बीर बड़े मुरली लघु बीरन माँगत है तुम देउ बला[5] हो।
हौं तो न देहौं न देत है मोहिं तू दै मेरी आनंद चंदकला हो।

1. तरकी = मसक गई है।
2. रक्तोपल = (रक्तोत्पल) लाल कमल।
3. तरके = फटने से।
4. आर = हठ।
5. बला = बलदेव जी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'आलम' जात चले तित डोलत बोलत लै जननी सुख लाहो।
जान दै बंसी कहा लै करैगो तू धाइ लै माखन आइ लला हो ।। 309।।

नंद लई मुरली कर के तब ले कर कान्ह लखै परछाहीं।
'आलम';लै अधरा परसै छिन ही छिन चाउ सों माखन खाहीं।
व्याकुल कान्ह बज़ाइ न जानत त्यों जननी पहँ पूछन जाहीं।
मैया री ज्यों बल की बंसुरी ऐसी मेरीयो बाँसुरी बाजतु नाहीं ।।310।।

दौरत गाइ बहोरन छाँह ते घाम न बारि बयारिन साधे।
डोलत है जितहीं तित ग्वाल सु गोधन[1] फैलि रह्यो बन आधे।
काजरि[2] के हित सों कबि 'आलम' आवत लै बछरू धरि काँधे।
हात छरी पनहीं पग पात की सीस खुढ़ू करि कामरि काँधे ।।311।।

कालि के कान्ह कलिंदी के कूल लये संग बच्छ बसे बन में।
छतिया अकुलाति बिहाति न राति बिसुद्धित ताप तई तन में।
कबि 'आलम' जीवन ओट भये पल लोचन सोच बढ़्यो मन में।
तातें जसोधन है चली सोधन सो धन ह्वै गयो गोधन में ।।312।।

ग्वालज पुंज के मध्य लला दरसैं परसैं रज अंग रुचै।
निरखे कबि 'आलम' पंगु भयो मनु रूप अपारहिं क्यों ब रुचै।
नख नाहर बंक हिये हरि के जटितम्मनि मैं उपमाहि सुचै।
बितयें परिवा दुतियागम सों मनोद्वेज कला दिननाथ मुचै ।।313।।

सुर ज्ञान जु ध्यान मुनिंदनि कै बरन्यो असकंध दुआदस में।
कबि 'आलम' पूरब प्रेम प्रताप सु तौ ब्रज नारि कियौ बस में।
स्रुति कुंडल माल औ भूषन भूषित किंकिनि मुद्रिक सैनसमैं।
तन कान्ह कियो मनि जोति मनो जमुना जल सूरज की रसमैं[3] ।।314।।

कछनी कटि स्वच्छ कछे कवनी बरही बर पुछ को गुछ बनो।
बन राजत श्री मुरली धर जी धुनि सों दिन अनंद होत घनो।
हिरदै भृगु चर्ण को चिन्ह लसै उपमा कबि 'आलम' कौन गनो।
प्रगटे सु अनंग प्रसंग लगे छबि सुंदरि अंग के अंक मनो ।।315।।

---

1. गोधन = गायों का समूह।
2. काजरि = कजरी गाय।
3. रसमैं = (रश्मि) किरणें।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मधुदंदन श्री नंद-नंदन जू दुखकंदन चंदन खौर करी।
तुलसी दल माल बिसाल लसैं निरखे छबि काम की कांति हरी।
कबि 'आलम' भाल के ऊरध यों उपमा सिखि-चंदकी पंतिधरी।
सुखमा के समूह सरोबर में मानो फैलि फुलेल की छींट परी ॥316॥

अंग त्रिभंग किये मन मोहन ते मन काम के कोटि हरैं।
चित चाहि चुभ्यो वृषभान सुता तन बांसुरी आंगुरि गैन धरैं।
चंचल चारु चलैं कर पल्लव 'आलम' नेकु न नैन टरैं।
तजि रोस सुचारु सुधा कर पैं मनो नीरज के दल नित्त करैं ॥317॥

नंदलला मुख चंद चढ़ै छबि कोटिक चंद कला पचि हारी।
'आलम' कामको काम यहै ब्रज बाम के कामकी कामना टारी।
सुंदर नासिका पास रही अघ भीजति है मसि सोभित भारी।
पांडुकि कंठ नवीन उठे प्रगटी मनो कीर के कंठ की कारी ॥318॥

सुंदर नंदकिसोर तरंगनि अंग को संग अनंग गह्यो।
महिला सब मोहि रही महि की भनै 'आलम' रूप महा उमह्यो।
मसि भीजति कान्ह के आनन पैं लखि स्याम सी रेख को भेष कह्यो।
छवि पूरन इंदु के मध्य मनो दुतिया के सरूप ह्वै राहु रह्यो ॥319॥

जल क्रीड़त श्री नंद-नंदन जू दुति बंदन निंदति सूर प्रभा को।
बनितादिक मुद्दित उद्दित रूप तें बंछति आनंद चंद सुधा को।
'आलम' कै कुबलै दल मौलि बन्यो तनु स्याम बिराजत जाको।
मूरतिवंत लये सरिता संग संभु बरै मनो सैल सुता को ॥320॥

मुकुता मनि पीत हरी बनमाल सु तो सुरचापु प्रकासु कियो जनु।
भूषन दामिनि दीपति है धुरवा सित चंदन खौरि किये तनु।
'आलम' धार सुधा मुरली बरषा पपिहा व्रज नारिन को पनु।
आवत हैं बन ते घन से लखि री सजनी घनस्याम सदा-घनु ॥321॥

उलसे[1] तुलसी दल मंजु लसैं सुलसे कुल से संग मौल रसालहिं।
नौ द्रुम मैं कदम-द्रुम फूल फली घुंघुची फल सों फल जालहिं।
'आलम' डार सुडारनि छोरनि नीरज नील लये संग नालहिं।
मैन बिसेषत लेखि महा सु तौ देखि सखी घनस्याम तमालहिं ॥322॥

1. उलसे = उल्लसित।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सखिरी नभ सिंधु दुरंत रये गुन पूरन सों जग जागत हैं।
कबि 'आलम' नील कहैं सब ताहि सुता अगमै मन लागत हैं।
सुख दायक कान्ह पराक्रम सों नर जद्यपि यों अनुरागत हैं।
लखि जात नहीं बुधि ज्ञानहु सों ताते लोगहिं स्याम से लागत हैं ।।323।।

आवत जातहु ते यहि मारग डीठि परै कहुं सांझ सबारे।
ताहि ते लोचन लेत भरिम्भरि लोचत लोचन लाल तिहारे।
अटान चढै उतरै कवि 'आलम' झांकत दौरि झरोखनि द्वारे।
खाइ न पान सुहाइ कछू न अन्हाय न नारि रहै मनु मारे ।।324।।

धृत कुंडल गंड प्रचंड कला सिर मंडि सिखंडिनि के चंदवा।
मुरली धुनि की सुरली[1] सुनि कै सुर सों मन आतुर को फंदवा।
सुखमूल विलोकत ही कमरध्वज भूलि रह्यो मति को मंदवा।
कबि 'आलम' आनंद चंद सदा सखि वा लखिरी नंदकोनंदवा ।।325।।

नवयौवना

ऐंड ऐंडाइ चली फिरि ओरनि ऊँचकै भौंहनि सीस उचाये।
नैन डरैं बिडरैं फिरि आपन काननि कोर दरीन दुराये।
'आलम' आनि गहो पहिले मन ठौरहि ठौर को भेदु बताये।
राजु फिर्यो तन की नगरी मुगुधाई[2] गयी अब जोबन आये ।।326।।

सोर भयो जो सरीस बिषे निकसी सरकार हुती लरिकाई।
ठौरहिं ठौर भई कछु और जु अंग अनंग फिर है दुहाई।
आइ गये अबताली[3] दोऊ कुच छाप लये सिर स्याम सुहाई।
'आलम' लाल गुपाल की सौं सिरदार भई तनमें तरुनाई ।।327।।

बैस फिरे पलटो कल कंठ लफै कटि फैल[4] कपोलनि पाई।
चाहति नैननि चाह रहै चमकैं चख औ भुजमूल कलाई।
रूप दसा सब त्यौंही भई तन जोबन की छबि यों भरि आई।
बाहिर दर्पन ज्यों दरसे झलकै छबि-छांहर में जिमि झांई ।।328।।

1. सु-रली=रेलापे (अधिकता)।
2. मुगुधाई=लड़कपन।
3. अबताली=(फा०अचदाली) अदल-बदल कर देनेवाला हाकिम।
4. फैल=फैलाव, विस्तार (विकास)।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मानवर्णन

औधि टरी न टरी ललना न टर्यो चित नेकु रह्यो लव लीनो।
'आलम' छीन छपाकर जोति छपो निधि छीर छपा भई छीनो।
तेहि ठौर उरोज के अग्रनि लौं परसी जलधार भये दृग दीनो।
खेलत संभु सुधाकर में बनसी कर डोर लगी जुग मोनो ॥329॥

मान मनी सजनी सिख मानि बनी सिख दैन को मान हटी मुकि।
'आलम' नैननि रूप को भेष निमेषत जो पिय देखत हैं दुकि।
बंदन की बिंदुली पर रंग भरे मुकुता छबि है ललना जुकि।
झूमी लता कन ओस लगे अध गौन बंधूक प्रसून रहै झुकि ॥330॥

मान कला नवला सुनि कै सहुलासनि लाल मनावन आये।
'आलम' आली न मानै कह्यो पै तिया मन में मनमोहन भाये।
रोस भरे अँसुवा पट ओलक लोलक गोलक मध्य समाये।
अंजन सों मिलि कज्जल ह्वै जुग खंजन ज्यों जमुना जल न्हाये ॥331॥

तजि मान मुरारि पै नारि चली कबि 'आलम' लोल कलिन्दी के तीरहि।
हार हिये हरयें पग धारि दिपै द्विज पंति हरै छबि हीरहि।
भुज डोलत बोलत मंद गतीकर पल्लव चारु लये छबि बीरहि[1]।
कीस बिदारन के भ्रम सों निकसे दल कंज गहे मनुका कीरहि ॥332॥

सुधा को समूह ता मैं दुरे हैं नछत्र किधौं,
कुंद की कली की पाँति बीनि बीनि धरी हैं।
'आलम' कहै हो ऐन दामिनी के बये बीजु,
बारिज के मध्य मानो मोतिन की लरी है।
स्वातिक की बूंदें बिबि बिद्रुम में बासु लीन्हो,
ताकी छबि देखि मति मोहनैं बिसरी है।
तेरे हँसे रदन किशोरी दुति राजत है,
हीरनि की खानि ससि-मध्य ह्वै निकरी है ॥333॥

तैं कियो मान मानवत ही मनमोहन जामिनि जागि गये।
अजहूँ रही मौन अनम्मनि ह्वै मन ही मन नीचहि नैन नये।

1. बीरहि=पान का बीड़ा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तरुनी अरुनी रचि प्राची दिसा कबि 'आलम' उप्पमा ये जु ठये।
तम नास को भान महीप चढ्यो तंबुआ तकि तानि उतंग दये ॥334॥

वेइयै जो तुम कंज के रंध्रनि कालि बिलोकी गोपाल के धोरें।
आजु अयानि ह्वै आई है देखि मनो उन वातनि के तिन तोरें।
चितये कच मैं बिपरीति समै अलि सावक से मधुमिस्र में डोरें।
गुलाल की लालकली कलकों मनो लेत कि लालकी लाल जुभोरें ॥335॥

गोकुल तें गुकुलेसहिं लै गवन्यो सुफलासुत ह्वै अधिकारी।
कबि 'आलम' गोपगऊ गोपिका गन घोष भये सब दीन दुखारी।
नंद पठै फिरि जो नंद-नंदहिं-दंद-उदेग उठ्यो जिय भारी।
डारि सरव्बसु मारि मनै जैसे हारि चलै कर झारि जुआरी ॥336॥

ए रे अहीर अजौं कहि धौं हौं तो जाऊं जहाँ हैं तहाँ गिरिधारी।
कैसे फिर्‌यो मुख वा रुख सों सब गोकुल की सुख की निधिडारी।
हेरि कहै जसुदा पति सों कवि 'आलम' व्याकुल है जिय हारी।
आनंद चंद गोविंद बिना अब नंद भई मति मंद तुम्हारी ॥337॥

दीसत हैं दिसि और दसो जिय त्रास ससंक प्रकास दिसाकी।
कबि 'आलम' अंग लगै दृग ज्यों अबला बसिसंग बिसाल बिसाकी।
हिरदै अति ताप भई सुत के मुख सूखत है तिजि आनि तिसाकी।
नेसुकहू न सकों कहि हौं सखि धौं निसि है कब जोन्हि निसाकी ॥338॥

पीय पयान की पावत चाह भये सुपयान कों प्रान उतालैं।
आँसु औ साँस उसाँसनि हेरति त्रासनि साल वियोग के सालैं।
'आलम' अंग अनंन की ज्वाल तें आँगनु भौन फुनिग से चालैं।
ज्यों जिय को ढिग आवत जानि परै जमराज को जी हू के लालैं ॥339॥

कान्ह चलो बिलंबौं न कहूँ सजनी जुगवै अब लौं अबलै।
कबि 'आलम' व्याकुल नैन वियोग अरी बिरहानल देह दलै।
अँसुआ भरि डारै उसांसनि सौं झलकै तन कंपत हीय हलै।
सरजात की बूंद श्रवै रस मै छबि लोल मनो जल डोल चलै ॥340॥

जो झरिहैं भरिहैं घट तो घट है न घटै अँखियाँ उनई हैं।
नींद गई निमषो बिसरी कल में पल में पलको न दई हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'आलम' औधि की ओल अली अब लौं इन आँसुनि साँस लई हैं।
पानिप डीठि सकेलि सबै जुरि कै पुतरी भर भार नई है ॥341॥

कान्ह पयान कह्यो सजनी तिय प्रान पयान के से दुख पावै।
'आलम' छीन परी मुरछाइ परी छिति नीर सखी मुख नावै।
सीतल ह्वै पग पानि गये छतिया तपि कै पियरी तन छावै।
जी हू की जानि परै न कछू सखि देखत हूँ जमहू भ्रम आवै ॥342॥

कान्ह बियोग बियोगिनि नारि परै दुख सोचनि नेकु निखूटै।
'आलम' देह सदेह बियोग बिरोषि[1] दलै सुख संपत्ति लूटै।
त्यौं जम आवत आजु कै नीठिहू आऊ[2] के ओर दुआनल टूटै।
इते पर चंद दुखी करै मो कहँ या दुखतें सखी कैसे कै छूटै ॥343॥

बिछुरै ते बलबीर धरि न सकति धीर,
उपजी बिरह पीर ज्यों जरनि जर की।
सखिनि सँभारि आनि मलय रगरि लायो,
तैसी उड़ी अवली कहूँ ते मधुकर की।
बैठ्यो आय कुच बीच उड़ि न सकत नीच,
रहि गई रेख 'सेख' दंत दुहूँ पर की।
मानहु पुरातन सुमरि बैरु संभु जू सों,
मार्‌यो सम्बरारि[3] रहि गई फोंक सर की ॥344॥

मारिवे को तिय मार के मैं रही मेरे कहे पिक मोरनि मारि दै।
मारुत मंद सु चंद दहै तनु मंदरि मूँदि सखी दिसि बारि दै।
स्याम बिना कवि 'आलम' धाम तें कुंकुम मेद सुगंधहि डारि दै।
बारि कै देखि बरै तन बाती सो नारि तू बावरी बारिज बारिदै ॥345॥

रूप सुधा मकरंद पिये ते तऊ अलि कंट बियोग अरे हैं।
'सेख' कहै हरि सों कहियो अलि ध्यान प्रतच्छ समान करे हैं।
जो मन मूरति के निरखे हम देखत ही गिरि गात गरे हैं।
जोति प्रसंग पतंग जरे इक झाँई के झूमत तेल तरे हैं ॥346॥

---

1. बिरोषि=विशेष रोष से।
2. आउ=आयु।
3. सम्बरारि=काम।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पंगु कियो पिलवान को पौरुषु लै चल्यो कुंजर कोटिक पेलि ज्यों।
'आलम' दंती के दंत हिलायकै हाथलिए कियो खेल सोखेलि ज्यों।
कान्ह बली[1] तन श्रोन की छंछु लसैं अति जग्योपवीत सों मेलि ज्यों।
नील नगप्पर इंदुबधू घनसार गिरिप्पर बिद्रुम बेलि ज्यों ॥347॥

कर पोथी लै पंथी के पंथ चले छिन ठाढ़े ह्वै पूछति है कहँ जैहो।
गुन बैदके बेदन बाँह गहो बिरहा बर को गुन कौन बतैहो।
जोतखी हौ तौ चलौ घर भीतर घोषि धर्‌यो सुघरी दिन दैहो।
'आलम' आजु घनो घन है घन के उनये जु घनो दुख पैहो ॥348॥

धरि रूप सुधा को पियूष मिले बिनु जीभ के स्वाद कहा रचिये।
कबि 'आलम' बास को बास नहीं मन भृंग सुबास भले सचिये।
जल में जल के गुन जाने नहीं भये अच्छर-अच्छर क्यों बचिये।
मुकुतै न कछू जुगुतै जबलौं ब सुतौ भगतैं भगतैं जंचिये ॥349॥

चंद्र कलंक

बिधु ब्रह्म कुलाल को चक्र कियो मधि राजति कालिमा रेनु लगी।
छबि धौं सुर भीर पियूष की कीच कि बाहन पीठ की छाँह खगी।
कबि 'आलम' रैनि संजोगिनि ह्वै पिय के सुख संगम रंग पगी।
गये लोचन बूड़ि चकोरनि के सुमनो पुतरीनि की पाँति जगी ॥350॥

थिर कूरम थापि रसातल में बिधि जानि सुनौ त्रिकुटी है ठटी।
धरनीधर मत्थ समत्थ करी सरिता सर सिंधु सनेह तटी।
'आलम' कै गुन मेरु मनो रबि प्रात को दीपसिखा जो जटी।
तिहि धूम धुके दुति कज्जल की अजहूँ नभ कालिमा लै प्रगटी ॥351॥

औषधिनाथ बिरोध गुनी गुन सोधि तमोरस भेद बिचारा।
'आलम' पूरि धरी घरिया रबि कीनो तरे तप तेज पसारा।
आगि दई अथये[2] अरुनी अति फूटि कै जंत्रु गयी उड़ि पारा।
रैनि भरी कजरी बिथुरी जनु ह्वै कन धातु लगे मढ़ि तारा ॥352॥

1. बली=बलदेवजी।
2. अथये अरुनि=सूर्यास्त समय की लालिमा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गुन पाये हैं द्वै त्रिभंगी हरि के किधौं मैंन बसंतहि जोर परी।
सुरचाप गड़ी तड़ तेग तये कवि 'आलम' उत्तर दच्छिन री।
प्रगट्यो परिवार विपुन उते इत पछिम ह्वै विधु अर्ध धरी।
दिसि बारि चितै चित चक्रित ह्वै जनु जुद्धत जोधनि खंगफरी ॥353॥

तै न सुन्यो जनकादि के द्वार पिनाक पर्यो जु सबै बिरचैं।
कवि 'आलम' थान थपे उथपे की रहै बलु कै नर बैन रचैं।
सार के साल उसालि धरे बुझि रावन देखि यहै परचैं।
चिंगुटी गुन चाहि टकोरत ही कर लै रघुवीर करी किरचैं ॥354॥

कोसिला सासु सखी रघुबंसिनि केतक दूरि सबै संग पैबो।
हौं अब हारी हौं हारी कह्यो सुनि कै हरि नैन हिये जल लैबो।
'आलम' नीर कै गोय रही किये जानकी भूमि की ओर कवैबो।
घूंघर से बन वे बर रूख तहाँ हू ते और कहाँ लगि जैबो ॥355॥

टेक को मेरु अनेगनि टारिहौं दानव द्वार को दारुन हाथी।
'आलम' कूल के मूल कुदारि हौं मेटि कुमंत सुमंत को गाथी।
राघवराइ को दूत वली जिहि दूखन खंडि कै तारिका नाथी।
अंगद नाम अभंग भुजाबल बालि को बालकु रामको साथी ॥356॥

मंडित पान प्रचंड अखंडित संधि सिलीमुख दंडि कुदंडन।
'आलम' लै अवनी कवनी चल्यो आवतुत राम अडंडन डंडन।
हे दसमाथ सनाथ अजौं करि माथ पुनीत ह्वै कै बर मंडन।
तारिका तेज उतारक बारक तारि कहै खर दूपन खंडन ॥357॥

(कुच छबि)

अति आतुर चातुर कान्ह रमै तन में रस रासि नई संचरै।
कबि 'आलम' वाम बिहार बढ़ै सजनी सिख चित्त सबै बिसरै।
मुख पै कच कै अधिकारी खुले अध चौकी जगम्मग जोति करै।
उत ह्वै मानो सूर उदोत कियो इत ओर सुमेरु कुहू उतरै ॥358॥

अलि कान्ह लता-बनिता मधि मैं मधु पान कियो मन भौत[1] समै।
कबि 'आलम' मध्य मुचे सकुची गति उर्द्ध करी भ्रकुटी रिस मैं।

1. मनभौत = मनभावत, मनभाया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

छबि नील निचोल उरोजनि त्यों मसक्यो परिरंभन[1] के मिस मैं।
कनकाचल शृंग प्रकासन को रबि की कर दौरि परीं निसि मैं ।।359।।

रजनी बितई रति सौं सजनी थिरकैं दृग द्वै तजि चंचलता।
कबि 'आलम' आसस ही जलपै किलकैं कुच खीन भई कलता।
किये चक्रित बाम हरी कंचुकी गई उच्चकि यों छबि अंग लता।
सकुच्यो जु सिवार समीर लगे प्रगटी सरकी मनो उज्जलता ।।360।।

रजनी मधि राधिका गौन कियो निरखी अँखियाँ पति प्रेम भरी।
कबि 'आलम' रंभन को ललचो रति लालच लै हिय लाई हरी।
खरे खीन हरे पट की अँगिया दरकी प्रगटी कुच कोर सिरी[2]।
अरुझे जुग लाल सिवालनि मैन के चक्र की चंचु मनो निसरी ।।361।।

युगल मूर्ति

ब्रज भूषन भावति राधिके जू गुन रूप के साँचे सुअंग गढ़ी।
कवि 'आलम' अंग सुगंध सदा परचै बिरचै करि कोक पढ़ी।
कवनी भुज स्याम के कंध धरे रवनो मनो प्रीति की रीति वढ़ी।
छबि ता तन स्याम की सुंदरता मानों चंपलता नग नील चढ़ी ।।362।।

चारु तमाल प्रसून लता किधौं स्याम घटा संग बिज्जुल गोरी।
मधुपावलि कंज की माल मनो छबि पारस कंचन खंभ की जोरी।
मूरतिवंत समुद्र समीप दिपै बड़वागि सिखा कछु थोरी।
जो चलि 'आलम' नीके लखौं तौ पै नंदलला वृषभान किसोरी ।।363।।

गुन रूप निधान बिचित्र बधू हित प्यारी पिया मधुगंजन की।
कबि 'आलम' पूरन काम समीप सुदेह दिपै दुति मंजन की।
कर पल्लव कज्जल सों दृग छोरनि रेख रचै पति अंजन की।
लिखनी दल मंजुल कंजकी मैन लै चंचु सँवारत खंजन की ।।364।।

ब्रज संपति दंपति राजत हैं बन देखत रीझि अनंग गता।
कबि 'आलम' संग सुगंध समैं अंग अंग अनंग सुगंधरता।

---

1. परिरंभन = आलिंगन।
2. सिरी = (श्री) शोभा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भरि भेंटत भामिनि भेटनि मैं भुज द्वै छबि पावति कोटित सता।
मनो मंजुल लोल तमाल में नौतन चारु चढ़ी कलधौंत[1] लता ।।365।।

बाम हितू ब्रजराज प्रिया बनि कै बिहरैं बन निभ्रम में।
कबि 'आलम' एकहि कोक पढ़ै अति दंपति एक बहिक्रम[2] में।
ललना कल क्रांति कलेवर को झलकै हरि के हृदयास्रम में।
... ... ।।366।।

वृंद बधूनि के बीच जगै नव नेह लगें उमग्यो तन आवै।
चाह को चाउ खरे चपलै कछु लाजनि नैन सो नैन दुरावै।
'आलम' है इत लाल लटू निरखै इकही टक बीच न पावै।
यों लपटै पल मैं पुतरी चितवै पिय को मुख डीठि बचावै ।।367।।

संक तजे वृषभानु सुता जमुना महं न्हात भई छबि भारी।
वापु राजत चारु विटप्प किये जनु हेम लता कनकावलि धारी।
हरे हरे आइ गए हरि हेरि सखीनि के ओझल ह्वै गई प्यारी।
बारि मैं नारि दुरावति है कुच कोक मनो बिवि[3] बूड़की मारी ।।368।।

कुंज की ओट कलिंद-सुता तहँ क्रीड़त राधिका संग कन्हाई।
पौढ़ि प्रजंक सुअंक मिलै अंग अंग लसै अति मंजुलताई।
रंध्रनि ह्वै निरखैं सजनी भनि 'आलम' यों उपमा मन आई।
रैनि बरै सरि पारस[4] यों झलकै जल मैं जनु पावक झाँई ।।369।।

अभिसार

किंकिनि क्कंकन कान[5] मिलै वर दादुर झींगुर की झनकारहि।
भूषन की मनि एक भई जुगनू वर की मनि जोति अपारहि।
'आलम' कामिनि कों तन कुंदन जाइ मिल्यो जग बीजु उजारहि।
काम के त्रासनि स्याम निसा वर बैंरी सहाइ भये अभिसारहि ।।370।।

1. कलधौंत = सोना।
2. बहिक्रम = (वयक्रम) अवस्था।
3. बिवि = दो।
4. पारस = (पार्श्व) निकट।
5. क्वान = (सं० क्वण) भूषणों की झनकार।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चंद्र सुधाकर धार द्रवै जग मज्जित कालिमा टारि गई है।
जोति की ओट सहेट भई अभिसारक कै अभिलाष नई है।
सीस चढ्यो रजनीस जबै तन की थिरु बावन[1] छाँह भई है।
जोन्ह छपा दुरि आवन को तम सौज मनो कर लाइ लई है ॥371॥

सोध सहेट भई रस के बस बासर की सुधि बेस बिसारी।
है तुम सों तमई[2] बितई अब द्यौस चढ्यो सु चढ़ी कुल गारी।
कौंलनि तें छुटि भौंर चले तिन्ह की अभिसारिक छाँह निहारी।
दौरि चलै दुरिबे को हिये जिय जानति है यह जानि अंध्यारी ॥372॥

रैनि सरद्द सुधानिधि पूर चढ्यो जग कालिम छाँह अडारी।
सैनि सहेट बदी निसि मैं बिचर्‌यो उठि गौन कियो अभिसारी।
भूषन कै मुकुता सति अंग सुकेस पुहुप्पनि सों छबि टारी।
दुरावति छाँह मनो मुसुकाइ सुजाइ मिली मनमोहनै प्यारी ॥373॥

माधव जू मधुमास मधुव्बन राधिका सों करि केलि मुचे ते।
तहाँ रस के बसि आरस में सु गये तजि संगम सैन सुचे ते।
उर तें उड़ि गों पट न्यारो उरोज सु 'आलम' हार के बीच रुचे ते।
मनो गिरि संधि के सिंग दुविच्च के वासनि आसनि मध्य उचे ते ॥374॥

औधि की टेक प्रबोधन को पिय सोधन कुंज गई सजनी।
कबि 'आलम' बाल बिलंबि भये कलपै मिलि सेज संताप घनी।
पगि पीठि प्रसून उठी छबि सों छतियाँ लगि कुंकुम स्वेद कनी।
बिरहा हनी फोंक फबी उत ह्वै प्रगटी इत ह्वै मानो बान अनी ॥375॥

औधि टरी न हरी निरखै सुडरी तिय कुंजगली भई भारी।
कबि 'आलम' आस उदास लये त्यों-त्यों स्वाँस भरै अँखियाँ भरिढारी।
हिंय चौकी जराउ की आनन ह्वै मधि छूट चली धवली जलधारी।
सींव सुमेर की अंकम काज मनो रवि को विधु बाँह पसारी ॥376॥

आगतपतिका

हरि आगम की अंगना सुनि चाह सँवारत अंग हुलास हियो।
कबि 'आलम' भूषन भेष बने छबि कोटिहि मैन को अंसु लियो।

1. वावन = अति छोटी।
2. तमई = तमी, रात्रि।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तिलकद्दुति कुंकुम मध्य ललाट सुचारु जराउ को बिंदु दियो।
अनुराग ते जाग जगम्मग मानो सुहाग को भाग प्रकास कियो ।।377।।

घर आँगन पैठत साँझ सबार, मिलो अँखियाँ-अँखियाँ जिय जी सों।
'आलम' आन न सैन लखैं पिय को चितु तीय तिया चितु पी सों।
पुर बीथिनि में मुरली सुनि के चलि आवत एक कछू मिस ही सों।
कान्ह चितै मुसुकाइ इते कछु बोलति है कहि बात सखी सों ।।378।।

बातक सों बरु बैरु बढ़ावत बाटहि घाट अनीति सकी है।
ताहि सों खेल करौ नंद के सुत जाके हिये यह बात खची है।
'आलम' बाहिहि दोषु लगैं सब कोऊ कहे यह याहि रची है।
कांकरि यों जु कपोलनि छ्वै गई देखत हौ कैसे आँखि बची है ।।379।।

डरिये इन्ह सों जितनो हरि ये निसि में पटमोटनि खोलति है।
इत ईतर ह्वै इतराई चलै फिरि छांह चितै तन तोलति है।
कबि 'आलम' और तौ मोंगि रहैं अरी यातो इते पर बोलति है।
रहि री मचलानु कहा कहिये माई आपने जी पर डोलति है ।।380।।

लाज तजी जिहि काजु सखी इन लोगन में बसि आपु हँसाऊँ।
'आलम' आतुरता अति ही तिहि लालचु हौं तुम्हारे सँग आऊँ।
कान्ह मिलै तो मया करि चाहत हौं न कछू जिय हू की सुनाऊँ।
देखन को अंखियान महा सुख जो अँसुवानि सों देखन पाऊँ ।।381।।

गोरस फेरि हुतासन के मिलि जाँवन हू हित जोवन जैये।
रूखे ह्वै रोष ओराहनो हू यहि लालच बीसक बात बनैये।
औरहु काज गये कबि 'आलम' पै ओहि नंद गली होइ अैये।
कौनहु भाँति कछू छिन कान्हरु जो अँखियाँ भरि देखन पैये ।।382।।

जात चले कछु दोषु लगै तेउ बावरि रोस करै ब्रज में बसि।
'आलम' नैनि रीति यहै कुलकानि तजी पुती री मुँह में मसि।
जद्यपि घूंघट ओट कियो हम कान्ह कहूँ चितयो फिरि के हँसि।
किंकिनि छूटि गई तरकी तनी लाज के संग चल्यो अंचरा खसि ।।383।।

टोकत हो मग रोकत हो सु कहा इन बातनि कान्ह अघैहो।
'आलम' ऐसीयै रीति चली माई या ब्रज में कहा उलटिये हो।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गागरि डारि भजे इंडुरी गहि काँकरि डारत औसरु लैहो।
हौं उमहीं जु कह्यो सु कह्यो हम का कहिहैं तुम ही पछितैहो ॥384॥

और सबै ब्रज की जुवती तिन तो अपने हितु कै हरि लेखे।
'आलम' सैन सहेटनि भेटनि है तिनहू रति मैन बिसेखे।
मैं सखी रूप की छाँह सी छ्वै कबहूँ अँखियाँ भरि कान्ह न देखे।
मो तन चाहि उन्हें चितवैं सहिये कैसे माइ ये लोक परेखे[1] ॥385॥

कहा कहिये केहि सों कहिये हित सों कहिये कछुना कहि आवै।
देखत ही सब घोष घंघोवत देखत ही हरि देख्योई भावै।
क्यों सुनि कै रहिये ग्रह ज्यों जमुना तट तेरनि आनि सुनावै।
सो मुरली सुनि कै कबि 'आलम' दंद उदेग[2] उचाट उठावै ॥386॥

सटकारी लटैं रतनारे से नैननि अंगन अंग अनंग जगी।
ढिग ठाढ़ी तोसों हँसती जु हुती अब ही उठि भीतर भौन भगी।
मड़हा गढ़ है किधौं नंदलला जैसे मानत हौ कोउ और ठगी।
नेकु न्यारे हु मोहिं सु देखन देहु कहौ किनको नहिं कौन लगी ॥387॥

जोबन के फूल बन फूलनि मिलनि चली।
बीच मिले कान्ह सुधि बुधि बिसराई है।
बाँसुरी सुनत भई बाँसुरियो बाँसु री सु,
बाँसुरी की काहि 'सेख' आँसुनि अघाई है।
थकि थहराइ बहराइ बैठियो न कहूँ,
ठहराइ जीय ऐसी पुनि ठहराई है।
बारुनी बिरह आक बाक बकवास लगी,
गई हुती छाक दैन आपु छकि आइ है ॥388॥

जहाँ तें निवारौं जाइ तहाँ उठि पर धाइ,
हियो अति अकुलाइ लाज न करत हैं।
देख्यो चाहैं बार-बार मुरि नंद के कुमार,
अति ही बंसी बिहार प्रानिनि हरत हैं।
देखे तें ह्वै मुरझात बिनु देखें बिललात,
दुख देत दुहूँ भाँति व्याकुल करत हैं।

1. लोक परेखो=लोकापवाद का दुख।
2. उदेग=उद्वेग।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मारि मारि मीजि कै मरुरन मरोरि डारी,
मेरे नैना मेरी माई मोही सों अरत हैं ॥389॥

फूलि फुलवारी रही उपमा न जाइ कही,
कहा धौं सराहौं ताते जोति अधिकानी है।
'आलम' कहै हो धरी मोतिन की पाँति खरी,
हीरनि की कांति छबि देखि कै लजानी है।
दारिम दरकि गये वाके समुहें न भये,
रबि की चमक किती बार मैं बखानी है।
तनक हँसनि मैं दसन ऐसे देखियत,
दीपत नछत्र मानो दामिनी दुरानी है ॥390॥

काम कलेसहिं भेष फिरो सब कामहिं नेकु परै कल कैसें।
'आलम' ए अलि नैन अली मुख बारिज बाझु[1] रहै नहिं तैसें।
सीता के सोक में तापन राम बिलापन आप तयो तनु तैसें।
छीन मलीन अधीन दुखी दिन रैनि गये रजनी पति जैसें ॥391॥

केसू कुरहरे[2] अध जरे मानो क्वैला धरे,
क्वैलहाई कोयल करेजो भूंजें खाति है।
फूली बन बेली पै न फूली हौं इकेली तन,
जैसी तलबेली औ सहेली न सुहाति है।
चहुँधा चकित चंचरीकनि की चारु चौंप,
देख 'सेख' राती कोंप छाती खोंप[3] जाति है।
होन आयो अंत तंत मंत पै न पायो कछू,
कंत सों बसाति ना बसंत सों बसाति है ॥392॥

रैनि गढ़ गूढ़ रही 'आलम' अकास मिलि,
चंदु गढ़पति जानै अटल अटूटि है।
दौरि दिनु लाग्यो नारि मेरु भरि सूर आगे,
गोला छूटि लाग्यौ ताते पुछपौरि फूटि है।
दिसि की उजारी जानी जोन्ह भीति भहरानी,
हलमले द्विजराज जाम सीम छूटि है।

1. बाझु=बिना, बगैर।
2. कुरहरे=चितकबरे (आधे काले आधे लाल)।
3. खोंप जाति है=घुस जाती है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आपु चल्यो अकुलाइ छपति नछत्र पाछें,
दल भाजे जात प्रात पनहरी लूटि है ।।393।।

बरुनी कटीली भौंहैं कुटिल कटारी सी हैं,
काम की विचित्र ऐसी काके पर डारिहै ।
अलक तिलक नैन अनग अनंग टीको,
अनियारे औ उतंग उर पर टारिहै ।
'आलम' कहै हौ कहूँ कान्ह जू कितै ह्वै आइ,
सोचति तब न अब रीझ न सँभारिहै ।
जोबन की माती ग्वारि अंचर सुधारि देह,
दैव की सँवारी काहू मानसहिं मारिहै ।।394।।

शांतरस

अति पतंग मृग मीन दीन छबि छीन नलिन पुनि ।
गज बाजी कुंदनहिं हंस सारस कदली गुनि ।
कोकिल कीर कपोत कुंद जो पटतर भाषहिं ।
हौं क्यों यहि बिधि कहौं बुद्धि अनचाहत नाषहिं ।
वृषभानसुता सम कहन कहं, 'आलम' त्रिभुवन में जु कछु ।
यह मन बच क्रम कै जानियहु कहि कहिबी सो सबै तुछ ।।395।।

सेजु सुखासन हेम हीर पट चीर बिबिधि बर,
निरखि निरखि मन मुदित होत निज सुख संपति पर ।
आपु बनै बनिता बनाइ बिलसत बिलास अति,
जग रक्षक जगदीस सो जु भूल्यो जु अलप मति ।
अजहूँ सँभारि 'आलम' सुकबि, जौ लौं अंतक नहिं,
पग डगमगात हेरत हँसत, बिरह भुअंगम को डस्यो ।।396।।

इतिश्री आलमकृत आलमकेलि समाप्तम् ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अक्षरमालिक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अक्षरमालिक

अजहूँ तऊ वधि पै हरिबे की दुर आली,
तब बिरह मरोरि मींजं मारैगो।
उदित रिसा तौ ता तौ ए तौ तौ कै पै रहति,
विधू चढ़ै हूँ तै सेख कैसे के उबारैगो।
कहत हो तो हे एह रिस तै निगरि याहि,
याहि छाड़ि जिन देह बिरहन चढ़ि मारैगो।
होनी है सु होइ सु निकरौ दुख दाइ के है,
चंद्रमा की चांदनी विना ही लोग सारैगो ।।435।।

अजहू अवधि हरि आइबे की दूरि आली,
तब लगि दुसह मरोरि मीड़ि डारैगो।
उदित रिसा तौं रातौं तातौं बरजे न कोउ,
विधु व्याध बधिवे तैं सेख को उबारैगो।
ऐरे राहु पकरि रिसाइ कै निगलि याहि,
छाँहै जिनि, भूलि बिरहिनि तन जारैगो।
ह्वै वै सोई ह्वै कोऊ कछू कैहैं ऐसें,
चंद्रमा की चांदनी बिना हू लोग सारैगो।
एक खंडित पत्र का ।।88।।

अधम अखाज घात वेली वेला न घात,
लौंक की न कांन औघ लेत है करस तैं।
पापनि की सी वा बांहि गनिका की ग्रीव गहै,
हिरदै कलंक ह्वै निसंगक से दरस तैं।
मेरे जो अपूत प्रेत भूत क सौं सूतक सौं,
फिरि तिवधूरा जैसे कोटिक बरस तैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गंगा जू के तीर जाइ 'आलम' समीर छुवै,
हारू के पिवैया तरै वारू के परस तैं ॥432॥

आछे आछे षीर सेवै मंदाकिनी नीर सेवै,
सुरति के सीखे सुख तीखे पर हरे सै।
किधौं नलि नीलनि की पाँति कांति चली जाति,
किधौं अरविंद तैं भवर हर वँरसै।
परवारे 'सेख' आछे उनहारि,
मृग मीन पर हरे सै।
ऐसे नैंना लियै स्याम आये सखि मेरे धाम,
दूति तन हू तैं कांम बांन सन हरे सै ॥471॥
अंतिम छंद

इति श्री कवित्त शेष आलम के समाप्त

(अक्षरमालिका की पुष्पिका)

आछे मृग छोना से तरीछे जल मीन हू ते,
तीछे सार धार की अनि तें अनियारै है।
'आलम' सुकवि अति लोने रस भीने नैना,
अंजन की रेख मानो खंजन सवारै है।
पंकज से अरुन वसीठ प्रेम प्यारी जी कै,
नैंन है छवीले किधौं काम के कटारे है।
घूंघट उघारि पटु आपु तै दई,
विचारि नैकु देखि सुंदरी जात मारे है ॥431॥

छाछै वै ढरारे नैंना झलकैं रंगमगै मैंन,
किधौं सांचे ढारे अति उमंग सदन कौ।
झझिकै सखी सिखावै अंचर न उर भावै,
हसनि वसन भेखि ललित रदन कौं।
स्याम जू के सम ह्वै कें चितवत चित किए,
सेख हू सौं हेरति है पिय के बदन कौ।
एक टक चाह रही ठग के से लडू खाये,
थोरे से दिनन तो देखि लै मदन कौं ॥433॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ओप अंग राग रंग रीझि रही सखी संग,
वारज बदन तन लचिकन चरि सी।
बैठी पांन खाति ही सु सखीनि के मध्य तहाँ,
बाँसुरी बजाई 'सेख' मोहन महारसी।
चित चल्यौ तानन कौ बीरी चली कानन कौं,
चौंना लावै आनन कौं रही न सँभार सी।
लागी देह कंपनि रही न सुधि अपुनी सु,
ठयनी मो मुख देखैं भूलि गई आरसी ॥436॥

कंजन से खंजन से किधौं मन रंजन से,
आहि दुख भंजन से दिया से उजारे हैं।
किधौं पंचबाननि से चढ़े खरसानन से,
किधौं प्रान हानन से लोहू सों लिवारे हैं।
मोनी मनमोहन से सब सुख सोहन से,
जोहनि जुगति किधौं साँचन में ढारे हैं।
आलम सुकवि चित चिहूँ यौं (1) न टरैं क्यों हूँ,
प्यारे तेरे नैन मेरे नैननि के तारे हैं ॥5॥

कवहूँ दिहरी कवहूँ पलिका कवहूँ घर आँगन डोलै।
कवहूँ तो अटा चढ़ि चाहि रहै कवहू कई बोर किवारन खोलै।
कवहूँ कवि आलम मौन गहै कवहूँ करि आँचरी बावरी बोलै।
स्याम सनेह बिना सजनी अपनै मन मैं तन मैं बिसु घोलै ॥4॥

करन कंठ नासिका मद्धि झीलिय झनकारहिं।
हित कमल पर चित तत्थि मधूकर गुंजारहिं।
उलटरीं पूतरी गाड गोरष लष ज्वाला।
सेवहि दृग मुनि जोरि पीठि पाछे मृगछाला॥
वल्लरी सुबाह दुरि इक मिलि, कंक जटा तिह संम करी।
वल्लरी चवरि दुलही विरछ मनौ चतुरभुज प्रतिधरी॥19॥

कान कौ चलि आली आनन मृगंक सुनि,
काननि जु कह्यौ कहा रही गहि मानही।
कानन करति कलि आनन सुहाति तेरौ,
ध्यानन तजि तजि आलम सु आनही।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जान सो सुनाजु की कहा सु जानै आज की,
तू नाज कु सुजान जानै जानै सो सुकान ही ।
सुमन समीप अंभुं भोजन मंजनु आवै,
भृंग भार भामिनी भँजतलाल तानही ॥24॥

कालिंदी के कूल कूल कुंजन की छाया देख्यै,
कोलाहल कोकिला कै जिय जरियतु है ।
दोहनी को नाम लियैं दूनी दाह होत अब,
बाँसुरी की सुधि आएँ आँसु ढारियतु है ।
'आलम' कहै हौ तुम दीयावंत दीनानाथ,
हा हा गोपीनाथ अब क्यों बिसारियतुहै ।
तब कर छाया कै छपाइ रखि छाती पर,
मेंहूँ तें बचाइ अब नेह मारियतु है ॥21॥

कालिंदी के कूल मूल कुंजन की छाया मधि,
कोकिला कुलाहलनि जिय जारियतु है।
दोहिनी की सुधि आये दूनो दुख होत दई,
मुरली की सुधि आये आँसू ढारियतु है ।
भनै बलिभद्र तुम दयावंत दीनानाथ,
हा हा गोपीनाथ जन यों बिसारियतु है।
गोधन की छाँह तैं छपायो तब छाती तर,
मेह ते बचाये अब नेह मारियतु है।

किधौं कलधूत की सी पूतरी बिरंचि रची,
किधौं यह मेरे जानि काम बेलि बई है ।
पुहुप लता सी रूप दधि मधि कै निकासी,
मानौ मैन काँवरी कि खरी क्यों न जई है ।
किधौं है सुरंग अंग पीय पति सुखवति,
कोमल नैन सेष किधौं नारि नई है ।
आइ खरी दिहरी मौं चित चोरयौ बिहरी सों,
मिहरी कै देखैं मति तिह ह्वै गई है ॥3॥

किधौं जा हिमंचल में गातही लगायौ इनि,
किधौं दीने दानबलि बिक्रम सो अर्‍यौ है ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

किधौं जाइ द्वारिका में कान्ह जी की सेवा करी,
किधौं जाइ रामकाज रावन सौं लर्‌यौ है।
'सेख' भनै किधौं असु मेदहूँ के जग्य कीने,
तातै यह धरनी निकट छूट पर्‌यो है।
धूनत याही तै सीस विहन जप्यौ हे याहि,
बेसरि कौ मोती मानौ कौन पुन्य कर्‌यौ है ॥17॥

किधौं पै निहकलंक कलानिधि हूँ की कला,
किधौं नई कंज कली अठर बिगसी है।
'आलम' सुकवि छवि कंचन सरस रची,
विधि बार बार में कसौटी लै कसी है।
किधौं अलबेली तू जु सीची है पियूष रस,
किधौं सु पियूष रस तेरे रस रसी है।
सुरपुर जु सुनियतु उरबसी आहि ओ,
उरवसी मेरै तू ही उरबसी है ॥22॥

किधौं निकलंक कलानिधि की कला है इह,
किधौं नई कंजकली अबही बिकसी है।
आलम सुकवि छवि कंचन सी रची,
बिधि बार बार मदन कसौटी लै लै कसी है।
तू तौ अलबेली किधौं सींची है पियूष रस,
किधौं ए पियूष रस तो ही रस रसी है।
सुरपुर मैं जु सुनियतु उरवसी आहि सो न,
उरवसी मेरे तू ही उरबसी है ॥96॥

कीजै कहा कर कनौडै ह्वै के जीजै नाहीं ना तौ,
एक बास में उसास लै लै मरियै।
नीची डीठि कहूँ आपु ऐसें ह्वै दिखाई दीनी,
कैसे हूँ न देख्यौ जाइ जे तो सो करियै।
बाँसुरी की धुनि सुनि द्वारे उजकन काज,
मन कै चलत तन ही मैं कापि डरियै।
लाजन की भीर पर पग ही न पावै 'सेख',
धीरै धीरै सकुच उचाइ पाउ धरियै ॥23॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कुंज कुंज प्रति मधुप गुंज गुंजति ऊरध ध्वनि।
ललित कंठ कोकिल कलायि कोलाहन सुनि सुनि।
रंजत वर मंजित पराग सौरभ सुगंध निधि।
विकसु कि सुकिनी औरु दंव्व आनंद सबद विधि।
पररंभ लता तरुवर अवर भये साहि आनंद थिति।
विछुरन हु 'शेख' संपति विपति सुकंत असंत वसंत रिति ॥16॥

केक सद्न न करहि चक्रित चात्रिक वपि भज्जहि।
दादुर दुरि डरि रहै हरित तृन महियर छज्जहि।
वँ सँरदु अलि चहि कुहूँ कुंकोकिल मृगंधभय।
कुसम बास न बसाहि रूप रंग हीन वंचि गय।
उन्नयो जो मेघ 'आलम' सुमति रिति वसंत बरषा कियै।
लुटहिं न रेस वरनेरवरसु बुद्धि जन दुहिं दुहिं दुसि दुख्यियै ॥18॥

कैसें धीर धरै ओड़ी परे ननगोड़ी निसि,
छाँडी सुधि गोपीनाथ गोकुल नगर की।
कहा करै बिरहनि बीन कौ बिहूंग वैरी,
लागिये रहति जीभ लंगर लगर की।
प्रान दहै पापी पौन आँगन में रहै कौन,
अंग में अनंग आगि दगै ज्यौं दगर की।
चंदा कौं चितै शेष चढ़िन चौवा रै चली,
चरन धरत चौकी च्वै चली अगर की ॥6॥

बिछुरे हैं प्रान पति रही है न एक गहि,
न्हान दान पान खान अंजन बघर की।
सूख रहे कमल विहूने जल यथा नैन,
चैन न परति पल चाहनि डगर की।
सुनि सुनि सुहृद संतोषिबे को वैनी बलिआई,
जुरि जुरि सब नागरि नगर की।
मरु कै मनाइबै उचार चली मज्जन कौं,
चरन धरत चौकी च्वै चली अगर की।
(नाथद्वारा, 475)

खरो खेल जोहीं तब झाँई कूप झाँकि देखि,
बदन वदन जोरि जो तितहिं बार की।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अब जग जोवन उमगि भई मोहनि तौ,
मुहुँ हूँ न लावै उठि मोहन मुरारि कौ।
'आलम' सुकबि विधु वारिज विमुख करि,
तेरौ मुख कर्‌यौ कहा कहौ मुख चारि कौ।
ऐसी रस रीति सुनि ऐसौ रोस है सु ऐसौ,
ऐसौ रूप बिझू पै न ऐसी या गवारि कौ ॥55॥

गहर न लाव पीय जन को संताप जानि,
संकट हरन जानि कितै जानि पाइहौ।
'आलम' मरूप स्याम करुना के सिंधु स्वामी,
जैसे गुन तारद्ध अहिल्यानि के गाए हौ।
मेरी यौ बिपति सुनि प्यारे प्राननाथ अब,
ऐसै पाउँ धरौ जैसै हाथि काज धाए हौ।
पाती दीजौ पंडित संदेशो मुख ऐसौ कहि,
आवन की आसा बाढ़ी मेरे जानि आए हौ ॥66॥

गुंजन की माल वनमाल मोल की माल,
मोहन मराल चाल अति इतराति है।
दुति जलधर धर मुरली अधर धरि,
गिरि धारे धरि कर घन वन जाति है।
निपट नवल वलि विसरै न एक पल,
अति ही चपल चल दल को सो पाति है।
माखन ही चोर मख चोर सत मख चोर,
चीर चोर छीर चोर चित जो रै जाति है ॥65॥

गोकुल को मूरि छाकि धूरि देन आए वलि,
अलि कु संताप ल्याए किंगरीक नैंन की।
सारी देहूँ ऊधौ कौं अँधारी माँग लेहु माई,
आल देहु वाला होहु मेल देहु गैंन की।
बाजूबंदि वेसरि विजौठा ही उतारि 'सेख',
वमवा विभूति लेहु वाट गहौ ऐंन की।
मोहन के मान कौं कुबिजा के कानन कौं,
बीरैं काढौ वीर मुद्रा मेलौ ऐंन मैंन की ॥67॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

घुमड़ि घोर घन उमड़ि करत आडंबर अंबर,
पूरति सर धर धसति धार पथि थकित दिगंबर।
झझकित मृग मृग ससि समान दमंकत दामिनि दिसि।
विहरति खग चातिक चुचात पिय दुखत स्याम निसि।
ग्रीषम विरहा द्रुम लतनि परिरंभत कर तिहि सैन हरि।
संचरत काम धर पंचसर पावस प्रीय प्रकास करि ॥75॥

चंदन सौं खोरैं गोरैं गात मधु पुहप के,
चोसरि चौपरि हारु सौहत गरै तरै।
किधौं द्विजराज आभा बार में हिलोरे लेति,
किधौं सुरसरी सोभा जाति लहरै धरै।
श्रम जल बूंद किधौं सेत मुकताहल से,
जोबन के जौहरी दिखाइ है लरै लरै।
सेत डोरि याकी सारी दीसति अति लहकारि,
मानौ पौन पानी पै गँमति हरै॥ 108॥

चढ़ी भौंहैं चातुर चढायें भौंह फेर्यौ चाहै,
डीठि भरै ऐंठति अँगेठ हूँ तैं गाढ़ी है।
ऊजरी उज्यारी एसी गूजरी न देखी कोऊ,
आँगन में सहज देवंगना सी ठाढ़ी है।
देह में दमक वाकै चीर में चमक जाकै,
छीरनिधि मथि किधौं चंद चीरि काढ़ी है।
'आलम' केहे ही मुख देखै मुरझे हौ,
कान्ह, अंग अंग ठौर ठौर और छवि बाढ़ी है ॥106॥

चाप सी चारु चढ़ै भृकुटी चल लोचन होत चलै चपलोंहै।
ओटि मनो दुति दीपक की झलकै कुच कालिम स्यौं उरमोंहै।
अंगराइ उठै सहि आवै सुभाव हु 'आलम' रीझि रहे हरि सोहै।
अंगत ही संचर्यो अजहूँ सरलै रह्यो काम सरासीन भोहै ॥107॥

छंदमूल थर घरिनि अर्थ जल विमल पूरि दिय।
वरण पत्रि उलहंत्र किरण साखा प्रकास किय॥
भाउ बिंद उपमा बिहंग बहु बसहिं जु अस्थल।
जुगति फूल रस रंग रसिक रिझहिं सुबासु चल॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

छाया सुकृति जहँ जहँ चलिय 'आलम' फूलत सिंघू भर ।
सुरत रसमान पोरूयौ कविन जग पर अमर कवित्त कर ॥113॥

छया अंधारी छाँन थूनी थंभन गिरि जगजमग ।
पवन जबन विथुरी जाम बिलिय अखंड डग ॥
पल बंधन भये सिथल तिमर तन उडपंख भय ।
जीरत जिमपिखहिं छत्र झलकहि न छत्र सय ॥
उभति पिख्यि 'आलम' सुमंति करहि छोर धूव उचकिय ।
बल करत प्राति प्राची रची रत्त बदन पर मुक्क दिय ॥114॥

जपन नाँम सोई जपै नहिं न बावन अक्षिर मह ।
तब सुन्दर दरसियै जोति सप्प न प्रक्षि मह ॥
सुन्न पवन बिनु उठै सब्द सोई सुनै श्रवन बिनु ।
तहा न चित्त सँचरै तहाँ दोऊ संध रैन दिन ॥
जल पर जु वरण 'आलम' सुमति पढ़ि मिटहि लिखि पढ़हि पुनि ।
सोई सूर सिद्धि पंडित सुकवि यह बिचारि बुझहि सुमन ॥118॥

जब ते उरझ्यौ मन मोहन सौ तब तैं कछु भोजन भौन न भावै ।
सेज परै त उठै अकुलाई सु व्याकुलता चित चैन न पावै ॥
लाज के भीत रहे कछु काज सबै जु सखीनि मै यौं बहिरावै ।
आनन ही कर सी करि लै जहीं सुधि जाहि तही सुधि आवै ॥121॥

जल गंभीर विलसिये निजल भसि कंद खीनज्जै ।
सुफल फल्ल भूगिये निफल छाया सुख दिज्जै ॥
सुदिन पुष्य मन हरै अप्प वस रस्स पुण्य मन ।
अदल सीलन न तजै वजन भुजन सु पंच जन ॥
वरषा वसंत 'आलम' उदम भर प कहि धन के सरस ।
सुझहु समत्थ संपति विपति तरवर संरवर सापु रस ॥117॥

जल में कहूँ तैं आनि पर्‌यौ जल जंत यानि,
जानि जन आपनौ अनाथ सरनार थी ।
पाइनि परति यौं ही छाड़्यौ पाक सासन औ,
छाड़्यौ पनगालन परम पुखारथी ॥
'आलम' सु कबि प्यारी अबला अकेली छाड़ी,
हाथ तै हथ्यार छाड़ै रथ छाड़्यौ सारथी ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

धायो व्रजराज गजराज की गरज सुनि,
आयो चढ़ि वाही के मनोरथ महारथी ॥115॥

जेइ बातैं सुनि रु सजैये रूखे ह्वै के तेइ
बातै सुनि आली साँची ह्वै ही तीताति है।
अब पछतैयै लरकाई कहाँ पैयै 'सेख',
तैसियै निकाई भरी कातिक की राति है॥
चोई गाँउ वे गई गली वैई हम वैई अली,
वै सोई चलत कछु औरैई सुगाति है।
वैई नैना कान्ह के कनोडै ह्वै कै चाहति हैं,
वैई भौंहैं कहू कैसै सोहैं करि जाति है॥119॥

जैसे रवि कंज प्रीति प्रीतम कहावै दोऊ,
हित कौन हेत सुख देखे मनुहारि है।
चंद कौं चकोर भोर खरै इकटक नैन,
वाकै अन भायौ या कै जियन विचारि है।
ऐसी कीजै लगन तन मन जोवै लगियै,
न अलग ह्वै निवारि है।
जौ लौं वा में बैन चित मैं न बसै तो लौं नैन,
वाकी ऐसी गति है विना ही नेह सारिहै॥160॥

जोबन भरी है बाल चलत मराल चाल,
गरे मरगजी माल खासे मोती मंग के।
सीतल सलौने अति छीन गई मीन गति,
नैंना अनुराग भरै पागै रूपरंग के।
अधरन अरुनाई दसनन बीजि झाई,
कुं गजराज मानौ छूटे मैंन जंग के।
सखी संग आवति है बात न जनावति है,
चिह्न आ छिपावति है स्याम के प्रसंग के॥116॥

तुम तौ रसिक सब रस नीकै जानति है,
यह जब रस रस रस समुझाइ हो।
रावरे तौ ठाकुर हो गई हीं बहुरि जैहौ,
बार बार जाइ कै उधार पर जाइ हो।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परौं तुम बात कही काल्हि सुनि सहि रही,
आजु मुख लागी है सौ वारै बोलि।
अति अलबेली वाकी आली यौं न बोलै,
ता सौं बात कहिबे कौं समजोखैं पाइ हौ ।।184।।

ते तौ हठि राख्यौ करि रंक को सौ हनु नारि,
रसु विनु रीति रति वाद ही विहाति है।
चलत न नैंन रही खैंच कर बैंन ऐसे,
सास हूँ के लति अति आली अनखाति है।
'आलम' कहै हौ नेकु वेसरि की मोती डुलै,
ता की आभा सोभा अति फति परि जाति है।
रूखी सी लगै जु तेरे मुख में निकाई आली,
मेरे जान बैठी मन मन मुसकाति है ।।185।।

तै जु कह्यौ मर्‍यौ है पर्‍यौ है ते स्याम वसि,
गिरि रह्यौ दैह पैह विरह विलात है।
ता दिन पिछौंझे आनि तौ सौं कछु बात कहि,
नैंन फिरि वूझ्यौ वाकै पनि पछितात है।
लै री अब लै लै जब पंख न लगोई चल्यौ,
पीरौ 'सेख' मंजन पुरानौ जैसौ पात है।
कर सौ कुरीचै मास कि रच्यौ न खानि पावै,
करंग उड़ानौ देख्यो काग लिए जात है।।186।।

दर्प्पन सम अकास श्रवत धर सुधा सु ससि कर।
निर्मल जल रत औ सुगंध सुंद सरोज सर।।
प्रफूलित ललित लतानि करत कोलाह अनि दल।
सुखद सीत निसि भौंर काम उमगत अनेक बल।।
तलफंत प्रांन 'आलम' सुमति देखत दुख मुख दुति जरद।
कीजै न गवन छिन भवन तजि कब दुसह दारुन सरद।।206।।

दिनकर दुरति गई मानौ दिन मनि,
ताहि वियोग स्याम तनु कीन्हौ।
नर पसु पंछी सकुच कर खेचति,
टूटति जग अडोल ऋतु लीन्हौ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'आलम' सुमति मयंक प्रकास,
करतट नक्षत्र उपद चीन्हौ।
निकर्‌यौ खोज चल्यौ मनौ भाजन,
विधि अछित मग उप्पर दीन्हौ।।190।।

दीरघ दिन निसि ही न झीन जलधार धसति धर।
चक्रवाक चित मुदित उदित रवि थकित पंथ नर।।
चलत पवन पावक समान परसत संताप मन।
सुकि सरबर बर 'सेख' चमक तलफंत मीन तन।।
दीसंत दीगंबर सम सुतरि विनलपता गए पत्त झरि।
अकुलात देह दंपति विरह सु कंत गवन ग्रीषम न करि।।205।।

द्वारे तैं दिखाइ दूरि दौरि के अटारी चढ़ि,
उझकि झरोखाँ झाँकि खोल कै किवारियै।
लोचन निसेखे जल मुँचति वियोग भरैं,
कहत सनेही सों बऐसी न विसारियै।
एते बीच ओचिकनि चढ़ परकारी पर,
ताही समै सास आनि तेज तैं पुकारियै।
मूरछ मूरछ परी हियौ हत्यौं हाथनि सौं,
सैनन हीं कह्यौ हा हा स्याम जू सिधारियै।।191।।

श्रीगणेशाय नमः

अथ कवि शेष आलम कृत कवित्त

नाथ निरंजन निरविघन, करुणामय निष्काम।
निस्तारण तारन तरन, रटो निरंतर नाम।।1।।

ज्ञैन जोति जल बूंद धर ग त्रिकुटी समुद्र महि।
चित चिनगादै डार प्रलै पावक प्रचंड जहि।।
अष्ट कमल दल निदर भवर तिहि मध्य समपिय।
अफल अली फल फलै गुरु स्वर साथ रथ पिय।।
जय जय सुसिधि 'आलम' सुमति अचल अजर अमरनि अवधि।
वन्दौ ज चरण तिहि सिद्धि के जोई साधत विथा असधि।।76।।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पयान असंक मयंक मुखी निरखै रति औरनि नाय हारै।
'आलम' कुंकुम के रंग की अँगिया अंग में छवि कोटिक धारै॥
कस की कुच कोर की ओर लसै सु कहा उपमा कवि औरु बिचारै।
बूझत चंचुपुटी अटकी चकवा मनो प्रीति परागहिं टारै॥213॥

पाइनि परति मेरो सीसऊ पिरानो प्यारे,
ऐसो रोस कीनो हठु कह्यो न परतु है।
मायन के गान ही हो क्यों हूं कै सिराय अति,
ब्रज ही की भीत कहो कैसे ढरतु है।
'सेख' समुझावति ही रसना ही रानी मेरी,
मान मदमाती नैकु नैननि जरतु है।
मंत्र पढ़ि झार्‌यो सोई लाये तें न लागै,
नैकु औरु कहा दूती समसेर लै लरतु है॥220॥

परासर लर खच्यो लहरि गार झूमति स्योदर।
श्रृंगी रिषि रस पच्यो राजपुत्री सु मंत्र कर॥
संकर संकि अनंग मूर धर धंग राखि लिय।
लगति विषम फुंकार करिग कंकर गौतम तिय॥
वंच्यो न कोई 'आलम' सुमति इहिं चंचल तें को नस्यो।
कहि कोन पुरुष निरचिख गयो विरह बिहंगम नहि हस्यो॥221॥

पुनि कै कछू पाइनि पुनीत किये,
परम अगाध की समाध उनिराधी है।
वादी है न मादी परमादी विषया विषादी,
सु वादी पाँच भूत को तामस अराधी है।
पर धन लागी धाउ धर नै विरोधै फ़िरै,
कोटि अपराध भर्‌यो ऐसो अपराधी है।
कहै कवि 'आलम' न हरि गुन गाए नैकु,
अनगन औगुननि गाँति गहि बाँधी है॥239॥

पुहप धनुष सर पंच इक मूक्यो विरंच पर।
पंचानन इक हनि गइक तो रामचंद्रधर॥
इक सम पिय दुपत इक सब जगत अंत किय।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मकरध्वज नित चपल अचल लत करत बुद्धि हिय ॥
बान बान लक्षि न विविध पेखति तछिन तिहूं डरन ।
नमो सो सिद्ध 'आलम' सुमति लक्ष मुनि सुमिर राखहु सबन ॥237॥

पैनी पैनी पैनीवै तौ पंकज की पाँखुरी वै,
तीछी ह्वै कै पीठि तैं पिछौंडी जाति है।
'आलम' तुषार करि किरने करोही जात,
करबी करारी ताहि ताती क्यौ हिताति है।
प्रान की जताई तौ पै राति की जुन्हाई जाति,
तीक्षन तताई बैस वैरनि पिहाति है।
तरुन वियोग तरुनी को तन ताइबैं कौं,
जैसौ दिन तरु तरैया तैसी राति है ॥249॥

पौन के परस छुद्र घंटिका कै डोरै डुरै,
हियै न सँभारे हारि खरी कटि कीनी है।
मो सौ मुसिकानी मानौ कोटि हीरा खानि जानि,
गोरै तन आनि छवि सोनै की सी लीनी है।
हाथ न हथौटी नैन काजर करनफूल,
'आलम' सुदेस माथें उेंड़ी आँडि दीनी है।
पीय की भवति कोटि भावति है भूषननि,
तू तो बिच भूषन ब्रज भूषन कौं कीनी है ॥222॥

प्यारी कौं परस पै न पौंन गयो मान सर,
मान सर जर कै प्रजर धूम हाई है।
पंकज अनिल जोति मधुप सु लगै स्याम,
पूरण परागै बहुत भुत भाइ है।
ऐला वेला वेला जरी भभूतरी चंचुरी सु,
चंपा पंखा झाड संपा ज्वाला जरि छाइ है।
जलचर जल के सिवार जरी कादों लगी,
जंत्र जरि साखा 'सेख' मानौ रैन राई है ॥235॥

प्रथमे प्रान मिलै प्रसून धन धारि कौ सु,
प्रान है प्रगट री प्रनेह के प्रवान में।
प्रीतम की प्रीति कौं प्रतीति कै प्रीया प्रकास,
री छत्र छाड़ि दै प्रसिद्धि के प्रजान में।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्राणेश्वर की प्रकृति तोहि तो प्रसन्त प्रीय,
'आलम' कौ प्रभु जाकौ प्रन है प्रमान में।
प्रानन के प्रान में तूं प्रान ह्वै रही है प्यारी,
प्रान की सौ तेरोइ प्रवेस प्रसीय प्रान में ॥236॥

बहु सु कीय आधीन चित अनुकूलहि जंमिय,
सोचि पीर उपजी होत हिरदै सुख रंमिय।
पठन सु गन गुन छत्र आव बहु धाय संमिय,
सुकवि धाय पेइठ पिख्यि रस नाम जुथपय।
सुंदर सुबरण 'आलम' सुमति तुकिपति अंगनि भंग हुव,
अव तरीय दोष छंदहिं कुलिन सुद्ध कवित सुपुत हुव ॥283॥

बारु की भूठि दिवारी की दौरि इतौ मन में हठ को लौं करोगी।
जान हौ सब जाइगो जो वन अंजुलि के जल कौ लौं तरोगी॥
'कवि आलम' आजु सु काल्हि नहीं फिरि आपु ही आय के
पाय परोगी।
मान की मोटि उतारि धरौं नेकु मेरो कह्यौ सुनि वोझ मरोगी ॥281॥

बारौ वैस जोहि तब झाँई कूप झाँकि देखी,
वदन वदन जोति देखत ही बार कौ।
अब जग जोबन उमगि भई मोहनी तो,
मुह हु न लावै उठि मोहन मुरारि कौ।
'आलम' सु कवि विधु वारिज विमुख करै,
तेरो मुख कह्यौ कहै कहौ मुचारि कौ।
ऐसी रस रीति सुनि ऐसे रस होत है री,
ऐसौ सूय बझियै न ऐसी या गवारि कौ ॥360॥

बालन को बसन विभूति कौ सुदेहु,
कुबजा के घर बैठिहु वटु वाम नाव ते।
माला तोरि तोरि जोरि करते अनंत ऊधौ,
एक एक सुमिरनी सबन पटाव ते॥
आप क्यौं न आये 'सेख' मारग बतायवे कौ,
जोगी की जुगति आनि जुवति सिखावते।
जो पै तुम आये हौं संदेसौ दै पठायौ हरि,
रथ भरि किंपा सब गोपिनि कौं ल्याव ते ॥284॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बाल बँधियो षगा सुग्रीव दिय।
लेहु लंक लंकेश छत्र पौरष अकथ्य किय ॥
भीम हन्यौ कीचकहि देखि द्रुपदी मन झूल्यौ।
सरग स्राप गुरु बर डस्यौ चलत गौतम गृह भूल्यौ ॥
गुरु नारि निमित 'आलम' सुमति ससि कलंक कालिमा दरस।
गर्घ वाननर जत में को न गयौ पर तिय परस ॥245॥

बाहर जांउ तौ बाहर हीं घर जाउं तौ आवहि संग लगेहीं।
भीतर भौन में बैठि रहौ हरि पैंठि रहे पे उरमें पेहेलैहीं ॥
नीदहु में अकबानी करै छिनही छिन देत सखी सपनेहीं।
सोवत जागत घौस औ राति घरी मुहि कानर चेन न देहीं ॥282॥

विरह की सेज विस कंटक विछोनाँ जहाँ,
दूषन जर्यौ सुजन कैसे सुख सोई है।
आली तेरी चालि हूँ तैं भाल सी लगे हे उर,
काल्ह सी तें नैंनिनि लगाइ यहै।
देखे अन देखे 'सेख' आस हू निरास वहै,
एसीए उसासै भरै आसुवनि गोई है।
ना तौ यह नाह को हैं किते ही छिनु राते,
ताते नैना करि रातौ सौ न रोई है ॥247॥

बैस को उठाव चित चातुरी को चाव न यों,
हाव भाव भोंहनि सु भाइ के समात है।
रसम से नैंना ठरै अंग रूप रंग भरे,
जोबन उमंग सरसाई सरसात है।
ता दीना ते ती छत री छे दी वचा ल्यौ या छैवे,
बेरी उन कान्ह कि बराइबंध गात है।
मैरै कहै हाहा कहूँ नेरे होनिहारि जिनि,
तेरे हसि हेरनि में मानस हिरात है ॥246॥

भया कालबूत किधौं सूक्यौ सौक रंग भारी,
कोने को कमानी याहि धरै वेली लीया है।
इसका का गर क ब गंम दूनी आवि आवि,
गनी मूयें तै तै विहाल यार जीये जिया है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हेरा लोहू मास मास चटा न पियास तेरी,
'सेख' कहे आनि देन रास पेम पीया है।
वै जवाब जोर जरै रोसनाई कौन धरे,
खूनी महबूब तेरी खूबी खूनि कीया है ॥292॥

भवन भयानक सौ भान के समान दीप,
तन मन सुनि 'सेख' मीजु मारियत है।
विरह विहारी विनु बेरी चाँद बेरु पर्यो,
बरत अकास आगि सी निहारियतु है।
कांति घनी कुटील कलंकी कला ही न ऐसौ,
पीर न पराई जाहि न रे जारियतु है।
कहा करैं कायर की बातें बार राह,
ऐसो कूर गरि कै उगिरि डारियतु है ॥291॥

भवर गुप्फ गुंजरै अंग अंगलान जु मुप्के,
सुख मानै सुख मना परस पिंगला न चुप्के।
रुध पवन रवि चंद उलटि ताली लै आवै,
काल कवल दल विंद विंदु जोंतिक परचावै ॥
रोहीया रोही जपे अजपा जपै जु चित हीय,
तब सुबुधि 'आलम' सुमति परकाया परवेस किय ॥290॥

भूल्यौ घट घाट कु उचाट भूली वाट हूँ पै,
देख्यौ नटु नागर बिसूरि वृथा बाढ़ी है।
संग की ते घर गई वेऊ जल भरि गई,
और देखें डर गई प्रीति परी गाढ़ी है ॥
बोले न बुलाए पल डोलै न निमिष 'सेख'
चित्र की सी पूतरी चितेरे मानु काढ़ी है।
पलकै पसारि तारे टारि टारि हारी नारि,
आंगुरी सौं नीची नारि ठोढ़ी गहै ठाढ़ी है ॥289॥

(अधर वर्णन)

भोर भये पंकज अरधि रवि रंग ज की,
कंचन पतंग जसु रंग जनु लाग है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लालन की कोरैं किबू धूप धरि जोरैं सों तो,
लागै सब थारे जो अरुन अनुराग है।
'सेख' भनैं रंग किधौं दिपक पुहंग कि,
गुलाब फूल पोसत गुलाल छबि छाग है।
हरि रस पानि कि भुयंग मनि जानि किधौं,
लाली तेरे ओठनि की ऐसी ओब जाग है ॥293॥

मंजन काज तजै तिय भूषन कंचुकी चीर छुटे कटि केहरि।
सांन सनेह सुगंध कलेवर लोइन लोई चलै धसि देहरि॥
'सेख' रहे पट पाट चुरी कर जावक पाईउ कीजे हरि।
अंगनि अंग अनंग उदै दृग देखि दुरै दुति रीझि हास हरि ॥323॥

मधुर मधुर कोमल अलांप करि गांन करत अलि।
ललित लता सौरभ सलोल भटकत नाइक चलि॥
भुज भरि भरि करि करि विनोद सपान करत जब।
उयो संयोग अंग रूप विरह सागर सोख्यौ जब॥
पुनि त्रिविध पवन 'आलम' सुमति अति रति सहति पर न करहि।
यह अद्भुत मधुर तुरत निरख सों हरखि हरखि आनंद भरहि
॥ 320 ॥

मलय गिरि तजि मठी मंद मंदों अनुसारियौ।
विमल सलिल सरवरहि प्रात मंजन तिहि करियौ॥
कवल फूल्ल फुल्लिय पराग विभूति अंगधर।
मधुप डोर संग चलत जटाजूट जुद छद करि॥
द्रुम लता डोलि 'आलम' सुमति वर वंदित तिय नर समो।
तप तेज वायु गस्वाति प्रगट जती रूप मारुत नमो ॥302॥

मानु कियैं मानिनी अनमनी है बैठि रही,
भावती मोहन जू की जोवन लहलहै।
जोतिप ललना आली ओझ ह्वै ल वात कहै,
मानत न क्यौं हु भाँति रौस के महल है॥
कैसैं धौं अवान पायै सोई कहौं मौ सौं तुम,
पिय जी सिधारौ कीजै उनकी टहल है।
कहा भयौ तौ कछु कहौगे सोई सोई कीबौ,
बैन रुखे चाहियै हमारी तौ सहहै ॥322॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मिलि गोकन कंकन कलिख दुदर झिलर मह्ममकारहि।
'आलम' सु कवि तिमिर म च कंपति अंग रंगित विज्वल चमकारहि ।।
नील वसन मंचति विरुध तहाँ सब देखत भिसारहि ।।301।।

मिलि गो क्वांण कंकन किंकिनि कलरव दुद्दर झिल्लर झणकारहि।
आभूषण जगमगि जुईक्क हुअ फणि मणि गण जींगन चमकारहिं।।
आलम सुकवि तिसिर कच झंपित अंग रंगित विज्जुल चलकारहि।
नील वसन वंचत बिरुध तिहि सब सहाय देखियत अभिसारहि।।
51/3 पत्र 109 (अभिसार)

मुखमंडल पर लसे जोन्ह् मंडित मयंक जनु।
जटित ज्योति अरधंग गवरि मज्जित टपन तनु ।।
धवल धूरि धुरि अंग उच्च सोहत संकर बर।
फन लुषित फन पन्नु चारु वुझीय चंदन तरु।।
जेहि मिलत संग आलम सुमति मनि की ये जलथल उज्जल बरन।
नव करन योति नव अंग कहि कह सुभव विभूति भव उद्धरन ।।2।।

मुख मीठ्यौ जी कठोर जहाँ तहाँ जोरि जोरि,
कौन के जुरायें छाती जुर की जुरति है।
गुन हूँ न मानें नेकु नेह पै न जानें 'सेख'
तम न स्याम हूँ के रूध न सुहाति है।
रूप रसु कीनौ बसु अंग अंग अपजसु,
केसें ता अहीर कैसौं प्रीति ठहराति है।
आवत चोमा सो कछू देखिये तमासौ सखी,
कान्ह फिरि गए ज्यौं कमान फिरि जाति है।।303।।

मैंन छवि रैंन के उनींदे नैंनाँ मूंदे आवै,
निंद के आरस इंदीबर नदरति हौ।
पीयरौ वदन भयौ हियरौ छुवति मोहि,
सीयरौ लगति त्यों त्यौ नीयरौ करति हौ।
'आलम' सु कौन जिनि ऐसै कै पठाई पिय,
जाके नित उठि उठि पाइनि परति है।
कचि मुकरायें मधुकर की सी माल लाल,
मकर विलोको कति मुकरे परति हौ।।325।।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मोर मुख ओरनि के मनहि मरोरि लेति,
मुरि मुसिक्यानि में अनेक मुरछात है।
तेरी हाँसी लोगन की हियें ही निसासी होति,
गांसी ज्यौ चलाइ देति बेधे विललात है।
'आलम' कहै हो घनै घायल ज्यौं घूमति है,
लै अडोल नैंना वट पारे जिहि घात है।
मेरे कहै हा हा करि नेरै ह्वै निहारी जब,
जेते बट बाट के बटाऊ मारे जात है ॥324॥

मौनी विवि गंगा कूल करति तपरस्या किधौं,
काम केतुका से कीधौ उठै हैं उठोना कै।
जोबन नरेस के चौगान के निसान किधौं,
श्रीफल तै सरस खिलौना फूल दौना कै।
'आलम' सुकवि कलधूत के कलस किधौं,
आनंद के कंद के मनोज रस हौना कै।
ठापे नंद नंद प्यारी सेत कंचुकी में कुच,
फटिक के संपट में बै सरोज सोना कै ॥321॥

यहै ठकुराई हौ जु आवै नहीं और बार,
रावरे जु आपुने सुभाई कौं हूँ आए हौ।
'सेख' कहै उन के तौ उनै रहै नैंना भरि,
मोही फिरि मोहन विलंवु बरसाए हौ।
आवन चलौ तौ पुनि चल न सकोगे उन,
असुवन कान्ह कहूँ बाहर न पाये हौ।
आह घर राखौ बैठि घरनी कौं घेरि ना तौ,
घरिक में हरि घरि नाइ चढ़ जाए हौ ॥327॥

रजनी में जाति सब कुंजन ऊजारी होत,
दामिनी कहोगे कान्ह कामिनी न मानि है।
जगमगै रूप सो है डीठि ठहराति नाहि,
डीठि नाहीं पिठि दियै आँखिन में आनि है।
'आलम' सुकवि हम कहा पहिचानै कान्ह,
पारखी गुंसांइ सब बातन की खानि है।
कैसे कहौ ऐसी औरनि की नारि नाहि,
नीकौ निहारौ प्यारी निकै करि जानि है ॥338॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(रेखता)

राति के उनींदे लाल सोख सुरख दीदेस,
रंमंभी न आइ तु सिं बाह् हुए आया है।
'आलम' की बात मुरैंझैये मत माम भई,
तेरे ही दिल का कछु मरम न पाया है।
आमदनी अजबजूद की खबर नहीं,
पघरी का पेच खुला छाती न हुँ खाया है।
जाहरा निसानी जानी हम सौ मुकर जाणा,
एसी कौन मिहरी जिन् जोर कै जगाया है ॥340॥

रूप निसि ताही के सबन अभिसार आई,
ताकौ ससि झाँपनि पिछौरी जोंह डारी है।
प्राची के रचत दिन ऊ फलइ लखिवे कौं,
आँचर के जरि डर खैंचि कर न्यारी है।
निपट निलज गति निरखि सकुचि आई,
कर मुख राख कै अथोती जो उजारी है।
भले कौ भरौ सौ ताते 'सेख' जी जगाइबै कौं,
नछत छलक जल ऊपर उजारी है ॥337॥

संपुट कवल तापै राजति पराग दुति,
शृंग है सुमेर किधौं धरे ओस ओना के।
किधौं सुरसरि धरि मौनी सुरसुरी पर,
राजति विभूति अंग बैठे दो कु कौना के।
'आलम' सुकवि किधौं पिय चित दोना के,
चकई के बाल किधौं पिय चित दोना के।
ढाँपे नंद नंद प्यारी सेत कंचुकी में कुच,
फटिक के संपुट में द्वै सरोज सोना के ॥369॥

सघन पत्त बन हरत ते व उनत स्याम घन।
झरत पंखुरी सेत मधुर बरसत बिंबूद कन ॥
पुहप पीति वल्लरी डोर दामिनी चमंकवर।
कुसमावल वहुरंग चाप सोभत सुरपति कर॥
गुंजार भृंग पि सुर गरिज उडपराग धुरवा रहत।
विरहन जु भ्रमति आलम सुमति रित वसंत बरषा कहत ॥407॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सरल कीर कलि इठ बोल मारू धूनि किन्हिय।
मरुत सुभट संग लुटवास पर मल धरि लिन्हिय॥
हरित वृक्ष सित सुमन सकि लिय तनग दिय।
रिति से लरग तम झगत अरु न वलि रांम बइठिय॥
घाईल पलास 'आलम' सुमति सार पत्त जिहि तहि वज्यौ।
इह नैंनु में न रितिपति प्रगट सुरतिपति दलु लै मन सज्यौ॥413॥

सरल वंकवलि रय चंड कोदंड मंडकर।
सद्द सहित अलि अवल तक्कि अति पिक मुक्कसर॥
यह हि सहि ख ग चुहल सुभट मंजरी विविध रंग।
जल पराग उछली बुंबु कल उठित बिंब संग॥
मिलि मरत दूत 'आलम' सुमति पति विदेस धायो सु धन।
दल प्रबल प्रगट प्रचंड कर चढ़्यौ बसंत विरह न बंधन॥367॥

सरवर भरि संसार तिमिर रजनी सिवार किय।
कुमठ सूर उछलै झुम्म कालिमा हिलोर दिय॥
तटि गिरवर कंदरहिं पुंज वलनि वहि लगिय।
भसम मलिनि संकरनि नीर दर्प्प न जग जग्गिय॥
जामिनी जाति 'आलम' सुमति प्रात प्रकास जोति धर।
छिटि जु धवल मुख पर पर्‌यौ सु फिरि दिन वंधति उच्च कर
॥363॥

सरस अर्थ गंभीर स्याम विथपर न चपला गति।
रस हीं जाँनि संचरै रसक मुख पंकज की गति॥
गीत भद गुंज रै पछ अछर प्रकास करि।
रचै वासं बहु वास तास पंडित विचार धरि॥
गुन रूप कहत 'आलम' सुमति कंठ कपि च्यत तजित ईम।
वहुरि तिव इल्ल छंदनि-पुनि सु छह पद छप्पै भंवर जिम॥361॥

सरस छटित जिम सद्द होत तसकर जिय त्यागहि।
नीच सीस कर रहै संकु वाइस सिव वागहि॥
अस मसान भुं भीति जानि चकित समान गन।
फुनि जागहि फुंकरहि विडर सावक जिय भव वन॥
लगति पलन 'आलम' सुमति पत्रहीन सरहीं करहि।
किय उच्च करन के हर सुनत सु दृष्टि बाम दछिए धरहि॥366॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सहस बाँहु चुकियो खग्ग पुहमी नछत्र हन ।
तछक डस्यौ परिछत होम जनमेज सैन फन ।।
यादव छल पुक्षियो कोटि छप्पन्त तहाँ जुझिय ।
लंका अधि अपराध मरग दिन पगनन सुझिय ।।
वसहि जु अंग 'आलम' सुमति विह संग्रह घर वन दहै ।
जिहि कुल इक कोई करै तिहि म संग कुल बल यहै ।।365।।

सिंगय चातिक सिद्ध तिमर कंथा तनु करियौं ।
पल घन दामिनि सारल्ल धूरवा मति धरियौं ।।
गरज गगन चकमे चिनग जु गान गन छूटै ।
धूम नैन पर जरै अंसु जलु धारनि छूटै ।।
विरहन जु भ्रमति 'आलम' सुमति इम वरषा कौंधति ।
लिखति पावस जु गंध वूझौ गु नील पल पक वावक भखति ।।362।।

सिसुता तगीर भई जोवन जगीर पाई,
कुच फुरमान लिए अबताली आए है ।
नैंननि की कोर चहूँ ओर जमधार दिये,
अदिल करन कौ जुद सौ दिसि धाये है ।
मनिता मानिक मणिवाल 'सेख' जाने धनु,
प्रथम अधर बिंब भेटि कौ चलाए है ।
प्रेम तो निकट नेगी चातुरी अरज वेगी,
महा गजराज मद 'आलम' अराये है ।।410।।

सीरी आइ ह्वै रही, तौ आई धाइ सखी सब,
देखी हौ आनत जान्यौ झुठे ही कहति है ।
पुनि सुनि पाउधारे 'सेख' प्यारी सनमुख,
तांकी सुठि मोहनी सौ भृंग ही गहति है ।।
अंक भरि लीनी पर जंक पर पौढ़े तब,
सपनौ समुझि वारि अँखिया भरति है ।
विरही हौ भारी सुधि अजहूँ न सँभारी,
अब तुम्ह जानों प्यारी हम न्यारी ह्वै रहति है ।।387।।

सुख दिन सह संभोग भवन अंवर भूषन भर ।
पथिक पंथ पति गवन दसन थरहरत अधर कर ।।
नर नारिन अनुरागु फागु आगमन भाग कौं ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लाज न आवत पिय परवानि गति कहत भाष कौं।
हेमंत पे पंकज नलिन रदित अटित अलि दिन रयन।
भरि नीर नयन भरि दुख बचन सु कहि ससिर ससि कर नयन
॥409॥

सौनै के सिंधोरा किधौं श्री फल सरोज किधौं,
सोने हू के कलस पियूष रस भरे है।
किधौं करि कुंभ किधौं संभ युग स्याम किधौं,
कंचन के तार करि त्वारध ओधि धरै है।
सोभत सुमेर के सुभग शृंग विवि किधौं,
कंचन की बेल पर कंचन के फेरै है।
कचल विमोहियत गुरंज से उरज है
मेरी कौन गनै मौनी हू के मनु टरै है ॥370॥

स्याम संदेसे अंदेसे भरी दुख ऐसे जरी जैसे काम करा के।
जे चुरिया करि आवति नाहींन ते चुरियाँ भई ठौर बरा के ॥
'आलम' बाल विसूरत हीं पिय आनि परे जब द्वार घरा के।
कंचुकी में कुच यौं हुलसै जु गए बंध टूटि तराकि तराके ॥368॥

स्वाद पंच पंचवै पवन पंचवै गवन श्रम।
चित्त सुत्त में धरै नैंन त्रिकुटी विकट क्रम ॥
श्रवन शब्द उन अट्ट चुक्किनहि परै द्रुवन मन।
ओष्ट हथ्प मथौं ढुंढ़ि लभैं अंगुष्ट तन ॥
इह जुगति ज्योति 'आलम' सुमति सिद्ध अंत अरजनि जरै।
जब लगि सु जोति जग में जगै सु पुरुष अमर बहुरि न मरै।
॥364॥

हरि आये अचानक ही हित कै प्रिय के गुन सौं चहलाइन मोचै ॥
'आलम' दंपति कै अनबैननि सैननि ही चित सों चित रोचै ॥
गुन ठौर उही वहराइ कै बाल रह्यौ न पै अति लोचन लोचै ॥
घूंघट ज्यों पलकै करिज्यौ परसै फिर एकहि बार सकोचै ॥421॥

हीन प्रहर प्रति दिवस सीत परसत दसहूँ दिसि।
फलत लता रव रनि और भई जुग समान निसि ॥
झरत कुसुम धर भँवर भवत देखत दुख लोचन।
चंद किरन संचरति चहत चकई तन मोचन ॥
दुचितात चरचि 'आलम' सुमति चक्रवाक चितचरन थित।
संपति दुरंत यह कंत सुनि अति दुरंग हेमंत रित ॥425॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

माधवानल-कामकंदला

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

माधवानल-कामकंदला

प्रथमहि पारब्रह्म के सरनै। पुनि कछु रीति जगतरस बरनै ।।
पारब्रह्म परमेश्वर स्वामी। घटघट रहै सो अंतरजामी ।।
घट घट रहै लखै नहि कोई। जल थल रह्यौ सर्व मय सोई ।।
जाको आदि अंत नहीं जानौं। पंडित कथैं ग्यान सोई मानौं ।।
ग्यानी होइ सो गुर-मुख पावै। खोजी होइ सो खोज लगावै ।।

मन वच क्रम सोवत चलत, जागत चितवन चित्त।
संग लागि डोलत फिरौं, सो करता धरु चित्त ।।

जग पति राज कोटि जुग कीजै। सहज लाल छाजे थिति कीजै ।।
दिल्लिय पति अकबर सुरताना। सप्त दीप मैं जाकी आना ।।
सिंहन पति जगन्नाथ सुहेला। आपनु गुरु जगत सब चेला ।।
जब घर भूमि पयानौ करई। वासुकि इन्द्र आसन थरथरई ।।
गहि त्रिन दंत सरन सो आवै। थापहि फेरि भूमि सो पावै ।।

दंड भरै सेवा करै, वासुक इंद्र कुवेर।
गनु गंध्रव किन्नर सबै, जच्छ रहै होई चेर ।।

देस देस के भूपति आवैं। द्वारे भीर वार नहि पावैं ।।
कंपै बहुत त्रास जी लैहीं। लै अकोर पर द्वार न दैहीं ।।
इक छत राजु बिधाता कीनौं। कहुँ दुर्जन कोउ रह्यो न चीन्हौं ।।
धर्म राजु सब देस चलावा। हिंदू तुरक पंथ सबु लावा ।।
आगैरेंवु महामति मंडनु। नृप राजा तोडरमल डंडनु ।।

जो मति विक्रम कीन, मंत्रु करत मनु चैन।
सुनत वेद सुमिरत सदा, पुन्य करत दिन रैन ।।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सन नौ सै इक्यावन्नुवै आइ । करौं कथा अब बोलौं गाहि ।।
कहौ बात सुनौ अब लोग । कथा कथा सिंगार वियोग ।।
कछु अपनी कछु परकृति चोरौं । जथा सकति करि अच्छर जोरौं ।।
सकल सिंगार विरह की रीती । माधौ कामकंदला प्रीती ।।
कथा संसकृत सुनि कछु थोरी । भाषा बाँधि चौपही जोरी ।।

माधौनल सब गुन चतुर, कामकंदला जोगु ।
करौं कथा आलम सुकवि, उतपति बिरह वियोगु ।।

पहुपावति नग्र इक सुनौ । गोपीचंद राज वह गुनौ ।।
धर्मपंथु दिन प्रति पगु धरई । पहुमी पवित्र पापु नहिं करई ।।
तिहिपुर बसै सदाँ सुख त्यागी । माधौविप्र नाम वैरागी ।।
राजा पास प्रात उठि जावै । लै तुलसी दल देव पुजावै ।।
देव पुजाइ विप्र फिरि आवै । प्रात भयें पुनि दरस दिखावै ।।

बाँचै बेद पुरान, नौ व्याकरन बखानई ।
जोतिक आगम जानि, सामुद्रिक सांगीत सब ।।

विद्या सोइ वृहस्पति जानौ । रूपु सोइ मकरध्वज मानौ ।।
ताकौ रूप नारि जो देखै । पलक ओट जुग-जुग भरि लेखै ।।
जो सब नारि बसैं पुर माहीं । तिहि के निरखि गर्भ गिरि जाहीं ।।
गावै सरस बजावैं वीना । नर नारी मोहे भ्रम वैना ।।

मनु लागै जिहि धाइ, सो पुनि मन ही मो बसै ।
जागत सोवत नित, देखहु आँखिन मैं लसैं ।।
बिन देखें अकुलाइ, प्रान नहीं धीरज रहहिं ।
निसु दिन भीजहिं चीर, नैंना ही के नीर ही ।।

दिन एक प्रात भयो उजियारा । माधौनल अस्नान सिधारा ।।
करि मंजन पुनि तिलक सँवारै । नाद मधुर धुनि मुख उच्चारै ।।
सुनत नाद मोहीं पनिहारी । सीसहु ते गागर भुमि डारी ।।
सुनत नाद तिहि दीनैं काना । रीझि रहैं सब चतुर सुजाना ।।
करैं राग मोहन के वेसा । ज्यौं ठग मूर करै वर वेसा ।।

थके कुरंगन जूथ, सुनत नाद मुग्यीन के ।
तब धाईं करिहूय, काम कमान चढ़ाइ के ।।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इक त्रिय मोहि छित मूधर परही। इक त्रिय धरत सुद्धि नहि रहही ॥
इक नैनन सों नैन मिलावै। तजि सर एक निकट चलि आवै ॥
एकन परत न चीर सँभारा। व्याकुल भईं छूटि गये बारा ॥
एकन भूषन दए उतारी। एकनि तजी कंचुकी सारी ॥
एकै नारि चली उठि संगा। जैसे धुनि सुनि चले कुरंगा ॥

काम धनुष सरपंच लै, मारौ त्रिया सुनाइ।
वे मृगगति मोहीं सकल, द्विज पारधी की नाइ ॥

एक नारि हँसि-हँसि मुख जोवै। नैन नीर इक भरि भरि रोवै ॥
डोलै एक पवन ज्यों दिया। छुटे केस उघरि गये हिया ॥
करै राग माधौनल रागी। ज्यौं तन माँहि ठगोरी लागी ॥
माधौनल देख्यौ पनिहारी। व्याकुल भई नगर की नारी ॥
तब उठि चल्यो नग्र कहँ सोइ। कहत चरित्र सप्र दिन सोइ ॥

गयौ मदन सर मारि, नारि डारियत हार सब।
विरह अनल तन जारि, तन मन द्वंद्व उदेग दैं ॥

नगर खोरि माधौनल आवै। त्रिया पुरिख गृह अन्न जिवावै ॥
सुनत नाद कर छीन सँभारी। भूमि अहार दीन सब डारी ॥
पूछै पुरिष नारि सुनु मोही। ऐसे नैन दिये बिधि तोही ॥
कत तैं भोजन दियौ सो डारी। वेगि कहौ नहिं डारौं मारी ॥
बोली बचन कंत सुनि लीजै। स्वामी दोसु मोहि नहिं दीजै ॥

माधौनल कियौ रागु, सुनि धुनि हौं बिस्मै भई।
तहाँ जाइ मनु लागु, ताते गिर्‌यौ अहार भूई ॥

तब सुनि कैं उठि चल्यौ रिसाई। नगर लोग सक्तवै बुलाई ॥
चलहु राइ के सनमुख होही। कहौ विप्र त्रिया सब मोही ॥
नग्र लोग बूढ़े अरु बार। राजा आगैं जाइ पुकारे ॥
सुनौ राइ इक बचन हमारा। माधौनल मोहीं सब दारा ॥
पूछै राइ कौन गुन करही। कैसें विप्र त्रिया मनुहरही ॥
करै नाद सब त्रिया लुभाहीं। मृग गति मोहि थकित ह्वै जाहीं ॥

कहै प्रजा राजा सुनौ, हम न रहैं इहि गाँउ।
कै यह बेगि निकारिए, जिहि माधौनल नाँउ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुनि राजा जिय चिंता करही । कहा करौं जो परजा जाहीं ।।
पहिले पूँछि लउँ वे उहारा । तब माधौ को देउँ निकारा ।।
तब राजा पठवा इक बारी । माधौनल को ल्याउ हकारी ।।
गयौ पौरिया माधौ जहँ रहही । सीस नाइ विनती इक करही ।।
चलौ बेगि तुम राज बुलाए । परजा पवन कहन कछु आए ।।

माधौनल चिंता करी, मन मैं भयौ उदास ।
माधौ धारि वीना चल्यौ, आयौ राजा पास ।।

अधिक मधुर धुनि वीनु वजावै । सरस राग रागिनि उपजावै ।।
चेरी बीस कराइ हकारी । सब पहिराइ कुसुंभी सारी ।।
तब राजा परतिज्ञा लेही । कमल पत्र पर बैठक देही ।
माधौनल वीना कर गह्यौ । खस्यौ काम धीरज नहि रह्यौ ।।
माधौ विप्र नाद अस कहा । भीजे चीरु मदन तब बहा ।।

तब राजा आइसु दयौ, चेरी दई उठाइ ।
सब ही के पीछे रहे, कमल पत्र लपटाइ ।।

अचरज देखि राजा तव रहा । मिली प्रत्यग्या जो गुन कहा ।।
उठि राजा गयौ पौरि पगारैं । तुम को ठौर न विप्र हमारैं ।।
तीनि पान को बीरा लयौ । राइ हाथ माधौ के दयौ ।।
तब उठि बरन अठारह पती । चल्यौ छाँड़ि कै पुहुपावती ।।
बीना गहै वजावै रागा । छिन छिन उपजावै वैरागा ।।
दिन दस मारग रह्यौ सुजाना । कामावति नगरी नियराना ।।

कामवती नगरी भली, काँमसैनि नृप नाम ।
मन में माधौनल कहै, इहाँ करौ विश्राम ।।

नगर लोग सब बसै सुकर्मी । ब्राह्मन छत्री बैस सुधर्मी ।।
तिहिं पुर मद गयंद सो रहै । मदिरा नाम औरन सों कहै ।।
मार सोइ सतरंज मैं होही । पुष्प पत्र लै बाँधै कोही ।।
दंड सोही जो जोगी लेही । और दंड काहू नहिं देही ।।
चंचल चोर कटाछ त्रिया के । जो नित चौरैं चित्त पिया के ।।

दीपक वधिक बसै जहाँ, जो निसि बसै पतंग ।
ऐसो नगर रच्यों बली, काम सैनि चतुरंग ।।

तिहि पुर बसै चंद्र की कला । पातुर सुनी कामकंदला ।।
ताकौ रूप बरनि को पारा । बरनत सहसजीभ पुनि हारा ।।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कुंतल चिहुर चुवहिं ज्यों घाला। अंबुधार कैधों अलिमाला ।।
मध्य माँग चंदनु घसि भरैं। दूध धार विषधर मुख परैं ।।
कहुँ कहूँ पुष्प कहूँ कहुँ मोती। जनु घन मैं तारागन जोती ।।

माँग अग्र मानिक दिएँ, औ मुक्ता गन संग।
छिन छिन जोति धरैं मनौं, मनि उछली जु भुजंग।।

करनन करन फूल छबि भारी। मंद मयंक की कोटिन नारी ।।
मनि मुक्ता लागैं बँडूरज। मानौ धनमह दिएँ दोइ सूरज ।।
कर कुंकुम लै तिलक सँवारे। चैन मैन जनु बान सुधारे ।।
भृकुटी चाप चंचल जब मोरैं। चितवन चारु चतुर चित चोरैं ।।
मीन मधुर पंजर मृग हारैं। निरखत लोचन जुगम डरारैं ।।

पलक ओट अकुलाइ, चंचल नैकु न थिरु रहै।
श्रवन कोर लौं जाइ, निरखौं त्रिया कटाछ जब ।।

नासा अग्र बेसर कौ मोती। घंट वीव रोहिन की जोती ।।
तिल प्रंसहि वीव तुषारा। छिनुछिनु दारिजनु माछिनि हारा ।।
नासा अग्र मोती इमि रहहीं। दीपक पुष्प करन कौं चहहीं ।।
मृगमद तिलक रहै अति मानौ। निर्खंत अलिबिंदु नीयर जानौ ।।
रस विनोद लागैं अहिछौना। लालच लुबुध लोभ जनु गौना ।।

आलम अलकैं छुटि रहीं, वेसरि सौं अरुझाइ।
मानहु चारा चोंच तें, अहि सुत लेत छुड़ाइ ।।

पल्लध बिंब बंधूक लजाहीं। आस्वास रस भौंर लुभाहीं ।।
दामिन दंत दिए जनु हीरा। सेत असेत अरुन के धीरा ।।
सखि स्यौं हास करहिं जब कामिनी। कमल पत्र कैधौं जनु दामिनी ।।
सरस्यौं बचन जु बोलि सुनावै। सहज मनहुँ बाँसुरी बजावै ।।
लोग कहैं कोकिल कल नीकी। ताकी धुनि सुनि लागति फीकी ।।

अबला बचन अमोल, प्रान धरन चिंता हरन।
श्रवन सुनत वे बोल, मुनि मनसा नहिं थिर रहैं ।।

हरे पीत मनि लाल बिसाला। रतन जटित सोहति कंठमाला ।।
मुकताहल दोउ कुच बिच रहहीं। दुहुँ मुर मध्य जु सुरसरि वहहीं ।।
कुच कंचन भरि साँ सँवारे। सुर सरि धरि जुग ससी दुधारे ।।
चक्रवाक सरिता की धारा। मानहुँ मुनि मन वारहि पारा ।।
कनक बेलि श्रीफल जुग लागे। किधौं पुष्प गुथि अति अनुरागे ।।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अति कठोर कुच तन उठे, सबलैं समेत सुभाइ।
मनुहु मैन को भस्म करि, बैठै ईस चढ़ाइ ।।

कनक बरन दुइ बाँह सुहाही। देखे नीत संगीत सुहाइँ ।।
कनक टाड कर कंकन चलिया। फुद जु चामहि मुद्रिक पलिया ।।
भुज सत्ल अरु सीन कटाही। लगी फूली सुघरी जु सुहाही ।।
सहज हँस तज्यौ कमल दिखावे। नखन अग्र किन्नरी बजावै ।।
पलव पल्ल सोभी नख भारे। बिद्रुम बिंब कटक मनौ दारे ।।

भुज चंदे की मंजुरी, मिलति एक के रूप।
मानहु कंचन खंभ तें, द्वादस लता अनूप ।।

उदर छीन रोमावलि देखा। कनक खभ मृगमद की रेखा ।।
नाभि निकट स्यों नागिनि चली। जनु कुच कमल नलिन इक भली ।।
नाभि पात सौं उठी सुहाही। कंवलहु तैं अति अवली आई ।।
हृद कर संख ब्रह्म दै काढ़ी। खंभ बेलि कंचन मनौ बाढ़ी ।।
कै उलटी कालिंद्री बहही। गिरि गंगा परसन कौं चहही ।।

इत तें गंगा सुर चल्यौ, उत तैं जमुना अंभु।
कुंकुम चंग तुरंग भरि, मिलि परसै इक संभु ।।

मृग अरु ससा सिंघ बन भागे। देखि मध्य उदि उपमा लागे ।।
मध्य झीन बोलैं ज्यौं आधे। कसनी कसी कुच नीके बाँधे ।।
जंघ जुगल कदली के खंभा। तिहि छवि को पूजै नहि रंभा ।।
नूपुर चूरा जे हरि वाजैं। छुद्रावलि घंटिका विराजैं ।।
घसि चंदन इक चोली कीनी। कंचुकि पहिरि पटोरी लीनी ।।

कुसुंभी सारी पहिरि कैं, बेनी गुही सँवारि।
राजा के मंदिर चली, कामकंदला नारि ।।

औसर चली कामकंदला। नगर लोग सब देखन चला ।।
माधौ बिप्र बात या सुनी। कहियतु कामकंदला गुनी ।।
तब उठि माधौनल संग लागा। काँधै बीन धरे वैरागा ।।
मंदिर मध्य गयौ सब लोगा। माधौ विप्र पवरियन रोका ।।
माधौ कहै जानदे मोही। हौं नहि जाने दैं द्विज तोही ।।

राजमंदिर कैलास सम, जान देउ नहिं तोहि।
तुहि बाह्मन देखत कछू, कहैं राज बुलाने मोहि ।।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पूँछि राय उत्तर कह ऐसी । जब तुहि पहिचानै परदेसी ॥
उहिठाँ माधौ पँवरि दुवारा । राजा मंदिर होइ अरवारा ।
तंत गिरा गाइन बहु गाँवहि । द्वादस तहाँ मृदंग बजावहि ॥
द्वादस माँझ इक तुरिया दीना । दहिनै हाथ अंगुरिया हीना ॥
टूटै तार भंग सुर होई । मूरख सभा न जानै कोई ॥

ऐसो को सुर ज्ञानि, राज सभा मूरखि सकल ।
ताल भंग को जानि, द्वादस तहाँ मृदंग धुनि ॥

ताल भंग माधवनल सुनही । द्वारे बैठि सीस बहु धुनही ॥
ताल कुताल सप्त सुर जानै । सब पुरान संगीत बखानै ॥
माधव कहै पौरिया आबहु । राजा आगैं जाइ सुनावहु ॥
द्वार बैठि विप्र इक आही । सकल सभा सौं मूरखि कहही ॥
द्वादस माँहि तूरिया अनारी । दहिनैं हाथ अंगुरिया चारी ॥

सात चारि के मद्धि है, उठिकै देखौं ताहि ।
चूकै तार जो पावमिसि, पातुर दोस न आहि ॥

सुनत पँवरिया उठि किन धावही । राजा आंगैं जाइ सुनावहिं ॥
विप्र एक है पँवरि दुवारा । निर्त ताल सब कहै विचारा ॥
कर मीजै सिर धुनि धुनि रहई । सकल सभा सौं मूरिष कहई ॥
कहै जु तुरिया द्वादस माहीं । दच्छिन हाथ अंगुरिया नाहीं ॥
सात चारि के अंतर रहै । ऐसी बात विप्र इकु कहै ॥

ताही ठौर को तुरिया, राजा लियौ हकारि ।
छतौ अंगूठा मैन को, तरस अंगूरिया चारि ॥

मिली बात माधौ जो कही । सभा सकल चक्रत ह्वै रही ॥
कहै राज सुनि रे दरबारी । वेगि जाइ कैं ल्याउ हंकारी ॥
अयौ पौरिया माधव ठाँईं । पाउ धारिये विप्र गुसाईं ॥
राजा मंदिर माधौ चला । सुंदर विप्र मदन की कला ॥
कंठ सोहै मौतिन की माला । कानन कुंडिल मैंन बिसाला ॥

झीने पट की धोवती, उपर उपरनी झीन ।
सीस पाग वैना धरे, राज-मंदिर पगु दीन ॥

सभा मध्य माधौनल गयौ । बेगि लोगु सब ठाढ़ो भयौ ॥
आवत माधौनलहि निहारा । सिंहासन तजि भयै नियारा ॥
माधौ विप्र चिरंजी कीन्हों । आसिर्वाद नृपति कहँ दीन्हों ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राजा दियो सिंघासन टारी । ता पर बैठे रूप मुरारी ।।
बैठ्यो विप्र सिंहासन जाई । देखि लोग सब रहे भुलाई ।।

कै रे इंद्र कै चंद्र है, कैं कान्हर कैं काम ।
कै कुबेर के जच्छ हैं, कै किन्नर कै राम ।।

कनिक मुकट मुद्रिक मनि माला । माधौनल को दीन भुवाला ।।
मुद्रिक टोडर दये उतारी । पहिराये भूषन सब भारी ।।
टका कोटि द्वै दछिना दीनी । स्वस्ति बोलि माधौनल लीनी ।।
चंदन खौरि तिलक सरसाखैं । पोथी काँख उपरना कांधैं ।।
बैठि सिंघासन बहुत सुखु पायो । दुख संताप लै गंग बहायो ।।

गुन देखें गुनिजन सुखी, निर्गुन होइ जनु कोइ ।
राय रंक सब वीच लै, जो रंपेट गुन होइ ।।

ऊँच नीच पूछहि नहि कोई । बैठहि सभाँ जौर गुनु होइ ।।
गुनी पुरिष जौं परभुमि जाई । त्यों त्यों मंहग मोल बिकाई ।।
जैसे पुत्रहि पालै माई । त्यों गुनु रहै सदा सुख दाई ।।
गुन बिन पुरिष पंख बिन पंखी । गुन बिन पुरिष अंध ज्यों अंखी ।।
गुन बिन पुरिष पत्र ज्यों··· । ··· ··· ···।।

संगति गति उठत, तंत कृती तिहिं काल ।
बहुरि अलापै राग षट, पंच पंच संग बाल ।।

एक राग संग पाँच रागिनी । संग अलापै आठौ नन्दनि ।।
प्रथम राग भैरव उच्चरही । पाँचौ कामिनि संग सुहाहीं ।।
प्रथम भैरवी पुनि बिलावली । पुनि जाकी गावै बंगाली ।।
पुनि असावरी औ बैरारी । ये भैरो की पाँचौ नारी ।।
पंचम हर्ष दे साथ सुनावै । पींगाली मधु माधौ गावै ।।

ललित बिलावलि गावहीं, अपनी अपनी भाँति ।
अस्ट पुत्र भैरों कहैं, गाइनि गावै पाँति ।।

दूतीं मालकौंस आलापै । पंच कामिनी संगति थापै ।।
गौडी काटी औ देवगंधारी । गंधारी सी हुतीं उचारी ।।
धनासिरी ये पाँचौ कामिनि । मालकौंस के संग सुभांमिनि ।।
मारू मस्तक अंग मेवारा । प्रबल चंद्र कौंसिक औं भारा ।।
घूंघट्ट और भौंरन दृग गाए । मालकौंस आठौं सुत भाए ।।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुनि आयो हिंडोल, पंच कामिनी अस्ट सुत ।
उठै सौ तान कलोल, गाइन ताल मिलावही ।।

तेलंगी पुनि देव गिराइ । वासंती सिंधुरी सुहाई ।।
सा अहेरि लै आया राजा । संग अलापहि पंच भारजा ।।
सुर माँ नंद भस्म करि आई । चंद्र बिंब मंगली सुहाई ।।
सरसवान औ आहि विनोदा । गावैं सरस बसंतक मोदा ।।
अस्ट पुत्र मैं कहे सवारी । पुनि आई दीपक की बारी ।।

काछाली पट मजरी, टोही कही अलापि ।
कामोदी औ गूजरी, संग दीपकैं थापि ।।

काल काल औ कुंतल रामा । कमल कुसम चंपक के नामा ।।
गौड़ी कान्हरिय कल्याना । अस्ट पुत्र दीपक के जाना ।।
सव मिलि वहि श्री रागहि गावैं । पंचौ संग वरंग अलापै ।।
वैराटी करनाटी धरी । गौरी गावैं आसावरी ।।
पुनि पाछैं सिद्दवी अलापी । सिरी राग संग पाचो थापी ।।

सावा सारंग सागरा, औ गंधारी भीर ।
अस्ट पुत्र श्री राग के, गोल वुंड गंभीर ।।

अष्ट मेघ राज वै गावैं । पाँचौ संग वरंगनि ल्यावैं ।।
सौर गौड़मल्लारी धुनी । पुनि गावै आसा गुन गुनी ।।
ऊंचे सुर सों सूहौं कीनी । मेघ राग संग पंचौ चीन्ही ।।
बीरा घर गज अरु केदारा । चंडोली घर नित उजियारा ।।
पुनि गावै बासकर औ स्यामा । मेघराग पुनि तिन के नामा ।।

अस्ट राग ये सकल संग, रागिनीय गनि तीस ।
सब सुत राग न के कहे, अठारह दस बीस ।।

गयौ राग रागनि संगीता । अब बरनौं सभा संगीता ।।
रंगभूमि बहु भाँति सँवारी । ताल मिलाइ करैं पतिहारी ।।
दीपक दीवती चले चहुँ भाँती । बहुत मसाल मैन की बाती ।।
अंतर वोट पिछौरी दीन्हीं । पहुप अंजुली दुहुँ कर लीन्हीं ।।
सब मिलि श्री राग वै गावैं । संकर गौरि गनेस मनावैं ।।

षरज रिषभ गंधार, मध्यम पंचम धैवतो ।
औ निषाद उच्चार, ये कवि गाये सप्त सूर ।।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पनु मिलि संग एक सुर कीन्हाँ। रंग भूमि पातुर पग दीन्हा ॥
सुर सुर मध मध धिपि धिपि बोलहिं। तार धार संग लागे डोलहिं ॥
तथेइ ताथेइ ताता थेइ करहीं। तनु थकत न थक मुख उच्चरहीं ॥
जझकत झझकत लाल तरंगहि। ... ...
झंक झंझक्कत उठत तरंग रंग। अरी उच्चारिहि दंद दंद मिरदंग॥
प्रथम ताल औहै झप ताला। सकल ताल डोलैं इक ताला॥
राग दाव नरपतिहि प्रधाना। प्रगटे सप्त भेद सुर ज्ञाना ॥
दुदुंर छंद धुरपद सचारहिं। ठही रीत, जनु इंद्र अखारहि॥
धुनि देसी कंदला दिखावै। अच्छर अर्थ हस्त पल्यावै॥
थिरकी लीन तार जब तोरहि। नैन कोर माधो सो जोरहि॥

सुर सुंदर दोहा षटपदा, और विस्मै पद गाइ॥
बूझै चतुर बिलच्छन, माधौनल सब भाइ॥

पुनि गुन काम कंदला करई। जल भरि सीस कटोरा धरई॥
भृकुटी चाँप चंलल मुख मोवहि। कर अंगुरी सौ चक्र फिरावहि॥
दीप जोति इक भँवर उहाई। कुच के अग्र सो बैठी जाई॥
जब लागै तब दें दुख डारहिं। मनहु भवंग समै सरसावहिं॥
चंदन बास लीन ह्वै रहा। बैठो भाँवर प्रेम रस भरा॥

छिन छिन काटहि मधुकरा, अस्तन बेदन होइ॥
माधौ नल सब बूझही, और न बूझै कोइ॥

भेटैं पवन सुख वासुन आवइ। अस्तन श्रोत समीर चलावहि॥
ज्यों कर छुहा चक्र गिरि परई। कामकंदला चौगुन धरही॥
पवन तेज मधुकर उड़ि चला। माधौनल बूझी यह करा॥
तब राजा के नैन निहारै। मूरखराज न कला बिचारै॥
रीझ्यौ माधव कला बिचारी। मुद्रिक तोडर दए उतारी॥

कनक मुकुछ मनि माल सब, टोडर दए उतारि।
टका कोटि दै दच्छिना, माधौ दिए सुकारि॥

चतुर चतुर सो नैन मिलावहि। दुहुतन मदन उमगि बहु आवहि॥
दुरि दुरि देखैं मुरि·········। ... ... ॥
जब पारखी नाद मुख गावैं। सुनतहि मृग हिय मोहित ह्वै आवैं॥
हरिनी कहै हरिन का कीजै। रीझि पारखी कों का दीजै॥
हमरैं कहा दैन को दाना। कहें कुरंग सो दीजै प्राना॥
तब पारखी धनुष संधाना। मृग हियरा आगे कै दीन्हाँ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

धनि कुरंग जिनि राग सुनि, रीझि न राखे प्रान।
बैन करत बलि बिक्रमा, दियौ न ऐसो दान ॥

धारा भोज लच्छ जिनि दीनौ। करन बैन बलि बिक्रम कीने ॥
ये सब मुए मीचु के मारे। रीझि प्रान नहि दिए पियारे।
लक्ष लक्ष जे त्यागहिं दाना। तौ नहिं पूजहि हिरन समाना ॥
कह राजा सुनु विप्र उदासी। कौन रीझ तैं त्यागी रासी ॥
कहै विप्र हौं कला विचारी। औ मुग्धा सब सभा तुम्हारी ॥

नाचत त्रिय कुच अग्र पर, मधुकर बैठ्यो आइ।
अस्तन स्रोत समीर सों, दीनो भँवर उड़ाइ ॥

तू राजा अविवेकी आई। गुन औगुन बूझौ नहिं ताही ॥
मैं विद्या परवीन सुजाना। रीझि कला नहिं राखौं प्राना ॥
क्रोधवंत राजा उठि कहै। ढीड विप्र चुप क्यों नहि रहै ॥
मारौं खड्ग टूक द्वै करौं। विप्रघात अपजस सौं डरौं ॥
जा राजा तू मारै मोही। कला रूप ह्वै व्यापौं तोही ॥

पतित करौं तुहि लोक महं, स्वर्न लोक हरिद्वार।
जग मैं अपजसु पावही, सकल कहै हत्यार ॥

राजा ब्रह्म हत्या जो करै। कलि मैं कुस्टी ह्वै अवतरै ॥
तीरथ कोटि जग्य जो करै। तबहुँ न ब्रह्म दोष तैं तरै ॥
सुनि राजा कछु कहन न पारै। क्रोधवंत मनही मैं बिचारैं ॥
कह राजा जहँ लग मोर राजू। छाँड़ि जाहु तहँ लगि तुम आजू ॥
जो तोहि इहाँ बहुरि सुनि पाऊँ। खाल खैंचिकर भूस भराऊँ ॥

बोलहि क्रोध न बाल, वेगि निकारहु नग्र तें।
भूस भराऊ खाल, जो कोउ राखै देस मैं ॥

तब सो वचन माधवनल कहै। तोरे नग्र राइ को रहै ॥
मैं गुनिवंत भूमि पर वेसा। चरन धोई करि पियें नरेसा ॥
यह सुनि नृप मंदिर मैं जाई। नीच सीस करि साँसैं लेही ॥
राजा मन मैं चिंता करही। फिरि फिरि दोस कर्म को देई ॥
मैं दिन राति सभा संचारौं। त्यागहुँ लक्ष लोभ नहिं करौं ॥

जो दक्षिन ध्रुव अस्तवै, तप्त अग्नि सिवराइ।
पश्चिम भान उदै करै, तऊ न कर्म गति जाइ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सम दुग भीर होइ जौ थाहाँ। गंगा पश्चिम करैं प्रवाहाँ॥
पंख लागि कै सिला उड़ाही। पाहन फोरि क्रमल विहसाँही॥
जौ इतनी विपरीत चलावै। तऊन कर्म सौं छूटन पावै॥
कर्म हेत हरिचंद जल भरा। कर्म हेत वलि सर्वसु हारा॥
कर्म हेत पांडव फल खाये। कर्म रेख रघुपति बन आये॥

सोई कर्म मनुष्य मैं, कोटि करावहि भेख॥
सो कवि आलम ना मिटै, कठिन कर्म की रेख॥

चित चिंता माधव गहि रहा। तब उठि कामकंदला कहा॥
कवन सोच सोचहु सग्याना। विद्याधर तुम चतुर सुजाना॥
तुम सुजान जाना गुन मेरा। मैं कुछ गुन पहिचानहुँ तोरा॥
मधुकर अहि कमलन गुन जानैं। दादुर कहाँ पीउ पहिचानैं॥
नाच कूद कछु अंध न देखैं। रूप कुरूप एक सम लेखैं॥

बहिरौ आगे जो कोऊ, संख बजावै आइ।
वह अपने मन जानहीं, कछु अमृत फल खाइ॥

चलहु बिप्र घर बैठहु मेरे। चरन धाई सेवहुँ कर जोरे॥
प्रेम कथा कछु मोहि सुनावहु। काम अग्नि की तपनि बुझावहु॥
मैं रोगी तुम वैद गुनानी। सोहि संजीवनि देहु सो आनी॥
काहे गोरिख फिरहि अकेला। अब संग लाइ करहु मोहि चेला॥
मैं भई धूधल तू सूरज मेरा। तू चंदा हौं भई चकोरा॥

तू मधुकर हौं कमलिनी, वैस वास रसलेहि॥
भरै बूंदते स्वाति जल, ऐस बूंद भरि देहि॥

सुनहु बारि माधौनल कहई। इहि जग नेहुँ नहीं थिर रहई॥
जौ थिर रहै तौ कीजै नेहू। बिछुरि संताप देह को देही॥
नेह लगाइ जो बिछुरै कोई। निस दिन रोम रोम दुख होई॥
... ऐसो खड़ग की धारा। ... ... ॥
... सेज पर बैठहु जाई। ... ... ॥
उठि माधौनल बैठे सेजा। देखत काम तजै तन तेजा॥
कुसुम मुकट सिर केसर सोहै। निरखत मकरध्वज मन मोहै॥

उठि फूलन की माल, रतनजटित कुंडल दियै।
मृगमद तिलक सौ भाल, कर बीना माधौ गहै॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कामकंदला कर्यो सिंगारा। अरुन फूल के पहिरे हारा ।।
तापर पहिरि कंचुकी झीनी। सोधैं छिरकि वेल सौ भीनी ।।
पुष्प गूँथि वैनी बनवाई। चंचल गात प्रवीन सुहाई ।।
दियो लिलाट चंदन को टीका। मध्य विंदु विंदुन को नीका ।।
दये न लेइ दृग ओर करि अंजन। पलौ ओट जनु फरकहि खंजन ।।

कुसुंभी सारी पहिरि सुजान, अंग अंग भूषन किये।
मुख भरि खाये पान, दाड़िम वसन विराज ही ।।

कहै कंदला सुनौ सहेली। मोहि सिखावहु प्रेम पहेली ।।
अब लों मुग्धाहति अलबेली। सिखवहु रसकी रीत सहेली ।।
पुरुष संग रचि सेज न जानहुँ। प्रथम समागम जिय पहिचानहुँ ।।
वह सुजान माधवनल आही। सब अंग कोक बखानहुँ ताही ।।
चौदह विद्या कोक बखानै। अंग बास मनमथ की जानै ।।

कोक कला हौं ही कहौं, सब बिधि अरच बखानि।
और सिखायहु मोहि कछु, पूँछहु गुन जन मान ।।

कहै सखी सुन हो कंदला। तो तैं रस जानै को भला ।।
जहाँ वासु मनमथ को जानौ। तिहि ठाँहरि सु निकट जनि आनौ ।।
जहाँ अंग मनमथ रह तहाँ। छिपन कियौ रहियौ पै तहाँ ।।
कोक रीति कंदला सिखाई। माधौनल पै सखी पठाई ।।
माधौ निरखि रीझि कै रहा। तिहि छिन आइ मदन तन दहा ।।

मदन धनुष सरपंच लै, माधौ सनमुख आइ।
कामकंदला निरखि कै, सरन सरन गुहिराइ ।।

मिलि प्रजंक पर जुगल किलोलहिं। बचन चातुरी दोऊ बोलहिं ।।
सखी सिखाइ कंदला गई। आवर मंदिर ठाढ़ी भई ।।
बैठि कंदला माधव पासा। सूर संग जनु चंद प्रकासा ।।
जोई कछु कोकिल की रीती। तसिय रीतरची विपरीती ।।
दोउ कामवत भरि जोबन। सुंदर सुघर सुजान विलच्छन ।।

परसन लालन वै पतन, त्रिया पुरुष सुख लीन।
फुटक ब्रदन उमगे रहैं, भये पंचसर हीन ।।

किलकत बोलत लोक कहानी। भयौ भोर प्रगट्यो जु त्रिहानी ।।
कामकंदला परिहरि सेजा। भइ बिहाल तन रह्यो न तेजा ।।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

झलकैं पलक उनीदे नैना । अति जम्हुआई आवहिं नहि बैना ॥
कंवल प्रवेस भवर जो किया । कोस झकोर सकल रस लिया ॥

सिथिल गात कंचुकि पहिरि, बिछुरि माँग लट छूटि ।
अधर निरखि औ नख निरखि, गये कंचुकि बंध फूटि ॥

पून्यो जोति ज्यों कामकंदला । ह्वै प्रगटी परिवा की कला ॥
डोलति चलति मनहुँ मतवारी । पीत वसन मुख भयौ सवारी ॥
सखी आनि छिरकहिं मुख पानी । सुरति रीति औ सब पहिचानी ॥
उरझे बार हारनि न निवारहि । सब अंग भूषन सखी सुधारहिं ॥
मुख पखारि पुनि पान खवावहिं । नखछत महँ कुमकुमा लगावहिं ॥

भँवर बास रस लेइ कै, भौंर रहे लपटाइ ।
सूर तेज तैं कुमुदनी, रही अतिहि कुम्हिलाई ॥

बोलहिं सखी चलहु मगु रंजन । सरवर जाइ करहिं हम मज्जन ॥
माधव विप्र धाम करि धीरा । गई सकल सरबर के तीरा ॥
गई कंदला सरवर पासा । चकही जान्यौ चंद्र प्रकासा ॥
चकही बिछुरि गई धुमि भूली । बाँधे कमल कुमुदनी फूली ॥
चक्रवाक उड़ि चले अकासा । अथवा चंद सूर परगासा ॥

सखी तरायन संग, कामकंदला विधुवदन ।
चकई मन भयो भंग, कमल देखि संपुत गह्यौ ॥

तेल सुगंध अरगजा कीन्हाँ । अंग उबटना मज्जन कीन्हाँ ॥
करि मज्जन सब बाहिर आईं । चंपक बदन सुदेस सुहाईं ॥
कहुँ कहुँ बूँद एक छवि बनी । चंपक लता ओस की कनी ॥
सजल ओस अलकैं घुंघराली । ऊपर दलति कंदला डारी ॥
अंगन बूँद चुवहिं धर जोती । जनहु भुवराम उगिलहिं मोती ॥
कुटिल स्याम चिहुरा घुंघरारे । डालै मधुय जनहु मतवारे ॥

नीर चुवहिं चिहुरा सजल, बदन निरखि छबि माल ।
मनहुँ पान मकरंद पर, पवन करत अलि जाल ॥

डोलहि कामकंदला बाला । चिहुर चुवहिं मोतिन की माला ॥
निरखत अलक उलटि घुंघरारी । अमृत लगी नागिन ज्यों कारी ॥
कै सावक अलिरस अब डोलहिं । सखी सबहिं उपमा कौं बोलहिं ॥
कुटिल कुटिल दोउ छबि लीन्हैं । कहूँ रसिक मन प्यासे दीन्हैं ॥
सो जेहि फंद्यो सो निकस नहि पारै । जो जिय सकल जन्म पचि हारै ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मूलन चिहुर चुवाहि, सखी कहैं कंदल सुनहु ।
बंधन सुरत डराहि, उचे लुट्यो चिहुरा सजल ।।

सुनि कंदला धाम कहँ चली । नखसिख बरन चंपे की कली ।।
कहैं सखी सो चलै अवासा । माधौनल जनि होइ उदासा ।।
गवनम राज मंद की नाई । छिन एक माँझ मंदिर मैं आई ।।
सखी गईं सत्र अपने धामा । माधौनल मैं आई वामा ।।
कहै कंदला माधो ठाऊँ । अव सरवर मज्जन नहि जाउँ ।।

कंवल देखि संपटु गह्यो, चकही संग बिछोह ।
मो मुख पुरन चंद सम, निरखत दुख अति होइ ।।

वह कलंक की कला दिखावहि । पून्यो चन्दस सवार्नहि आवहि ।।
तू गंभीर सहस रस काला । समता लै ऊपर कै पाला ।।
तव मुख रूप रैन दिन नीको । सूरज होइ देखि कै फीको ।।
रोस बचन जब माधव कहई । भुज भरि कामकंदला गहई ।।
बैठि सेज पुनि करहु बिलासा । महकत जेहि ठाँ सकल सुवासा ।।

मधु कुरल विध्यो मदनरस, को ये पवन मदनेमु ।
नैन प्रान तन मन फट्यौं, छिन न प्रेम कैं प्रेम ।।

ऐसे बचन जो राजा कहई । माधव सूर चेत जिय धरई ।।
पुँछहु कामकंदला तोही । अत्र मैं चलहुँ विदा दै मोही ।।
राजा बात सुनै मग पावहि । मोहि तोहि लै भार झुकावहि ।।
कहै कंदला बूझै नहि तोही । ऐसे बचन सुनावहु मोही ।।
तोहि चलत मोरे प्रान चलाहीं । पलक ओट आँखिनि अकुलाहीं ।।

चलन कहत है मित्र, स्रवन सुनत प्रानहि चलहि ।
अति व्याकुल मन चित्त, सजल नैन भरि भरि ढरहि ।।

तुम सुजान माधव सब जानहु । राज कहे कर विलग न मानहु ।
राज सिद्ध धनमद जिहि होई । सकल बीच वस करै जु कोई ।।
कहि माधे सुन तेरी चिन्ता । राज अपनो होइ न मिता ।।

राजा त्रिया सुनारि, बिटिया रोकष आगि जल ।
पाँसा साँपिनि हारि, ए दस होइ न आपने ।।

यह जिय जानि सोचि करि कहौं । दिन दस जाइ और पुर र
यह जग में बिधि कियो संजोगु । जिहि मिलना तिहि होइ वियो
कर्म रेख सो कछु न बसाइ । जो विधि लिख्यो सो मेटि न जाइ ।।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मिलन बिछोह बिधाता कीन्हाँ । दययंती नल को दुख दीन्हाँ ।।
मिलि बिछुरै जानहिं दुख सोई । बिछुरि मिलन दुहूँ तन सुख होई ।।

आलम मिलन बिछोह, तीक्षण सकल संताप ते ।
तपत अंग जनु लोह, बिरह अग्नि इमि पर जरहि ।।

बोलहि नारि बचन अन चैनी । माधव रहहु आजु की रैनी ।।
ललित कुसुम भरि सेज बिछावहुँ । भुज भरि अकम भरि लपटावहुँ ।।
परी साँझ भइ निसि अँधियारी । सखी पहुप भरि सेज सँवारी ।।
बहुरि सिंगार कंदला कीन्हें । अंग अंग लै भूखन दीन्हें ।।
करि सिंगार माधौ पै आई । जुगल सेज पर बैठे जाई ।।

आगम बिरह वियोग, विछुरन मूल जु रहत जिय ।
मिलत मैन संजोग, बचन वियोगिनि उच्चरै ।।

... ...न कंदला कहई । रजनी बीति अल्प ह्वै रहई ।।
ऐसा कछु कीजै ... । बाढै रैनि न होइ सकारा ।।
तब माधौ वीना कर लीन्हा । ... नयननि सुविलीन्हा ।।
सरस बजावहि वीन सुरंगा । टिक्यौ चंद थकि रहे तुरंगा ।।
... ... कुलानै । बाढ़ी रैनि न होइ बिहानै ।।

...स ... ..., राहुजाइ सूरज गिलहु ।
चलन कहत पिय प्रात, रैनि क्ष निधि ... ।।

बढ़ी रैनि नहि होइ उंजियारा । तब माधव धरि बीन बिहारा ।।
थक्यौ नाद मृग चल्यौ उदासा । अथयौ चंद सूरज परकासा ।।
वीती रजनी पृथ्वी जागी । माधवनल उठि भयौ विरागी ।।
पुनि कामा सो अग्या लेई । आग्या लै मारग पगु देई ।।
कहै नारि हौं ही तुम थाहूँ । हौं न कहौं माधौनल जाहू ।।

रसना पाकौ सोइ, चलन कहत जो मित्र को ।
मद द्रिस्टि मति होइ, जो निरखै बिछुरन सजन ।।

करि धोती पोथी करि बाँधै । उठ्यो विप्र वीना धरि काँधै ।।
गहि रही कामकंदला बाहीं । हौं तोहि जान दैउ जो नाहीं ।।
कहति काम ये मीत बताउ । कै जु चले मन मोर लुभाउ ।।
अहो मीत सज्जन परदेसी । विद्याधर मनमोहन वेसी ।।
मारि कहा रिनि मैटौं दाहू । ता पाछै तुम पर भुमि जाहू ।।

नैन झरत जिमि मेह, गरव देह भीजत सकल ।
बिछुरत नयौ सनेह, मन व्याकुल तन थकित भय ।।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कहै त्रिया पूजै आस तिहारी । कर अंजुल मुहि दीजौ वारी ॥
प्राननाथ अब क्यों इच्छा आवै । ताके आँसू भरि भरि आवै ॥
रति गति मति लै गवनहु मोरी । लै सुखु दै दुखु संघहु जोरी ॥
नेहु नाव तवगुन करि लीना । छाँडि बियोग समुद महँ दीना ॥
बिन गुन नाउ लगहि नहिं तीरा । करि हा हीन झकोरहि नीरा ॥

नैन समुद तारंग, प्रीतम बिनु उमगे फिरहिं ।
बिनु गुन वोहित अंग, बूड़हि सो त्रिय कंत बिन ॥

तजि समीप जिनि करहु वियोगिनि । तुम बिछुरत ह्वै हौं हम जोगिन ॥
कंथा पहिरि जटा सिर केसा । घर घर फिरहुँ तपस्विनि भेसा ॥
मुद्रा पहिरि भस्म सिर लाऊँ । मुख माधौ माधौ गुहिराऊँ ॥
किंगरिय गहि दिन रैन बजैहौं । जोगिनि ह्वै माधौ गुन गैहौं ॥
घर घर बन बन ढूढ़ौं तोही । सो कछु करौं मिलौ जो मोही ॥

खंड खंड तीरथ करौं, कामो करवत लेहुँ ।
मन रक्ष्या करि मारि जियौं, ढूंढ़ि मित्र को लेउँ ॥

जिन दै जाहु बिरह के हाथा । पाइन परहुँ लेहु मुहि साथा ॥
ये हो मीत पंडित पंइडाही । बाट माँझ जिनि छाड़हु मोही ॥
मोहिं मारि जाहु पिय ताहा । छाँड़हुँ प्रान न छाड़हु बाँहा ॥
चंद विलोकत सकल चकोरा । चकवी सती होई जो भोरा ॥
नैन सकल निरखत भावंता । जिय दूखत सुनि बिछुरि भवंता ॥

आलम प्रीतम के मिले, अंग अंग सुख होइ ।
पलक ओट जग लाज तैं, रहौं सकल सुख होइ ॥

कहै नारि सुनि विप्र उदासी । मेरे गृह जो करहु निवासी ॥
जिहि मुख सुखद बचन सुनावहुं । तेहि मुख काहे चलन कहावहु ॥
माधो नैन नीर भरि आये । कामकंदला बचन सुनाये ॥
बोलै बिप्र नैन बरसाहीं । सुनहूँ नारिय छाँड़हु बाहीं ॥
तव मुख निरखि नैन सुख पाऊं । बिछुरि जानिकै वहि मरि जाहुँ ॥

भावंता के बिछुरनै, नैन उमगि जल धार ।
मन अधीर तन पीर अति, बिरह उदेग अपार ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

माधव-कामकंदला वियोग

सखी आइ कर बाँह छुड़ाई। चल्यो विप्र त्रिय गई मुरझाई ॥
काम मूर्छित धरनि मह परी। सखी आइ करि अंकन भरी॥
लै करि सखी सेज पर धाई। तन व्याकुल जनु मिरगी आई ॥
अधर सूक जिय रहै निरासा। सखि जीवन की छाड़ी आसा ॥
मूदि नासिका छिरकहि पानी। पुहुप मूरि औषध बहु आनी ॥

करि उपचार सखी थकी, रहीं बिसूरि बिसूरि।
बिरह भुवंगम वा डँसी, ताकौ मंत्र न मूरि॥

पुनि इकु मंत्र सखी मिलि थापहिं। कान लागि माधवनल जापहिं॥
माधौ माधौ उहि गुहरावौ। जागि नारि विप्र जनु आयौ ॥
सुनत नाउ जब नैन उघारे। श्रवन नैन जल मानहुँ नारे॥
सुनौं भवन देखि बिनु मित्रा। भई पीत तन व्यापी चिंता॥
बिन काँदव जिमि कमल सुखाई। बिना सूर्ज ज्यों तेज मुरझाई॥

जैसे जल स्यों मीन, घरी एक ज्यों बिछुरई।
सदा रहै तन छीन, छिन ही छिन दुख संचरै ॥

यह हिय वज्र वज तैं गाढ़ा। पाल्यौ वज्र वज्र मैं बाढ़ा॥
जा दिन मीत बिछोहा भयऊ। तंवकि निखंड खंड ह्वै गयऊ ॥
बिछुरन जस भा ताल करकै। पापी हियौ नेक नहिं फरकै॥
ऐसे निलज रहत नहि प्रानाँ। मीत बिछोह सुनत किमि काना॥
गये न प्रान मीत के संगा। ऐसे निलज रहत गहि अंगा॥

आलम मीत विदेसिया, लै गयो संपति सुष्ष।
नैन प्रान तन विरह बसि, रहे सहन को दुष्प ॥

गयो विप्र चित्त उचाटउ। अब कहँ पाऊँ मीत बतावउ ॥
तीन्या अपने होई न कोई। छिन इक बिछुरै नैन दुख होई॥

चंदन जान नहिं पीर, तादिन भरहि चकोर दूख।
व्याकुल रहै सरीर, निसि अँधियारी सीस धुनि ॥

तजि सनेह हम धौन लगायौं। कामकंदला बहु दुख भयौं॥
दिन बीतै रजनी ज्यों आवै। भरे नैन जल पलु न लगावै ॥
खिन माधौ माधौ गुहिरावै। खिन भीतर खिन बाहिर आवै॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बिरह ताप निसि सेजन सोवै । कर मीजं सिरु धूनि धुनि रोवै ।।
ऐसे दुख करि रैन बिहावै । कोटि जतन बासर नहि पावै ।।

जो दिन होइ तो निसि रटै, जो निसि होइ तो प्रात ।
भा दिन सांतिन रैनि सुख, बिरह सतावत गात ।।

कामवंत बिरहा बसि भई । विद्याबुद्धि सकल नसि गई ।।
नृत्य गीत गुन की चतुराई । गति मति आनि बिरह बौराई ।।
जिहि तन मन बिरहा संचरै । सो जिउ जीवै नहि पुनि मरै ।।
बिरह अनल सोइ लै सुख जारइ । रोम रोम वेदनि संचरई ।।
पाउ हर्ष सुख रहै न कोइ । जिहि सरीर बिरहानल होइ ।।

बुधि विद्या गुन ग्यान, प्रेम चाव धुनि हर्ष बल ।
सब तजि होइ अयान, जा घट बिरहा संचरै ।।

कामकंदला भई वियोगिनि । दुर्बल जनू बर्स की रोगिनि ।।
अंजन मंजन भोग बिसारे । सजल नैन वहै जल के नारे ।।
वस्त्र मलीन सीस नहिं धोवे । लंक टेक माधौ मग जोवै ।।
नींद न भूख न भावै पानी । काया छीन दीन मुख बानी ।।
हा हा आइ स्वास के गाढ़ै । छिन छिन बिरह अनल तन बाढ़ै ।।

हा हा प्रान न संग गय, जब बिछुरे भावंत ।
कर मीजै बस्तर धुनै, गहै अंगुरिया दंत ।।

पलक वाह नहि रहहिं नियारे । मंगन भये नैन के तारे ।।
माधौ पीर कंदलहि व्यापी । मनमथ अंग तपति त्रिय तापी ।।
तोरै तनु मनु डारै रहही । हृदै पीर नहिं का ह्वै कहही ।।
छिन अचेत छिन चेतहि आवहि । पुनि पुनि बिरह बिया तन तावहि ।।
स्वास लेत पिंजर ज्यों डोलहि । हाहा सजनी मुख नहि खोलहि ।।

रक्त न रहै सरीर, पीत पत्र के बरन तन ।
डोलत अतिहि अधीर, पवन तेज नहिं सहि सकत ।।

सखी आनि मुख नीर चुवाहीं । हिदै तपत घसि चंदन लगावहि ।।
कुसुम सेज पर जो पगु धरई । तिहि छिन काम अग्नि पर जरई ।।
त्रिविध पवन त्रिय सहै न पारै । चंदन चंद अधिक तन जारै ।।
पीक मधुर धुनि बोल सुनावै । मदन घाउ पर जनु बिष लावै ।।
गीत नाद रस कवित कहानी । श्रवन सुनत ये विष सम बानी ।।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अकुलाई तन विरह के रस संजोग रसुलीन ।]
ते सब काम वियोग, निसि बासर दुख दीन ।।

माधव विरह-वर्णन

बिछुरै कामकंदला नारी । माधौनल मन भय दुख भारी ।।
बिरह के साँस जु हिरदैं बाढ़ैं । गहि गहि आहि आहि कैं काढ़ैं ।।
बन बन फिरै नैंन जल धोवै । बिरह संताप नींद नहिं सोवै ।।
छिन बैरागी बीनू बजावै । सूखे गात अगिनि जनु लावै ।।
मन चिंता करि त्रिया वियोगी । गोरख ध्यान रहै जिमि जोगी ।।

अगम अथाह अलेख अति, बिरह समुद्र अगाध ।
प्रीति हिरानी बुद्धि जनु, भूले ब्रह्म समाध ।।

विरह समुद्र अगम अति आही । बूड़ि मरै नहिं पावै थाही ।।
बुद्धि बल स्यै कोउ पार न पावै । जौ नर सप्रंग गुन चढ़ि धावै ।।
विरह डसत नर जिऐ न कोई । जौ जीवहि तौ बौरा होई ।।
विरह चिनग जिहि तन पर जारैं । छिन छिन विरह अगिनि विस्तारैं ।।
सोइ अगिनि माधौनल लागी । बीनु बजाइ रहे बैरागी ।।

हिऐं हूक भरि नैंनजल, विरह अनल अति हूम ।
अंतर घर सँवर बरै, स्वास प्रगट भइ धूम ।।

जिय बिनु सूक पत्र ज्यौं डोलै । सूल सहित माधौनल बोलै ।।
निसि दिन विप्र पीर करि रोवहि । वन पंछी निसि नींद न सोवहि ।।
बाघ सिंह कोइ निकट न आवहिं । चहुं दिस विरह अगिन अति धावहिं ।।
विरही नैन सजल मुख भरे । सीतल होत तपत जिहि हरे ।।
स्वासा वेग नैन भरि पानी । सानल गत बिरहा की जानी ।।

वस्त्र मलीन उदास तन, उभय स्वास बहु लेइ ।
नींद भूख लज्जा तजै, विरही लच्छन एह ।।

माधौ नैन रहे भरि आँसू । सूखो चर्म रुधिर अरु माँसू ।।
तब माधौ मन माहिं विचारहि । बिरह बासु मन आपु सँभारहि ।।
अहो वन बिरह जोर मरि जाँहू । कामकंदलहि हौं न मिलाऊँ ।।
अब खोजहु कोउ जग उपकारी । मिलवहि मोंहि कंदला नारी ।।
ढूंढौ पर वेदनि जिहि होई । दुखखंडन नर जो कहूँ होई ।।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लक्ष दैन संकट हरन, जीवन प्रन मति धीर।
तिहि के कलि उत्तम करम, ते खंडहि पर पीर॥

विक्रम सहायता खंड

यहै मंत्र माधवनल लागा। बल सँभारि बन तजि मग लागा॥
कोइ न भयउ कलि त्रिया वियोगी। माधौनल जो भरथरि जोगी॥
जग्य विचार माधौनल कहै। चल्यौ जहाँ नृप विक्रम रहै॥
पर दुख हरन दसौं दिसि दैनी। सुनियतु विक्रम नग्र उजैनी॥

सुध संगति बहु करत है, जो मन उत्तम होइ।
पर दुख खंडन तौ गनै, नेह दान मुहि देइ॥

काम के बस माधौनल चला। किहि बिधि मिलै कामकंदला॥
वीना विरह साथ जो लीन्हें। नींद भूख प्यास बस कीन्हें॥
मारग चलें सकल दुख लैनै। पहुँच्यौ जाइ नगर उज्जैनै॥
धर्मपुरी सव नगर सुहावा। हाट पटन बहु देखि बनावा॥
चहुँ दिसि नगर बाग फुलवारी। ताल कूप सलिता बहु भारी॥

कनक खचित मनि मंदिरनि, कलस धुजा फुहराति।
राब रंक नहिं चीन्हिए, पूरन पुर जिहिं भाँति॥

अति वियोग माधौ कौ भयऊ। ततखिन चलि मंदिर में गयऊ॥
पुनि पुनि हाट पटन फिरि देखै। आनंद पुरी बरावरि लेखै॥
छत्तिस पुरी नगर बैपारी। बैठे हाट महाजन भारी॥
कहूँ नाच कहुँ पेखन होंई। कहूँ पवार गावत कोई॥
कहुँ रामायन भारथ होई। कहुँ गीता कहुँ भागवत होई॥

कहुँ पंडित द्वै सहस हैं, कहूँ करहिं कवि वाद।
कहूँ मल्ल विह्वल भिरहिं, कहूँ गीत कहुँ नाद॥

अति उदास माधौनल भयऊ। तब राजा के मंदिल गयऊ॥
राजमंदिर मनिगन उंजियारा। कै विधना कैलास सुधारा॥
द्वारैं पंडित तापस ज्ञानी। देस देस के भूपति जानी॥
द्वार भीर नरपति कैं होई। नैकु जुहारु न पावहि कोई॥
देखि विप्र मन भयउ उदासा। रांज भैंट की तजि जिय आसा॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दिन उदास दहुँ दिसि फिरहि, नैन दृगन के नीर।
येक न काहू सौं कहै, अंतर गति की पीर॥

दिवस व्याधि माधौ कौं लागी। मन महं कामकंदला जागी॥
विप्र एक संग करि लीन्हाँ। करि अहार माधौ मो दीन्हाँ॥
करि अहारु माधौनल गयौ। नदी तीरक उदक जो भयौ॥

हाटक यह धारे सकल, भरहि वारि पनिहारि।
येक नारि मज्जन करहि, अंग मलाइ सुधारि॥

कनक कलस भरि सबरी नारी। धरि धरि सीस चलहि ते वारी॥
मारग छाँड़ि चलहि ते नारी। तोरहि फल औ फूल उपहारी॥
येकै चलैं घूंघट पट डारैं। चंदन वदन तप अंगारैं॥
लखि चरित्र माधौ मुख फेरा। दुख व्यापौ तहँ कामा केरा॥
निसु दिन रहै तहाँ चितु लाई। पाहन रेख न मेटी जाई॥

द्रग पूरन की तारिका, मूरति रही समाइ।
जित देखौ तित सो त्रिया, पलक न इत उत जाइ॥

दिन इक माधौ गयौ सुजाना। मंडप महादेव कौ जाना॥
मंडप देखि भेख मन भावैं। तहाँ राइ विक्रम नित आवैं॥
तिहिं मंडप माधौनल गयौ। विरह ताप व्याकुल मनु भयौ॥
जामैं विरह व्यापै सोइ जानै। अन जानत मुख कहा बखानै॥
मन उदास माधौनल भयऊ। दोहा लिखि मंदिर महँ गयऊ॥

कहा करौं कित जाऊँ हौं, राजा रामु न आहि।
सिय वियोग संताप बस, राधौ जानत ताहि॥

रामचंद्र नहिं जग महँ आहीं। सिया वियोग किधौं दुख जाहीं॥
राजा नल पृथिवी सों गयऊ। जिहि बिछोह दमयंती भयऊ॥
वनवासी अरु भेद संजोगी। राजा फूहर वाचर भोगी॥
बिछुरत त्रिया भयउ सो जोगी। भरत राज पिंगला वियोगी॥
राजा रतनसेनि नहिं भयऊ। पदमावति लगि सिंघल गयऊ॥

मधुकर कमलहि आहि, कोजि मालती वियोगु।
ये सब गये जगत्र मैं, विरही करि करि जोगु॥

दोहा लिखि माधौ वैरागी। गयौ नगर कामा अनुरागी॥
तिहि मंडप राजा पगु धरई। महादेव की पूजा करई॥
पूजा करि प्रदच्छिना देई। राज दृष्टि दोहा पर गई॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दोहा बाँचि राज यह कहई। विरह अग्नि किहि व्यापति अहई ।।
मोरैं पुर विरही कोउ आवा। विरह वियोग सताप सतावा ।।

आलम ते नर तुच्छ मति, जे पर हथ मनु देहिं।
सुख संपति लज्या तजैं, दुख विरहा सोइ लैंहि ।।

राजा कहै सुनौ सब कोई। देखहु नर बिरही सो होई ।।
मोरे नग्र दुखी जो रहई। सकवंसी मोसौं को कहई।।
अब जो सों विरही नर पांउ। सुनि वेदनि सब तुरत नसांउ ।।
कोइ वह पुरुष ढूंढ़ि सो ल्यावइ। राजा कहै लच्छि सो पावइ।।

दुख खंडन नृप दयानिधि, तन पीरे पर पीर।
पुनि पुनि चितचिंता करहि, यह विक्रम मति धीर।।

राजा अन्न पान नहिं भावहि। मन बच जब लग जो नहिं आवहि।।
नर नारी सब ढूंढ़न धाईं। बिरही लच्छिन सकल बुझाई ।।
ढूंढ़हि हाट पटन फुलवारी। ढूंढ़न बन महँ झूलत वारी।।
ज्ञानवती दूती इक आई। विरह वियोग खेल सब रहई।।
सो चलि जिहि मंडप मह जाई। माधौनल ता छन गयो आई ।।

तन दुर्बल अखियाँ सजल, भरि भरि लेत उसास।
चित उचात मन चटपटी, विरह उदोग उदास।।

मन उचाट छिन बीन बजावहि। जोरे सुनहिं तिहिं विरह सतावहि।।
खिन खिन कामकंदला रटई। स्वाति बूंद को चातक चहई ।।
ज्ञानवती त्रिय सुनि मुख बानी। मन मह कही यहै सुग्यानी ।।
विरही पुरुष आइ यह सोई। जाकर दुखु राजा कौं होई ।।
कामकंदला त्रिया वियोगी। तन मन छीन भयौ सो जोगी।।

मन मारैं वस्तर मलिन, द्रग भरि ऊंचे सांस।
तन दुर्बल पिंजर झलक, रंचक रक्त न मांस।।

ज्ञानवती छिन इक कहि वानी। सखी बीस दस आनि तुलानी ।।
कहै सखी सौं सो यह वह आही। नरनारी ढूंढ़त सब जाही ।।
अब लै चलहु वेगि गहि बाहीं। सखु पावइ विक्रम नर नाहीं ।।
पूछहि बात न नल मुख बोलहि। दुर्बल गात पवन ज्यौं डोलहिं ।।
जो कछु बोलहिं उत्तर नहिं देई। नीचे नैन स्वांस भरि लेई ।।

रहै ताहि को ध्यानु, मन माला हित मंत्र जपि।
ज्यों जोगी करि ज्ञान, स्रवन सुनत नवगति मुखहि ।।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बोलहि सखी सुनहु बैरागी। विरह ताप सुख संपति त्यागी ॥
बोलहु बचन पीर सब कहहू। काहे दीन छीन तन रहहू ॥
ताकी सत्ति मानि मन बोलौं। जिहि वियोग विरहा बस डौलौं ॥
छिन एक बचन कहै छिन रोवहि। नीरज नैन कमल मुख धोवहि ॥

दुख को बात दुखिया कहै, दुख वेदनि सुख त्यागि।
दुख समुद्र सोइ पर्‌यो जो, रह्यो अंग दुख लागि ॥

बिछुरत कामकंदला नारी। माधौनलहि भयौ दुख भारी ॥
पुनि मुख कहै विरह की रीती। अपनी कामकंदला प्रीती ॥
अति उचाट मुख विरह बखानै। जिहि यह व्याप्यौ सोई जानै ॥
माधौ पीर सखी कौ व्यापी। विरही बात सखी सब थापी ॥
सुनत बचन त्रिय अंग पसीज्यौ। नैन नीर कंचुकि तन भीज्यौ ॥

हौं वलि वलि जिहि जीव, पर वेदनि जिहि बेधियौ ॥
धृक ते पाहन हीय, नीदन भिदहिं पषान मैं ॥

बोलहि ज्ञानवती गुन नारी। चलहु विप्र अब नगर मँझारी ॥
हम राजा विक्रम की दासी। तुम वेदनि मन माहिं उदासी ॥
हम पठई राजा तुम पासा। चलहु वेगि मन पूजै आसा ॥
चल्यौ विप्र माधौ उहि संगा। त्रिय वियोग तनु रह्यौ न अंगा ॥
जहँ सकबंधी हतौ नरेसा। राजा मंदिर कियौ प्रवेसा ॥

ज्ञानवती इमि उच्चरहि, सो विरही है आइ।
विप्र देखि राजा उठ्यौ, कीन्हौं आदर भाउ ॥

राजा बरन देखि कै कहैं। नख सिख बिरह अनल तनु दहै ॥
मूरति नयन रोइ जल धारै। कूंदन देह नेह बस मारै ॥
पूछहिं राइ सुनहु द्विज देवा। अज्ञा होइ करहुँ सो सेवा ॥
कवन देस जासौं पग धारे। दरसन देख्यौ भाग हमारे ॥
अपनो नाँउ कहौ बैरागी। किहि के नेह फिरहु सुख त्यागी ॥

किहि कारन भये बिरह बस, दुख संग फिरहु उदास।
कहौ विथा हिय पीर सम, बिधि पुजहिं सब आस ॥

राजा मो माधवनल नामा। उत्तम संग करहुँ विस्रामा ॥
विद्या पढ़ेउँ करन संगीता। समुद्रिक जोतिक गुन गीता ॥
काव्य कोक आ गमहि बखानहुं। पिंगल पढ़ेउँ सकल गुन जानहुँ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कर मृदंग गति बीन बजाऊँ। षट रस राग रागिनि संग गाऊ ॥
नृत्य चतुर्गन वेद विनानी। केलि चातुरी उकति कहानी ॥

पसु भाषा औ जल तरन, धातु रसाइन जानु ।
रतन परख औ चातुरी, सकल अंग सग्यानु ॥

पुहुपावति नगरी मों ठाऊँ। गोबिंद चंद राज को नाऊ ॥
कर्म रेख सन विर्गहु भयऊ। निंहि मोंहि देस निकारो दयऊ ॥
तब मैं आन उदास मनु कीन्हाँ। कामावति नगरी पगु दीन्हाँ ॥
कामसैनि राजा तह आही। सुरनर सकल सराहैं ताही ॥
तिहि पुर कामकंदला नारी। रूप राग विद्या दस चारी ॥

नैन लगे तिहि रूप, तजि गुनवुधि बल चातुरी ।
ज्यों दादुर बस कूप, निकसत परहि जु बिरह बस ॥

जा दिन मोर जन्म जग भयऊ। चित परि जहाँ ब्रह्म लिखि गयऊ ॥
मो त्रिय निरख न बिसरहिं काहू। चित कर ध्यान रहैं द्रिग वाहू ॥
अंपन रही ते अंपन लागीं। जिहि निरखत सुख संपति त्यागी ॥
अनुपम रूप विधाता दीन्हाँ। आँखिनि निरखि जीउ हरि लीन्हाँ ॥
जिय बिनु सदा रहैं नहि आसा। हिरदै नाहि जु कियो निवासा ॥

भावंता के मिलन कौं, हा हा पंख न कीन ।
नैन तपत हैं दरस कौं, तन परसन को जीय ॥

पंडित गुनी सकल वुधि ग्यानी। देखि विप्र मुख रह्यो बिनांनी ॥
राजा देखि अचंभौ रहई। कुछ वक उतरु माधव कहं देई ॥
हौं पंडित तुम जगत गुसाई। सब गुन पूरन काम की नाँहीं ॥
तुम देखत त्रिभुवन बस होई। तुम ही बस्य करहि जो कोई ॥

यह मन मानिक बस करन, काति अंत लै देहु ।
विरह वस्त्र सुख त्यागि कै, दुख वियोग सब लेहु ॥

सुनि राजा माधौनल कहई। यह मनु जो अपनै बस रहई ॥
नैन बसीठ डीठ अति आहीं। आपहि मनु दै फिर अकुलाहीं ॥
निरखत नैन कंदला नारी। लाग्यो मनु दीन्हों तनु डारी ॥
तिहि बिछुरत अन अंबु न भावहि। छिन छिन प्रेम अधिक मन आवहि ॥
मित्र वियोग बिरह दुख होई। जिहि दुख रहैं जानै पै सोई ॥

बिछुरत ऐस वियोगु, स्वास उर्द्धसी लैं रहै ॥
अब विधि करत संजोगु, नातर प्रान विमुक्त ह्वै ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राजा कहैं सुनहु गुनरासी। गनिका सौं नहिं प्रीति गनासी ।।
राजा पूंछहि विप्र सुजाना। कहियौ उद्‌वासी पुनि ग्याना ।।
जब लगि माडो की नहिं रीती। तब लौंहीं गनिका सौं प्रीति ।।
गनिका प्रीति न सदा चलाई। धन सों प्रीत बिन धन चलि जाई ।।
केलि फूल दासी को हेतू। रूप रंग अंतरगति सेतू ।।

नैन अनत चैना अनत, अनतै चित्र निवास।
जनि पातर परतीत करि, विस्वा बिसु बिस्वास ।।

बालहिं विप्र सुनहु नर भारी। आँखिन बीच सुदेखेहुँ नारी ।।
जो जेहि राता सो तिहि भावहि। तेहि बिनु सून द्रिस्टि जगु आवहि ।।
जो जाके मन माँह बसाई। तजि वंदन सालहि गज पाई ।।
सप्त समुद्र सलिता जलु वहई। चातक स्वाति बूंद कौं चहई ।।
तारा गगन भरे दुति मंदा। दुखित चकोर रहै बिनु चंदा ।।

जो जिहि राता होइ, निसि वासर सो मन बसहि ।
ता बिनु जियै न कोइ, बिछुरत हर जल मीन ज्यौं ।।

जो चाहौ सो हम पर लेहू। तजौ विप्र गनिका सौं नेहू ।।
हौं तो तजौं नेह कर धरई। यह मन जौं अपनै बस होई ।।
गुन धन जीव कंदला लीन्हाँ। दुंद उदेग मोहि कर दीन्हाँ ।।
रक्त माँस कछु रह्यो न चीन्हाँ। आँसू रुधिर हिदैं करि लीन्हाँ ।।

जब लगि जीवहुँ मरि जियहुं, सर्ग नर्क विस्राम।
तब लगि रटौं विहंग ज्यौं, काम कंदला नाम ।।

सो मतिहीन वज्र तनु होई। संग्रह नेहु न जीवै कोई ।।
पूरब जन्म कोटि जौ करई। तब सो नैकु पंथ पगु धरई ।।
मानुस पसु अंतरु यह अहई। मानव सोइ नेहु जो वहई ।।
ब्रह्म ग्यान पावै पुनि सोई। जिहि तन तेज नेह कौ होई ।।

अंध कूप वरि देहु, गुप्त प्रगट कोइ नहिं लखहि।
जानै दीपक नेहु, तब सब देखैं रूप गुन ।।

माधौ बचन सुनै जो कोई। सकल सभा को आवै रोई ।।
जो रे सुनै सो देखन धावै। जो देखै तेहि बिरह सतावै ।।
नारि बैठहीं ह्वै इक संगा। करैं बात तब दहैं अनंगा ।।
नगर एक आयौ बैरागी। अति सुंदर रस जान सुखत्यागी ।।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रेम नैम करि रैंन दिन, अंग चढ़ायौ राखि ।
सुनि धुनि सोई सीत कौं, दुंद बिरह अस भाव ।।

एक समै विक्रम नर नाहाँ । गहि लीनी माधव नल बाहाँ ।।
विप्र संग लै धाम सिधारा । दीप मसाल मनिगन उजियारा ।।
मंदिर जोति मानौ कविलासा । चंदन मिली अनूपम बासा ।।
कनक भूमि पाटंबर वासी । कुंकुम छिरकत केसरिरासी ।।
तिहि मंदिर सिंहासन छाजा । तिहि पर बैठि विप्र अरु राजा ।।

कवित नाद गुन चातुरी, अर्थ ज्ञान सिंगार ।
जो राजा मुखउच्चरहि, सो माधौ करै विचार ।।

जो बूझै विद्या नर नाहा । सो संपूरन माधौ माहा ।।
तब राजा उठि चरन पखारे । अहो विप्र तुम ईस हमारे ।।
माँगहु मन इच्छा जो होई । अर्थ द्रव्य हम पुजवहिं सोई ।।
मागों यहई बात सुनि लीजै । मों कहँ कामकंदला दीजै ।।
जिहि कारन हम तन मन खोदब । रक्त धार निसि बासर रोयब ।।

वेगि देहु करतार, बिव अँखियन पुनि पंख वलु ।
उड़ि देखौं इक बार, भाँवता के दरस कौं ।।

राजा कहै सुनु विप्र गुसाई । दिन दस रहौ नलन की नाँहीं ।।
दल पैदल सैना संग लेऊँ । लै तुहि कामकंदला देऊँ ।।
वर वर बूझि जीति मुह माँगैं । राजा बाँधि दैउ तुहि आगै ।।
दिवस दिवस राजा बौरावहि । माँगि विप्र इहिठा चित लावहि ।।
यह मन दियौ प्रैम चित मोहा । रह्यो लागि चुंवक जनु लोहा ।।

मोहन मूरति चित्र लखि, चित पर धरी सुधारि ।।
सो पलु भूलै महि कहूँ, जो बीतैं जुग चारि ।।

विप्र संग विक्रम नल भारी । गयौ संग लै भूमि सँवारी ।।
ग्रंध्रव गुनी आये बहुभारी । राजा करहिं विप्र मनुहारी ।।
ताल पखावज बोलि मँगाये । गाइन गुनी कपरिया आये ।।
कमल बदन मृग नैन सुहाई । पातुर बीच काछिकैं आई ।।
मध्य छीन औ भूखन सोहै । नैन निकट करि सब मन मोहै ।।

एक भूमि बैंडारिये, दामिनि ज्यों छिपि जाइ ।
पुष्प लता जिमि पायन, धुनि अति चंचल फहराइ ।।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नर निक्रम औ विप्र उदासा। देखहु नैन करहु मन हासा।।
करन कपोल विषै धरि हाथा। नैना भरिं नीचै करिमाथा।।
बोला राउ नैन कत भरहू। देखौ नाचर हंस जिय करहू।।
मैं माँग्यौ कित सावक साजू। देखौ विप्र नृत्य तुम आजू।।
माधौनल आगु करि लीन्हाँ। जिहि जहँ नेह पसारा कीन्हाँ।।

धनि विक्रम सक बंधिया, पर दुख हरन नरेस।
विप्र काज कौं उठि चल्यौ, छाँड़ि धाम धन देस।।

कंदलाप्रेम-परीक्षा खंड

जोजन दस नगरी जब रही। राजा सींव आनि पुनि गही।।
राजा मंत्र एक जिय धरैं। इक रन बीच सैन दुइ करैं।।
संग खवास राजा असवारा। आयो नग्र लगी नहिं बारा।।
जाके नग्र विप्र हैं दुखी। सो त्रिय देखहू सुखी कि दुखी।।

राजा पूछैं नग्र में, कामकंदला नाम।
कहियत गुनी विचित्र हैं, सो किहि दिसि ताकौ धाम।।

मंदिर पूँछि सो लियौ गरेसा। उत्तर पौरि महँ कियौ प्रवेसा।।
भीतर मंदिर पौरिया जाई। कामकंदला बात जनाई।।
उत्तम पुरिष पौरि इक आया। राजबंस कोइ रूप दिखावा।।
सुनि कै दासी पौरहि आई। राइ मंदिर लै गईं लिवाई।।
चित्रसार राजा वैसारा। बहुत दीप दीपक उंजियारा।।

कामकंदला बिरहवसि, वस्तर गात मलीन।
मुख माधौ माधौ रटै, होइ सो छिन छिन छीन।।

नृत्य गीत विद्या चतुराइ। गई बिसरि गुन की अतुराई।।
बदन मलीन पीत रंग भयऊ। रक्त मांस सूखि सब गयऊ।।
राजा बोलहि मीठे वैना। बिरहिनि नारि न जोरहि नैना।।
राजा बोलहि उत्तर नहिं देई। बरुनी छूटि नैन भरि लेई।।

गनिका गृध सौं काज, ऊँच नीच चीन्हें नहीं।
बोलहिं वचन जै लाज, बस करि राखैं पर पुरिष।।

ऐसे बचन ना कहौं भुवाला। विरह बसी जनु खाई काला।।
मुनु विप्रहिं दषिन करि दीन्हा। देषत ताहि नैन हरि लीन्हाँ।।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देखौं ताहि जौरे मन माई। तिहिं देखत दोउ नैन सिराई ॥
मन्न धन जीउ विप्र लै गयऊ। तिहि बिनु सून द्रिस्टि जग भयऊ ॥
सो प्रीतम दै गयौ ठगौरी। तजि गुन रूप भई हौं बौरी ॥

जेहि मारग प्रीतम गये, नैन गये तेहि मग्ग।
दै दूनौ दुखु विरकौ, करि सूनौ सब जग्ग॥

तब बल पग परसै वरनारी। रोसवंत कीन्हौं सुख वारी ॥
कहै कंदला सुनु नृप भारी। जक्त पूज्य तुहि लाज हमारी ॥
ज्यों हिय मांझ गुप्त जिउ रहई। त्यों द्विज रहै सदा सुख दाई॥
दुज मन माँहि निवास जो कीन्हाँ। बोलनि तजि रसना हरि लीन्हाँ ॥

आलम प्रान पयान अब, करत हिएँ अन आस।
निसि-वासर द्रग तारका, प्रीतम कियो निवास ॥

राजा बूझि देखु इमि बाता। यह वेहि राती वह एहि राता॥
इहि के विरह विप्र दुख लीना। विप्र के विरह त्रिया तन छीना ॥
दुहुँ की प्रीत रहीं दुहुँ छाई। दोऊ मन तन रह भुलाई॥
इन मैं अधिक विरह कौ टीका। जिमि आँखिनि कौ मारग नीका ॥
ज्यौं सरवर महँ कमल रहाई। बिछुरत नींद रहै कुम्हिलाई ॥

मालति लुबधी अलिरसहि, अलि मालति मकरंद।
विछरन विरहा सूल सम, दही विरह के द्वंद्व ॥

नर के प्रान नारि के संगहि। नारि के प्रान पुरिष के संगहि ॥
राजा निरखि रीझि मन माहीं। इन महँ प्रीति कपट कछु नाहीं॥
इहि जिय प्रीति रीति कौ गहई। त्रिया विरह लगि अति दुख दहई॥
चाहौं नैन नींद नहिं आवहि। दुहुँ तन अन्न पान नहिं खावहिं ॥
ब्रह्म लोक अमीरस जानहुं। गुन गंधर्वहि प्रीति बखानहु ॥

आलम ऐसी प्रीत, परतन मन दीजै धाई।
गुप्त प्रकट अँखियाँ मिलैं, दियौ कपट पट जाइ॥

राजा निरखि वियोगिनि नारी। पूँछहि गुरुजन सखी हंकारी ॥
किहि लगि इहि की सुधि बुधि गई। किहि के हेत नेह बस भई ॥
कहै सखी सब कामिनि पीरा। सुनत नैन भरि आवहि नीरा ॥
विप्र एक माधौनल नामा। तिहि के विरह यहि यह कामा ॥
सो प्रीतम दै गयउ ठगौरी। तन मन लाइ प्रेम की ठौरी ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यह पपीह पिउ पिउ करै, छिनु अचेत छिनु चेत ।
औरन सुख विरह्‌ा अनल, भयौ बरन तन सेत ।।

रूपवंत अति काम के भेसा । सो दुज छाँडि गयौ परदेसा ।।
कैधो चहइ इंदु ठगि गयऊ । कैधों बरस मदन कों भयऊ ।।
मोहन रूप विप्र वह आवा । नैन लगाइ तिहि मन बौरावा ।।
ताकि चाह कोइ नहि कहई । तिहि बिनु त्रिया बिरह बस भई ।।
अन्न नीर एहि नींदन आवहि । दिन उदेग निसि रोइ गवावहि ।।

मित्र वियोगिनि नारि, धारावरि सहि नैन जल ।
रही रोइ पचि हारि, तन तन दुंद उदेग करि ।।

कपट बचन राजा उच्चरई । दुहुँ की प्रीति रीझि कैं रहई ।।
मैं देख्यौ माधौनल जोगी । पुर उजैन रह त्रिया वियोगी ।।
नारि वियोगु ताहि दुख भयऊ । विरह के सूल विप्र मरि गयऊ ।।
ऐसे बचन जब राज सुनाए । त्रिया बधन कहँ जम उठि धाए ।।
सुनत कंदला बिस भरि गयऊ । धरिन पछार खाइ मरि गयऊ ।।

आलम मीत वियोग को, सबद पर्‌यौ जब कान ।
लोभ न कीनौ स्वास कौ, गए आहि संग प्रान ।।

सुनत पिंगला जैसों कीन्हाँ । ऐसे जीउ कंदला दीन्हाँ ।।
सखी आनि करि नारी रिखाई । मानहु काल वासुकी खाई ।।
बैठे दसन जीभ भइकारी । किलकै नहि छुटि गइ जब नारी ।।
रोवै सखी छोरि कै कैसा । राजा जिय मह करहि अंदेसा ।।
जिहि लगि विप्र इतो दुख लीना । सो त्रिय बचन कहत जिय दीना ।।

अति वियोग मालति सुनत, सूखे पल्लव मूल ।
दुखित साल भये कलित बस, कलह सकत त्रिय सूल ।।

गये प्रान छिन में मरि गई । राजा के मन चिंता भई ।।
सीस धुनै राजा पछिताई । कइ अपराध कियो मैं आई ।।
प्रथमै तिरिया बध मैं कीन्हाँ । घोलि हलाहल देखत दीन्हाँ ।।
जौ जनतेउं त्रिय देइ पराना । कत हौं बचन सुनाएउँ काना ।।
उत्तर कवनु विप्र कौं देऊँ । वह मरि जाइ दोष द्वै लेऊँ ।।

गात सरोवर पंच वग, प्रान हंस उहि वारि ।
पिसुन बचन किये व्याधि विधि, दीनौ सकल बिडारि ।।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राजा कहै सखी सुनु बैना । बिरह दुखित भइ मूंदे नैना ॥
विरह तेज मुर्छित तन नारी । लै आयउ गर रूधि हकारी ॥
यह के प्रान स्वर्ग नहिं गयऊ । पंच भूत आत्मा मूछित भयऊ ॥
यह त्रिय करे काल नहिं आयउ । आहि के संग प्रान उठि धायउ ॥
जा तन मैं विरहा नल रहई । सो तनु आइ कालु नहिं दहई ॥

गये प्रान तन फिरयौ न जिहि, इहाँ गगन जिमि दूरि ।
हौं पारस जिहि कर छुवौं, सीतल जीवन मूरि ॥

इहि विधि विक्रम भयौ उदासा । नारि उठि जल्यौ निरासा ॥
कर मीजै पछिताइ नरेसा । नीच माथ कै करै अदेसा ॥
गृंथ गँवाइ ज्यों चलै लुवारी । तैसे चल्यौ राजा मनु मारी ॥
जाम तीन जामिन के भयऊ । राजा उतरि कटक मैं गयऊ ॥
जहँ तंबुआ साजै सै वारा । तिहिं तंबुआ राजा पगुधारा ॥

राजा नैननि नींद नहिं, अन्न न भावहि पान ।
मन महँ झींतय जुरत ही, सोचत भयौ विहान ॥

माधव-प्रेमपरीक्षा

भयौ प्रात बैठ्यौ दरबारा । राजा माधौनलहिं हंकारा ॥
सभा मांझ नल बैठे आई । राजा विप्रहि बात सुनाई ॥
जब लगि विप्र कथा यह भई । सो त्रिय विरह ताप मरि गई ॥
सुनि बात माधौनंल काना । तुम पर दिये कंदला प्राना ॥
सुनत बात दिज बिस भरि गयऊ । धरनि पछार खाइ मरि गयऊ ॥

दंव दाधी मालति सुनत, अति दाध्यौ तिहि ठईं ।
अलि मालति बिनु नहिं जिए, अलि बिनु मालति नाहिं ॥

राजा बचन सुनत द्विज काना । इहि के संग दिये मुहि प्राना ॥
माधौ सकल सभा उठि धाई । स्वास नासिका मूँदैं जाई ॥
पंडित गुनी वैद उठि धाए । जोगि मंत्र गारहू आए ॥
ओषधि मूर मंत्र करि थाके । फरे न एक जियहि गुन ताके ॥
सीतल गात विप्र कौं भयऊ । मन धन जीउ स्वास संग गयऊ ॥

आलम ऐसी प्रीति करु, ज्यों वारिज अरु बारि ।
वह सूखे वह ना रहे, रहै मूल दल जारि ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विक्रमचितारोहन खंड

करि उपचार लोग सब हारे। राजहिं देखि आँसु भरि ढारे ।।
प्रथमहि तिरिया वध मैं कीन्हाँ। पुनहि विप्रहि जानत विष दीन्हाँ ।।
नर मारत कोइ मोखु न पावै। ब्रह्मन वध्य नर्क उठि धावै ।।
दोनों वध कीने मैं आई। चिहुरचि अग्नि जरौं मैं जाई ।।
मैं विस्वास गुप्त जिय धारा। छलु करि जीउ दोउ कर हारा ।।

प्रेम नैंम निरखत रहत, यह नर नाहिन दोष।
भगत करत जिहि प्रीतमहि, तिहि नर नाहिन मोष।।

सकल कटक मैं पर्‌यौ हिरोरा। छूटैं फिरैं हाथि औ घोरा ।।
रिंध्या नाजु कोइ नहिं खाई। सैंना उठी सकल अकुलाई ।।
जिहि कै कारन इतनौ कीन्हो। तिहि द्विज वचन सुनत जिउ दीन्हो ।।
उठि राजा विक्रम वल वीरा। बैठ्यौ जाइ नदी के तीरा ।।
मलयागिरि के काठ उठाए। चंदन अगर बहुत लै आए ।।

कियौ हेम संकल्प लै राजा, कर लैं वारि।
घीउ कलस जहँ डारि कै, साजी चिता सँवारि ।।

लोग बैठि राजा समुझावैं। नेगी नेह लोग सब आवैं ।।
कहैं लोग राजा तुम जरहू। थोरी बात लागि तुम मरहू ।।
राजा येतौ दुख जिनि करही। कोतिक नारि पुरुष जो मरही ।।
उठि कै चलहु कटक कौं जाही। नातर जरै सैंना सग याहीं ।।
घर भर लोग कटक मैं मरई। उठि किन चलहु साँति जव परही ।।

जग समुद्र सुख दुख करम, नातिहि मेटन पार।
राज मरन व्यापहि सकल, जिहि पृथिवी को भार ।।

राजा कहै सुनहु सब कोई। जिहि विधि हानि धर्म की होई ।।
इहि जग माँह मरन सब आये। राजा रंक काल सब खाये ।।
जाको सब जग अपजस करई। जीवत मुयौ पाछै का मरई ।।
शिक्षा दई सब ही गहि रहे। आप आप को चित गहि रहे ।।
उठिन राजा कीन्हें अस्नाना। धोती पहिरि दिये बहु दाना ।।

गंगा ज़ल अस्नान करि, द्वादस तिलक बनाइ।
नमस्कार करि भानु को, बैठि चिता मैं जाइ ।।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बैताल खंड

स्वर्ग लोक महँ बात चलाई। जीवत जरत है विक्रमराई ।।
देवी देवता सब उठि धाये । चढ़ि विवान सब देखन आये ।।
गन गंधर्व किन्नर सब गुनी। तब बेताल बात यह सुनी ।।
जाकों मित्र वीर वेताला। सुनत वचन आयौ ततकाला ।।
राजा अग्नि दैन कौं चहई । तिहि छिन आइ बाहँ पुनि गहई ।।

तू सकबंधी चक्कवै, सिह सूरपति सेस ।
किहि कारन तू जरत है, पर दुख हरन नरेस ।।

राजा कहै सुनहु वैताला । मैं बड़ पाप आय कौ घाला ।।
पहिले तिरिया वध मैं कीन्हाँ। पुनि मैं जीउ विप्र को लीन्हाँ ।।
जिहि कारन पावक मैं जरहूँ । जम के त्रास नर्क तैं डरहू ।।
कह बेताल राजा जनि जरहू। ऐसी बात लागि जनि मरहू ।।
खिन मैं अमृत ल्याऊँ जाही। विप्र नारि तुम देहु जियाही ।।

आलम उत्तम सोइ, अपजस तैंकर का करहि ।
रहत न लज्जा होइ, आपु बुराई कान सुनि ।।

कहि बैताल सुनहुँ वलवीरा । मैं लाऊँ जीवन कौ नीरा ।।
वेगहि गयो वीर वेताला। सुधाकुंड तहँ होते व्याला ।।
परकत नयन विलंब न लावा। तुरत वीर अमृत लै आवा ।।
पहिले लै माधौ कौं दीन्हाँ। तिहिं यह प्रेम पसारा कीन्हाँ ।।
सुधा पियत माधौनल जागा। आये प्रात सुन भ्रम भागा ।।

नैन उघरि स्वासा चली, कियौ प्रान विस्राम ।
कामकंदला कंदला, लेत उठ्यो मुख नाम ।।

उठ्यो विप्र राजा सुखु पावा। तिहि छिन उतरि चिता स्यौं आवा ।।
तब बैताल के चरन पखारे। प्रान जात तुम रखे हमारे ।।
कियो अनंद बाजा बहु बाजहिं । अन्न खर्व अति द्रव्य लुटावहिं ।।
सुनि सुख सकल कलक महँ होई। नर नारी की चिंता जोई ।।
राज कहै हौं तब सुख पाऊँ। लै अमृत कंदला जियाऊँ ।।

भूसुर दीन असीस, जुग जुग जीउ नरेस बहु ।
लोभ न कर्यो सरीर, प्रेम काल यौं चाहिए ।।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राजा-वैद खंड

कनक कलस अमृत भरि लीन्हाँ । राजा भेष वैद को कीन्हाँ ।।
काम कंदला के घर आवा । पौरि दार सों बात जनावा ।।
सुनि कैं वैदु पौरिया जाई । सखियन आगें बात जनाई ।।
सुनि कै वैदु सखी इक आई । मंदिर मैं लै गई बुलाई ।।
सुंदर वैद सुमूरति कामा । यह की मूरि जियहि यह वामा ।।

पंडित मीत विदेसिया, सुंदर गुनी सु आहि ।
सनमुख आवत देखि कै, सखी रही सब चाहि ।।

सखी बहुत कै आदर कीन्हाँ । पातंवर कैठन को दीन्हाँ ।।
जहाँ कंदला मृतक पराई । वैदहि जाइ सो नारि गहाई ।।
सीतल गात देखि कै नारी । तब कछु बैद करहि उपचारी ।।
बैठि सखी सौं बोलहि गाता । नाहित स्वास झूँठि सनिपाता ।।
नहिन रोग वेदन जिहि हरई । मिर्तक परा वैद कह करई ।।

स्वर्ग गये तेऊ फिरैं, प्रान जिये जम जाल ।
ताकौ मंत्र न मूरि कछ, डसी विरह कै व्याल ।।

सुनहु वैद जौ नारि जिवावहु । मुख माँगौ सोई तुम पावहु ।।
मृतक परयौ जौ वैद जियावहि । सो आपन को ब्रह्म कहावहि ।।
वैद रोग को औषध करई । ताकौ कहा अचर्ज नर करई ।।
वचन निरास जब वैद सुनाये । सब के नैन नीर भरि आये ।।
साँचहु मरी कंदला नारी । परी खेह महँ खाइ पछारी ।।

गुन सुंदरता चातुरी, जब लगि तब लगि प्रान ।
स्वास गहै इहि अंग तें, सब कोइ कहै समान ।।

निरखि वैद जिय आस कराई । जिन कोउ सखी और मरिजाई ।।
कहै वैद जिनि तोरौ वारा । देखौं कछू करौं उपचारा ।।
सकल सखिनु कौ धीरजु दीन्हाँ । अमृत बैद हाय करि लीन्हाँ ।।
जहाँ हती कंदला नारी । सींच्यौ अमृत वदन उघारी ।।

अमृत बूँद जब मुख पर्यौ, आयौ चलि घर स्वास ।
वोली नारी कंदला, भई सखी मन आस ।।

प्रगटे प्रान कन्दला जागी । उघरि नैन चिंता सब भागी ।।
लेत उठी मुख माधौ नामा । पंचभूत मै किय विश्रामा ।।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कहै सखिन सौ सखी सुहाई । केती बार नींद मुहि आई ।।
तब यह उतरु दीन्हौं वाला । तूँ तौ मुई विरह के काला ।।
यह विषहर धन्वंतरि आयौ । मूर मंत्र पढ़ि तोहि जियायौ ।

यह हनुमंत महाबली, पर स्वारथ चल्यो दूरि ।
लक्ष्मण को संकट पर्‌यो, आनि सजीवन मूरि ।।

जब सुख काम कंदला भई । सवरी सखिनि की चिंता गई ।।
तब उठि वैद के चरन पखारे । गये प्रान तुम दये हमारे ।।
कहै वैद हौं दान न लेऊँ । मागै औरु सुमाँगै देऊँ ।।
जौ जिय लोभ तौ गुनी न कहिये । गुन संकर वैगुन तै रहिये ।।

जौ जिय लोभ तौ गुन कहाँ, जौ गुन लोभ तौ काइ ।
गुन बिन रूपहिं ना गुनौ, गुन बिन पुरिष अपाइ ।।

कहै कंदला वैद सुनु मोही । वैद रूप नहिं देखौं तोही ।।
कै तुम देउ रूप चलि आये । मुख अमृत दै मोहि जिवाये ।।
मन बच बोलहु अपनी बाता । कहिये साँचु सप्त मैं साता ।।
हों सकबंधी विक्रम राजा । पर की पीर हरहुँ करि काजा ।।
नगर उजैन राज तहँ करऊं । दुखिया देखि सकल दुख हरऊँ ।।

माधौनल द्विज कारनै, चलि आयौ इहि देस ।
तुम तन मितंक देखि कै. कियों वैद कर बेस ।।

तोंहि मरन जब माधव सुनिऊँ । वह मरि गयउ सीस मै धुनिऊँ ।।
मैं छल रूप दोइ सिर लीन्हाँ । तब उपचार जरन का कीन्हाँ ।।
जरतैं सुनि कैं वीर वेताला । सो अमृत लायउ ततकाला ।।
प्रथमहि माधौनलहि जियायौं । तिहि पाछें हम तुम घर आयौं ।।
अब सब साजि सैनि लै अ ऊं । युद्ध जीति तोहि विप्र मिलाऊँ ।।

उपकारन दुख हरन ने, अंगीकरन अभार ।
सुरपुर तिहि कीरति करै, जग मैं जस विस्तार ।।

ऐसे बचन जब राजा कहई । उठि चरन कंदला गहई ।।
दया निधान तुम रूप मुरारी । राजनि के राजा बुधि भारी ।।
यह संसार समुद्र अथाई । तहँ तुम तारन तरन गुसाई ।।
विरह घाव जे वोषधि करई । ते नर दुहूँ लोक जसु लहई ।।
बूड़त नाव जे पार लगावहिं । ते नर दुहूँ लोक जस पावहिं ।।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बिरला नर पंडित गुनी, बिरला बूझन हार।
दुख खंडन बिरला पुरिष, ते उत्तम संसार।।

ऐसे चरित तुमहिं पर आवहिं। यह बुधि लोक वेद कहँ पावहिं।।
पर उपकार करहु बलवीरा। बूड़त नाव लगावहु तीरा।।
कीरति कहिय न जाइ तुम्हारी। धर्म कर्म वलि वीर मुरारी।।
तुम समर्थ करि हौ सब काजा। हम संसार नरनि के राजा।।

जो बुधिवंत महावली, नरसिर जे करतार।
पर उपकार नरदुख हरन, जे अगवत पर भार।।

कंदला-संदेस खंड

पायन लागौं सुनहु नरेसा। माधौनल सो कहउ संदेसा।।
गये प्रान लैगये उपाऊ। अब के गये न बहुरै आऊँ।।
तुम सन भई विपति की पीरा। जोगी भेष न कीन्हौं फेरा।।
अव विधि मोहि आनि दिखरावो। निरखि विरह की पीर बुझावो।।
पंख होइ जो नैनन माहीं। छिन एक देखन को उड़ि जाहीं।।

दृग पुतरिन की तारिका, निरखि मूरती मैन।
तव गुन माला कर लियैं, जपौ सु वासर रैन।।

बिति की बात कहौ सब मेरी। नृपति कह कहहुँ बिनती कर जोरी।।
निसि दिन वहैं विरह दव देवा। हीयो तरकत सुनि जिय नेहा।।
करि भर सेज नींद भरि कोई। रजनी सकल सिराऊँ रोई।।
निसि दिन अग्नि गात ज्यों जरई। रोम रोम वेदनि संचरई।।
सोचति रहौं निसि वासर जागी। नैम रहै तव मारग लागी।।

कर कपोल औ करन ये, सदा रहत इक संग।
रोइ रकत ये नयन मग, सेत बरन भयो अंग।।

रितु बसंत मोहि कोकिल दहई। मलय समीर आगि जिमि बहई।।
पावस रितु बरसै जब मेहा। झुकति मरौं हौं सुमिरि सनेहा।।
चातक मोदनि षरिय सताई। दामिनि दमकि प्रान लै जाई।।
सूर चंद्र सीतल सब कहई। मिलि समीर आगि जिमि बहई।।
जे जे सीतल सुखद सहायक। ते सब मोहि भये दुख दायक।।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चंदन चंद कंवलन कली, पिक चातक जु समीर।
ये सब बैरी मोहि तन, हौं क्यों राखौं धीर।।

विरह बनावल सीतल रहई। उठत अगिनि नखसिख तन दहई।।
मंजन अंजन कौन सिंगारा। सुनत न भावै नाद बिस्तारा।।
माधौनल सो कहौं बुझाई। जो आपनी विपति जनाई।।
विनवति हौं सकबंधी राई। बिरह द्रिस्टि सौं लेउ बुझाई।।
सो उपकार करो जिय माँई। दमयंती ज्यों नलहिं मिलाई।।

मालति अस संपति मिलै, पूरन ससिहि चकोर।
चकवी कौ चकवा मिलै, कंवल विगसि भये भोर।।

त्रिया विरह दुख राजा सुनिहू। देखत सुनत सीस कर धुनिहू।।
काम कंदलहि धीरज दीन्हा। राजा जीव कटक पर कीन्हाँ।।
सखी सकल मिलि देई असीसा। चिरंजीव राजा जुग बीसा।।
तुरिय सिंगारि भये असवारा। आये कटक न लागी बारा।।
सिंघासन पर बैठे जाई। लोक सभा सब लई बुलाई।।

विरह कथा राजा कहै, निरखत बुधिजन लोग।
सुनत सकल सब थकित भे, प्रगट्यो बिरह वियोग।।

राजा कहै सुनो सब लोई। यह जग ऐसो और न होई।।
इहि की प्रीति इही जग जानी। जग मैं जुग जुग चलै कहानी।।
कलि मैं अमर भयो यह नेहा। बिरह की अग्नि देहें जिय देहा।।
पुनि राजा मंत्री सो कहई। सो कछु कहौं कथा निरवहई।।
काम सैनि पहें पठ्यो वसीठा। बुधिजन चतुर सभा महा डीठा।।

उत्तम बंस स्वरूप, गुनन बुद्धि परवीन।
वरि धरि बंजन चतुर सो, पठ्यो दै कर पान।।

दूत-खंड

येहिलैं राजा पात जनाई। कामकंदला माँगि पठाई।।
जो कछु माँगै दर्वि सु देऊँ। नातर जुद्ध जीति कर लेऊँ।।
रघुवंसी इकु श्री पति नाऊँ। पठ्यो काम सैनि कै ठाऊँ।।
चतुर दूत श्री पति चलि गयऊ। राजा द्वार सु ठाढ़ो भयऊ।।

दूत सुनत आगे भएँ, लेउ वेगि हँकारि।
आदर सो तिहि लैन को, उठि धाये जन चारि।।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आयौ सभा बैठि तिहि ठाऊँ। राजा कीन्हौ आदर भाऊं ॥
राजा दूतहि मुखै लगायौ। कहौ बचन तुम कौन पठायौ॥
बोल्यो दूत सुनौ बलवीरा। हौं पठयौ नृप बिक्रम धीरा॥
सकबंधी बल विक्रम राई। सो तुम देस पहुँच्यौ आई॥
माँगत देउ कंदलानारी। विप्र काज आयौ बुधि भारी॥

माधौनल के कारनै, नृप आयौ इहि देस।
कामकंदला विप्र को, माँगे देउ नरेस॥

काम सैनि राजा तब कहई। रिस करि रूखे बचन न सहई॥
निठुर बचन कस कहै बसीठा। बोलैं और सभा की दीठा॥
जो तुम कामकंदला देऊँ। सब दानिन मैं अपजस लेऊँ॥
देस देस के कहैं नरेसा। दीन्हौं दंड बचायौ देसा॥
जब लग स्वास जीउ भरि लेउँ। तब लग दंड न माँगे देउँ॥

बल करि आयौ राज अब, सूरबीर संग लाइ।
मद गयंद दल साजि कै, उठि रन मंडौ जाइ॥

कहै बसीठ राजा सुनि लीजै। येते लघु विग्रह नहिं कीजै॥
देस गुरू राजा चलि आयौ। जाको सीस नरेस नवायौ॥
अयौ विक्रमचंद नरेसा। जा कहँ कपै सुरपति सेसा॥

हय दल गज दल गवत न, आवै ही औसर विचारि॥
दुर्जन हू हँसि उठि मिलइ, बोलहि रोस निवारि॥

रानी कहै बसीठ सुनु बैना। भौंह चढ़ाइ रोस करि नैना॥
काम सैनि नै पठयो नेगी। कहौ राइ सौं आवै वेगी॥
लै संदेस बसीठ उठि चलई। गयौ जहाँ नृप विक्रम रहई॥
कहै बसीठ माँगे नहिं देई। क्रोधवंत मनु लै मनुलेई॥

कहै वसीठ राजा सुनहु, उठि रन मंडहुँ जाई।
सिंह रूप गाजैं सुभट, वे मृग चलैं पराइ॥

युद्ध-खंड

सुनि राजा तब बोलहि बैना। गयंद पैदल साजौ सैना॥
साजौ मेघबरन गज कारे। चुवहि गयंद घुमैं मतवारे॥
पर्वत से आगै दै चलिऊ। धरनी धँसी दिकपति सब हलेऊ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

घूमर घूलि आन रथ जोती। छूटे सिंह रूप जिव होती ।।
जबर जंग गोला जव भारे। अस्टघात साँचे सों ठारे।।

हयदल पयदल गजदल, जोतिहि जोति सुरंग।
सूरबीर वानै वनै, चली चूम चतुरंग।।

दुहूँ दिसि ते उमगे असवारा। लोह लपेटै अगम अपारा।।
कूदहिं बाजी नाना रंगा। नाचैं यों ज्यों डह डहहिं कुरंगा।।
उतिम जाति पछिम के ताजी। तिहि पर चढ़े सभट सब साजी।।
बाँधे विषकरि धनुक कर लीन्हें। लांकहि कूटि सीस पर लीहें।।
साँग सेल फरसा चमकारा। चमकत लोह अगिनि की झारा।।

रन मंडन खंडन दवन, आनंदै सब सूर।
चलेति चंचल चाउ करी, उडरै ठकाइर क्रूर।।

मेघ सवद जिमि बजैं निसाना। उठै अकूट अंबर घहराना।।
भरे झाँझ धुनि सुनै अडारू। सूर समूह अरु बाजहि मारू।।
मारू सब्द सुनहि जिमि बीरा। पुलकत रोम रोम अरु धीरा।।
इक दिसि तें रथ जोरि चलाये। इक दिसि गज ढाढ़े सत भाये।।
बीचहि लैकर पैदल भारा। तिहि पाछे आवै असवारा।।

सेल सोध कर रंग बिनु, पाये भंडन जूद।
बहुरि सुभट जे सुभट सौं, सिंह रूप ह्वै कूद।।

विच विक्रम हस्ती असवारा। रन अभरन सब पहिरै सारा।।
जामन चलत सेत सिर दंती। स्याम घटा मानहु वगपंती।।
घंटक धुनि दिगपति थरहरइ। कर तजारत इंद्रासन डरई।।
चहुँ दिसि वीर परवरिया चले। दोनौं जूझ इहूँ विधि भले।।
मुँह कूट सूरन के सीनै। गज सिपाह आँगे करि लीने।।

सिंहनि ऐसो पूत जनि, पर रन मँडहि जाइ।
कुंभ पिदारन गज दलन, अव रन मँडै जाइ।।

जुद्ध राग प्रगटी सुनि काना। कामावति पुर सुन्यौ निसाना।।
परी रोइ नगरी उकताइ। प्रजा पवन सब चले पराइ।।
कामसैनि राजा तब बोला। चहुँ दिसि देहु जुद्ध कहँ ढोला।।
ततखन सूर समिटि सब आये। करि सकूट चहूँ दिसि धाये।।
अब राजा आग्यां जौ देई। सब रन जाइ आगे ह्वै लैई।।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जौ जगपतिहूँ को सूनिय, मृग गन षुटि सब जाई।
सो हरजन की धाक सुनि, रहे न मंदिर माँहि॥

यके साज साजैं रजपूता। दुर्जन को लागैं ह्वै भूता॥
तूं वर चढ़े बाँधि कै वानै। मिलि औ चले राव सब रानै॥
काम सैनि राजा दल साजा। चलैं लरन मारू जब बाजा॥
चले बजाइ राव औ बानी। चढ़ी धौरहर देखति रानी॥

अचरज सूरमा देखि कै, वली अनंद करेइ।
दुहूँ बिधि माँग सिंदूर भरि, हाथ नारियर लेइ॥

इत तैं कामसैनि चढ़ि गयौ। राजा विक्रम सनमुख भयौ॥
एक खेत जब दो दल भये। एक एक सों सनमुख भयो॥
हिंसहिं तुरंग चिकारैं हाथी। सौभै हंक हंक मिलि साथी॥
दुहु दिसि युद्ध राज भल बाजा। कायर डरैं सूरमा गाजा॥
वान वाधिजु बिरद सुगावहिं। सुनि सुनि सुभट उमडि करि आवहिं॥

सुनि मारू कौ रागु, भुज फरकैं रन बीर के।
युद्ध जाइ मन लाइ, 'मारु' 'मारु' मुख उच्चरैं॥

अगिन बान छुटैं दुहुँ ओरा। चकित त्रिजुकित हाथी घोड़ा॥
धुनुषहि धनुष वीर जो नाहा। अटकैं पंच बान सौं काहा॥
चलै चक्र जो लै हथि नाला। पसरहिं धूम होइ अंधकाला॥
छिन इक धनुष बान सौं लरई। हमकत बाहिर षग मह परई।
भीर बान तें सहैं न पारैं। दुहुँ दिसि तुरी भीरन को मारैं॥

सूर गरजि काइर डरहिं, सुनि गज सिंह सदूर।
षड्ग खोल तै जानियै, कोइ कायर कोइ सूर॥

रावत पर रावत चढ़ि धाये। धानष पर धाष चढ़ि आये॥
पाइक सौं पाइक भये जोरा। लरत वार यौ मुष नहिं मोरा॥
गज सौं गज कीन्हे चौ दंता। चिकरैं कुंजर मैमत मंता॥
बाजै लोह उडै टंकारा। तापर फिरैं खड्ग की धारा॥
फूटैं फूट मुंड कटि जाहीं। बाजैं सार सार छन जाहीं॥

सेज खड्ग नेजै सहैं, खाँय खड्ग की मार।
सूर वीर पैते गनौ, सहैं लोह की मार॥

रावत सो रावत जो भिरइ। एकहि मारि एक पग धरई॥
हाँकै सूर सूर सौं भिरही। घायल भूमि एक गिरि परहीं॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मारै खड्ग उतरि गये मुंडा । फिररैं राति धरती पर रुंडा ॥
सूर जूझि धर तेजे परही । रंडौ मार मार उच्चरही ॥

कर न करैं विस्राम, घाव जे सन्मुख सहि सकहि ।
जे जूझैं संग्राम, ते अपछर ह्वै रहहि ।।

संकर मुंड वीनि करि लीन्हें । गूँथि गूँथि कर माला कीन्हें ॥
सन्मुख होइ जो देह पराना । तिन कहँ स्वर्ग ते आवैं विमाना ।।
संग निसंगनि करैं उबारा । दुहुँ दिसि चलैं रुचिर की धारा ॥
परहिं खड्ग टूटैं तरवारा । तब कर काढ़ी कमर कटारा ॥
सुघट वीर खोलि कैं लरहीं । दोनौ आनि भूमि महँ परहीं ॥

गमि मारैं सनमुख लरैं, जे मारहि तजि छोह ।
लोभी सूर लहरि मरैं, जो अपछर बरनै मोहि ।।

कपै सूर वीर ते भारी । गज कपै सहि सकैं कटारी ॥
लागै खड्ग गिरहिं ते दंता । टूटे सुंड रोवै मैमंता ॥
टूटै मुंड होइ मुख भंगा । पर्वत से जनु परे भुवंगा ॥
गन गयंद रन जहँ तहँ परे । जनु धरनी मह पर्वत डरे ॥
लरि लरि सकल थमित ह्वै दरैं । इक जूझैं रन कानि न करैं ॥

सिंहनि ऐसो पूत जनि, सिंह बिदारन जोग ।
घर सूरा रन भागना, जिन न हंसैये लोग ।।

बोलैं घाव 'मारू' उच्चरहीं । जहँ तहँ रकत के नारे ढरहीं ॥
फूटैं मुंड चलैं रन लोहुव । सुभटै सुभय फिरै जन कुहुरुव ॥
जोगिनी फिरैं भूतनी साना । बैठि करैं लोहुअ कर पाना ॥
भिरहिं धाइ लोथि लै जाहीं । लोहू पियैं मासु मिलि खाहीं ॥
जोवब जाल करालै करोलैं । लोथहि काटि सरो महि बोलैं ॥

जोगनि फोरैं खोपरी, जंबुक भखै जु मास ।
सूरन की गति देखि कै, सूरज होई उदास ॥

लोहू भरे छूटै सिर वारा । सूते सूर वीर बिकरारा ॥
सुन्यौ सरन उमड़े ते भलैं । दहनै चुर्वाहि रुधिर के चलैं ॥
चिहुरो हाथ आव नहिं मेरैं । गुन ज्यों सिह देखि डहि मरैं ।
कहूँ कहूँ गावै बरछा लैं कोऊ । कहूँ दौर रागन गुन दोऊ ॥

पर दल खंडहि लरि मरैं, खाय जु सन्मुख घाव ।
स्वामी संग ते ना तजैं, छत्री कुलहि सुभाव ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पहर चारि लौं विग्रह भयऊ। दुहुँ दिसि लोग जूझि सब गयऊ।।
सुभट सूर विक्रम के बाँचे। जूझे सुभट सूरमा साँचे।।
कामसैनि सब सैनि जुझाई। जूझि गिरे सब रावत राई।।
जूझे सुभट जे चढ़े विवाना। गेये सकल रवि के अस्थाना।।
स्वामि काज जे कटि कटि मरहीं। ते सब सूर अप्सरा बरहीं।।

जूझंता सूरा भलै, घाव जै सन्मुख खाँहि।
जीवत मैं मुख भागहीं, मरैंत सुरपुर जाँहि।।

माधव-कंदला मिलन खंड

कामसैनि राजा जो हारा। जाइ मिल्यो तजि के हथियारा।।
हाथ जोरि के सनमुख आयो। विक्रम आगे सीस नवायौ।।
सुनहुँ राज मैं दीन्ह्यौ देसा। सकबंधी पर हरौ कलेसा।।
चढ़तै थहराई सिर सेसा। विक्रम जा दिन करै प्रवेसा।।
कामसैनि जब मिल्यौ जु जाई। फिरि पछितानौ सैन जुझाई।।
मिलकरि राज नगर महँ चला। दीनी आनि कामकंदला।।
मिली कंदला बहु सुख पावा। राजा माधौनलहिं वुलावा।।

कलि महँ विरह वियोगिनी, भरि-भरि लेहि उसास।
सीसृ ठगौरी भोर भय, कीनौ सूर प्रकास।।

माधौनल औ कंदला मिलेउ। मिलि बिरही दोनौ दुख दलिऊ।।
मिलि कै अधिक सुक्ख तिनि पावा। दुउ संताप लै गंग बहावा।।
मिल्यौ सोइ भवत भावंती। राजा नल रानी दमयंती।।
मिले भरथरी अरु पिंगला। माधौनल औ कामकंदला।।
पूरन ससि जिमि दुखित चकोरा। कुमुदिन चक्रवाक जिमि मोरा।।
नित प्रति केलि करहिं सुख रहहीं। दिन दिन प्रीत अधिक मन करहीं।।

भावंता जा दिन मिलै, ता दिन होइ अनंद।
संपति हिऐं हुलास अति, कटि विरहा दुख फंद।।

माधोकाम कंदला मिलाई। पुनि राजा उज्जैनै जाई।।
संग विप्र माधौनल लीन्हाँ। जिहि कारन इतनौ जस कीन्हाँ।।
राजा नगर उज्जैनै गयऊ। तबही अंत कथा कर भयऊ।।
माधौ कामकंदला नारी। जानौ विधि रचि दई संवारी।।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपनौ सुख तजि दुख लहैं, पर दुख खंडन जाइ।
वार निबाहै एक सम, धनि सकबंधी राइ॥

कथा चौपही आलम कीन्हीं। पहिले कया स्रवन सुनि लीन्हीं॥
कहुँ-कहुँ बीच दोहरा परै। कहूँ आनि सोरठा धरैं॥
सुनत स्रवन यह कथा सुहाई। अति रसाल पंडित मन भाई॥
प्रीतिवंत ह्वै सुनै सो कोई। बाढ़ै प्रीति, हिएं सुख होई॥
कामी पुरिष रसिक जे सुनहीं। ते या कथा रैनि दिन सुनहीं॥

पंडित बुधिवंता गुनी, कविजन अच्छर टेक।
नाम नमित गुन उच्चरहि, कहि कहि कथा अनेक॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्यामसनेही

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

।। श्रीगणेशायनमः ।।

राम

लिखितं

स्यामसनेही

छपैछंदः

मुख मंडन पर लसै जोन्हि मंडित मयंक जनु
जटित जोति अरधंग गवरि मजित दर्पन तनु
धवल धूरि धरि अंग उच सोहित संकर वर
फन भूषित फ़नपति चारु बुधिज चंदन तरु
जिहि मिलत अंग आलम सुमति कीय जल थल उजल वरन
नव करन जोति नव अंग कह सुभव बिभूति भव उधरन

अथ भुजंग छंदः

नमो नाथ पुरे सबै सिधि दाता
जु गादी जगै अंत एकै विधाता
हीये नाम जो दीप रूपी प्रगासै
तम्म ग्यान तब मूढता गूढ नासै
सनेहि सुचितं जगै जिह वति
प्रकासै लहै उत अग्यान राती
सुधा नाग पै पुरि लै मूल भाषा
सदा सुध होइ पलटै बुधि साखा
नदी नाथ कितडू हृदे मै कलोलै

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ततो बुधि पछी चितै अर्थ बोलै
उकारं अकारंत पेखिय नैनं
निरंकार निर्धार उचार बैनं
नाथ निरंजन निर्विघ्न करनामै निःकाम
निस्तारन तारन तरन रचो निरंतर नाम

प्रथम धर्म यह जीय ठहराउ
आदि अनादि सिध गुन गाउ
कुछु कारन जिहवा जब बोलै
आदि सुध सुमिरै तब बोलै
सुमिरन स्याम सनेही राता
है अनेग रंग ऐक बिधाता
पतित उधारन बिरन बड़ाई
दीनबंध असरन सरनाई
निगम ग्यान जिहि अगम बखानै
निकट पीर दुखीया की जानै
कलह मेटि छिन में सुख देई
दुखीयहि राखि पीर ते लेई
गज से थुल चीटी ते हीने
प्रभु पोषत छिनु छिनु सुधि लीन्हे
एक दिस्ट सब पर सम कीन्ही
गजनहि थूल मीटी ते हीनी
ते अभेद कछु भेदु न पावै
आदि अंत को समो बतावै
अब तब ऐसे यहै पुकारौ
कत अखोज को खोज बिचारौ
यहौ बात मै कहौ अबूझा
नाम बिना मोहि और न सूझा
मै अबूझ का बूझौ : जोरौ बचन बनाइ
गए अबूझ अजान जिमि : सुर मुनि छ क बिराइ

सुभ अछर धरि अंव्रत बानी
कहौ कवित रसाल बखानी
किस्नभगत श्रोता जो होई

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कथा कहत सुख पावै सोई
दछिन देस बिजछन ठाउ
भीषमसेन राउ कर नाउ
नगर नाम कुंदनपुर कहही
धर्मी लोग धर्म सब रहही
बंस काज राजा अरु रानी
सिव सकती पूजा दोउ ठानी
पूजत गवरि बहुत दिन भए
पारबती पति परसन भए
सेवा भगति मानि सिव लीन्ही
चारि पुत्र एक कन्या दीन्ही
पहिले भयो पुत्र अवतारा
रूपसवंत कुवर उजियारा
रुकुम नाम तिन्ह पंडितन धरा
सुभ दिन राज जोग अवतारा
जनमौती गनि गनिक बिचारी
राजा बड़ो होइ अहंकारी
मंत्र काहू कर मनहि न आनै
अपमत काज करै सो जानै
बली होइ बड़ राजा : और दोष नहि कोइ
तीनि पुत्र एक कन्या : इहि पर आगे होइ

बरस चारि मह रुकुम जो भयो
पाटी लै पंडित घर गयो
रुकुम पढ़ै विद्या चटसारा
और पुत्र लीन्हो अवतारा
पढ़ो कुवर पंडित हुइ आयो
और पुत्र चटसार पढ़ायो
दूजे पढ़त तीसरो भयो
वहो कुवर गुर मंदिर गयो
चौथ पुत्र जनमत सुख दीन्हा
यहो पढ़ाइ सो पंडित कीन्हा
चारि पुत्र राजा कह दए
चारो पढ़ि बुध पंडित भए

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तिन मह बड़ो रुकुम अधकारी
पिता समान देखियत भारी
दूजे पुत्र रुमापथ नाउ
रुकुम केस जो तिसरे ठाउ
चौथो पुत्र रुकुम बली है
अब सुनि लीजहु कीरति बली है
अब सुनियौ रुकुमिनि औतरी
जैसे किस्न कथा बिस्तरी
पंचम गर्भ रानी जो रहा
गौरि प्रसाद वो निरबहा
सोई प्रसाद उन पाएउ : सिव सकती जो दीय
बालक पंच प्रगासे : चारि पुत्र एक धीय

राजमंदिल कन्या अवतरी
जानहु देवलोक ते परी
पूरन दुइज होन नाही पावै
साझ की रचन साथ ह्वौ आवै
जनमत चाद दुइज कर जीता
जनमी जानौ जनक घर सीता
बिमल चंद संपुट ते उतरी
जानहु सुर पूजन की पुतरी
उतिम लगन चंद सुभ वासा
जोतिष रुकुमिनि नाम प्रगासा
ऐसी लगन पुत्र जो होई
तीहूँ लोक बंदै सब कोई
यह कन्या लछन गुन आगरि
मातपिता कुल कैर उजागरि
और फूलन ते फूल जनायो
मात पिता सबहुन सुख पायो
जननि कस्ट जो सुत सन होई
कन्या जनम पीर पुनि सोई
जननि जनम सब आतम लेखहि
पुत्री पुत्र एक सम लेखहि
जिहि रेधिता ग्रह पुत्री होई

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नख सिख सकुच लाज भल सोई
जिमि पति पानि पिता की जिमि पूजा सत कीय
जिमि बंभन घर कपिला इमि रोपिता घर धीय

जिहि पंडित सब पुत्र पढ़ाए
ते बंभन घर राइ बुलाए
सुनहु पुरोहित पंडित राई
पुत्र पढ़त जो दछिना पाई
तिहि दछिना सन दसगुन दएउ
चरन धोइ सेवक हुइ रहेउ
ॐ अंकार सिधि अब लेहू
कछु विद्या रुक्मिनि का देहू
बिप्र पिता हुइ बेद पढ़ावहु
सारसुती कर मंत्र सुनावहु
कुल कल्यान देवपति पूजा
अवर न ग्रंथ पढ़ावहु दूजा
जिहि सत सील पतीव्रत होई
ब्रज पोथी लै आवहु सोई
कंठ पाठ जो अछर आवै
हस्त चरित्र जो लिखि दिखरावै
प्रात समै पंडित जन आवै
राजा ढिग कन्या बैठावै
अवर पुत्र कहं लेहु बुलाई
सब मिलि अछर कहै बुझाई
जोई जोई अछर मन मह आवै
जननी मंदिर सो जाइ सुनावै
अछरहु ते पदु पढ़ी : पदहु ते पूरन छंद
पत्र खंड पोथी पढ़ी : जो सुरगुर तें चंद

जो कुछ पढ़ी जनक की धीया
रामबधू दसरथ घर सीया
सोई विद्या सब बिप्र पढ़ाई
बोलत मधुर मंदिर झहराई
कोमल कंठ पाठ कै जोती

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुक सारिक जानो पढ़ै कपोती
तिहि सुर होइ मंदिर झनकारी
जनु सु पढ़ै कोकिला चटसारा
घर बन मोर सावकी कुहकी
बानी एक भई इन दुहकी
बक्र देव भाषा इक तोलै
सारद कहै बहिन कहि बोलै
लछिमी रूप मोहनी मोहै
सारसुती बहिनापो सोहै
उजियर मंदिर साझ अरु भोरा
चाद सुरज कर कवन निहोरा
जिहि मंदिर संतत उजियारे
अस न होइ दीपक सौ बारे
दीपक बेल बाती लग टूटी
बंस बेलि की बेल अटूटी
दीप बेलि वाती लगु चलै
बंस बेलि फूलै अरु फलै
सुख सनेह कुल बर्तिका दसरन जोति अनूप
दुहूँ पछ उजियर करै : बंस सुदीपक रूप

रुकुम कुवर अति उठो सुजाना
पंडित चतुर न पुनि गुनवाना
देस देस के राजकुमारा
सुनि आवहि राजा के बारा
बसन पलटि कै बोलहि भाई
रुकुम कुवर सो करै मिताई
निसु पेखन देखहि नट चेटक
दौस फिरहि बन करत अखेटक
निसि महं नित गीत धुनि भारी
दौस सूर रन धावहि धारी
रैनि जो गीत कबित सुनि लेही
दौस दान सोई लाखन देही
एकन सो हसि बैर बढ़ावै
एकन सो अति प्रीति मनावै

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बरबस काज रुकुम हठि करई
कानि पिता की मनहि न धरई
जोर पुत्र नाही पितहि सकाना
जौ गुरहीन रहै अग्याना
मात पिता अग्या मन धरई
सो संतत तीरथ कत करई
जो गुन गंगा गोमति परसे
सो फल मात पिता के दरसे
पिता प्राग कासी जननि : सेवत पावहि मोछ
अग्या मंजन दरस जल : छिनु छिनु खंडहि दोप

जो कछु पढ़ी सो लिखि पढ़ि जानी
दिन दिन रुकुमिनि होइ सयानी
नगर विप्र कन्या मिलि आवहि
सघन सुबिछ वेलि बहु बीचनि
दिनही मह खेलहि अखमीचनि
मदन संग मंगल करहि आवहि जुवतिन्ह टोल
निसु दिन करहि कौतोहल कुवरि तिहारे बोल

सुनी बात रुकुमिनि मन भाई
धाई माइ सौ जाइ जनाई
कहत कुवर अति आतुर भई
रानी वेगि कुवर पह गई
कर जोरे बिनती अनुसारै
बालक बुधि रुकुम हठ करै
सरवर तीर राइ की बारी
फूलहि बेलि बिर्छ तहा भारी
कहै तहाँ मठु देहु उठाई
गवरि राखि कै पूजहि जाई
सुनि बोले राजन के राजा
इति ते अवर न उतिम काजा
तिहि रवन बेगि बुलाए बेगुवा
बचन लिखहि ते लेखक लगुवा
कहै राउ अस देहु सवारी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लागहि फटिक कपूर पवारी
आस पास अस खाई खनावहु
सर वारी भीतर लै आवहु
मठु अति उच तार सम करहू
तापर कलस कनक के धरहू
ता उपर उची बजा बाधौ जो फहराइ
जौ जौ धजा निहारीयैं कुल कलेस मिटी जाइ

इहि विधि राजा आइसु दीन्हा
आठ पहर मह लागनि कीन्हा
उठो धवरहर अनवन भाती
राखिन कलस रूरज की क्रांती
भीतर भुंमि कनक की दीन्ही
मूरति तहाँ गौरि की कीन्ही
बिप्रन्ह मंत्र बेद के जापे
ब्रह्मा बिस्न कामरिपु थापे
भई थापना पूजा होई
कुवरि पूजि पूजैं सब कोई
प्रात सूर उगवन नाही पावैं
चेरिनि सहित कुवरि तहा आवैं
जब लग चुनहि फूल लै बारी
तब लग सखी होहि इक ठौरी
सखिन साथ तहा गवरि पुजावहि
कंचन दान पुजारी पावहि
गवरि पूजि सिर भुइ लै लावा
सब मागहि आपन मन भावा
एक सखी रुकुमिनि सौ कहै
पूजहु गवरि भगति मन रहै
तुम पुनि कछू कामना बिचारहु
मन को अंचर छोरि पसावहु
मनसा करि कछु मागहु करहु न छूठी सेव
पर सन भए न मागहु पुरवहि देवी देव

मै मागो नित माइ सुहागू

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पिता आरोग्य बीर सिर भागू
पिता तोर राजा बड़ आही
बड़े भाग विधि दीन्हे ताही
माइ सुहाग भाग उजियारा
जिहि प्रताप उजियर घर बारा
बड़े वंस घर जनम जु लेही
तिन कह भाग्य गर्भु मह देही
उचे जनम दुइज सरि पावै
दिन दिन अधिक कला दिखरावै
पुत्र के भाग पिता के संगा
धीय के भाग स्वामी के अंगा
मैं तुम कहौ सीख मन मानी
दिन दिन रुकुमिनि होहु सयानी
गवरि पूजि इतनो जनि खगहु
कवल नैन सुंदर वरु मागहु
हित पूजा देवी कै करहू
मन मह ध्यान किस्न बर धरहू
द्वारावती किस्न है राजा
जिनहि बरे पूजहि सब काजा
जौ केहु बिधि कंन्हर वरु पावौ
अवर जनम तुमही मनु लावै
इहि जग काज होइ सुभ तोरा
जनम जनम भल आनहु मोरा
बिंदाबन ससि स्याम घन जदुकुल मंडनु जीउ
देवी देहि प्रसंन हुइ : तौ पावहि वे पीउ

सुनी यह बात सखी जो कही.
मन मह समुझि कुवरि चुप रही
अवर दवस सग लीन्ह लिवाई
कालिह कहिसि सोई कहु समुझाई
कवन किस्न द्वारावति कहा
कन्हर नाम स्याम घन जहाँ
अवर के कहत लाज मुहि आई

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तोहि कहत यह कथा सुहाई
कहौ बात अब रुकुमिनि तोही
सुनि सुनि देहु हुकारी मोही
मथुरा भयो किस्न अवतारा
सुनी कथा जानैं संसारा
बासुदेव बसुदेव के ज्याए
जसुमति कोरा नंद खिलाए
गोपतीयन मिलि बहु सुख दीन्हा
बाल गुपाल चरित बहु कीन्हा
बक धेनुक दानव जिन मारे
दानौ केसी ब्रषभ सघारे
कंस चूर धरि धूरि मिलायो
उग्रसेन सिर तिलक चढ़ायो
माता पिता बंद ते छोरे
अग्या करी दुयौ कर जोरे
लछिमन से बलीभद्र है बसुदेव दसरथ रूप
रामचंद फिरि अवतरे सो वर बरहु अनूप

मेदिनी जात रसातल जानी
मीन सरीर धरौ जनु आनी
कूर्म कोल बहुरि जो भए
बावन हुइ बलि के ग्रह गए
मारन दैत्य भगति लगि आए
थंमहु ते नरसिंघ दिखाए
परसराम बहुरौ औतारा
जिन छत्री बिन मस्तिक करा
तिन छत्रिन्ह की आदि सघाती
पुनी भई रामचंद्र की बारी
रघुकुल राजा दसरथ भए
चारि पुत्र विधि तिन्ह कह दए
तिन मह बड़ो राम अधिकारो
सती सीया जिनकी वर नारी
पिता बचन बनवासी भए

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बिछुरत प्रान पिता के गए
सीयाहरन तहा रावन कीन्हा
रामचंद कह बहु दुख दीन्हा
बिरह उसास राम असि डारी
तिहि हनवंत लै लंका जारी
बानर कटक राम लै साथा
रावन के खाडे दस माथा
रावन मारि लंका दई सीता लई छुड़ाइ
लछिमन संग अजुध्या : राज बैठ तहा आइ

राम रमाइन पूरन कीन्हा
उन पुनि तेज किस्न कह दीन्हा
पूरनब्रंभ लीन्ह अवतारा
चहू दिसि भयो किस्न उजियारा
तिहू लोक सुर मुनि जसु गायो
सो बरु रुकुमिनि तोहि बतायो
सुंदर बदन मदन लखि लाजै
कवल नैन कुंडल छबि छाजै
गोपतीयन कह इंद्र दिखाए
जदुकुल कुवर सूर हुइ आए
इंद्रदिक मुकुटन की जोती
बदन क्रांति मिलत छबि होती
जिन नख चंद्रन की उजियारी
निकसी किरिनि गंग की धारी
ते नखचंद्र बताउ तोही
जिहि ते कुवर चकोरी होई
तुम कह अवर जोग नाही होई
कान्ह बरे पछिताव न होई
तू बिधि कंचन कली सवारी
वे मधुकुर माधो बनवारी
कुसुम के रंग कवल के पानी
रची मीलाइ बिरंचि बिनानी
कवलारूप कवल तन आही
ता कह पति कमलापति चाही

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कवल सानि कवला कली कोमल कमल सरूप
कनक कवल तुम रुकुमिनि कमला हुते अनूप

इहि बिधि कुवरि सखिन समुझाई
मूरति स्याम हीये मह आई
जानि बूझि उतरु नाही दीन्हा
स्याम सनेह हीये लखि लीन्हा
दिन दिन प्रीति काल जिमि चढ़ै
किस्न भगित बल हीयरा बढ़ै
मोहन मूरति हीये समाई
जोबन सिंध जनायो आई
दिन आगम रजनी जस टरै
बाल बहिक्रम क्रम क्रम छूटै
सरद आदि जिमि नीर थिराई
यौ मुरि चली मिलनि लरीकाई
जौ रग भरत रहत नाही गोई
कली पत्र ते बिगरी होई
साझ चंद उमगत जनु आवै
बालदसा छबि उमगि दिखावै
षोडस कला चंद्र जो पावै
इक इक षोडस दवस बढ़ावै
यौ षोडस जो कला बढ़ाई
कला जु षोडस कला चढ़ाई
रूप चढ़त मुखचंद पर चक्रित चंद बिचारि
कला कला षोडस कला देखो छोर सभारि

जोबन रूप दीप लीये आवै
बाल बहिक्रम तिमर नसावै
नैनन मूरति स्याम समाई
पुतरिन चढ़त स्यामता जाई
जिमि जिमि आवहि हीये त्रभंगी
तिमि तिमि होत चली भ्रू भ्रंगी
सिंघसरन रुकुमिनि दिनु जाई
पतरी देह लंकापत राई

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बोलैं धन जो होइ पिक बैनी
अंबुज मुख हित अंबुज नैनी
ग्रेह ग्रेह गज कथा चलावै
गजमोचन गुन गजगति पावैं
पीतबसन आवै उर सोई
केसरि कुसुम बर्न तन होई
कुंडल छबि मकराकृत आही
लोइन लहै मीन चपलाई
हीये स्याम घट घट रहै बानी
बावहि दसन दामिनि चमकाही
स्याम सनेह मिलनि लरिकाई
काटत तन दर्पन की नाई
तरुनाई के संग सुभावहि
अग अग चिहुन जो दमकि दिखावहि
आपु विचारे सोष कह जो पीय सुरति समाइ
मन भ्रंगी मूरति रचै : जिनहि दिखावै आइ

कछु भई गरुव कंठ की बानी
जननी बैस पलटि जिय जानी
चाद सुरज जो कोरी छपाई
कहिसि माइ कर कस तोरा भाई
भाई देखि आगन जनि डोलहि
पिता बचन सुनि उच न बोलहु
हकुम देखि उवरी दुरि जाहू
राजहि देखत खाज न खाहू
भोर उठहु तारन की छाही
चेरी सहस संग मिलि जाही
जौ मठ जात रुकुम सुनि पाइहि
तोहि बरजि पुनि हमहि रिसाहि
भलि सुधि अंक जाति न कोई
जा मह छाह न देखै कोई
सूधी दिस्टि भुमि सग जाही
खरग धार जिमि मारग आही
चादहु ते घूघट करि लेही

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ते कन्या कुल पहरो देही
बर घर पैठि न पर घर जाही
तिहि पति पानिप वोर निबाही
पानिप बूद जो बालि पर लै जु गए दिन राति
कठिन धर्म है देह सौ पुत्री धीय की जाति

माइ सीख रुकुमिनि सुनि लीन्ही
उतरु दीन्ह सकुच जीय कीन्ही
पढ़ी जो पंडित चतुर सयानी
जोबन जोति जगमगी जानी
सकुचत सौह पिता तन आवै
दिनहि लाज मह आपु समावै
पछिली रैनि प्रात की रहै
तिहि खन चेरी जगावन कहै
उठि तहा कुवरि मदा सठ जाई
मन मै सुमिरै कुवर कन्हाई
बर इंछ्या मनही मह धरै
दूनी भग्ति गौरि की करै
जगत जननि तुम गौरि गोसाइनि
सेवत चारि पदारथ दाइनि
गवरि गुसाइनि बिनवौ तोही
हरि पद कमल परसु दै मोही
मुहि कारन यह सकि जनावहु
कुंदनपुरहि क्रिस्न लै आवहु
इति ते लाज छोड़ि यह कहै
उन ते लाज दोउ जुग रहै
जाके नेह रंग मनु राता
तिहि मिलाउ मुहि वेगि बिधाता
नेह निकट जे सजना दरसन दूरि न काउ
गुन राता जाके हीये सो गुनवंत मिलाउ

गौरि भग्नि करि दरसन दीन्हा
सपने आइ सबै सुधि कीन्हा
एक राति सुख कुवरि सयानी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राम सीया की सुनै कहानी
सिया सजोग वियोग बिचारी
धाइ कहै सखि देहु हुंकारी
सुनत सुनत सुख निंद्रा आई
सपने देखे कुवरि सुहाई
जानहु मठ पूजा कह गई
बोली गौरि जानो परसन भई
सेवा करि सुख दीन्हो मोही
मागहु कुवरि सो आफो तोही
मोर पिता घर कछू न खागा
सपनेहु कुवरि किस्न वरु मागा
कह देवी तव अंतरजामी
वह तोरा पूरब जनम कर स्वामी
जब तुम हती जनक की बारी
तब वे हते राम अवतारी
तब जसरथ घर दीपक रामा
अब बसुदेव मदिर चंद्रमा
जा सो जनम बाधि दीया तोरा
तिहि पावहु मुहि कौन निहोरा
और मागु कछु रुकुमिनी : जो मन मागै तोहि
यहै बार है लेह सो देत बार नाही मोहि

जो देवी मुहि यह सुधि दीन्ही
मोरी जोति जग उपर कीन्ही
मागो यहै देव जो ढरै
मोरी कोखि काम अवतरै
इहै मागु रुकुमिनि वड़ भागी
उघरी आखि नीद गई जागी
हरबराइ उठि बैठु सभारी
कहै धाइ कस जागेहु बारी
कथा सुनत जो निद्रा आई
जागि परी जानो चौकि जगाई
धाइ माइ मैं चित मह लेखा
लागत नैन सपन अस देखा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सखि सिवकिनि सब दीन्ह उठाई
एक धाइ सो कहै सुनाई
जिहि लगि दिनहि पसारी बोली
सपने आइ गवरि सौ बोली
निहचे चेरी किस्न की कीन्ही
जनम जनम की सुधि मुहिं दीन्ही
तुम्हरे छीर यहै मत पाउ
तुम सौ जननी निजु न छिपाउ
तुम नित कहत किस्न की बाता
सुनि सुनि उनहि मोर मनु राता
जाकी भगति बालपन होई
पूरब जनम सज़ोगी सोई
अब यह गुपित न काहू कहहू
मन मह सुमिरि कुवरि चुपि रहहू
का भयो देव देह नर धारी
बर बिनान जनि करहु कुमारी
सपनेहु वर कन्या नाही भाषहि
बर के नाउ न बर तन ताकहि
जौ यह बात रुकुम सुनि लेई
मठु मेटैं तुहि खनि विषु देई
कन्या अरु दीपक इमि भाषहि
उचे ठाउ दुहुन कह राखहि
सपनेहु बर कन्या नाही देखहि
पावहि सुपन सुपन करि लेखा
कन्या मात पिता बस रहही
पानिग्रहन उतिम कुल करही
आपु ते उचो करत बड़ाई
सब कोई कन्या कुडवाई
कन्यारतन जासु घर आवै
कंचन जटित बहुत सुख पावै
पूजा मूरति अतुल मन कन्या कुलहि कुलीन
जो उचे पद दीजियै तिमि तिमि सोभा कीन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रात होत रुकुमिनि की धाई
पैठि राजमदिर मह आई
धाइ देखि कै राजा रानी
दंपत बोले अंब्रतबानी
भल हुव धाइ चाह तेहि आएहु
जानौ चाह मते की पाएहु
राजा धीय सब कै धिय आही
ताकर मंत्र लीन्ह कछु चाही
भाई बंध सब वेगि बुलावहु
लै कुल पूज मते बैठावहु
बड़े पूज गुर ग्यानी माने
बोले बैठे मते सयाने
जो यह काज नितहि करि आए
पूज पुरोहित ते बैठाए
एक बचन मिलि सोचि बिचारहु
उतिम टोल बोल नाही हारहु
जग मह जिहि सरवर न कीजै
तिहि बर घर यह कन्या दीजै
जो मत सकल जगत मथि आई
कान्ह बिना मन अनत न जाई
राजहु यहै मंत्र वहरायो
जानि बूझि तिन किस्न बतायो

जा मग रज अंजनन धन पग पूजिय निज गर्व
सेति सुसजन पाईयहि दीन्हसु सर्वस सर्व

मागहु दूब कनक कै थारी
राखहु नरियर तिलक सुपारी
सुदिन घरी गनि इनहि बुलावहु
नगर द्वारिका तिलक पठावहु
नृपति अखेटक ते गृह आवा
यह सुनि सब्र सो रिसन रिसावा
ग्वाल भेष जिन गाइ चराई
तिनहि हमहि नाही होइ सगाई
जिन बौराइ गोपत्रीय चोरी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रातिं गयो गोरस की चोरी
लाज न कस न कुवाधस लेहू
सेऍं घर बर कन्या देहू
रस लंपट बल छल जिन कीन्हे
सोभन कन्या तिहि घर दीन्हे
कुल कुलीन कन्या वड गोती
जस नवीन सीप कर मोती
तिहि मानिक सौ जरियँ सोई
अनत जराउ भयो नाही होई
जौ कठोर अलि बंसहि फोरैं
कली न तिहि सेती मुख जोरैं
कलिका परी मल झंपली जहि मधु फुर मधुरात
तहा रती क चिंत सुनि जे राते बहु पात

यह सुनि रुकुमि निरादर कीन्हा
बेगिहि उठहु सबै पति लीन्हें
संचहि दोष मोष नाही पावहि
पर पुत्री जे गारि चढ़ावहि
पर पुत्री आपन करि जानहु
सो यह बात समुझि मुख आनहि
धाइ माइ डारिसि झिझकारे
लोग मदिर ते सबै निकारे
जिहि ठाहर मनु मानै मोरा
तिहि घर बोलि करौ गठि जोरा
अपने मंत्र मंत्र मिलि करई
साध सीख नाही मन मह धरई
नगर चदेरी बसै बिसाला
मालव देस राइ ससिपाला
जुरासिध सौ उनमति पोषी
दानव बंस किस्न कर दोषी
ऐसी कुमति रुकुम मन आई
यह ससिपाल सौ करौ सगाई
यह मन धरि ससिपाल हकारे
जुरासिध दमदम दोष हमारे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपमत कुवर न मानो गोतै
तिहि बर रोपै सलिता सोकै
कुलहि नीदि जो अगुसरहि लीयो मरजादा जहि
नदी जो सागर कौ चली ते कौ सरहि समाहि

यह मत कुवर रुकुम मन आयो
अपनो अग सग सबै बुलायो
मागहु तिलक सगुन धरि बेगी
बोले बर विवाह के नेगी
पंडित बुध जोइसी हकारे
नखत देखि तिन्ह लगन बिचारे
जो दिन गनै बनै नाही सोई
नर कन्यहि अनबन अति होई
अनभल कोउ कहै न पारै
रुकुम डरन सब भलो पुकारै
यह लै मूढ राह घर डोरै
... ...
मंगल भवन चंद सुभ वासा
पूरन भयो राज किमि त्रासा
मन सोहहि नृप मुकट पर ससि खंडित सिव सीस
बिन कर अर राह घर : हनहि न सोभा दीस

सुनि यह बात राउ औ रानी
दुख सताप तै रैनि बिहानी
कहै न कोई रुकुमहि समुझावै
हमरे कुलहि कलंक लगावै
सोई बरु पहिल नाउ जो लीजै
अपजस होइ अनत जो दीजै
जादौपति राजन के राजा
उनते रहै दुहू जुग लाजा
दैतवंस भल कहै न कोई
उत सनबंध लाज मुहि होई
सुनै रुकुम काहू की बाता
राजमद जोबन मदमाता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बात कहन को जो अनुसारै
जो बोलहु तो खर्ग सभारै
सबहि सधारि आपु कह मारै
पुनरपि ऐसी बात बिचारै
नगर पुरोहित पंडित आए
राजहि रानी जाइ सुनाए
मंथ जोग अगम अस कहई
यह कारज नाही वोर निबहई
जो यह काज होत सुनि पावहु
मोर कुटुव सब भार झुकावहु
सूर होइ जो सीत रस तपन होइ ब्रजराज
समुद थाह पावन चले तो न होइ यह काज

तिलक साजि कै लगन धराई
बिप्रन साथ बराइत बुलाई
मृग जो केहरि सो पदु रोपै
पाहन रेख नीर जो लोपै
सुर नर मुनि रिषि अगम जानै
हसहि ते अवर बिलग जिय मानै
टीका लगन लागि दई भले
लै ब्रज बेगि चदेरी चले
पाती मह लिखि बात जनाई
संग सेना बहुत बुलाई
चले बेगि जीय आनद माने
नगर चदेरी ते नियराए
मादरतार बजावत आए
आगेहि लांग चाह लै धाए
सुनि राजा आनंदित भारी
सिंघासन अरु सभा सवारी
खन बाहिर खन भीतर आवै
भीतर भुंमि सव मदिर बनावै
आनद उमगि अग न समाई
अन अन बसन सुपहिरहि आई
कनक मुकट निगन उर माला

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राजसिगार सजे ससिपाला
तप कीजहि निधि दीजियहि मठ सेवहि जिहि काज
सेति ते सजना पाइयहि सपन कि सौतिषु आज

सिंघासन पर बैठेउ आई
राज बरोकी लीये बुलाई
आइ बरोकिन टीका दीन्हा
लगन गाठि कागद करि दीन्हा
मंगल गीत बधाई बाजहि
आनद बसन देखि सुर साजहि
पाटंबर जो जिहि मन भाए
अपने लोग सबै पहिराए
दैत बक्र कह निवति पठाए
कटक सहित सो बैगि बुलाए
जुरासिंध कह चंदन पाना
पठइन संग पंडित परधाना
पत्री लिखिन बेगि पगु धारहु
राज आइ मोरा काज सवारहु
यह सुनि जुरासिंध सुखु पायो
संन्या सहित देस मह आयो
सब राजन कह पत्र पठायो
दलपति सब देसन के आए
नगर चदेरी आनद होई
घर घर गीत गावै सब कोई
बनी बरात सबन दल साजा
मेघनाद जिमि बाजन बाजा
गज साजे हय पाषरे सिमिटे सबै भुवार
राजा भए बराइती दूलह भये ससिपाल

मौर बाधि सिर छत्र फिराइन्ह
कुंदनपुरहि बरात चलाइन्ह
सिव ब्रह्मा सुर सुनि मुसकाने
मिथ्या कौतिक देखि भुलाने
चहू दिसि लोग बरात बखाने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करम अंकगति कोउ न जानै
चलत बजावत मंगल गाए
कुंदिनपुरहि आइ नियराए
उतरे नदी तीर अबराई
पानी पान की कावरि धाई
फल पकवान बहुत पहुनाई
डेरे डेरे रुकुम पठाई
डेरन राग रंग धुनि होई
निर्त करै आनद बहु होई
कहू बादहि बिधि पंडित ग्यानी
कहू कवित्त कहू कथा कहानी
कहू पेषन कहू चेटक नाचहि
कहू पुरान पौरानिक बाचहि
कहू चौदंत कीजियत दंती
कहू फेरियहि तुरंगम पंती
कहू मलार राग धुनि करही
रामतौर कहू चौपरि खेलहि
कहूँ भिरहि पाइक भल भलग भयानक होइ
कहूँ पंडित बानी सरस पढ़त सुनै सब कोइ

रबिनंदिनि रुकुमिनि पिक बैनी
चढ़ी मंदिल पर नीरज नैनी
गीत नाद धुनि सुनसि अपारा
दुदभी सबद झाझ झनकारा
पूछै कुवर सखी कहु चाहा
बहु बिधि बाजन बाजहि काहा
सोहिल सबद कांन मइ आवहि
मंगल गीत व्याह के गावहि
बाहिर कोट कुलाहल होई
भीतर सुभ गावहि सब कोई
कहै सखी सुनु कुवरि कुमारी
बात कहत जिनि लागै गारी
देवी देव न पलटै कोई

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बिधना कर्म लिखा सो होई
जौ जौ सुनियत बाजन बाजन
हम तन कोटि परहि जनु ताजन
गावहि मंगल लोग बिराने
हम रोवहि इहि पीर पिराने
मात पिता तुहि किस्नहि दीन्हा
बरबस रुकुम खर्ग कर लीन्हा
जदुकुल मौर वंचि गुन गारसि
मौर वाधि ससिपाल हकारसि
अब न सोच झंखहु कुवरि जो बिधि लीखा सो होय
स्याम भगति जनि छोड़हु सुगम सयानप सोय

हरि पूरन धीरज धरि बोले
दिन दुस्र बीच रैनि है जोले
गुपति प्रगट सब ठाहर अँहै
छिन मह करै कीन्ह जो चहै
सुनत कुवरि रुकुमिनि सुकुमारी
गइ मुरझाइ ब्रज जनु मारी
समुझि कहौ अब देहहि छाडौ
जिभ्यामूल दसन सो खांडौ
लै घनसार घोरि अब पीयउ
कुलहि लाज जो अब छिनु जियउ
पेम झंप कारन ज़ीउ देउ
अब इहि मंदिर सौ धसि लेउ
यह परिहस कैसे करि जीजै
हँस ठौर तहाँ काग रनीजै
काग कु चील कु चीलहि पाई
तुलसी सालिगरामहि चढ़ाई
कुमद चंद्रमा सौ मुसकाई
जो न बिगास घाम मुरझाई
हरित पीत भई स्याम सनेही
ता मह रही मीन हुइ दही
तलफै तनक नीर के डारे
जीयै न नेह नीर ते न्यारे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पिउ पिउ प्रान अधार है धार स्वात की येक
चात्रिग और न जिय धरहि साइर सरित अनेक

सखी धाइ सुनि कै सब धाई
रुकुमिनि कुवरि मरै बरियाई
धाइ धाइ अंकम भरि लीन्ही
कान लागि जीवन सिख दीन्ही
पहिले एक मंत्र सुनि लेहू
जौ न होइ तौ प्राननि देहू
जौ तुम प्रान देहु जम हाथा
हम सब मरहि तुम्हारे साथा
तोहि मरत तोरी जननी मरै
मै मरी जाउ मरत को डरै
जौ लग द्वार न आवै मीचा
सोरह पहर आजु है बीचा
आठ पहर अस धावन धावै
लै द्वारिका चाह पहुचावै
दसए पहर चाह जौ पावहि
वे प्रभु एक छिनक मह आवहि
अपने हाथ लिखहु पचि पाती
बाभन हाथ पठावहु राती
गौरि मदिर दिन दिनहि पुजारी
मै लै आवौ जाइ हकारी
गौरि बचन हिरदे ठहरावहु
लै कागद द्रज हाथ पठावहु
सुधि आए सुधि होइ सब पावहि पूरब नाम
दामावती कौ नल मिलै सीता कौ श्रीराम

यह मत कहि जो धाइ सुनायो
कछु धीरज रुकुमिनि कह आयो
धाइ माइ जो यह मत ठानै
कै तै कै मै ब्राभन जानै
पीतबरन कागद करि हाथा
पत्री लिखै पठै जदुनाथ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मसि काजर लीन्ही कजरौटी
लिखै लिपति अति मूढ हथौटी
श्रीसरवग्य सर्व उपिमाजुत
वासुदेव स्वामी वसुदेव सुत
सुंदर स्याम कवल दल लोचन
तारन तरन अहल्या मोचन
दीनबंधु जदुपति सति भाषी
सत प्रतीति सीता की राखी
तीनि लोक तिहु डग मह आए
भग्ति हेत ते खंभ समाए
असरन सरन समुझ करुनाई
भग्तवछल भगवान गुसाई
गुनमाला भूषन सब ग्रीवनि
भग्तरूप भगतन्ह की जीवनि
संत रूप तुम दैत संघारन
जन की संकट सूल निवारन
संकट समै सुरति जिन कीन्ही
जिन गज मोचि अभैता दीन्ही
जदपि गूढ़ ग्यान मन आवहु
वेगिहि चाह दीन की पावहु
दुलभ बेद विचार सौ मुनि मनसा ते दूरि
संकट खंडन दीन की निकट रहे भरि पूरि

इति लिखितं दासन की दासी
दीन छीन कुंटनिपुरवासी
इहि छिन इहा कुसल नाही आही
छिनु छिनु कुसल तुम्हारी चाही
नेम अनेम करै हठि कोई
नेमहि कुसल कहाँ ते होई
इहा कुसल मोहन मुख दरसे
चंद जोति पंकज पद परसे
दुलभ भरन कवल किमि पाउ
गवरि गनेस महेस मनाउ
जे पद सुर नर मुरि नाही पावहि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पदुम पत्र ते ध्यान लगावहि
अति कोमल कली पर दीन्हे
फन कोमल कमलन सम कीन्हे
तिन चरनन लगि बहु दुख साध्यो
तप जप नेम गवरि अवराध्यो
पूजत गवरि बहुत दिन भए
देवी द्वार बहुत व्रत कीन्हे
जागे भाग देव मुहि दीन्हे
जा दिन गौरि दीन्हि मुहि आसा
प्रान रहे तुम पाइ न पासा
डारी मन की डोरि गाढ़े गहियहु सजना
छोड़हु प्रीति न तोरि तन जिमि गुडीया नीर गौ

माइ बाप मुहि तुम कह दीन्हा
रुकुम छड़ाइ आन व्रत लीन्हा
स्याम नाम सुनि औगुन लाइसि
गारी लागि ससिपाल बुलाइसि
तुम प्रभु दूरि समुद ढिग छाए
वैरी काल निकट मो आए
दुहु कारन मैं मरन सुहेला
स्याम सजीवन दरस दुहेला
बिसहर काल कंठ ढिग आयो
गाररू सागर तीर बतायो
द्रज मुख बचन श्रवन सुनि लेहू
तब प्रानन अस उत्तर देहू
कंठ प्रान रसना लौ नामहि
पथिक बसेर करैं विश्रामहि
धाइ धाइ अधरन ठहराही
दिज फिरि आवत लौ फिरि जाई
कैसे प्रान रहै घटता के
भए पंख कांपत साखा के
छिनही छिन रसना लौ लावहि
स्वासहि डोरे आवहि जाही
सुमिरन लग अब लग ठहराने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आवन रहहि अतिहि अकुलाने
सुमिरन पाछे दै चले प्रत जात नाही वार
अधरन धरि धरि राखियहि दै दै औधीय धार

रोकत सास बिरह की ताती
लोइन छूटि लिखी मैं पाती
वहै छूट असुवन ते पाई
कै छूटहि जौ मिलै कन्हाई
अहो घनस्याम उनै घन आवहु
दुमन दोष दुख दाह बिहावहु
सरन सरन कहि करहि पुकारा
आवहु बेगि न लावहु बारा
सिंघसरन जो निभै जाइहि
सो कत स्यारहि देखि डराइहि
अंव्रत नाम रसहि रस पीवहि
ते बिष बोलन परसे जीवहि
गवरि प्रसाद न मिथ्या मानौ
हरि ऐहहि निहचे यह जानौ
ऐसे गज को कौन छुड़ावै
ताते मोहि भरोसो आवै
लव लालसा चरन परसन की
छिनु छिनु बढ़ी आस दरसन की
जीवन मरन सब तुमहि सुनायो
अब यह समौ नाथ सोइ आयो
जन संकट इंद्री बर लोचन
सुमिरत सावधान गजमोचन
कर परसत मसि औटत ताए
अछर सुलगि स्याम हुइ गए
हरि प्रति बैन बियोग बस लिखे बियोगी बाग
आलम मसि अरु कलम नहि ताते अछर स्याम

सब दुख आपन लिखै न पारौ
कैसे बिरह वियोग पसारौ
अलप लिखो पत्री है सोई

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बहुत लिखौ तौ पोथी होई
बहुत लिखै को समौ न पायो
तिहि ते यह दूख अलप जनायो
यह दुख अलप बहुत करि जानहु
अंक अंक पोथी करि जानहु
दिज आवत लौ बिनती कीन्ही
थोरी अवधि जीव की दीन्ही
है प्रस्थान नाथ छिन एकहि
प्रनवौ प्राननाथ निहकामहि
निकसि प्रान रसना ठहराने
मनहु प्रान पोषन को आने
जिभ्या आनि प्रान हुइ रहे
तिहि अछर पत्री मह कहे
जिभ्या थकित छीन नाही बोली
जपत नाम थकि रही अडोली
रसना रटत नाम थकि गई
हस्त जीभ तब लेखनी भई
गुपति अगिनि अगुरिन संचरी
तिहि सताप लेखनी भई कारी
भसम भई कुइला भई तपितपि अग की क्षार
बरि बरि बुझहि सुबरिसौ लेखनि लोह लुहार

पत्री लिखि जो फेरि मैं पढ़ी
बहुत प्रीति पत्री सों बढ़ी
सखी रूप हुइ घर हरि कीन्ही
हरि आगम की आसा कीन्ही
पाती देखत रथहि मगावहु
बिप्र बचन सुनि बार न लावहु
पहिले गवरि मंदिल पगु धारहु
सरन राखि तौ सत्रु संघारहु
चरन ध्यान मैं सरन तुम्हारी
माया रहित बिमल बनवारी
राखहु लाज बार इहि आई
लाज छाड़ि मैं करौ ढिठाई

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तिहि ढीठो कर बिलगु न मानहु
तुम अंतरज़ामी सब जानहु
जौ पतिब्रत आपन ब्रत राखै
ता कह अनभल कोउ न भाषै
जौ मालति मधुकर चित धरै
नीच कीट कैसे सग करै
समौ सकेत दरस कब पावौ
तब लग पल पल बरषि बितावौ
हिय पावक आखिन मह पानी
निसु दिन औटि औटि ठहरानी
पल थंभे न असुवन पलक जल उमडे अकुलाइ
इहि दुख दिन लोइन दुखी सुपंथ न पिख्यो जाइ

लिखि पढ़ि पत्री सुध लपेटी
नैनन लाइ कंठ सो भेटी
पाट गाठि लै आगे धरी
हाथ जोरि कै बिनती करी
हो पुत्री तुम देव गुसाइनि
विद्याधर जग कह सुखदाइनि
तुम्हरे कुल बोलन साच सुभाउ
मिथ्या बोलि न जानहु काउ
दुख सुख अरु सब ते तुम पाई
तू लगि अलग ब्रह्म की नाई
सत परतीति जगत पतियाइन्ह
दुह जुग चहु जुग तोर पराइन्ह
तुम्ह कर सौ परसौ हरि पाइन्ह
तुमहि माइ तुम गौरि गुसाइनि
तुम सौ चतुर चित्र जो जैहै
चाह चत्रभुज को लै अैहै
कवल नैन मुख देखहु जाई
मोरि बिपति सब कहेहु सुनाई
हीये पैठि मोरा प्रान पसारेहु
रोम रोम बिरहा संचारेहु
सोइ बोलहु जो हीय धरि लेहू

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बिछुरे आस मिलन की देहू
आनद कथा पुकारि सुनाएहु
मंद बचन तिहि समै छपाएहु
सत बोलहि पट ठोठ हुइ परकारज लहि जाहि
ते प्रतीति करि पूजियहि जग पत्री पतियाहि
सब दुख आपन लिखै न पारौ
सवैया मुखपाठ सवैया सदेसा

गहरु न लावौ तियजन को सताप जानि संकटहरण जानुकी ले
जानि पाए हौ।
आलम सरूप स्याम करुना के सिंध स्वामी,
जैसे गुन ताराहू अहल्या नीके गए हौ।
मेरी यौ बिपति सुनि प्यारे प्राननाथ पीउ,
ऐसे पाउ धारौ जैसे हाथी काजे धाए हौ।
पाती दीजौ पंडित संदेसो मुख ऐसौ कहि,
आवन की अस बढ़ी मेरे जान आए हौ।

अरे दिजदेव दासि मैं तोरी
हरिसन कहेहु बिपति सब मोरी
पंडित पवनपूत हुइ धावहु
सीया काज रामहि लै आवहु
जो यह काज कीन्ह तुम्ह मोरा
दारिद दुख न राखौ तोरा
दै असीस सदुरबल द्रज बोला
अस धावो जस पवनहि डोला
माइ मोरि तुम चिंत न करहू
हरि आए आनद जिय धरहू
सात पहर अस धावन धाउ
प्रात होत पाती पहुचाउ
लै पत्री फुनि पंडित चला
सगुन कनसुवा पाइसि भला
ब्रह्मतेज अस आएहु धाई
जोजन दसह साझ हुइ आई
पहुचो आइ सरोवर तीरा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जप संध्या करि परसो नीरा
चलो बेगि तहा दरसन आसा
साथ चंद्रमा कीन्हा प्रगासा
चंद जोति उजियर जग भयो
तिहि खन बिप्र उताइल गयो
दरस आस आनद जिय मानिसि
बिषम पंथ खंडित नाही जानसि
चौथ जाम जामिनि को आवै
द्वारावती नगर नियरायो
देखिसि पुर पर चंद्रमा आइ रहो ठहराइ
मानहु कीरति छत्र पर उपर धरो बनाइ

पूरब आगम भोर जनायो
चलत चंद पछिम दिसि आयो
सुधा सोत घर घर पर बहो
द्वारावती उपर थकि रहो
घर बाहिर माह भेदु न पायो
जानु झरोखन भीतर आयो
मंदिर धुजनि किरनि निरझानी
अटकी डोरि गुडिय ठहरानी
उचे भवन किस्न के दरसे
नित उठि धजा पताखा परसे
झूमि झूमि मस्तिक तहा लावै
चिहुन भए सोई स्याम दिखावै
अमिय धार करि मदिल पखारे
चुइ चुइ परहि बूद जिमि तारे
किरनि सकेलि सीस भरि नाए
समुद पिता के मंदिर गए
पुत्र देखि आनंदो भारी
लरहि लोल जनु भुजा पसारी
इहि विधि चंद सिंध घर गएउ
उहि दिसि उदौ सूर कर भएउ
जाग्यो जगत विहंगम बोले
सकुची कुमद कमलदल खोले

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गौ सुत पर आधीन जन बनिक बियोगी भोर
संजोगी तीनौ भए चक्र पहरुवा चोर

उदित भान भयो भिनुसारा
बिप्र करत पटन पैसारा
जौ सुमेरि तौ किरनै ठरी
धाइ कनक कलसन पर ठरी
एक सूरज जब दरसन दीन्हा
जगमग कलस कोटि रबि कीन्हा
घर घर पर कामिनि जुनु कौंधै
चितवत चक्रित बिप्र चकचौंधै
पैठो पवरि नगर की आयो
देखि पवरि द्विज रहो लुभायो
पवरि उतंग कनक की ठाढ़ी
जनहु सुमेर कोरि कै काढ़ी
फटिक पराग कोट चहू फेरा
बिद्रुम जटित कगूरन घेरा
गठ उतंग अलका लग दरसत
अथवत नगर कगूरन परसत
तिहि ते मदिर कनक के ऊंचे
उड़त पंखी नाही बेगि पहुँचे
हरित काच की भुंमि सवारी
थंभ कपूर के भीति पवारी
बिबि जोजन लग हाट सवारे
वनिजहि रतन जहा बनिजारे
मनि मनिका पट पाट बहु अरु मृगमद के ढेर
बैठे वनिजहिं साह जह धनपति सबै कुबेर

राइ रंक दिज जानि न जाई
किस्न भवन दिज पूछो जाई
अहो दिज पंथ भूल तू नाही
सूर कि पूछै दुपहर माही
जो ससि सहस कोस ते सूझै
कहियत मूढ निकट नाही बूझै.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ऊंचे मंदिर कलस अभासा
तुम जानहु रवि कोटि प्रगासा
आगे जाइ देखु धौ चाही
किस्न भवन अमरावति आही
चलि आयो तहँ बिप्र हुलासा
किस्न मँदिर देखिसि कबिलासा
नगर जटित सब पौरि पगारा
मनि मानिक के जटित किवारा
जहँ लग दीठ ऊँचगति धाई
मँदिर सहित उठि मंद समाई
जे नग नखत कलस ढिग भए
सूर कसौटी कसि कसि लिए
त्रभुवन पर त्रभुवन मन मोहै
ऊपर कलस छत्र धुज सोहै
जगमगाहिं मानिक उजियारे
दीपहि दीप रैनि जनु तारे
छजा चौखडी छाति पर मनिगन जटे इकत्र
जनौं बिराम कौ जानि करि बैठहि उतरि न छत्र

देखिसि पवरि मंदिर की आई
मनिगन पवरि मँदिर अगनाई
निसु दिन अस्तुति करहिं पुकारे
सुर नर मुनिगन गंध्रप द्वारे
नवौ निद्धि जहँ चँवर ढुरावा
प्रात बेद बंदी जो बुलावा
सेवहि जिमि सेवक अरु दासी
आठौ सिद्धि सिद्धि चौरासी
रतन किवार सुरज की क्राती
चौखट लीलमनिन की पाती
देखि द्वार दिज आयो चाइन्ह
जहँ जगु चलै सीस कै पाइन्ह
भुली भूप मुकटन की अनी
ता मह फेरि कनक भूमि बनी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुकट रतन छाजा करि छाजत
नगर कुंदन जनु जरी बिराजत
राजा रिधि को पारु न पायो
भीर देखि ब्राभन बिसमायो
सुरपति जहँ प्रवेस न पावहि
मोरि चाहत तहँ को पहुँचावहि
चरन कमल दरसन की आसा
रोम रोम मोरे प्रेम प्रगासा
अंतरजामी जगत गुर दीनबंधु सुखधाम
मुहि प्रतीति है प्रेम सौ दरसन देखिहौ स्याम

राजन बिनति करत न बनाई
मोसे दीन छीन को गनाई
ब्रह्मादिक कह दुलभ जहाँ
मुहि को लै पहुचावै तहाँ
कनक पानि कर दंड सुधारे
द्वारन द्वारपाल जिहि द्वारे
पाती लै पंडित तहँ आयो
द्वारपाल सौ सैन जनायो
महाराज कह सुधि करु भाई
कुंदनपुर ते पत्री आई
दौरि पवरिया जाइ जनायो
कुंदनपुर ते ब्राभन आयो
रिद्धि सिद्धि दोउ चँवर ढुरावहि
कमला चरनकमल सहरावहि
कुंदिनपुर जब कहिस पुकारी
जागि परे उठि बैठि मुरारी
पाती भीतर बेगि बुलाई
बाचन लगे छोरि जदुराई
जौ जौ आखर मन मह आवहि
रोम पुलकि तन प्रेम जनावहि
नौतन नेह पुरातन भएउ
चीठी पढ़त चीरि मनु गएउ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बिरह ब्याप थकि रहे अबोले
पाती पढ़त पात जिमि डोले
न्रपति एक पढि वार लपेटहि
खिन देखहि खिन हिय सौ भेटहि
बिरह बुझानी सुरति जल सीचत उठी सुलागि
प्रीति पुरानी प्रज्वली जौ चूने की आगि

बिरह पढ़ै बिछुरे की पाती
पुलकि प्रसेद भीजि गई छाती
पढ़ि पढ़ि बिरह बीज हिय बोइसि
लिखि लोइन लोहू भरि रोइसि
सुमिरत सरकि लागि जनु भाला
कसकै काड करेजे साला
आँखिन देखे आखर जेते
हिये पैडि पंजर जिन्हि रेते
सिथल हस्त धीरज नहि धरई
पत्री छूटि छूटि भुइ परई
व्याकुल जसि बिसहर बिस चढ़ई
छाती जरै को पाती पढ़ई
हिय तरकत नैनन्ह जल सरवत
कागद भौ कासी कर करवत
जे मुख आवहि आखर खरे
रोम रोम सर हुइ संचरे
पाति पाति हुइ हिये समानी
जनु सर फूटि पिछौड़े जानी
मसि जो घुरि पुतरी भइ पानी
आखर आखर आनि समानी
कंपहि अधर डार जिमि डोलहि
अच्छर अवर अवर कछु बोलहि
पढ़ी न जाइ बियोगिनि चीरी
हिये सकेत सास भइ भीरी
पतिया पीरी ते भए पतझारी के पात
कारे अच्छर स्याम पढि लोइन कीन्हे रात

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लिखत कुवरि पलकनि जे छूटे
ते असुवा हरि नैनन छूटे
जो उन्ह दुसह उसास दुराई
सो सब किस्न हिये भरि आई
सकुचि कुँवरि जो प्रेम छिपायो
उमगि सु किस्न हिये भरि आयो
रुकुमिनि प्रेम जोति पर जरी
तिहि हरि हिये दवरि संचरी
बिरह बान रुकुमिनि तन जागा
हरि तन सहस काड हुइ लागा
रुकुमिनि नैन उमगि जल आए
नेह मेह मोहन बरसायो
बालक बिरह कुँवर तन तायो
हुइ कै तरुन कान्ह तन आयो
बिरह डंक दै डसी कुमारी
तिहि बिष बिसुध भए बनवारी
अच्छर स्याम जानि बिष लाइसि
हिय तकि पाती बान चलाइसि
रुकुमिनि नेह सु हिय भरि लीन्हा
बूंद बूंद कै सरवर कीन्हा
एकहि बान उमगि जो सागर
सरस स्यामघन कीन्हे नागर
प्रीति बोलि जो ह्रिदे बढ़ाई
सो हरि अंग प्रगट हुइ धाई
दुइज प्रीति रुकुमिनि आभासी
पूरन हुइ हरि हिये प्रगासी
सज्जन साची मित्रई तोरे जाइ न तोरि
बूंद दिखावहि समुद हुइ उमगहि प्रेम हिंडोर

दुख पाती रुकुमिनि दै घाली
बार बार बाचहि बनमाली
एक जनम की उन सुधि कीन्ही
जनम जनम की उन सुधि लीन्ही
भरि भरि आसू नैनन छलकत

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जनु मकरंद कमलदल झलकत
अँसुवन पाती परत भिजाई
परसत अगुरिन आच सुखाई
जो न सलिल पाती पर परई
कागज बिरह उसासन जरई
जो यह प्रलौ पयोधि न भीजै
सोइ पल माह प्रेम छल छीजै
रोम रोम भरि पुलकि पसीजा
कोटि सूर के तपनि तपीसा
पूरन ब्रह्म प्रेम मैं जानहु
सब ऊपर प्रेमहि पहिचानहु
हुइ अचेत प्रभु चेति सभारे
अँसुवन नैनन्ह घूट निवारे
तहँ लग बूंद नैन सो टूटै
जहँ लग अँसुवा सबै निछूटै
लै मकरंद चंदमुख धोइन्ह
पत्री आदि अंत फिरि जोइन्ह
छिनु लपेटि छोरहि पुनि भेटहि
तन मन धन जनु साथ लपेटहि
प्रीतम की पाती पढ़त जानहु मसि हुइ जाउ
तन मन नैना प्रान हुइ आकन माह समाउ

पढ़ि सब स्याम लपेटी पतिया
नैन सलिल करि सरवर छतिया
पढ़ि पाती हरि अंतर लीन्ही
पुनि हरि ब्राह्मन कै सुधि लीन्ही
बेगि पवरिया लीन्ह हकारी
दरससि मोहन रूप मुरारी
देखि मुखारबिंद की कांती
निर्मल सरदचंद की भाँती
सुंदर स्याम दरस दुखमोचन
बाहु बिसाल कमलदल मोचन
कुंडल श्रवन दिपहि उजियारे
मुकट सूर मनिगन जनु तारे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दुर्लंभ जगत रूप की रेखा
सो मुख आइ दीन द्विज देखा
आइ अस्तुति कहसि पुकारी
प्रेम उमगि गिरि गयो भिखारी
सनमुख दिस्टि न पल ठहरानी
अंग पसीज भीजि भव पानी
कंपत नैन नीर भरि आए
बिप्र देखि हरि आइ उठाए
देखत दीनदयाल्न मनाइ
दुर्बल देह अंग लै आइ
आदर कीन्ह पास बैठाए
धूरि झारि पटचरन पखराए
करुना मन मौ करि रहे सुमिरत रुकुमिनि नाम
अंतरजामी जानि कै छिनु छिनु सुमिरत स्याम

मुख संदेसा बाभन जो कहै
छिनु एक चिंतमनि चुपु रहै
अब द्विज चिंता चित नाही गहै
करि अस्नान रसोई करहू
चित चिन्ता जनि कौनेउ धरहू
भोजन भुगति लै आवै जबही
रथ स्वारथी मगावा तबही
बोले बिप्र भगत की नाई
रोम रोम मैं त्रपत गुसाई
महाराज जो दरसन दीन्हा
मानौ अंम्रत पान मैं कीन्हा
चरन कवल ये मन मैं आने
जनम जनम कह त्रपत अघाने
जिहि रस सिव सनकादिक धाए
जिहि रस सुर मुनि अति सुख पाए
जिहि रस मत्त मगन मुनि नारद
जो सुर कथै कवीसुर सारद
सो रह चरन कवल रस पायो
संक भूमि सब परसन आयो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जस पूजी मोरी दरसन आसा
तसि हरि हरु रुकुमिनि की ग्रासा
दुसह बचन सुनि सुनि मुरिछाई
मुहि डरु जनि रुकुमिनि मरि जाई
कै हिर मिलै कृपानिधि दाई
तब लग पानी पान न खाई
पतिया पहुंची हरि मिले आवा अब इहि ठाउ
रोम प्रगास प्री प्रगट हुइ यह सुधी लै उडि जाउ

करि भोजन ब्राभन जब आयो
पवन वेगि रथ किस्न चलायो
बली बीर बलभद्र बुलाए
जोधा जुथ जादौ जुरि आए
कहै किस्न सब कथा बुलाई
सेना साजि कुंदनपुर आई
तुम बलिभद्र साथ उठि धावहु
रथ के खोजि सबै चलि आवहु
सुभट बीर जो चुनि चुनि लेहू
जोधन और जनाउ न देहू
एक बेर भुजस गलै मिले
हम जैहै रथु हाकि अकेले
जहाँ जुरे राजा अधिकारी
कौतिक एक देखिहैं भारी
यह कहि रिथु बेगि चलावा
अर्धासिन ब्राह्मन बैसावा
चले वेगि राजन सिरराजा
पाछे बलिजादौ दल साजा
नैन प्रान मन आगे गए
दल कह श्रवन सुहाई भए
हाहा पंख न लागही चित संग मिलहि मित
चितहि नैनन लागही नैन भए निहचिन्त

सकुची धारनि आइ धाए धुर
जोजन एक रहो कुंदनपुर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देखेसि बिछं तार अबराई
मदिर चौखड़ी धजा बनाई
तहा रथु थाभि किस्न छिनु रहे
आनद बचन बिप्र सो कहे
अब तुम द्विज आगे पगु धारहु
रुकुमिनि के सब सोच निबारहु
आजु रैंनि हम तरवर छाहर
कटक सहित बैठहि एक ठाहर
उतरि विप्र अस्तुति तहं कीन्हा
कुंदनिपुर कह अग्या दीन्हा
जहं लग दिस्टि परहि हरि चाइन्ह
सनमुख चलो पिछौडे पाइन्ह
आनंद उमगि विप्र घर अयो
और रूप औरैं रग भयो
रतन खानि पूरन करि आयो
मानहु राक चलै निधि पायो
आगू चरन उताइल धारै
फिरि फिरि रथ की धूरि निहारै
भूप भवन परि अति उजियारे
जगमग जगमग कलस निहारे
भगति लोभ अलि अंबुज गहा
किस्न चरन मन मन पाछे रहा
पवन दूत मालति मधुप हंस दमावति काज
सीता लगि हनिवत भए : रुकुमिनि कह दिजराज

रुकुमिनि द्वारावति पथु हेरा
पंडित अजहूं कीन्ह न फेरा
ब्राभन जाति भीख भट माना
भोजन दछिना अरथ लुभाना
खीरि खाड भोजन कहु पाइसि
सोन दान धोती मनु लाइसि
कै दिज थकित पंथ भै रहो
मोर सदेस न प्रभु सन कहो
मारग दूरि देखि हिय हारा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दुर्बल दीन दौरि नहिं पारा
मुवेहु सतापु न जैहै जीते
पाती पहुँचै औसर बीते
औसर गए किस्न जौ आवहि
तौ कहू मोरी भसम न पावहि
जौ हरि दरसु आजु नहि पैहौ
सुलगि स्याम हुइ रैनि समैहौ
जौ लग बिरह अनल उपजाउ
तौ लग नैनन्ह नदी बहाउ
अब सरीर वोरा हुइ गरै
सेष रहै सोइ पावक जरै
बरि बुझाइ हुइ राख उडैहौ
द्वारावती पवन हुइ जैहौ
इहि विधि झंखत रुकुमिनी : सोचत मरन उपाउ
तत खन खसिया धाइ कह पंडित द्वारे आउ

आयो बिप्र द्वार सुधि पाई
सुनि कै धाइ अगमनी धाई
रुकुमिनि के जिय धरहर भएउ
सुनत अंग बिहबल हुइ गएउ
जीवन मरन कै रैनि बिहाई
अब यह बिप्र कहा सुधी करई
आवत अंत मुख ब्राह्मन केरे
जीवन मरन आवादा नेरे
जीवन जठा जीवन के दरसे
मरन बिना अंबुज पद परसे
तब लग धाइ बूझि सब बानी
पैठी मंदिर मंद मुसकानी
कहै बिप्र चित चिन्त निवारहु
हरि आए आरती सवारहु
गुर तिय के सब सोक निवारे
गजमोचन गिरधर पगु ढारे
सघन स्याम घन की छबि छाए
बरसन नेह नीर भरि आए

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रथ आरूढ़ सूर छबि छीने
आए चक्र सुदरसन लीन्हे
तोर दुख रुकुमिनि जबहि सुनायो
व्यापो बिरह बार नाही लायो
दीनबंधु सुंदर सुख स्वामी
अंतर रहे निरन्तर जामी
भगति निरंतर भगत हित भगतवछल भगवान
दिन मह आनि प्रगासिहै पावन पूरन भान

दिज सपने की सौतिख कही
रुकुमिनि सुनत चकित हुइ रही
जाग्रत बिना सपन अस पाउ
सुपन के संग सुपन हुइ जाउ
सुधि बुधि कै जिय माह सभारै
सपन होइ द्विज मनहि बिचारै
दिज मुख बातै समुझि सभारी
जाग्रह जानहु राजकुमारी
तपि तपि पानबेलि पियरानी
लहलहात फिरि पावत पानी
अंबुज आगे सूर जनाए
जसु पुरइनि पूरन जलु पाए
जै जै कै मन सुमिरन दीन्हा
पलटि पवेस गात मह कीन्हा
इहि बिधि कुँवरि सुनत रहसाई
आवत चाह किस्न की पाई
कहै कुँवरि दिज आगे आवहु
जथा कथा सब मोहि सुनावहु
ब्रह्म बिस्न सिव बाचा तोही
साचे बचन सुनावो मोही
मन मानिक अभर्न सब लेहू
मोहि सदेस किस्न कर देहू
बहुत पंथ निसि बासर धाएहु
कैसे दरसन किस्न कर पाएहु
भेस कवन देखे बनवारी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बिप्र कहौ मैं दासि तुम्हारी
तिन पाइन की पंक हौ जे पिय पंथ चलाहि
हौ बलि बलि तिन लोइननि जे सजनहि मिलाहि

कह पंडित सुनु रुकुमिनि माई
हरि हलधर आए दोउ भाई
मधुर सूरति माधौ मधुदंडन
आहे निकट अंडंडन डंडन
यह उपगार कुँवरि तुम कीन्हा
जन्म जन्म कर मुहि सुख दीन्हा
कासी करवत लै फलु दीजै
तवहु न तुमहि उरिन हुइ जीजै
कहाँ मैं दुर्वल दीन भिखारी
कहाँ वे राजधिराज मुरारी
जवहि द्वार पाती पहुँचायो
बिनु जपजोग सवै सिधि पायो
ब्रह्मादिक मन माह न आवहि
इंद्रादिक जिहि पारु न पावहि
लीयेउ बुलाइ मोहि तहँ स्वामी
दीनबंधु उर अंतरजामी
सूर देखि कुंडल छबि छाई
मै तिहि देखि परो मुरझाई
मुकट जोति चपला चमकारा
चकचौंधिनमैं भा भिनुसारा
रतन जोति छबि देखि लुभानेउ
जरै जोति फनल जौ जानेउ
करि सुदिस्टि सीतल तब कीन्हा
सकल सिद्धि स्वारथ भल कीन्हा
कनक चवर मुकता पहिराए
यह कंटन गजगाह बधाए
रतन जटित जगमग उजियारी
सिर पर कंचन सिरी सवारी
नवग्रह नखत सहित अति भए
इद्र बिवान मानहु भुइ गए

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बिबि कुंजल बिजुल दिपहि जल धरि स्याम सरीर
अरिमारन रुकुमिनि हरन रथ बैठे बलबीर

सूर जोति जगमग जनु कीन्हा
मनिगन मुकट सीस धरि लीन्हा
उर सोभित मुकतन कै माला
इंदीवर द्रग बाहु बिसाला
खीरि के परन खिरोदक धोती
केहरि मद्धि कसत छबि होती
चंदन मलियागर तहँ सारे
जा पर पीत उपरना डारे
कोटि मदन मुख मोहन बोलहि
जानहु अस्त दोउ कुंडल डोरहि
नवग्रही सोहै कर पहुची
कै धन जोति न सार पहुची
सुर मोहहि बेदन जगबंदन
तिलक तमोल बने नदनंदन
कालरूप नाथ्यो जिन काली
रथ आरूढ़ भए बनमाली
मनिगन किरनि अभूषन मंडन
चढ़ो सूर जनु तिमर बिहंडन
हाको रथ सारथी उताइल
झनंकार चूरा अरु पाइल
चंद्राकार बज्र चकपैया
सूधे चपल सिंघ उलथैया
कंधे केस जनु पंखिन लाए
चलत उड़त है पूँछ उठाए
सबल तुरंग कठिन बज्रांगी
चंचल मित चित के संगी
थरथराहि थिरु ना रहहि फरकत छाँह निहारि
आगे जाहि तुरंगमा पाछे रहै बजारि

घनन घनन घुंघुरू घनवाले
झन झन घंट केठ है राजे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

धम धम धरनि चलत रथु भाई
धर धर हिय सब की सुधि गई
इक इक लोग फुरै नाहि बाने
पवन थकित पंछी ठहराने
संग सूर नखतन की माला
जनु भुइ धावै उतरि उताला
सनमुख रथ लोइन जो माडे
जेठ क सूर किरिनि जनु छाडे
पैंठत नगर देखि नरनारी
मोहित सुधिबुधि सबन बिसारी
जगमग मुकट जराउ अभास्यो
स्याम घटा पर सूर प्रगास्यो
नर त्रिय बिर्ध तरुनि अरु बारे
देखत भए चित्रगति सारे
सुत हित भूलि जननि कह जाई
बालक देखि बिसारहि माई
थिर थिर जस चल दल चल करही
पाछिल पाउ न आगे धरही
झुमि झुमि रही झरोखन नारी
तौ पलकैं जो रहै किवारी
जिहि देखे मुख बकति न आवै
जिहि बकता तिहि चूपु न सुहावै
बारक चितै सीसु जनु नावै
भूमि परै भुइ फिरि न उचावै
एक थकित एक थरथर करही
इक हुइ मैन मुरछि भुइ परही
स्याम ठगौरी दरस की डारी चितै सुभाइ
सुनत चढ़ै ढग मूर जौ दरसब जीवै काइ

पवन गवन दामिनि चमकारा
हाकि दियो रथु नगर मझारा
बाम दछिन जहँ दिस्टि चलाई
मोह बान बरखत जनु जाई
पाटन हाट बैठ बनिजारे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दरस देखि तिन बनिज बिसारे
प्रेमी पुरष भगत जे भले
प्रेम उमगि ते लोटत चले
रथ के खोज सीस तहँ धरही
पग पग सहज डंडवत करही
मोह मूछि लोइन भरि ढारे
कीन्हे रथ के खोज पनारे
उड़त धूरि जनु नैनन परई
जनु कपूर सीतलता करई
भगतन मिलि भगवंत बखाने
कामिनि कामरूप पहिचाने
मृदु मूरति बारिन मनु भाधो
बैननि कालरूप दिखरायो
जोगिन जोगेस्वर करि लेख्यो
रोगिन मूर सजीवनि देख्यो
पुरुष पुरान विवेषी जानै
संतन संत रूप पहिचाने
मोर बिचारि नीलघन बोले
निर्मल सूल सबन के खोले
अप अपनी मति जिहि जसि आई
तिहि तस देखे कुँवर कन्हाई
चंद जोति मुहि दरसन दीन्हा
कारज आनि सुफल सब कीन्हा
राई हू ते बज्र हुइ तिनहु ते भयो पहार
लोहे ते कंचन भयो तुम्ह कीन्हो उपगार

सुनत कुवर रुकुमिनि सुखु पायो
परी सांझ ब्राह्मन घर आयो
सूरज अस्ताचल कह गएउ
चंद उदै पूरब दिसि भएउ
सब दिन रोस रही जो गोरी
छोड़ी मन बसीठी थोरी
अंचर गाठि तजी कजरौटी
बनहि तरन तारन की जोटी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ससि सनमुख सुंदर तकि हारे
चतुर चकोरी नैन पसारे
भामिनि भुज अंबुज बस भए
रसिकन भवर निधन हुइ गए
भोग जोग बस पलकन लागहि
संजोगी जोगी दोउ जागहि
जग छोड़ी जग नींद सभारी
जानौ सोइ जाग्यो बिभचारी
संगम बनिक बियोगिनि गोरी
बिछुरी चारु चंद्र की जोरी
सरस कुसुम दिन सेज बिगासी
घर घर दीप जोति परगासी
चंद्र मेर धरि रतन बिसाला
पहिरे गगन नषन के माला
जग दीपक भूषन किये अग अग नग को जोति
ससि मुख तारा लोचनी : उज्जल पहिरे मोति

रैनि किस्न तरिवर तर रहे
मंत्र बचन मंत्रिन सन कहे
प्रात भए रबि किरिनि प्रगासी
जाके सूर द्वारिका बासी
कंवल नैन सब सेन बुलाई
बलदेवहि यह बात जनाई
तुम इहा सेना सजि कर रहहू
पाषर साजि कटक सब करहू
राखहु चक्र लाइ खरसाननि
सावधान फोकन धरि बाननि
बाम दछिन बिबि सेन बनावहु
परत पुकार सो तिरछे धावहु
बिरचि बीर बगमेलनि धैहहि
ते सब बान काख मह खैहहि
संकि सत्रु जूझिहि कै भाजहि
जबही दुहू दिसि दुंदुभि बाजहि
साजहु दुहू अनी अनियारी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लोह लपेट घटा सी कारी
यह कहि किस्न बेगि रघु माग्यो
मनि मानिक जिहि कंचन लाग्यो
कमल लजानो सूर हुइ फूलन भरि मकरंद
षोडस कला प्रगासी कुमदिनि जानौ चंद

नगर पुरब दिसि हरियरि बारी
ऊँचे बिरछ तरे फुलवारी
चंपक फूल कुसुम झुकि झूले
तट तलाउ अंबुज भरि फूले
पवन सुगंध बहत रस आगर
तहाँ जाइ उतरे हरिनागर
मनि मानिक मुकताहल वारहि
चंचल चहुँ दिसि चंवर ढुरावहि
पुहुप बिस्टि ऊपर सु करही
जै जै सकल लोग उच्चारही
मारग एक जाहि एक आवहि
सीस धरन कह ठौरु न पावहि
नगर नारि अस्तुति उच्चरही
आरत कै जिय आरति करही
सुनि राजा भीषम तहाँ आए
छत्र चौर सिंघासन ल्याए
पूजे चरन भेट बहु दीन्ही
हस्त जोरि कै अस्तुति कीन्ही
जानहु राक नवौ निधि पाई
किये अनाथ सनाथ गुसाई
चरन कँवल पावन इहा आने
महाराज अपने करि जाने
निसुदिन जिनके ध्यान सौ जोगिंद्रम कह जाग
ते पग पूजे इन्ह करनि : प्रगटे पूरन भाग

घंटा संख तार बहु बाजा
धूप दीप आरति करि राजा
प्रान प्रसाद तोष सो पाए

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आनंदित राजा ग्रह आए
चरनोदिक निरमल जो लीन्हा
रंच रंच रनवासहि दीन्हा
घर घर प्रजा राउ अरु रानी
जन जन जँपहि यहै कहानी
जहाँ तहाँ यह कथा प्रगासी
आए किस्न द्वारिकाबासी
भीतर नगर चाह फिरि आई
बाहिर सब राजन सुधि पाई
सुनि भरमै कोई कोई भुवपाला
राजा जुरासिंध ससिपाला
दैत बकत्र दमघोष नरेसा
इन बूझो कछु होइ कलेसा
मिलि मिलि घेरु करै सब कोई
चर्चा यहै कटक मह होई
हीये हरष दुलह कर हारा
सबहुन के जिय खरभर पारा
रजमद राजन गयो सुखाई
सिंघवास गैयर जनु पाई
घन ज्यौ उनए स्याम घन लै बिजुली कर वार
बोरि बहावहि बैरियहि बर सहि मूसलधार

कोउ कहै किस्न एक रथ आए
राजा भीषम नौतिबु लाए
कोउ कह नाही नौति हकारे
कौतिक देखन है पगु धारे
कोउ कहै किस्न आए किहि कारन
सब राजन सन बैरु निबारन
कोउ कहै सुनत रुकुम के बैना
राते कँवल कीये दोउ नैना
जो यह बात चित्त मह धरिहै
कौतुक रूप कलह कछु करिहै
कोउ कहै इनकी ऐसी घातै
जितने मुख तितनी है बातै

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुरुष प्रबीन जे आगम जानहि
ते कलेस पूरन जिय आनहि
चलत बात राजन मह जहाँ
रुकुम कुँवर बैठे हुते तहाँ
बोले क्रोधवते चुपु रहहू
अवर प्रसंग कथा कछु कहहू
का भयो किस्न एक जो आए
का भयो कोटि कटक जो ल्याए
जौ अवराध साध करि जानै
जौ बिरोध तौ क्रोधहि ठानहु
यहै बिचारि समुझि जीय रहौ
अपने आए कछू न कहौ
कहौ तौ जाइ अकेलेहि घेरौ
देखि देव घन माह खदेरौ
गंजौ गुर्जर खंडि चढ़ि सोरठि हठ सौ लेउ
धरनी धावौ रैनि दिन : जादौ बसन न देउ

रुकुम कीन्ह पुनि आपु बड़ाई
बडडे राजन सुनि न सुहाई
कहि न कुँवर रिस भरि कस बोलहु
अपबर बिना डुलाएहि डोलहु
जबहि किस्न रथ साजि मगैहै
हम तुम काम तुम्हारे ऐहौ
भौंह चढ़ाइ सबन समुझायो
नान्हे मुह बड़ बोलु न आयो
दुसह बचन सुनि की जीय धरै
पैंज पतंग दीप सौ करै
सदा बडिन की करहु बड़ाई
लघु बोलत अपनी लघुताई
सरगहु ते खिन मह भुइ परई
अपनी आपु बड़ाई करई
बड़िन की बात बड़ी करि मानौ
आपुन कौ अति लघु कै जानौ
सो पावै दुहु लोक बड़ाई

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जैसे द्वैजं बढ़त दिन जाई
दुजु जुग बड़न माझ लख लेही
जा कह बड़े बड़ाई देही
बड़ हुइ जाइ दिया की नाई
राते आपनि आपु बड़ाई
बड़े निडर बड़ लोग कहिं करैं बड़ाई आपु
तिनके निकट जनाइयैं दरसन देखे पापु

उठहु कुँवर तुम भौन सिधारहु
आजु राति सब काज संवारहु
चढ़ै बरात आजु बीते दिन
पाछिलि रैंनि भावरी के छिन
राजमदिर बेगहि पगु ढारहु
रीति काज को साज सँवारहु
राजा सबै बराती ऐहै
बैंठि बड़ाई दुहु दिसि दैहै
उठो कुँवर राजन सिरु नाई
पैंठो नगर तुरी दौराई
कहिसि ढढोरा नगर फिरावहु
प्रजा पौन सब झारि बुलावहु
साजहि सास सोज सब धरही
आपन आपन कारज करही
घर घर दिया प्रजा लहि ऐसे
आजु रैनि दिनु जानि न जैसे
चंदन लीपि सवारहि बाटी
पाटंबर छावहि सब हाटी
यह कहि कुँवर मदिर कह गए
देखिसि काज सिद्ध सब भए
ब्याह बरात सिद्ध सब चाही
जहँ तहँ सोज सिद्ध सब आई
इक दिसि धरे जराउ पिटारे
इक दिसि चीर पटंबर डारे
राजा बिन सब करहि उछाहू
आजु राति रुकुमिनि को ब्याहू

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गज चित्रहि है साजही बनही दुहु दिसि लोग
ब्याह ब्याह सब कोई कहै बिधि जानै संजोग

पहरक दौस आइ जब रहो
रुकुम राजमंदिर मह कह्यो
संग सहेली सबहिं बुलावहु
गौरि पुजाइ बहिन लै आवहु
अवर सखी उतिम जे आही
ते सब रुकुमिनि के सँग जाही
भीतर कहि बाहिर पुनि आयो
संग काज सब लोग बुलायो
जहँ लग सूर बीर सब आयो
नख सिख सब लोहे पहिराए
धनुष धरहि कटि बाधहि बाना
फरी खर्ग बिन सूझ न आना
सिमटे बीर भीर अति कीन्ही
संग पाति हस्तिन की लीन्ही
घालि पालकी कुँवरि निकासी
चहुँ दिसि जुरी सहस एक दासी
माइ के पाइ लाइ सिरु चली
माइ धाइ उली चढ़ि रली
दुमंनि कुँवरि दुयोकर जोरी
एक करतार कर्म कहँ मोरे
जौ न प्रानपति प्रानहि पाउ
कटक कोट सब रोइ बहाउ
तपि तपि सास अगिनि सब जेरो
लोहन लोग अवटि सब मारो
इकै जसन दुमन बहु : धरकै हीया धरक्कि
सज्जन बिन दुर्जन लहै : फूटहि मैन तरकि

इहि बिधि अंचल हस्त पसारे
पहुंची कुँवरि गौरि के द्वारे
गज कुंडल कीन्हे फेरे
सुभट बीर परस बिधि घेरे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मानुस पंखी कहा कोउ आवै
चंचल पवन न पैठन पावै
अनी धार तीछन भरि छाती
पैठत पंख पंख हुइ जाई
सुभट कोट लोह के ठाढ़े
चहुं दिसि गैयर गिरि से बाढ़े
उतरि कुंवर देवी के द्वारे
सखिन मद्धि सोभित ससि तारे
अंचर वोट पिछोरी कीन्ही
दीपक सखा बीच जनु कीन्ही
देवी द्वार देखि सिरु नाइसि
आइ माथ पुनि दिहरी लाइसि
मंगल गीत गवरि के गावहि
वहुत बाज बाजने बजावहि
भीतर भवन कुंवरि जब आई
करै भगित पूजा मन भाई
फिरि फिरि पूजा मूरति करही
पूजि गवरि के पाइन परही
जौ पूजत मह दरसन पायो
तउ न उरिन जो सीसु चढ़ायो
पूजा लाख सहश्र व्रत जप तप नेम अनेक
जल थल तीर रहै यो : कारन साईं एक ?

हिय कर धर सोच निवारहु ?
मनु धरि ध्यान गौरि को धारहु
तुम देवी इंक्ष्या फलदाई
जिहि लगि बार बार सो आई
झूठ साच सब मंत्र बिचारे
करहु न्याउ मैं कहो पुकारे
तुम्हरे द्वार जु न्याउ तो पाउ
केहि के द्वार पुकारि सुनाउ
तुम बिन कवन सूल यह हरई
करौ सबर जो हीनपन करई
करि बिनती पूजा पुनि कीन्ही

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मंद मंद परिदछिना दीन्ही
गवरि प्रसाद पुहप की माला
कुँवरि कण्ठ पहिरावहि माला
लाल चूनरी छिरकिन केसरि
तिलक सवारि सवारिन्ह बेसरि
नैन कोरि लग अति अनियारी
धरिन रेख काजर कै कारी
करनफूल कानन पहिराए
जगमग खुटिला नगन जराए
दीपकमाल कण्ठ सिरि दमकै
पाछैं फूल तरैया चमकै
बडडे बार बनाइन्ह बेनी
भरिन माँग मुकतन्ह की श्रेनी
कंचन बरन व्याल को कंकन
कुँवरि हस्त बंधहि जुवतीजन
टीक टाग मनि मैं चमकाई
फुदा सँवारे कंकन कलाई
राजनीत सो राजकुमारी
नखसिख दुलहिन साखिन सँवारी

हिय धर धर मनि अभरन चित्रन चूरा हार
प्रीतम भेटे रसु रहै : सफल होइ सिंगार

दुलहिनि रूप भयो उजियारा
झनक मनक मठ भा झनकारा
केसरि कुसुम बरन पट झीने
लाल चूनरी उपर कीन्हे
घोरि सुगध कुसुम के पानी
छिरके बसन बरन सुन बानी
मुख तबोल सोहत बिहसंती
बोलत दसन दिपहि नगपंती
जहँ लग संग सुंदरी अही
दुलहिनि दरस रीझि सब रही
पूजा करत पुजारिहु जीया
जानहु गोरि यहै पूजीया

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देवी रीझि अनुग्रह कीन्हा
मनकामना सिद्धिफल दीन्हा
पुनि मंदिर कह आवै लीन्ही
ताही समै किस्न सुधि कीन्ही
सावधान रथ पर चढ़ि धाए
ताजी तरल तुरंगन लाए
लोगन और पंथ दिखरायो
निरछे पलटि सिंघ जो धायो
दच्छिन दिसि हुइ आपुन धाए
गौरि मदिर दीन्हो कर बाए

बधा बेधहि ना डरै : चहुँ दिसि कंटक झारि
चित्त चिहूटा मालती : भौरन टेकै पारि

जहँ मठ घेरि रहे दिसि चारी
इक दिस मानस उठे पुकारी
जो पाछे फिरि देखहि लोगा
आयो रुकुमिनि वर संजोगा
बदन रूप दिनहु ते उजियारा
मुकट सीस रबि छबि चमकारा
कंचन रथ मनिगन चमकाई
निरखत सनमुख देखि न जाई
देखत अचरज लोग भुलाए
मेघ सूर उडगन मिलि आए
जिन जिन रथ के खोज निवारे
मोहन बान किस्न जनु मारे
जहँ लग मोह मगन सब भए
गज कुंडल खंडित हुइ गए
तो लग कुँवरि कछुक सुधि पाई
देवमँदिर दिहरी पर आई
निकसत बदन जोति छबि कैसी
लोगन जानो देवी निकसी
मोहन भेष सरसुती कीन्हा
ज्वालामुखी दरस जनु दीन्हा
दुहु जुग जोति दरस जनु दीन्हा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दुचिते लोग दुहू दिसि कीन्हा
चद सूरज दोउ परगट भए
दुर्जन अंधकार दुरि गए
भावंता आवंत सुनि अनभायंता रोइ
बलि बलि सज्जन सेवते दुर्जन रहा न कोइ

निकसित कुँवरि रूप की रेखा
सहज कला सूरज जनु देखा
जगमग रूप दिस्टि नहिं आवै
रूप जोति बिज्जुलि अधि धावै
रबि ससि नखत सहिस दोउ जानै
चकचौंधत सब लोग भुलाने
सनमुख केसन मुख गिरि परही
देवी जानि दंडवत करही
बाए देखि बिकल सब भए
जानहु जोति फनीग जरि गए
दहिने दिस जब नारि निहारी
देखे रथ पै मैन मुरारी
मुकट प्रगास भयो उजियारा
सूर किरिनि कुंडल चमकारा
भौंह कुबंड चपल दोउ कोरै
नैन कोरि कुंडलं छबि जोरै
मानिक अधर दमिनि दुति हारी
अनुपम रतन होहि मिलि बारी
बारक दरस देखि भरि लीन्हा
फिरि न ऊँच रुकुमिनि मुह कीन्हा
बिछुरत छतिया घर घर भई
रोम पुलक पाडुर हुइ गई
जहँ लग संग सहेली अही
मोहन दरस मोहि सब रही
बलि बालक पथ प्रानधन मनि बलि कै बलि जाउ
पाव न तरके पावरे पुतरी धरत लजाउ

जो मुख रूप ध्यान जो धरई

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मन मूरति की पूजा करई
सोई सरूप सुंदरि दिखरायो
जानहु निकसि हिये ते आयो
सुभट कोटि कटक कुल जोहै
बिथकित मोहन दरसन मोहै
कहुँ तुरंग करीवर रावत
कहुँ गयंद कहुँ गिरे महावथ
जौ गज मत्त कोटि जुरि जाही
एक सिंघ की बास पराही
सकुचि अंग बिन आलस भए
कुंड कुंबंड चढ़ि बोहे गए
सांतक स्वेद सब निढरि चला
लोन की भाँति लोह गिरि चला
कँवलनैन कह नैननि लाए
निरखत रुकुमिनि सनमुख आए
जगमगात नग किस्न निहारे
मोर भँवर रुकुमिनि सिर तारे
रघु नियराइ किस्न ढिग आए
हस्त कँवल दुलहिनि भुज लाए
केसरि कुसुम लता जनु आई
हरिहर यो रथ पर बैसाई
तन पुलकित पाए परस हस्त कमल नख सोम
हिय झकि अति कोवल करनि लगहि न कंटक रोम

दुलहिन बैठारिन ढिग पाछे
आपुन फिरि बैठे भट काछे
जब दुलहिन तन हस्त निवारे
हस्त कमल तब सस्त्र सभारे
रथमुख द्वारावति करि दीन्ह
हरि मुख कुन्दनपुर तन कीन्हा
जब लगि किस्न कोस एक गए
तबहि सचेत लोग सब भए
मोह छोड़ि कै नैन निहारे
चलि गयो चंद रहे सब तारे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चंद्रकान्ति जनु मनु हरि लीन्ही
लाखन छोडि लाख जनु दीन्ही
ठग की मूरि उतरि जनु गई
सबहुन के जिय चटपट भई
फिरि लोगन ऊँचे कर कीन्हे
वह देखहु रे जाइ हरि लीन्हे
तारे लीक खोजहै तैसे
चांद सूरज जनु इक रथ बैसे
जो रथ चपल उताइल धावै
इंद्रधनुष जनु निकसत आवै
दंपति भूषन रथ चमक गौर स्याम तन भेख
किये तिलक बहु बरन भइ इंद्रधनुष कै रेख

खरभराइ नहि बसन सभारे
मचो सोर सब लोग पुकारे
धावहु धावहु चहुँ दिस भएउ
धारि धारि करि सर्वस गएउ
सुनि पुकार नागरि अकुताई
मंदिर मंदिर पर चढ़ि धाई
रथ पर गौर स्याम करि जोरी
नव जलधर हरि बिम्वल गोरी
वह दिखु लिये जाइ ढिग बाए
स्याम घटा जनु दीप दिखाए
रुकुम मदिर जिवनार सवारी
जेवन सबै बरात हकारी
तौ लग धावन धाइ पुकारा
बैठी जहाँ राज जिवनारा
बावन हुइ बलि राजा छरा
सोई हरि जगत जोति लै चला
जबहि सुनी दुलहिनि हरि हरी
रोस अगिनि सबहुन परजरी
सुनतहि वेगि तजी जिवनारा
बिना पलान होहि असवारा
यह कलि लोग उताइल धावै

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गूजरपूत जानि नहि पावै
गोकुल गोपीजन हरन गोरस हरन अहीर
अब इहि हरन जो बंचिहै तब जानहि बर बीर

मारु मारु करि परी पुकारा
बगमेलन धावहि असवारा
खर्ग काढ़ि सांगै चमकावत
धावहु धावहु करिं सब धावत
सुनतहि चाह भई जनु बौरा
रुकुम उताइल अगमन दौरा
डेरा डेग्र भयो दमामा
बंब धुकार जाइ धुरि जामा
सुनि जादौदल आगे आए
जब लग किस्न निकट नियराए
अपने कटक आइ हरि पैठे
रुकुमिनि ढिग वीरासन बैठे
मित्रन देखि हरषि मुसकाने
कहिसि भए कारज मनमानें
दूहू जूथ क्रोध हिय धरहू
सजग होहु असवार सभरहू
दुहू दल बीच द्रुमन धरि लेहू
पहिले धावन आवन देंहू
अगमन अनी जात हनि लीजै
पाछे घाउ निसानेहि कीजै
इक इक दुइ दुइ आनि तुलाने
इक रथ किस्न अकेले जाने
तरुन जुद्ध को बलु जिन्है निकसे है दौराइ
मारु मारु धरु धरु किये आइ पहूँचे धाइ

पहिलेहि बात कहहि जे ऊँची
सैन्य रुकुम की आनि पहूची
अनी धार धारनि मुख आए
सबै अचानक आनि गिराए
बाम दछिन दिसि ते सर छूटे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गिरि गए सूर तुरंगम लूटे
तरफरात लोटत धर अैसे
मीन मकर सर सूके ऐसे
अगमन गिरे रुकुम के साथी
आपुन दौरि हकारिन हाथी
केहरि क्रोध जाइ हंकार्‌यो
खुनस खर्ग कुंभस्थल झार्‌यो
कीन्हिसि घाइ लाइ भुज भले
टारिसि रुहिर चवर चुइ चले
उमडो श्रोन कुंभ भंकारा
कीन्हे गैयर दंत पनारा
धाइ धाइ चिघर मदमाते
सुंड विसुंड भये रगराते
हाथिन जब लाइसि हथियारा
बीरसेन जादौ ललकारा
पलटि बीर सिर दीन्हिसि साची
काटो रुंड मुंड गयो बाची
तब लग धाइ क्रोध बिरझाने
पाछे कै अरि आइ तुलाने
दुचितो कुँवर परै नहि दाउ
धरै तुरी कर पाछिल पाउ
तुरी लीन्ह गैयरहि गहि पर्‌यो धरनि गिरि काँपि
तब लग उठन न पाइयो बीर सैन लिये चाँपि

हाथ मरोरि हाथ हनि डारा
गयो धरि धूरि लोटि असवारा
गुरुव सजोव उठै नहि दीन्हा
तरहर चाहि बीर बस कीन्हा
कण्ठ भेद कह लिहिसि कटारी
इक दिसि हलधल उठे पुकारी
इहि जनि बधहु बाँधि सँग लेहू
हाथ पाँउ लग बंधन देहू
रथ सो बाँधि रुकुम जब लीन्हा
पाछे घाउ निसानेहि दीन्हा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दुंदुभी हनत अंबर घहराना
तब जादौपति लोगन जाना
इक दिसि ढोल जुझाउ बाजहि
यह बलिभद्र बीरदल साजहि
जिहि दिसि मारू राग बजावा
यह गद सुभट साजि लै आवा
बाजहि सिंगी झांझ झनकारी
यह सांतिक की सेन निहारी
कुल कुल सब कोउ कहै
कपटी कान्ह कपट बस रहै
बावन हुइ बलि दिखराए
छल बाढ़े त्रभुवन न समाए
खरग धार टूटहि सुंडाहल
फूटहि कुम्भ झरहि मुकताहल
खर्ग धार कुंभन तोरती
कटि कटि चमर चलहि बोरती
अति मदांध मुख फेरत नाही
घाइल घूंमि घूंमि भरि जाही
रावत जब गैयर बस परे
धर सौ पटकि धूरि अस करे
झरहि रुहिर झरन महि साचे
चलहि न हस्त अचल हुइ मचे
गदा धार हस्ती चिंघारहि
टूटे दंत मंत्र सिर झारहि
दुहु दिसि एक टरै नहि टारै
हल सभारि हलधर अनुसारे
हल उठाइ दोउ हाथ उसारे
हल बल कुंभस्थल हने जनु गिरि खनै कुदार
मानहु काटत खान ते गजमुक्तन के भर

सिंगनाद दुंदुभि बहु बाजा
दुहू दल मैं मैगल गल गाजा
हस्तिन सहित हकारहि रावत
गिरि गए सुंड मुंड धर धावत

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जहँ लग धनक बान रहि गए
दुहु दल मिलि मुठभेरा भए
जोधा जूझि जादौ अति जूझे
चलै चक्र सागँ अनियारी
गदा पानि अरु छुरी कटारी
इत जादौ दल जोधा उमड़े
उत दल दैत मेघ हुइ घुमड़े
जादव दैत जुद्ध भयो ऐसे
मेघ पवन कर बिग्रह जैसे
भिरत अक्रूर कूर दल भारी
दैत बकत्र की सेना हारी
हल मूसल बलिभद्र सभारे
चक्र सुदरसन गिरधर डारे
जुरासिंध सो हलधल जुरे
हल मूसल बल जोधा मुरे
चक्रपानि कर चक्र सभारे
दमकि लोग दमघोष के मारे
छिन मह रक्त कुण्ड भरि रहे
रकत भुंमि सलिता हुइ बहे
रुंड मुंड सब बहि चली रुधर नदी बिकरार
सुभग तरेरा सुंड धर पैरि पहूँचे पार

पहर एक लग बिग्रह भयो
अथयो सूर उजियारो भयो
परत साँझ है गज कलमले
आपु आपु कह दोउ दल चले
सकुचि रुक्म फिरि देसन आयो
भोग नगर तिहि ठाउ बसायो
दानौदल बूझहि अधिकाई
जे भाजे ते गए पराई
जे हरिहने हरहि मिलि गए
घाइल घालि पालकी लए
सोचत चले राज ससिपाला
सुख ते उलटि भयो दुखजाला

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राजा जुरासिंध समुझायो
दूलह फेरि चदेरिहि आयो
ठाढ़ि अटारि निहारत रानी
हरषी निरखि बरात निसानी
रगे रक्त सौ चीर निहारे
केसरि भीजि गुलालहि डारे
निरखि पालकी घाइल केरी
जानी दुलहिनि संग बहुतेरी
आए नगरहि निकट बराती
समुझी बात जरी जब छाती
आलम जे जे सुमिरि सुख हिये बढ़ी ही फूल
तिहि छिन मैं तेई तिनहि उलटि भए दुखमूल

जीतपत्र जादौ जसु पायो
रुकुमिनि सहित किस्न घर आयो
हरषे सकल दुवारिकावासी
पीर आजु हिय की हरि नासी
देखि सरद ससि किरनि अघाए
नरे चकोर नैन सियराए
स्याम सिद्धि संग लहरि सुहाई
मिले मीन दुख जरनि बताई
दरस्यो घनदामिनि लसिकारा
पपिहा दुख तजि भयो निनारा
जौ तरवर हस्ती पग झरै
हरि बसंत दरसन फिरि करै
तरके चख सर जे बिनु नीरा
जल दरसन दै नासी पीरा
जौ बिनु जीउ देह मुरझाई
आए किस्न प्राननिधि पाई
दरसे स्याम जगत उजियारे
लहे अंध ज्यौ लोइन तारे
निसा वियोगि पीर जनु पाई
बिगसे भोर कँवल की नाई
लहै नैक नहिं हिये समावै

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जैसे दीन कोटि निधि पावै
श्रीतम आए को हरष कह्यो न कौंहू जाइ
मन बिसमावै हेत सौ हिये रहो मँडराइ

घर घर आनँद की अधिकाई
गावहि मंगल होहि बधाई
बार बारबंदन कै माला
मुकता लर मनि बाधहि जाला
चंदन मृगमद मेलि गुलाला
बार बार बिथुरहि तिहि काला
तिहि छबि उपमा जाइ न कही
खोरिर थकित त्रिबेनी रही
जदुकुल सनमुख लेन सिधाए
बहु बाजन बाजने बजाए
अमित साज साजि सुधंगे ?
मानहु बहु बिधि बादर रगे
तुरी नचावत कुँवर सलोने
बैस किसोर सकलदुति लोने
देस देस के जुरे नरेसा
कीन्हो नगर महा परवेसा
एक नारि मिलि आरति करही
लै लै आरति माथे धरही
वारि वारि एक पीवहि पानी
इक मोहन मुख देखि भुलानी
एक भूप बहु भाति निवारहि
एक नारि मिलि छलबल टारहि
मोहन रकुमिनि छवि निरखि : भूलि रही सब नारि
रूप समात न नैन मै थकी बिचारि बिचारि

उतरि मदिर मह कीन्ह प्रवेसा
मडयो माडो मंगल भेसा
पूर्यो चौक सरस मुकताहल
मानो बिगसी पुहमि कुलाहल
कर कंचन की बाधिन चौरी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ऊपर अन अन भातिन्ह खोरी
सुभग सिंगार दुहुन कर कीन्हा
अंग अंग आभूषन दीन्हा
दंपति बसन बनाइ सिगारे
मडहा तरे आनि बैठारे
पूजि बिनाइक आसिख दीन्ही
चहुँ दिस बिप्र बेद धुनि कीन्ही
जोरी गाँठि गर्ग सुखकारी
पानि पानि महँ लिये मुरारी
बैसंदर की सिखा जगाई
समद पलास घोरि घ्रत लाई
भावरि तीनि पलटि बैठाए
चौथी दै सब काज बनाए
बहुतै दान जाचकन पायो
लीन्हो सो जु जाहि मन भायो
नारी मिलि मंदिर लै गई
मुंदरी हाथ खेल कह दई
बार बार हारै जदुराई
रुकुमिनि कुँवरि जीति लै जाई
खेलत नव प्रतिबिम्ब मैं मोहन थक्यो अनूप
निरख्यो नैनन सौ लग्यो भावंता के रूप

हुलसी मंगल गावहि नारी
मिलि मिलि देहि भावती गारी
बसुदेव बड़ो काज तुम कीन्हो
पूतहि पिता दूसरो दीन्हो
बिदित नंदसुत सब जगु गावै
तोहि कान्ह कछु लाज न आवै
तुम्हरी माय बिदित सब लोई
हित सब जगत साथ लै सोई
सोई सई रमै जोई मन भावै
यह सुनि लाज अधिक जिय आवै
फूफू बड़ो सीलव्रत ल्यायो
बारे रबिहि अलंगन दायो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मन भाये कीन्हे हितकारी
व्याही भई पंच की नारी
जो यह बात अबहि तुम कीन्ही
सीख सुभद्रा की सुनि लीन्ही
चोरि चोरि जाकौ पै पीयो
ताही कान्ह अलंगन दीयो
रीति यहै तुम्हरे चलि आई
बिदित बात यह बेदन गाई
आरत लाजन सीस उठाए
गारी सुनत कि मन मुसकाए
जब यह बात हिये महँ आई
तौ ब्रज लै दुआरिका बसाई
घूघट बादर मैं दुरै मिलि गावहि दुइ चारि
म्रगनैनी मुखचंद ते श्रवत सुधा की धारि

खेलि जाम जुग रैनि बिहाई
बैठे बहुरि सेज पर जाई
लाज भरे लोइन मतवारे
सकुचि कुँवरि नहि जोरै तारे
प्रथम समागम के डर डरई
कंपत तन थरहर हिय करई
छिनु छिनु किस्न कछू अनुसारा
छुवतहि मदन मोद संचारा
जौ अलि कलि गुंजार मनावै
फूल भए रस बासहि पावै
बाढ़ो प्रेम कलोल अपारा
आपु आपु महँ भए बिसभारा
केलि तरंग जाइ नहि कही
लाज सखी वोझल हुइ रही
फूले फूल अंग न समाही
लोटि लपटि सिज्या पर जाही
मिले मनोरथ साचु न मानहि
सावधान सपनो जीय आनहि
निज करि जानी नेह कहानी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जौ जौ मिलहि प्रीति अधिकारी
प्रीतम मिले अधिक सुख होई
नैन त्रपित नाही कोहू होई
प्रीतम मिलि अंग अंग की सियराई दुख झारि
आलम हिय सुख हरष जल बाध्यो सिंघ अपार

पहिले सुनी भागवत रीती
दसम माह रुकुमिनि की प्रीती
सुनत समीर सांति मन आई
छिन्न ताल जनु उतरी काई
जलहित उपजि तरंग हुलाए
कवि कलोल तट लै परसाए
बानी व्यास समुझि नहि आवै
टीको कहि जो कहा समुझावै
ऐसी आकन कै कठिनाई
तिहि भाषा कै जाइ बनाई
जौ कबि समुझि बुधि अनुसारै
एक आक की पोथी करै
मैं कछु गति अनचीन्ही चीन्ही
चित मित चाह अकेले कीन्ही
ताहीं रस रसना लै पोषी
सुमिरि नाम सरलइ संतोषी
कीन्हे सरस चौपही दोहा
करत हीयो पथिरो हुइ लोहा
कै गुन अरथ अंक बहु मोती
कथामाल पोई अति जोती
प्रेम भगत हाही पर भावै
करै कण्ठ जग सोभा पावै
पोथी अंग अंग सुंदर देही
नाम धरो तिहि स्यामसनेही
कीन्ही आपु समुझि कै कारण
परगट भई जगत निस्तारन
आलम जो जीवै जगत जात चला संसार
दै अधार पोषहु मनहि प्रेम भक्ति आहार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इति श्री आलम कृत स्याम
सनेही भाषा कृत संपूरंन
सुभमस्तु सुभ भवत् संवत
1775 मिती फाल्गुन बदी
दिन शुक्रवार कौ संपूरन भई
जैसी देखी तैसी लीखी
दसखत डालचंद ब्राह्मन के पोथी
दलीपसाह की शुभमस्तु
राम राम राम राम राम राम राम राम
राम राम राम राम राम राम राम राम राम

(स्यामसनेही समाप्त)

खेलहि कलोल रस सदा रहे दोइ तारि।
पइ लोइन तिह गउ लगे तहाँ नहीं नेह चिन्हार ।।

संवत 1717 बिरषे मिती जेष्ठ बदी 7 सनिवारि पोथी लिषी सिपाहा विचिम्य संत ब्राह्मण । प्रगदास सुत वासी फतेपुरी । चतरादास ठाकुरदासाणी जी जति जगा । स्यामसनेही लिखी । सुभ भवत कल्याणु ।।1।। अगरे मूरते स मूरतु ।।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुदामा चरित्र

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुदामा चरित्र

राम रमापति विष्णु सुकेशव कृष्ण गुपाल गुवरधनधारी।
नादर सब के सिर पर साहब सुंदर तन घनस्याम मुरारी ।।
सूरत खूब अजायब मूरत आलम का महबूब बिहारी।
जगमग जगै जमालं जगत में हिलमिल दिल कीजे बलिहारी ।।1।।

सद सलाम अरु बहुत बंदगी तिसकूं जो अपने दिल आने।
ज्यों ज्यों याद करे वह बंदा त्यों त्यों वह नीका करि जाने ।।
देखो करम कियो बामन पर दियो जु कछु उसके मन मानै।
ऐसा कौन बिना गिरधारी जो गरीब के दुख को भानै ।।2।।

बहुत गरीब सुदामा बामन निपट फजीहत में जब अटका।
सद पैबंद लगी चादर को सिर बांधे जबून सा पटका ।।
जूती भई टूट कर टुकड़े धोती भई फाटि कर कटका।
पर अपनी किसमत पर राजी किसी वास्ते दिल नहिं भटका ।।3।।

हांडी एक रसोई अंदर तिसके भी सब पैबंद गारी।
टूटी-सी करछी लोहे की फूटी सबै कनार तगारी ।।
तवा नाहिं चूल्हे पर साबित धरी ठीकरी दरक दरारी।
परी रहै नारी घर भीतर लोटी छोटी छेक छिकारी ।।4।।

टूट गये हैं बांस छपर के ठोर ठोर सरोख परे हैं।
तिन पर बहुत दरद करि करि के कहूं घास कहुं पास धरे हैं ।।
फूट रही दीवाल हर तरफ जीव जंतु अनगिनत भरे हैं।
सब घर बीच कजा कारीगर दुख के नकस बनाय करे हैं ।।5।।

खुनवा गाह कोल करि लाया गोसे बीच मचान बनाई।
तिन पर फरस किये तृन तृन के वहि लिहाफ अरु वही दुलाई ।।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सावै जहाँ रात के ताईं दिन को करता फिरै गदाई।
अपना दिल धीरज सो रहता सहता दुख बहुतेरा भाई ॥6॥

जो कछु अकल कहै बामन की सो सब करै फजर के ताईं।
दायम धरे मुहब्बत दिल में याद करै प्रभुकृष्ण गुसाईं॥
माँगे भीख बिहाल गुजराने और न जानै बाईं दाईं।
साधु की संगत रहता कहता कहता रहै जु साईं साईं ॥7॥

एक दिना बामन की औरत बोल उठी जो साईं मेरे।
रोज गुसाईं सका नहीं आवत रहता सदा फलाक्रत घेरे॥
बहुत अजीब कृष्ण से साहब निपट अजीज यार हैं तेरे।
जो तुम जाहु नाथ कदमों लग पावै जो कछु पढ़ते नेरे ॥8॥

तेरा सकुन खूब करि समझ्या पर सलाह दिल में नहि आई।
ना कछु अकल नजर निहाल पर बेतमीज वही बात चलाई॥
कहाँ गरीब सुदामा मस की कहाँ कृष्ण केशव जदुराई।
पर मालूम भई अब तो सो दिल दो राय मिठाई खाई॥9॥

हम नादान हरफ नहि जाने तुम तो पूरे साहिब दाना।
घर सू कह्या तुम्हारे आगे जो कुछ भला तुम्हारा जाना॥
नहीं बिचार हमारा इसमें जो तुम सुखन न दिल में आना।
फिर फिर अरज यही रे स्वामी गरज होय तो करो पयाना॥10॥

उसके मुकट जराव जरे हैं मेरे सिर पर नहीं मथाली।
उसके कानों कुंडल सोहैं मेरे कानों नाहिं न बाली॥
उसके तन पीतांबर फहरत मेरे काँधे कामरि काली।
वह्र मोटा मैं निपटहि छोटा क्यों करि मिले मोहि बनमाली॥11॥

जो कछु सरत दोस्ती की है सो अक्कल सबही पहिचानै।
माहा बुजरक और बड़ाई हरगिज खातिर में नहि मानै॥
वे तो साहब दाना बीना सो क्यों तुम्हें रंक करि जानै।
जो सताब चल जाव तिहा लगि तो दयाल दुख तुरतहि भानै॥12॥

तेरे तिनि में बहुत है दिल में तिस खातिर यह बात मिलावै।
अपने सुख की खाहिस तुझकूं मुझकूं नाहक भेज लजावै॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राजी होय रहो ये नादर सू जो कादर भीख मगावै।
पर ऐसे हाल मित्र सों मिलना हरगिज खातिर में नहिं आवै ॥13

जर विन कर्म धर्म नहिं होई जर विन सरम रहै नहिं हरगिज।
जर विन कहीं न पैये आदर जर बिन जगत चहै नहिं हरगिज॥
जर विन दुख भोगे बहुतेरे जर विन सुख सु लहै नहिं हरगिज।
जिनके सिर पर हरि से साहब जर बिन रंज सहै नहिं हरगिज ॥14॥

जर खातिर हजार फिकरो में दिल कूँ फिकरमंद नहिं करना।
जर खातर यों भारी अपना हलुवा करि आगे लै धरना॥
जर खातिर यों मित्र सों मिलना तिन सों बहुत भला है मरना।
ऐसे हाल मुसाकत रहना जो दुख होय तो सुख कर भरना ॥15॥

जहाँ मुहब्बत का है पैंड़ा तहाँ न लोहड़ बड़ाई लहिये।
भेद जरा जु होय दिल भीतर सो सब जाय यार सों कहिये॥
और हिसाब न कीजे हरगिज लीजे बेसक जो कछु चहिये।
कौन अकल है स्वामी मेरे होती आब आग में दहिये ॥16॥

क्या तुझकू यह जकसी लागी कहती रहती अकह कहानी।
जो मेरे माकूल न आई तो मैं खातिर मैं नहिं आनी॥
जैसी अकल होय औरत की तैसी समझ मैं तेरी जानी।
सबर तकुन्नत का कर ऐसा और अंदेसा छोड़ अयानी ॥17॥

तुम तो बहुत पढ़े पढ़ते हो हम तो अकल कहाँ सो पाई।
पर तुम फिकर किया नहिं दिल मैं जब न ठौर कहु कोन बताई॥
जिसकी पैदा इस दुनिया सब ही जल थल तक मैं रह्या समाई।
कह्या मान उहि चल रे जालम खो सब आलम के सुखदाई ॥18॥

तेरी भइ तरबित अति खोटी सोइ कहै जासू दिल अटका।
मेरे नहीं फिकर खातिर मैं जाउँ न किसी तरफ को भटका॥
तुझे तलब भई लज्जत की मेरे दिल में नाह न अटका।
पीर जग पात तूटि पड़ी है फिर फिर बसी बात का लटका ॥19॥

जो कछु कहूँ गोस भरि लीजे हुस (?) हमारा केतिक स्वामी।
वे तो साहब सबके ऊपर जिनकी करता जगत गुलामी॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तिसके चरणे जाहु नाथ तुम तहाँ न होय तुम्हें बदनामी।
एक वेर जाना जरूर है जद्दपि वे हैं अंतरजामी ॥20॥

जो तू कहती रहती है तो जाना मुझे जरूर भया है।
पर दरगाह बड़े साहब के बिना भेट कहु कौन गया है॥
क्या तुहफा लीजै उस घर को जहाँ तहाँ जगदीस दया है।
खाली हाथ नाथ सों मिलना यही सुकन का सोच भया है ॥21॥

यह तो फिकर बहुत नादर है जो चलने की दिल में आई।
कीजे फतै सिद्ध हो इसमें जो तुम सों भेटे जदुराई॥
जिन सिर धरा खास कदमो पर तिन जो आस धरी सो पाई।
जहाँ तहाँ सो पेस करन कों जो कछु मिलै सो लावों धाई ॥22॥

यह कहि चली बांमनी घर ते आई धाय परोसिन के घर।
लिये बिरंज खंज खोहन को बहुत तलास तरद्दुद कर कर॥
बाँध लपेट झपट सो दोड़ी आन किये स्वामी के हाजर।
लीजे भेट गमन अब कीजे जैये जहाँ मित्र मुरलीधर ॥23॥

स्यांयत षुबं अज्याब अब मोहरत जब यह बात हिया में धारी।
चौंतह करि गोसे चादर के बाधी गाँठ बगल में डारी॥
हरष हुलास आस धरि दिल मैं बिदा कियो पतिवरता नारी।
याद करे मन नाथ सुदामा मोहनि मूरति लाल बिहारी ॥24॥

कमर बाँध कर चले सुदामा फाल मुबारक तब ही पाई।
जिस तिस तरफ सकुन सब बहतर गंधर्वनु मिलि देय बधाई॥
खलल पड्या खानो के अंदर लरज उठा दरियाव अकुलाई।
गंज सबै दिल रंज भये हैं जब बिरंज की गांठ उठाई ॥25॥

चल्या राह में जाय सुदामा फिकर अनेक करे दिल अंदर।
जहाँ द्वारिका नगरी कहिये जहँ हैं सोने के हरि मंदर॥
यहां कृष्ण हैं यही द्वारिका जिसके थाल सकर सब बंदर।
क्यों करि मिलें बड़े साहब सों मैं तो बड़ा कदीप कलंदर ॥26॥

सारे राह अंदेसा दिल में निमा शाम को मंजिल आया।
उत साँठोड़ देखि के दुरबल खाया जहाँ वहाँ जो पाया॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ख्वाब गाइ को खूब साथ रा घास पात का थान बनाया।
सोया जब तबही करुणामय तुरत द्वारिका ले पहुँचाया ।।27।।

जाग्यो फजर के तहा तरंग उठै अनलाकै मनि मानक अमोल है जगमग।
ठौर ठौर पै मंगल गावत कथा कीरतन होता पग पग ।।
भगत सुदामा चले पोर को पांव न परै धरै जल लग लग।
... ...।।28।।

झांकै खड़ा दूर ते दुरबल जैसे मिरग भुलाना बन का।
रहा चित्र सा होय दरवाजे पड़े न कदम भीतरा मनका ।।
तब श्रीकृष्ण दीन के बंधो अंगीकार किया उस जन का।
आय धाय कर लिया बगल में मेटा ताप तुरत ही तन का ।।29।।

देखो करम कृष्ण साहब का कौन समाज कौन रजधानी
जहाँ जराव जरे जगमग सब दर दीवान निपट सु रानी ।।
बैठे जहाँ हिंडोरे ऊपर आस पास आठो पटरानी।
सो सब तरक किया जब ही सब प्रीति पुरातन दिल में आनी ।।30।।

पकड़े हाथ नाथ ले आये सिंहासन ऊपर बिठलाया।
गरद गुबार पाक करने को पानी गरम सताज मगाया ।।
पाय धुवाय अँगोछे पोंछे तिन पर बहुत सुगंध चढ़ाया।
हुकम भया छूवो कदमों को सब रनवास सीस पर लाया ।।31।।

बामन फिकर करै दिल भीतर मेरे पांव लै आप पखारे।
ऐसे कांता ले शेरासन सिंहासन ऊपर बिठलारे ।।
मुझकू जाना बड़ा ऋषीस्वर व्यास विष्णु गुरु भृगु प्यारे।
अंतरजामी जबही समझे तब हँसि बोले प्रेम पियारे ।।32।।

खैर सलाह खबर सब पूँछी नांनपने की बात चलाई।
संदीपन गुरु हमको भेजें बन बरषा अरु आंधी आई ।।
हम तुम बसे खान के अंदर मुट्ठी एक चना की खाई।
वह खुस बखत सुमल गुजराना फिर अक्सर होता नहि भाई ।।33।।

फिर बोले निहाल करने को दीनदयाल करम जब कीया।
बगल बीच क्या दाब रहे हो दो जो कुछ भाभी ने है दीया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ठोर उखेर संकोच सुदामा तब श्रीकृष्ण ऐंच कर लीया।
मुट्ठी दो जब मुख में डारी पकड़ो हाथ लच्छिमी तहियाँ ।।34।।

जिस खातिर नर दानाइ दाना करैं···चलबे की बातें।
जिस खातिर दीन की डर है दुनिया बीच बनावैं धातें।।
जिस खातिर हजार सुख तजि के सर गेरुदा फिरैं दिन राते।
सो कमला यों अरज करत है के गुन गुनब कसत हो याते ।।35।।

उतरे तब खनुर के बहुतग बरसे बरसे फूल देवता डारे।
गावें गुन गंधर्व आदि मिल झके प्रेम के मद मतवारे।।
नाचे सगरी हूर हूर तरफ बाँधे वेद जनोऊवारे।
धूम पड़ी है आल बाल में जब बिरचन लै मुख में डारे ।।36।।

हुकुम किया जब बिसरकमा कूँ तबही रंग बेगि उठि आवै।
जहाँ झोंपड़ी है बामन की तहाँ इमारत फेरि बनावै।।
जो कुबेर बन हेर लगावै ढेर ढेर जर के लै आवै।
साज बाज सब रचे विधाता जो कर के कोउ भेद न पावै ।।37।।

हरष भया हरि के दिल भीतर मिला यार कदीम दिल आनी।
दिन दो राखि हजूर आपनी सब भरपूर करी महमानी।।
सारा महल टहल कूँ लागा चहल पहल सगरी रजधानी।
जो कछु सरत दोस्ती की थी सो श्रीकृष्ण बजाय सब आनी ।।38।।

रुखसत करने चले कृष्ण यों साथ लिये सब जादव भाई।
और काम लिये सब जोधा निपट सताब सब नगर लुगाई।।
दीनबंधु करुनामय स्वामी बिछुड़े जब अँखियाँ भर आईं।
करी दिलासा आसा पूरी बिदा भये जो दोनों भाई ।।39।।

आदर किया कृष्ण कादिर ने नादिर सब आलम को लागा।
कहें लोग जो इस मुफलिस का क्या खुस बखत खूब है जागा।।
आज दीन पर दुनिया कोई अंदर ऐसा कौन बड़ भागा।
देखे सभी जु नार दार पर सबसे बड़ा इसी का तागा ।।40।।

रुखसत होय दरखत तल बैठा बड़ा परेशा दिल में कीना।
जिस खातिर औरत ने भेजा घर में खरच कछू नहिं दीना।।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हीरा लाल जवाहिर मोहरें मैं भी मांग कछू नहि लीना ।
यों श्रीकृष्ण खूब ही समझे वे तो साहब दाना बीना ।।41।।

—गुसा-हरो मव रबी लत बिगडे यह दौलत के अगले पाया ।
ज्ञान बिराग खरख समाना उसके दिल ते दूर गमाया ।।
निसचै महर करी मुझ ऊपर अपना जान नाहि भरमाया ।
हरष भया उठ चल्या जु घर को यही ज्ञान दिल भीतर आया ।।42।।

चला सुदामा पैड़े लागा सुकर करै अपने दिल अंदर ।
मेरे बड़े भाग थे पूरे जो भेटे मोहन मुरलीधर ।।
अब परवाह कौन की मुझको बादसाह अपनी धीरज पर ।
पै जु लोभ लपटानी औरत पूछैगी कछु लाये हो जर ।।43।।

पैडा काटि बाट दे सूधी आया जहाँ कदीम बसेरा ।
देख बड़े अंबारता ऊँची जाय न सकै सकुच ते नैरा ।।
जगमग देख महल की तरफें फिर फिर करै तहाँ ही फेरा ।
यह क्या बनी दैव अब मुझको किधर गया सब डेरा मेरा ।।44।।

कहाँ गया टूटा सा छपरा कहाँ गई टूटी सी टटिया ।
कहाँ गया वाक सा खुरपा कहाँ गई बाँमनी लटिया ।।
कहाँ गये हैं साज बांज सब कहाँ गई वे कामरि फटिया ।
दई कौन अब दाद दैन को दई कौन मैं पाडी बटिया ।।45।।

जहाँ महल सोने के देखे जरे जराव निपट उजियारे ।
कितेक दरवाजे हैं घर के कितेक समरे और समारे ।।
केतिक बेठक तरह तरह की केते एक बाजे रेत सभारे ।
केतेके सवरे खलवतखाते केते एक बने चौबारे ।।46।।

केते यक तो है बार चाव की कितेक हाथी मदमाते ।
केते रथ रोसन सूरज से केतिक घोड़े जगत जराते ।।
केते हरिण रोज अरु चीते केतिक सेर खड़े अड़ाते ।
केतिक चौगहे जंगल के केतिक पंछी खुस रंग राते ।।47।।

केतिक संदूक जवाहर के केता सोना ढेर डर्या है ।
केतिक मसक पड़ी है जाफराँ केता अंबर ढेर पड्या है ।।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

केते कुमास जरबफत के केते गलम ऊपरद सरा है।
कहो कहाँ लौं बरनन करिये केते अटाला और भर्या है ॥48॥

केतिक केतो जुवान द्वार पर केता चौकीदार खड्यो है।
केतिक हुरम हूर सी घर में कितेक खास खवास पड़े है॥
केतिक सरवराह जो लखिये केते यार गुजार भरे हैं।
केतिक वरनो संपति उसकी जो कछु कौतुक काज करे है॥49॥

गिरद महल दी फिरै सुदामा एक निसान नजर नहिं आवै।
जाय न औरत तरफ को बामन फिर फिर उसी ओर मँडरावै॥
औरत उसे जाय चौबारे देख धनी को बाँह डोलावै।
तब दिल अंदर कहता बांमन यह रानी किस काज बुलावै॥50॥

मैं मसकीन गरीब बांमन हूँ यह तो किसी भूप की रानी।
मेरे दिल में यहै अचंभा जो यह खातिर मैं क्या आनी॥
सायद मुझे देख कर दुरबल दौलतमंद जराफत बानी।
भरम भुलाना फिरै अयाना यही बात अपने मन मानी॥51॥

जब देखा औरत स्वामी को जो उस तरफ कदम नहिं धरता।
ऐसा नहीं करम केसव का अपने भरम सों नाहक मरता॥
तब उठ आई धाय बगल में लिया बांमनी अपना भरता।
कहा जु करम किया तिसही ने जो है इस आलम का करता॥52॥

अपनी संपति देख सुदामा हरख भया घर भीतर आया।
जो कछु ध्यान ख्याल नहि देखा सो मौजूद तहा सब पाया॥
ठौर ठौर ते भई बधाई जहाँ तहाँ ते मंगल गाया।
सदका दिया बहुत औरत ने तरफ तरफ सोना बरसाया॥53॥

गरम किये पानी के बासन सकल सुगंध सँवार मगाया।
चौकी धरि मंदिर ते काढी तहाँ सुदामा लै बिठलाया॥
कछनी कछ महबूब वे साई खूब ही दलमल गुसल कराया।
तब दिल अंदर कहता बामन यह बानक श्रीकृष्ण बनाया॥54॥

आसन बैठ याद कर दिल में धरा कृष्ण साहब का ध्यान॥
सजदे पर सिर राखि सुदामा किया जहाँ हजार सुकराना।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

किया भोग जब लगि वह जीया भगति जोग इहि निज कर माना ।
जिन साहब की करी गुलामी तिनही फल सेवा कर जाना ।।55।।

जेते जोग जगत में कहिये तिन में भगत जोग है मुसकल ।
सोई इस मारग कूँ पावै सदा होय कायम उसका दिल ।
भोग जोग के हाँसिल तिसमे और ठौर कोई नहिं मंजिल ।
जिन तसलीम किया तन मन को सो दुनिया में कहिये कामिल ।।56।।

कसमा कह्या सुदामा प्रभु का कहै सुने दिल प्रीत बढ़ाई ।
जिसका होय बहिस्त में बासा आवागमन कदै नहिं भाई ।।
जैसा करम किया बामन पर तैसी उसको होत सवाई ।
दीनानाथ नाथ की बातें जुवाँ एक क्या कहूँ बुझाई ।।57।।

इति श्री आलम कृत सुदामा चरित्र संपूर्ण

श्रीरस्तु लिखितं अभमनं

122606

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Acc. 30.3.02
Class RE 6.6.2002
Cat RE "
Tag "
RE "
2 22-6-02
RE 6.6.2002

Recommended By....... Dr. V.D. Rakesh

Compiled
2002–2003

ARCHIVES DATA BASE
2011 - 12

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विद्यानिवास मिश्र

जन्म : मकर संक्रान्ति, 1982 वि., गाँव पकड़डीहा, जिला गोरखपुर। प्रारम्भिक शिक्षा गाँव में, माध्यमिक शिक्षा गोरखपुर में, संस्कृत की पारम्परिक शिक्षा घर पर और वाराणसी में। 1945 में प्रयाग विश्वविद्यालय से संस्कृत में एम.ए.। हिन्दी साहित्य सम्मेलन में स्व. राहुल की छाया में कोश कार्य, फिर पं. श्रीनारायण चतुर्वेदी की प्रेरणा से आकाशवाणी में कोश कार्य, विंध्य प्रदेश और उत्तर प्रदेश के सूचना विभागों में सेवा, गोरखपुर विश्वविद्यालय, संस्कृत विश्वविद्यालय और आगरा विश्वविद्यालयों में क्रमशः अध्यापन—संस्कृत और भाषा-विज्ञान का। 1960-61 और 1967-68 में कैलीफोर्निया और वाशिंगटन विश्वविद्यालयों में अतिथि अध्यापक। केन्द्रीय हिन्दी संस्थान, आगरा के निदेशक पद पर कार्य करने के बाद अब काशी विद्यापीठ-विश्वविद्यालय, वाराणसी के कुलपति।

प्रकाशन

निबन्ध-संग्रह : शेफाली झर रही है, गाँव का मन, संचारिणी, लागौ रंग हरी, भ्रमरानन्द के पत्र, अंगद की नियति, छितवन की छाँह, कदम की फूली डाल, तुम चन्दन हम पानी, आँगन का पंछी और बनजारा मन, मैंने सिल पहुँचाई, साहित्य की चेतना, वसन्त आ गया पर कोई उत्कंठा नहीं, मेरे राम का मुकुट भीग रहा है, परम्परा बन्धन नहीं, कँटीले तारों के आर-पार, कौन तू फुलवा बीनन हारी, अस्मिता के लिए, गिर रहा है आज पानी।

शोध : दि डिस्क्रिप्टिव टेक्नीक ऑफ पाणिनि, रीति विज्ञान, भारतीय भाषा-दर्शन की पीठिका, हिन्दी की शब्द-सम्पदा, हिन्दू धर्म : जीवन में सनातन की खोज।

कविता संग्रह : पानी की पुकार, उत्तर गीत गोविन्द।

सम्पादन : रसखान रचनावली, रहीम ग्रन्थावली, देव की दीपशिखा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar